“ग़ज़ल गायकी के प्रमुख उदीयमान घराने”

"Major Upcoming Schools of Ghazal Singing"

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
की
पीएच.डी. (संगीत) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध
कला संकाय

शोधार्थी

उपासना दीक्षित

शोध–पर्यवेक्षक

डॉ. रौशन भारती

सह आचार्य

संगीत विभाग

राजकीय कला कन्या महाविद्यालय, कोटा (राज0)

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

2019

C E R T I F I C A T E

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled "ग़ज़ल गायकी के प्रमुख उदीयमान घराने" by **Upasna Dixit** under my guidance. She has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University.

(a) Course work as per the university rules.

(b) Residential requirements of the university (200 days)

(c) Regularly submitted annual progress report.

(d) Presented her work in the departmental committee.

(e) Published/ accepted minimum of Two research paper in a referred research journal,

I recommend the submission of thesis.

Date :
Place :

Dr. Roshan Bharti
(Research Supervisor)

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that PhD Thesis Titled "ग़ज़ल गायकी के प्रमुख उदीयमान घराने" by **Upasna Dixit** has been examined by us with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows:

a. Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.

b. The work presented is original and own work of the author (i.e. there is no plagiarism). No ideas, processes, results or words of others have been presented as author's own work.

c. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.

d. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or omitting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.

e. The thesis has been checked using plagiarism checker "plagiarismchecker.com", and found within limits as per HEC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

Upasna Dixit	**Dr. Roshan Bharti**
(Research Scholar)	(Research Supervisor)
Place:	Place:
Date:	Date:

शोध सार

संसार में ऐसा कोई स्थान नहीं, जहाँ संगीत उपस्थित न हो, संगीत संसार में हर जगह समाहित है, फिर चाहे वह झरनों की कलकल हो, पशु–पक्षियों के चहकने की आवाज हो, या हवा की सरसराहट हो, सभी में संगीत समाहित है।

संगीत न केवल मनुष्य को ब्लकि पशु–पक्षी, पेड़–पौधों सभी को प्रभावित करता है। संगीत सभी मानव भूतियों का सफल प्रदर्शन होने के कारण आदिकाल से मानव जीवन के हर क्षण में समाहित है। प्रारम्भ में जब भाषा का विकास नहीं हुआ था, उस समय भी संगीत के द्वारा मन के भावों की अभिव्यक्ति की जाती थी।

संगीत कला एक साधना हैं तथा सभी ललित कलाओं में श्रेष्ठतम है। संगीत के भीतर मानव जीवन से जुड़ी सभी भावनाओं को उजागर करने की शक्ति बहुत ही सरल व मार्मिक रूप में विद्यमान है। चाहे फिर वह दुःख के क्षण हो या सुख के।

इसलिए कहा जाता हैं कि संगीत के द्वारा भावाभिव्यक्ति बहुत ही सहज होती हैं तथा यह कहा गया है कि वही कला श्रेष्ठ है, जिसमें भावों की अभिव्यक्ति शीघ्र होती है।

संगीत कला के कई रूप है। जब इसे शास्त्रों में बांध के गाया जाता हैं तो यह शास्त्रीय संगीत कहलाता है। जब इसे शास्त्र के नियमों में थोड़ी शिथिलता से गाते हैं, तो यह उपशास्त्रीय संगीत कहलाता है। वहीं जब इसे लोक (समाज) के अनुसार गाया जाता है तो वह लोकगीत कहलाता है।

संगीत स्थान व स्थिति के अनुसार स्वयं को ढालने की अपूर्ण क्षमता रखता है। शास्त्रीय संगीत की कई विधाएँ है जैसे– टप्पा, ठुमरी, ख्याल, तराना, ध्रुपद, धमार आदि। ये सभी गायन शैलियाँ एक दूसरे से भिन्न गायी जाती हैं तथा एक ही गायन शैली को भी कलाकार भिन्न तरीके से गाता है क्योंकि जब भी कोई गायक गाता है तो प्रत्येक गायक की गायिकी का अंदाज, तरीका अलग–अलग होता है। यह गायक भिन्नता ही इन्हें घराने का रूप देती है।

इसी तरह यदि हम उपशास्त्रीय संगीत की बात करते हैं तो इसमें शास्त्रीय संगीत तो विद्यमान होता है। क्योंकि बिना शास्त्रीय संगीत के हम किसी भी प्रकार के संगीत की कल्पना नहीं कर सकते है, सिर्फ इसमें शास्त्रों के नियमों को थोड़ा शिथिल करके जनरूचि के अनुसार परिवर्तित कर के, समय–समय पर नवीन प्रयोग कर के प्रस्तुत किया जाता है।

इन्हीं उपशास्त्रीय विधाओं में से एक नाम वर्तमान में बेहद लोकप्रिय हैं वह है 'ग़ज़ल गायकी' जो वर्तमान में जन समुदाय के द्वारा खूब सराई जा रही है। लोग इसको सुनना, सीखना और गुनगुनाना पंसद कर रहे है।

वर्तमान में ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में इज़ाफा होने का मुख्य कारण यह रहा क्योंकि कई मशहुर ग़ज़ल गायकों ने अपनी गायकी के करिश्में से इसे लोकप्रिय बनाया और लोगों तक पहुँचाया, जैसे– बेगम अख़्तर मेहदी हसन, गुलाम अली, जगजीत सिंह। इन सभी ग़ज़ल गायकों कि गायिकी के अंदाज में, प्रस्तुतीकरण के अंदाज में, ग़ज़ल को कहने के अंदाज में जमीं आसमा का अंतर है।

इसी अंतर के कारण किसी को बेगम अख़्तर जी की गायिकी पंसद हैं तो किसी को मेहदी हसन साहब की तो किसी को गुलाम अली साहब की गायिकी। यह गायिकी का अलग–अलग अंदाज ही इन्हें एक दूसरे से अलग पहचान दिलाता है। इसी विभिन्नता के कारण हम इस उपशास्त्रिय सांगितिक विधा को घराने के रूप में तब्दील कर सकते हैं। चाहे फिर गायन हो, वादन हो, या नृत्य हो सभी में घराने मौजूद है।

देाा गया है कि कला की सभी विधाओं में घराने मौजूद हैं चाहे फिर गायन हो, वादन हो या नृत्य। इसी प्रकार हम ग़ज़ल में भी ऐसा कह सकते, बेशक इन सभी गायकों की मूलजड़े किसी न किसी रूप से शास्त्रीय संगीत के किसी घराने से जुड़ी हुई हैं, लेकिन इनकी सृजनात्मकता व निजी विशेषताओं ने इन्हें 'ग़ज़ल गायिकी' के क्षेत्र में अलग पहचान दिलायी है।

इन सभी की गायिकी के अंदाज को तल्फ्फुज कहने के अंदाज, अदायगी के अंदाज की भिन्नता को देखते हुए 'ग़ज़ल में घराने' बनाए जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। इसी छिपे तथ्य को संगीत समाज व श्रोताओं व विद्यार्थियों के समक्ष अपने शोध कार्य द्वारा उजागर करने की कोशिश की है। इस उपशास्त्रीय संगीत की विधा को घराने के रूप में प्रस्तुत करने की मेरी चेष्ठा थी। त्रुटि होना स्वाभाविक है जिसके लिये में हृदय से क्षमाप्रार्थी हूँ।

प्रस्तुत शोध ग्रंथ छः अध्यायों में विभाजित है।

1. प्रथम अध्याय

"ग़ज़ल की उत्पत्ति" व विकास शीर्षक अध्याय में मैंने **'ग़ज़ल'** शब्द का सामान्य अर्थ बताते हुए तथा विभिन्न विद्धानों ने ग़ज़ल के संदर्भ में क्या–क्या परिभाषाएँ दी है उसका उल्लेख किया है। ग़ज़ल की उत्पत्ति कहाँ से हुई, इस बात पर प्रकाश डाला, किस विकास

यात्रा को तय करके यह भारत पहुँची, आगे चलकर इसी अध्याय में मैंने भारत में ग़ज़ल गायिकी का विकास कब, कैसे, किन–किन व्यक्तियों के द्वारा किया गया यह बताया है। साथ ही भारत में स्वतंत्रता से पूर्व व स्वतंत्रता के बाद ग़ज़ल गायिकी के स्वरूप में क्या–क्या परिवर्तन आए यह दर्शाने की कोशिश की है, साथ ही ग़ज़ल को गाने और समझने से पहले इसके संरचनात्मक ढ़ाचे को समझाना बहुत ही आवश्यक है। संरचनात्मक तत्वों को एकत्रित करके शोध अध्याय में सम्मिलित करने का प्रयास कर ग़ज़ल के प्रत्येक भाग पर प्रकाश डाला है।

2. द्वितीय अध्याय

"बेगम अख़्तर घराना" शीर्षक अध्याय में ग़ज़ल की मल्लिका के नाम से जानी जाने वाली शख्सियत के जीवन से जुड़े कई तथ्यों को संकलित कर शोध में सम्मिलित करने का प्रयास किया जैसे– जीवन परिचय, संगीत सफर, पारिवारिक जीवन आदि तदोपरान्त बेगम अख़्तर जी की गायिकी की विशेषताओं को उजागर कर लिखा जो उन्हें सबसे अलग बनाती है। उनकी ग़ज़ल गायिकी की विभिन्नता के आधार पर 'बेगम अख़्तर घराना' बनाया जिसमें बेगम अख्तर घराने की गायिकी की विशेषताएँ तथा कुछ प्रमुख शिष्यों के जीवन परिचय को सम्मिलित कर 'बेगम अख़्तर घराने' को श्रृंखलाबद्ध रूप में लिपिबद्ध किया साथ ही गुरू शिष्यों की कुछ फोटो व पत्र–पत्रिकाओं की प्रति भी सम्मिलित की है।

3. तृतीय अध्याय

"मेंहदी हसन घराना" शीर्षक अध्याय में ग़ज़ल के शहनशाह कहलाने वाले मेहदी हसन, जिन्होंने ग़ज़ल गायकी को देश–विदेश में पहचान दिलायी उनके व्यक्तित्व कृतित्व को कुछ सहायक बिंदुओं की सहायता से लिखने का प्रयास किया है। उनके जीवन से जुड़े हर पहलु संघर्ष से हर्ष तक के पलों को शोध कार्य के माध्यम से विवेचित एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया। जैसे जन्म संबंधी जानकारी, संगीत शिक्षा संबंधी जानकारी, पारिवारिक जीवन संबंधी आदि को समावेशित करते हुए उनकी गायकी की विशेषतओं को लिखा तथा वर्तमान में कौन–से शिष्य उनकी गायकी का अनुसरण कर उनकी गायकी को प्रसारित कर रहे हैं, उन सभी को सम्मिलित करते हुए 'मेंहदी हसन घराने' को श्रृंखलाबद्ध रूप में लिपिबद्ध कर सकी तथा साथ ही गुरू–शिष्यों की फोटो व पत्र–पत्रिकाओं की प्रति भी सम्मिलित की है।

4. चतुर्थ अध्याय

"गुलाम अली घराना" शीर्षक अध्याय में मैंने ग़ज़ल की एक ऐसी हस्ती के जीवन से जुड़े तथ्यों को संकलित कर शोधकार्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया, जिसने

ग़ज़ल के परम्परागत रूप में परिवर्तन करके समाज को ग़ज़ल का नया रूप दिया। वे ग़ज़ल गायिकी के नये दौर हैं तथा उनके जीवन से जुड़ी सभी जानकारियों को संकलित कर उनकी गायिकी की प्रमुख विशेषतओं पर एक खास अध्ययन कर समाहित किया तथा प्रमुख शिष्यों का जिक्र कर के गुलाम अली घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप में प्रस्तुत किया तथा गुरू शिष्यों की फोटो व पत्र–पत्रिकाओं की प्रति भी सम्मिलित की है।

5. पंचम अध्याय

"जगजीत सिंह घराना" शीर्षक अध्याय में ग़ज़ल सम्राट "जगजीत सिंह" ग़ज़ल गायकी का वह नायाब सितारा है जिसकी चमक संपूर्ण विश्व में व्याप्त थी। उसी तरह उनके द्वारा गायी ग़ज़लें भी संपूर्ण विश्व में चांदनी के समान फैली हुई है। जो कार्य उन्होंने ग़ज़ल के क्षेत्र में किया उन्हें संकलित कर लिपिबद्ध करना बेहद ही मुश्किल काम है। इतनी सी उम्र में उन्होंने वह कार्य कर दिखाया जिसे न कोई कर सका है और न ही आगे कर सकेगा। उनका कार्य समुद्र की तरह अथाह कार्य है। सिर्फ मेरी कोशिश रही कि मैं अपने कार्य के द्वारा उस शख्शियत के जीवन से जुड़े कुछ पहुलओं को बता संकू। इस अध्याय में मैंने उनके आम आदमी से ग़ज़ल सम्राट बनने तक के सफर में किन–किन संर्घषों से गुजरना पड़ा आदि का जिक्र किया, साथ ही उनकी गायिकी जो, आम साधारण जन की गायिकी कहलाने के पीछे क्या कारण रहे, उनकी गायिकी की विशेषताओं को संकलित कर तथा प्रमुख शिष्य जो उनके बेहद करीब थे उनके परिचय को लिखा तथा 'जगजीत सिंह घराने' को श्रृंखलाबद्ध रूप दे सकने में समर्थ रही तथा साथ ही गुरू शिष्यों की फोटो व पत्र–पत्रिकाओं की प्रति भी सम्मिलित की है।

6. षष्टम् अध्याय

"उपसंहार" शीर्षक अध्याय में मैंनें संपूर्ण शोध कार्य का सांराश प्रस्तुत करते हुए, उन सभी तथ्यों को सम्मिलित करने का प्रयास किया, जिन्हें मैंने अपने शोधकार्य के अन्तर्गत निष्कर्ष स्वरूप पाया, ग़ज़ल गायिकी के चार स्तम्भ बेगम अख़्तर, मेहदी हसन, गुलाम अली, जगजीत सिंह जो अपने–अपने समय के बादशाह हैं जिनकी गायिकी संपूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। उनके जीवन से जुड़े कुछ आवश्यक तथ्यों को सम्मिलित कर उनकी ग़ज़ल गायन शैली की भिन्नता के आधार पर 'घरानों' का निर्माण कर इस शोध कार्य को ईश्वर की कृपा से पूर्ण करने की कोशिश की है। साथ ही शोध प्रंबध में प्रयुक्त साम्रगी के स्त्रोत, पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाओं का विवरण प्रत्येक अध्याय के अंत में किया गया है। साथ ही विस्तृत जानकारी सहायक सामग्री के संबंध में शोध के अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची में समाहित है।

साक्षात्कार – शोधकार्य की पुष्टि व उत्कृष्ठता हेतु कुछ गुणीजनों से जो मेरे शोध शीर्षक से संबंधित थे, उनसे फोन व व्यक्तिगत रूप से मिलकर साक्षात्कार के जरिये प्राप्त जानकारियाँ व उनकी व्यक्तिगत राय को अपने शोध कार्य में सम्मिलित किया।

गजलों का लिपिबद्ध रूप – शोध वर्णित ग़ज़ल गायकों के द्वारा एक ही शायर की ग़ज़ल को भिन्न–भिन्न तरीके से प्रस्तुत करने के ढ़ंग को लिपिबद्ध कर उसका विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

Candidate's Declaration

I, hereby, certify that the work, which is being presented in the thesis, entitled **"ग़ज़ल गायकी के प्रमुख उदीयमान घराने"** in partial fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor of Philosophy, carried under the supervision of Associate Professor/**Dr. Roshan Bharti** and submitted to the University of Kota, Kota represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included, I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of any other degree or diploma from any Institutions.

I also declare that I have adhered to all principles of academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the sources which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

(Signature)

Upasna Dixit

Date : _____

Place : _____

This is to certify that the above statement made by **Upasna Dixit** (Registration No. **Rs/1362/13**) is correct to the best of my knowledge.

Date : _____

Place : _____

Dr. Roshan Bharti
(Research Supervisor)

प्राक्कथन

संगीत एक यशस्वी कला है, जिसका स्वउद्देश्य चितरंजकता है। ललित कलाओं में सर्वप्रथम स्थान रखने वाली यह कला भौतिक उत्कर्ष एवं यश के अलावा आध्यात्मिक सुख–संतोष भी देती है। संगीत एक ऐसा विषय है जिसका जड़–चेतन दोनों पर ही एक सात्विक प्रभाव पड़ता है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक संगीत निरतंर सृजनशील है। संगीत कला सर्वकालीन और सार्वदेशीय और प्रेम, भक्ति तथा सम्मान की श्रेष्ठ विद्या है।

संगीत व संस्कृति एक दूसरे के पूरक है। किसी भी देश या राष्ट्र की राजनैतिक, सामाजिक, गतिविधियों के बारे में वहाँ की संस्कृति व संगीत से ही पता चलता है। कलाओं को संस्कृति का दर्पण कहा गया है।

भारतीय संस्कृति की यह विशेषता हैं कि वह किसी भी देश की संस्कृति, कला को शीघ्र आत्मसात कर लेती है। इसी का एक उदाहरण है "ग़ज़ल गायिकी" जिसका जन्म ईरान में हुआ लेकिन वर्तमान में यह भारतीय संगीत की प्रमुख गायिकी बन गयी है। ग़ज़ल के उदय व विकास संबंधी यात्रा का विवेचन किया जाए, तो ग़ज़ल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में कहा जा सकता हैं कि भारतीय काव्य जगत एवं संगीत जगत को मध्यकाल के पश्चात् सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रचना ग़जल है।

ग़ज़ल के संदर्भ में यदि उसकी सांस्कृतिक गरिमा की बात करें तो ऐसा प्रतीत होता हैं कि ग़ज़ल की विचारधारा सूफ़ीवाद पर आधारित है। जिसमें ईश्वरीय प्रेम और ज्ञान की महिमा का गान व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा किया जाता है।

ग़ज़ल मूलतः प्रेम की काव्यात्मक शैली में अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली काव्यविद्या है। ग़ज़ल में रूप, सौंदर्य, संयोग, वियोग, ईश्वर, प्रेम सभी भावों की अभिव्यक्ति होती है। अतः ग़ज़ल मध्यकाल से लेकर वर्तमान काल तक जिस प्रकार कलात्मक सौन्दर्य को प्राप्त करते हुए भिन्न प्रकार से प्रस्तुतीकरण का उपादान बनी वह निश्चित तौर पर ग़ज़ल का प्रभाव है।

ग़ज़ल एक उर्दु काव्यविद्या हैं जब उसे कोई संगीतज्ञ स्वरों में बांधकर गाता है, तो उसे ग़ज़ल गायिकी कहते है।

भारत में ग़ज़ल गायिकी प्रचार–प्रसार मध्यकाल से रहा है। ग़ज़ल गायिकी मध्यकाल में अलग तरह की थी तो वर्तमान में अलग तरह की है। पहले ग़ज़ल गायिकी राजदरबारों में गायी

जाती थी फिर धीरे–धीरे तवायफों द्वारा कोठों पर गायी जाने लगी फिर फिल्मी संगीत में आयी और फिर कुछ स्वतंत्र गायक हुए जिन्होंने इसे संपूर्ण विश्व में लोकप्रिय बनाया।

वर्तमान में ग़ज़ल गायिकी यदि श्रोताओं द्वारा पंसद की जा रही हैं तो उसका श्रेय इन्हीं कलाकारों को है। सभी गायकों की गायिकी भिन्न–भिन्न है। अदायगी का तरीका भिन्न है। चूंकि मैं संगीत की विद्यार्थी हूँ, तो मैं संगीत की हर गायन शैली के बारे में सीखा व जाना है। संगीत की अन्य गायन शैलियाँ जैसे ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी आदि को जाना व सीखा, जानने पर पता चला।

यदि किसी भी कला को उसके विधिवत रूप में सीखना हैं तो वह घराना पद्धति से ही संभव है व घराने पद्धति की वजह से ही भारतीय संगीत की परम्परागत बंदिशें सुरक्षित व संरक्षित हैं। घराने पद्धति में एक योग्य गुरू अपनी कला को अपने योग्य शिष्य को सीखाकर अपनी पीढ़ी की गायिकी को आगे बढ़ाता है व संरक्षण प्रदान करता है।

जब मेरा ध्यान अन्य गायन शैलियों के समान ग़ज़ल की ओर गया तो मैंने पाया कि संगीत की हर विधा में घराने हैं, तब मेरे मन में प्रश्न उठा कि क्या ग़ज़ल गायन में घराने बनाये जाना सम्भ नहीं? क्या इन गायकों की गायी ग़ज़लों को सुरक्षित व संरक्षित करना व इनकी गायिकी को आगे बढ़ाना आवश्यक नहीं है?"

इन्हीं सभी प्रश्नों का उत्तर मैंने अपने शोध कार्य के द्वारा खोजने का प्रयास किया और प्रस्तुत शोध को मूलतः 6 अध्यायों में विभक्त किया।

मैंने संग्रहण के लिए मेरे व्यक्तिगत स्तर पर यथासम्भव पूर्ण व प्रमाणिक बनाने हेतु कोई कमी नहीं छोड़ी है। अब तक ग़ज़ल गायिकी, ग़ज़ल गायकों पर कई अध्ययन हुये लेकिन 'ग़ज़ल घराना' अछुता रह गया।

अतः यह अध्ययन अपने क्षेत्र में मौलिक व नूतन है। जो संगीत के विद्यार्थियों को ग़ज़ल के बारे में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाने में सहायक सिद्ध होगा।

आभार

शोध कार्य एक विशाल कार्य है, जिसे बिना सहयोग, व आर्शीवाद के पूर्ण करना नामुकिन है। सर्वप्रथम में माँ सरस्वती का धन्यवाद करना चाहूँगी, जिन्होंने मेरे कार्य को पूर्ण करने में मेरा सहयोग दिया, कार्य के दौरान कई बाधाएँ आयी, लेकिन उनकी कृपा से कार्य सदैव प्रगतिशील रहा, ईश्वर का आर्शीवाद सदैव आवश्यक है।

मैं अत्यंत आभारी हूँ मेंरे पिता श्री चंद्रकांत जी दीक्षित व माता श्रीमती सरस्वती दीक्षित जिनके आर्शीवाद के बिना यह कार्य असम्भव था।

मेरे शोधकार्य पूर्ण होने की खुशी मुझसे कई ज्यादा मेरे माता–पिता को है। मेरी माता श्रीमती सरस्वती दीक्षित सदैव इस विषय में चिंतित थी उनके स्नेह व आर्शीवाद से में यह कर पायी।

मैं अत्यंत आभारी हूँ मेरे शोध निर्देशक डॉ. रौशन भारती जी (सहआचार्य संगीत विभाग राजकीय कला कन्या महाविद्यालय कोटा) का जिन्होंने मुझे "ग़ज़ल गायकी के प्रमुख घराने" जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर अध्ययन कराया, साथ ही सदैव मागदर्शन किया। आपके आर्शीवाद स्वरूप ही अपने अध्ययन की गुढ़ता व मूर्तता सिद्ध करने में सक्षम हो सकी। भगवान की कृपा और आपके प्रोत्साहन, सहयोग व मार्गदर्शक के परिणाम स्वरूप ही मैं अपने शोधकार्य को पूर्णकर पायी।सदैव यही प्रार्थना हैं कि आपका अर्शीवाद ऐसे ही बना रहे।

मैं उन सभी संस्थाओं के प्रति भी आभार प्रकट करना चाहूँगी, जिन्होंने मुझे शोध संबंधी सहायक साम्रगी उपलब्ध करवायी और मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने में सहायता की। सर्वप्रथम में जयपुर विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ वहाँ 'आशा मैडम' का भी सहयोग मिला। दिल्ली विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ, प्रो. उमा गर्ग मैडम ने बहुत ही सहजता व सरलता से मुझे अनुमति दी। मैं अत्यंत आभारी हूँ।

संगीत कला अकादमी दिल्ली का तथा 'स्वत्रंत शर्मा' मैडम का जिन्होंने सहायक सामग्री संकलन में बहुत मदद की। मैं उन सभी महान् विभूतियों को भी नमन करना चाहूँगी जिनके सहयोग से मैं यह शोधकार्य पूर्ण करने में सर्मथ हुयी साथ ही इसे उत्कृष्ट रूप प्रदान करने में सक्षम हुयी जिन्होंने मेरे द्वारा पूछे प्रश्नों का उत्तर देकर मेरे शोध को प्रगाढ़ता दी व सशक्त आधार प्रदान किया। रेखा सूर्या जी, पदम श्री शांति हीरानंद जी, प्रेम भंडारी जी, देवेन्द्र सिंह हीरल, शमून फिदा।

मैं अपने पति श्री अमित मिश्रा का धन्यवाद करना चाहूँगी जिन्होंने शादी के बाद उन्होंने शोधकार्य से संबंधित सन्दर्भ ग्रंथ व पत्र–पत्रिकाएँ मुझे अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध करायी। अंग्रेजी का अधिक ज्ञान न होने के कारण मैं अपने पति अमित मिश्रा की सहायता से हिंदी में अनुवाद कर पायी। इस कार्य पूर्ण करने में सहयोग किया। क्योंकि शादी के बाद में मेरा सपना लगभग छोड़ चुकी थी उन्हीं के सहयोग से में यह कर पायी, मेरी बेटी आरूण्या ने भी मेरे को सहयोग किया, कई–कई घंटों अकेले माँ के बिना बिताये उसका मासूम चेहरा मेरे लिये प्रेरणा स्वरूप था।

मैं अत्यंत आभारी हूँ, सदाशिव गौतम सर की जिन्होंने इतनी व्यस्तता के बाद भी मुझे समय देकर ग़ज़लों को लिपिबद्ध करने में सहायता की। मैं अत्यंत आभारी हूँ मेरी विद्यार्थी अनिता मीणा जिसने मुझे बहुत उत्साह व प्रेरणा दी, उसने मेरा निरंतर उत्साहवर्धन किया। ईश्वर तुम्हे सदैव सफल बनाये यही आशा करती हूँ।

अतः मैं सभी का ह्रदय की गहनतम सीमा से समस्त शुभकामनाओं के साथ कृतज्ञता सहित आभार प्रकट करती हूँ। साथ ही सरस्वती कम्प्यूटर्स, कोटा के मुकेश सेन जिन्होंने मेरे शोध कार्य के टंकण में मेरा पूर्ण सहयोग किया, का भी आभार प्रकट करती हूँ।

शोधार्थी

उपासना दीक्षित

अनुक्रमणिका

(Index)

क्र.सं.	विषयसूची	पृष्ठ सं.
1	मुख्यपृष्ठ	
2	प्रमाण पत्र	i
3	एन्टी–प्लेग्रिज्म प्रमाण पत्र	ii
4	शोध सार	iii
5	घोषणा पत्र	viii
6	प्राक्कथन	ix
7	आभार	xi
8	अनुक्रमणिका	xiii
9	छायाचित्र सूची	xvi
10	**प्रथम अध्याय - ग़ज़ल की उत्पत्ति व विकास**	1-18
11	(अ) ग़ज़ल का सामान्य अर्थ व विभिन्न परिभाषाएँ	1
12	(ब) ग़ज़ल की उत्पत्ति	4
13	(स) भारत में ग़ज़ल गायिकी का स्वरूप	6
14	(द) स्वतंत्रता से पूर्व ग़ज़ल गायिकी का स्वरूप	9
15	(क) स्वत्रंत्तोतर काल में ग़ज़ल गायिकी का स्वरूप	10
16	(ख) ग़ज़ल गायकी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	13
17	(ग) ग़ज़ल का संरचनात्मक अध्ययन	15
18	**द्वितीय अध्याय - बेगम अख़्तर घराना**	19-50
19	(अ) जीवन परिचय	19
20	(ब) पारिवारिक परिचय	22
21	(स) संगीत सफर	28
22	(द) बेगम अख़्तर की गायिकी	32

क्र.सं.	विषयसूची	पृष्ठ सं.
23	(क) बेगम अख़्तर घराना	36
24	(i) घराने की विशेषताएँ	36
25	(ii) घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप	37
26	(iii) कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय	38
27	(iv) बेगम अख़्तर के शिष्यों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं की प्रति	45
28	**तृतीय अध्याय - मेहदी हसन घराना**	51-76
29	(अ) जीवन परिचय	51
30	(ब) पारिवारिक जीवन	52
31	(स) संगीत सफर	57
32	(द) मेहदी हसन की गायिकी	60
33	(क) मेहदी हसन घराना	65
34	(i) घराने की विशेषताएँ	65
35	(ii) घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप	67
36	(iii) कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय	68
37	(iv) मेहदी हसन के शिष्यों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं की प्रति	75
38	**चतुर्थ अध्याय - गुलाम अली घराना**	77-104
39	(अ) जीवन परिचय	77
40	(ब) पारिवारिक जीवन	79
41	(स) संगीत सफर	81
42	(द) गुलाम अली की गायिकी	85
43	(क) गुलाम अली घराना	93
44	(i) घराने की विशेषताएँ	94
45	(ii) घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप	95
46	(iii) कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय	96

क्र.सं.	विषयसूची	पृष्ठ सं.
47	(iv) गुलाम अली के शिष्यों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं की प्रति	102
48	**पंचम अध्याय - जगजीत सिंह घराना**	105-132
49	(अ) जीवन परिचय	105
50	(ब) पारिवारिक जीवन	107
51	(स) संगीत सफर	112
52	(द) जगजीत सिंह की गायिकी	118
53	(क) जगजीत सिंह घराना	123
54	(i) घराने की विशेषताएँ	123
55	(ii) घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप	124
56	(iii) कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय	125
57	(iv) जगजीत सिंह के शिष्यों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं की प्रति	131
58	**षष्टम् अध्याय - उपसंहार**	133-141
59	**सारांश**	142-146
60	**संदर्भ ग्रन्थ सूची**	147-153
61	**शोध पत्र**	154-164
62	**परिशिष्ट**	165-187
63	**(अ) साक्षात्कार**	165-178
64	**(ब) ग़ज़लों का लिपिबद्ध रूप**	179-187

छायाचित्र सूची

क्रम सं.	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
1	बेगम अख़्तर अपनी माता मुश्तरी बाई बेगम के साथ	20
2	बेगम अख़्तर का फैजाबाद स्थित पुश्तैनी मकान	21
3	बेगम अख़्तर अपने शौहर इश्तियाक अहमद अब्बासी साहब के साथ	23
4	बेगम अख़्तर की लखनऊ के बसंत बाग में स्थित मज़ार	25
5	बेगम अख़्तर संगीत नाटक अकादमी अवार्ड प्राप्त करते हुए	25
6	बेगम अख़्तर जी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा जारी सिक्के और डाक टिकट	26
7	प्रथम बेगम अख़्तर पुरूस्कार प्राप्त करने वाली जरीना बेगम	26
8	बेगम अख़्तर जी के 103वें जन्मदिन पर गूगल ने डुडल बनाकर सम्मानित किया	28
9	बेगम अख़्तर सांगितिक प्रस्तुति के दौरान	28
10	बेगम अख़्तर जी की पहली रिकॉर्डेड ग़ज़ल का रिकॉर्ड	30
11	फिल्म रोटी (1942) में बतौर नायिका बेगम अख़्तर	31
12	सांगितिक प्रस्तुति के दौरान बेगम अख़्तर	32
13	बेगम अख़्तर अपनी शिष्या शांति हीरानंद के साथ	38
14	बेगम अख़्तर अपनी शिष्या रीता गांगुली के साथ	40
15	बेगम अख़्तर अपनी शिष्या अंजली बनर्जी के साथ	42
16	बेगम अख्तर अपनी शिष्या जरीना बेगम के साथ	43
17	बेगम अख़्तर अपनी शिष्या रेखा सूर्या के साथ	44
18	मेहदी हसन साहब	51
19	मेहदी हसन अपनी पत्नि सुरैया खानम के साथ	53
20	मेहदी हसन अपने पौते मुहम्मद मेहदी हसन के साथ	54
21	मेहदी हसन साहब की करांची पाकिस्तान में स्थित मज़ार	55
22	मेहदी हसन साहब तमघा–ए–इम्तियाज अवार्ड प्राप्त करते हुए	55
23	पाकिस्तान सरकार द्वारा मेहदी हसन साहब की स्मृति में जारी किये गये डाक टिकट	56
24	मेहदी हसन साहब की स्मृति में करांची पाकिस्तान में स्थित फैमिली पार्क	56
25	मेहदी हसन साहब के 91वें जन्मदिन पर गूगल द्वारा डुडल बनाकर सम्मानित किया	57
26	मेहदी हसन साहब प्रस्तुति देते हुए	59

क्रम सं.	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
27	मेहदी हसन बांग्लादेश की गायिका फिरदौसी रहमान के साथ गाना रिकॉर्ड करते हुए	61
28	मेहदी हसन साहब रियाज़ करते हुए	62
29	मेहदी हसन अपने शिष्य राजकुमार रिज़वी की गंडाबद्धी रस्म करते हुए	68
30	मेहदी हसन अपने शिष्य तलत अजीज के साथ	69
31	मेहदी हसन साहब अपने शिष्य परवेज़ मेहदी के साथ	70
32	मेहदी हसन पुत्र आसिफ मेहदी व पत्नी शकीला बेगम के साथ	71
33	मेहदी हसन अपने पुत्र इमरान मेहदी हसन के साथ	72
34	मेहदी हसन अपने पुत्र कामरान मेहदी हसन के साथ	73
35	मेहदी हसन अपने पुत्र आरिफ मेहदी हसन के साथ	74
36	गुलाम अली साहब	77
37	गुलाम अली उस्ताद जाकिर हुसैन के सामने तबला वादन करते हुए	80
38	गुलाम अली साहब अपने परिवार के साथ	81
39	गुलाम अली साहब का संगीत सफर	81
40	गुलाम अली साहब प्रथम स्वरलया ग्लोबल अवार्ड प्राप्त करते हुए	84
41	गुलाम अली दुबई के प्रिन्स द्वारा लाइफ टाईम अचीवमेन्ट अवार्ड प्राप्त करते हुए	84
42	गुलाम अली साहब की गायकी	85
43	गुलाम अली अपने शिष्य जावेद अली के साथ	96
44	गुलाम अली अपनी शिष्या पराग राय की गंडाबद्धी की रस्म अदा करते हुए	98
45	गुलाम अली अपने बेटे आमिर गुलाम अली व पोते नाज़िर गुलाम अली के साथ	99
46	गुलाम अली अपने शिष्य शमून फिदा की गंडाबद्धी रस्म अदा करते हुए	100
47	गुलाम अली अपने शिष्य सुशील चावला के साथ	101
48	जगजीत सिंह	105
49	जगजीत सिंह अपने पिता अमरसिंह धीमन के साथ	106
50	जगजीत सिंह और चित्रा सिंह की जोड़ी की पहचान ''द अनफोरगेटेबल्स''	109
51	जगजीत सिंह पत्नी चित्रा एवं बेटे बाबू के साथ	110
52	जगजीत सिंह गायिका लता मंगेशकर के साथ ''सज़दा'' कैसेट रिलीज़ करते हुए	110

क्रम सं.	विषयवस्तु	पृष्ठ सं.
53	जगजीत सिंह का संगीत सफर	112
54	जगजीत सिंह गायिका आशा भोंसले जी के साथ रिकॉर्डिंग के दौरान	113
55	जगजीत सिंह राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम साहब से पद्म भूषण प्राप्त करते हुए	116
56	जगजीत सिंह जी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकट	116
57	जगजीत सिंह पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी साहब के साथ	117
58	जगजीत सिंह को गुगल ने डुडल बनाकर सम्मानित किया	117
59	जगजीत सिंह की गायिकी	118
60	जगजीत सिंह अपने शिष्य घनश्याम वासवानी के साथ	125
61	जगजीत सिंह अपने शिष्य अशोक खोसला के साथ	126
62	जगजीत सिंह अपने शिष्य तौसीफ़ अख्तर के साथ	127
63	जगजीत सिंह अपने शिष्य जसविंदर सिंह के साथ	128
64	जगजीत सिंह अपने शिष्य विनोद सहगल के साथ	129

प्रथम अध्याय

ग़ज़ल की उत्पत्ति व विकास

प्रथम अध्याय

ग़ज़ल की उत्पत्ति व विकास

"हिंदी, उर्दू में कहो या किसी भाषा में कहो"
बात का दिल पे असर हो तो ग़ज़ल होती है।"

विजय वातें

"भारतीय संस्कृति देशी तथा विदेशी ताने–बाने से निर्मित बहुरंगी वस्त्र है। भारतीय संगीत का इतिहास ऐसी ही समन्यवयकारी प्रवृत्तियों की विराट चेष्टा है। भारतीय संस्कृति के समान ही ललित कलाओं की भी यह प्रकृति हैं कि वे बाह्य कलाओं को शीघ्र ही आत्मसात कर लेती है। फिर चाहे गीत हो, वाद्य हो, नृत्य हो। भारतीय इतिहास में मध्यकाल से संगीत की प्रत्येक विधा हिंदू–मुस्लिम सामंजस्य की प्रतीक हैं, इसी सामंजस्य का एक रूप है, "ग़ज़ल गायिकी"[1]

(अ) ग़ज़ल का सामान्य अर्थ एवं विभिन्न परिभाषाएँ –

"भारतीय काव्य जगत एवं संगीत जगत को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रचना ग़ज़ल है।" सामान्यतया ग़ज़ल को हुस्न, इश्क और जवानी का हाल बया करने वाली अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता रहा है। 'ग़ज़ल' का अर्थ 'कातने–बुनने' से भी लिया गया है। कहा जाता हैं कि ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति "ग़जाल" शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है "हरिण", ग़ज़ल मूलतः एक आत्मनिष्ठ व व्यक्तिपरक काव्य विधा है।[2]

ग़ज़ल मूलतः फारसी भाषा की काव्यगत शैली है, तथा महोब्बत के जज़्बातों की अभिव्यक्ति है। महोब्बत का अर्थ केवल इंसानी प्रेम से ही नहीं हैं, बल्कि सर्वशक्तिमान ईश्वर जो इस सृष्टि के पालनकर्ता है, उनके प्रति असीम प्रेम से भी है। फारसी साहित्य में इस बात की पुष्टि मिलती हैं कि फारसी साहित्य में "इश्के हकीकी" "आलौकिक प्रेम" के नाम से जाना जाता है, वहीं "इश्के मज़ाजी" को लौकिक प्रेम के नाम से जाना जाता है तथा ग़ज़ल एक

[1] डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजपेय / ग़ज़ल अंक / भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल / पृ. 9
[2] डॉ. प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 1

फारसी भाषा की काव्यगत शैली है, जिसका प्रयोग लौकिक व परलौकिक दोनों ही प्रेम को दर्शाने के लिए किया गया है।[3]

अरबी–फारसी की परम्पराओं को मान्यता देने वाले ग़ज़ल को 'सुखन–बज़ना' अर्थात् स्त्रियों के बारे में बात करना या आशिक, माशूक की बातचीत मानते है।[4]

वस्तुतः ग़ज़ल पढ़ने की चीज है। शायर इसे तरन्नुम में पढ़ते है। संगीत में अलग से ग़ज़ल नाम की कोई विधा नहीं है। सिर्फ एक अंदाज है उसको गाने का भाव के अनुकूल धुन बनाकर उसे गा लिया जाता है। धुन राग पर आधारित हो सकती हैं और नहीं भी किंतु यह स्पष्ट हैं कि तरन्नुम में पढ़ने की अपेक्षा जब ग़ज़ल स्वरबद्ध होकर किसी गायक के मधुर कंठ से निकलती है, तब उसके आनंद में असीम वृद्धि हो जाती है।[5]

"ग़ज़ल प्रतिकूल व अनुकूल हर तरह के मानवीय अनुभवों की बारिकीयों को बहुत ही उम्दा तरीके से बयान करती है। गजल एक ज़रिया हैं, जो जिंदगी के हर रंग को बया करती है। चाहे दुख हो या सुख, संयोग–वियोग आदि।" ग़ज़ल के संबंध में विभिन्न विद्धानों ने कई परिभाषाएँ दी है। जो कि ग़ज़ल का स्वरूप स्पष्ट करने में निश्चित तौर पर सहायक सिद्ध होगी, जिनका विवरण निम्न प्रकार है।[6]

"मिर्जा गालिब" – ने ग़ज़ल के बारे में कहा था। **"मतलब हैं नाम औ गंध वाले गुफतगु में काम चलता नहीं है। दश्न ओ खंजर कहे बगैर, हर चन्द हो मुशहिदु–ए–हक की गुफतगु बनती नहीं हैं बाद सागर कहे बगैर**" अर्थात् ग़ज़ल को जवानी का हाल बयान करने वाली और माशूक की संगति व इश्क का जिक्र करने वाली अभिव्यक्ति कहा गया है।[7]

महाकवि शंकर ने ग़ज़ल को "**राजगीत**" कहकर सम्बोधित किया है।[8]

मशहूर शायर फिराक गोरखपुरी जी लिखते है **"ग़ज़ल महबूब से बातचीत करने को कहते है।"**[9]

---

[3] रौशन भारती / ग़ज़ल और अमीर खुसरों / संगीत पत्रिका / पृ. 34
[4] अब्बासी नूरनबी / ग़ज़ल एक सफ़र / पृ. 68
[5] प्यारे लाल श्रीमाल / ग़ज़ल व उसका संगीत पक्ष / संगीत पत्रिका / पृ. 9
[6] फिराक गोरखपूरी / कामरूप / पृ. 1
[7] शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / पृ. 11
[8] शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / पृ. 11
[9] फिराक गोरखपूरी / कामरूप / पृ. 13

बशीर बद्र जी ने बहुत ही सुंदर अंदाज में ग़ज़ल को परिभाषित किया है। "**ये शबनमी लहजा है आहिस्ता ग़ज़ल पढ़ना, तितली की कहानी है फूलों की जुबानी हैं**" यह शे'र ग़ज़ल के नूर को बया कर रहा है।"[10]

शरतचंद्र परांजपेय जी के शब्दों में ग़ज़ल मूलतः फारसी भाषा की काव्यगत शैली है। इसमें प्रणय प्रधान गीतों का समावेश होता है।[11]

"**गुलहा–ए–परीशाँ**" में खुर्शीद नबी अब्बासी ने कहा हैं कि ग़ज़ल उर्दू शायरी का ही एक रूप है।"[12]

Willard साहब ने ग़ज़ल के लिए कहा है। "The gazal has its theme, a description of beauties of the beloved object, minutely, enumerated such as the green beared moles, ringlets, size, shape and C as will as his cruelties and indifferences and the pain endured the lover."[13]

डॉ. अस्थाना ने अपनी पुस्तक "**ग़ज़ल उद्भव व विकास**" में परिभाषित करते हुए लिखा हैं कि ग़ज़ल वह गेयात्मक काव्य विधा है, जिसमें प्रेम की विभिन्न दशाओं को शब्द, चित्र शेरों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।[14]

दुर्गेश नंदिनी ने अपनी पुस्तक "**भारतीय काव्य शास्त्र के ग़ज़ल की संकल्पना**" में परिभाषित करते हुए लिखा हैं कि ग़ज़ल ऐसे शेरों के संकलन को कहते हैं जो किसी शायर द्वारा एक छंद में तथा एक रदीफ में बोले गये हो तथा एक शायर द्वारा पेश किए जाए।"[15]

उपरोक्त लिखित परिभाषाओं से ग़ज़ल के स्वरूप को ओर अधिक समझने में सहायता मिलती है।

---

[10] आज के प्रसिद्ध शायर बशीर बद्र / कन्हैयालाल नंदन।

[11] डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजपेय / भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल / संगीत पत्रिका / पृ. 10

[12] खुर्शीद नबी, अब्बासी / गुलहा–ए–परीशाँ / पृ. 12

[13] शोध ग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / पृ. 58

[14] डॉ. रोहिताश्व अस्थाना / हिंदी ग़ज़ल उद्भव व विकास / पृ. 22

[15] बलवंत पुराणिक / सभ्य समाज में ग़ज़ल का औचित्य / पृ.1

(ब) ग़ज़ल की उत्पत्ति –

"ग़ज़ल का समारम्भ ईरान की भूमि पर हुआ, ईरान में फारस नामक एक प्रांत है। अतः फारस के नाम पर इस देश की भाषा को फारसी कहा जाने लगा।"[16]

ग़ज़ल मूलतः फारसी शब्द है जिसका सामान्य सा अर्थ हैं "**मुहब्बत के जज़्बातों को व्यक्त करने वाली काव्य विधा।"** ऐसा माना जाता हैं कि ग़ज़ल की उत्पत्ति फारस के लोक–संगीत से हुई है। फारस से ही इसका प्रसार फिर अरब, मिश्र, तथा भारत आदि देशों में हुआ है।[17]

कालान्तर में ईरान पर अरब शासकों का अधिकार हो जाने से फारसी पर अरबी शब्दों का सम्मिश्रण हो गया। अरबी भाषा में ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ 'कातना–बुनना' होता है। अरबी साहित्य में प्रेम अवश्य मिलता है, किंतु ग़ज़ल के नाम से नही बल्कि तशबीब अथवा नसीब के नाम से , जो वास्तव में कसीदे का ही अंश है। अरबी भाषा में "कसीदा" काव्य की एक विधा थी जो किसी की प्रशंसा से संबंधित होती थी तथा तशबीब व नसीब का अर्थ ग़ज़ल के समान ही यौवन और प्रेम की बातें करना होता था।[18]

ग़ज़ल के उद्‌भव के संबंध में एक ऐतिहासिक तथ्य मिलता हैं, जिसे कई विद्धानों ने मान्यता दी है, तकरीबन चौदह सौ वर्ष पहले अरब के सामन्ति समाज में तत्कालीन बादशाहों और अमीरों की विरूदावली बखान के लिए अवतरीत काव्य रूप, तशबीब या कसीदा से प्रेम और श्रृगांर संबंधी शेरों को निकालकर एक जगह इक्कठा कर देने के परिणामस्वरूप ही ग़ज़ल का प्रार्दुभाव हुआ।[19]

अरबी में 'कसीदा' नाम की एक विधा थी, जो किसी की प्रंशसा से संबंधित होती थी। कसीदे के तशबीब, गुरेज, मदह, दुआ यह चार भाग होते थे। कसीदा की शुरूआती पक्तियों को तशबीब कहा जाता था। तशबीब का अर्थ **"ग़ज़ल के समान ही यौवन और प्रेम की बाते करना होता था।"** कसीदाकार (राजाओं के मनोरंजन के लिए यह पक्तियाँ लिखते थे) जिनका आशयः प्रायः प्रेम और प्रंशसा की बात करना होता था। इसलिए "**तशबीब**" को प्रणयगीत कहा गया है।[20]

---

[16] डॉ. रोहिताश्व अस्थाना / हिंदी ग़ज़ल उद्‌भव व विकास / पृ. 9

[17] डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजपेय / भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल / पृ. 9

[18] रौशन भारती / ग़ज़ल और अमीर खुसरों / संगीत पत्रिका / पृ. 34

[19] डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजपेय / भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल / पृ. 9

[20] उर्दृ शायरी का मिजाज / वज़ीर आगाह / पृ. 194

डॉ. वजीर आगा ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा हैं कि ग़ज़ल के प्रारंभ के बारे में आम धारणा यह हैं कि उसने अरबी कसीदे के उस प्रारम्भिक भाग से जन्म लिया, जिसे तशबीब, नसीब या कौल (कसीदे में शुरू के शेर, जिनमें किसी घटना का वर्णन होता है।) ग़ज़ल नाम मिला। इससे स्पष्ट होता हैं कि ग़ज़ल अरबी कसीदे से उपजी है।

अरबी कसीदा जब ईरान में पहुँचा तब ईरान के कवियों ने "**तशबीब**" को कसीदे से अलग कर दिया और एक नया काव्य रूप निर्माण किया, जिसे ग़ज़ल नाम दिया। 10वीं शताब्दी में ईरान में रौदकी नामक कवि हुआ। रौदकी को फारसी का 'बाबा आदम' भी कहते है। कहा जाता हैं कि रौदकी ने कसीदे से तशबीब के हिस्से को अलग करके। उसको अपने तौर पर एक स्थायी विधा की हैसियत दी है, और उसका नाम ग़ज़ल रखा है।[21]

रौदकी से पहले भी शायद ग़ज़ल विधा का जन्म हुआ होगा, परन्तु इस संबंध में रौदकी के महत्व को अधिकतर विद्धानों ने स्वीकार किया है। रौदकी ने अपनी ग़ज़लों में प्रेम परक विषयों को ही स्थान दिया, इसलिए लम्बे अर्से तक ग़ज़ल में हुस्न, और इश्क का समावेश रहा होगा। ईरान में ग़ज़ल को सम्मान रौदकी ने दिलाया। फारसी में रौदकी से लेकर सादी, शीराजी तक ग़ज़ल की विशाल परम्परा मिलती है। रौदकी की ग़ज़ल में अरबी भाषा का सम्मिश्रण था। उस समय लिखी गयी ग़ज़लों की भाषा अरबी–फारसी की जटिलता का सम्मिश्रण था। ग़ज़ल भले ही अरब में उत्पन्न हुई लेंकिन उसे सजाने संवारने का कार्य ईरान में हुआ।[22]

ग़ज़ल के उद्भव के संबंध में कुछ विद्धानों का मानना हैं कि अरबी कसीदे और उसकी तशबीब से ग़ज़ल की उत्पत्ति नहीं हुई। उनका कहना हैं कि ईरान में (यानी फारसी में) जो ग़ज़ल का दौर शुरू हुआ उसमें काफी समय पहले से काव्य का एक गीत रूप प्रचलित था। जिसे 'चीमा' कहते थे। और उसका गठन व ढाँचा ही नहीं बल्कि उसकी भाव–वस्तु भी ग़ज़ल से मिलती जुलती थी। वे मानते थे कि ग़ज़ल उसी 'चीमा' की देह से निकली।[23]

वहीं कुछ विद्धानों की ग़ज़ल की उत्पत्ति के संबंध में मान्यता हैं कि उर्दु शायरी, फारसी शायरी का अनुकरण हैं और फारसी शायरी अरबी का अनुकरण है। और अरबी शायरी में कसीदों (प्रंशसा गीत) को तशबीब (आरंभ) में ग़ज़ले अर्थात् कसीदों के आरंभ में आंशिकाना (प्रेमपरक) विषय भी लिखे जाते थे। इसकों ग़ज़ल तथा तग़ज़ल कहा जाता था। यह तम्हीद

---

[21] इबादत बरेलवी / ग़ज़ल और मुतालए ग़ज़ल / पृ. 114

[22] डॉ. शिव शंकर मिश्रा / हिंदी ग़ज़ल की भूमिका / पृ. 22

[23] गरिमा सिंह / समकालीन उर्दु हिंदी ग़ज़ल परम्परा और विकास पृ. 22

(आरंभ या भूमिका) फारसी कवियों ने इस अंश को ग़ज़ल का एक स्थायी काव्यरूप बना दिया। स्पष्ट हैं कि अरबी के अनुकरण से ग़ज़ल फारसी से उर्दु में आई जो प्रेम भाव को व्यक्त करने का स्थायी काव्य बन गयी।[24]

विभिन्न विद्धानों की मान्यताओं को परिलक्षित कर इस बात को स्वीकारना होगा कि ग़ज़ल की उत्पत्ति ईरान में हुयी, लेकिन ग़ज़ल स्वतंत्र रूप से फारसी काव्य की एक विधा है। अरब में कसीदे की तशबीब के रूप में ग़ज़ले अस्तित्व में थी।[25]

इस तशबीब को ग़ज़ल से अलग करने का काम शायद ईरान में हुआ होगा, लेकिन यह कहा जा सकता हैं कि ईरान की भूमि पर आने के बाद ही फारसी कवियों ने ग़ज़ल का स्वतंत्र रूप गढ़ा होगा। निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता हैं कि ग़ज़ल की उत्पत्ति के बारे में कोई भी मान्यता रही हो लेकिन यह कहना गलत न होगा कि ग़ज़ल एक शुद्ध भावात्मक व संप्रेषणात्मक अभिव्यक्ति है। प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम जितना अच्छा ग़ज़ल हो सकती हैं उतनी अन्य कोई विधा नहीं हो सकती।[26]

(स) भारत में ग़ज़ल गायिकी का विकास –

ग़ज़ल ईरान से विकास यात्रा तय कर भारत तक पहुँची

[24] डॉ. शिव शंकर मिश्रा / ग़ज़ल की भूमिका / पृ. 22

[25] डॉ. शिव शंकर मिश्रा / ग़ज़ल की भूमिका / पृ. 24

[26] रवि प्रताप उपाध्याय कार्तिक / खुशबु ए ग़ज़ल और ताल वाद्य कचहरी ने सुर ताल का हिसाब / पृ. 106 / छायानट 2008

"ग़ज़ल भारत की मिट्टी में उगाया हुआ वह ईरानी पौधा है, जिसका बीजारोपण मुस्लिम काल में हुआ और जिसकी जड़े यहाँ जमती गयी, शाखे फैलती गयी और यहाँ की आबो–हवा में ग़ज़ल के रंग–बिरंगे फूल खिलते गये।"[27]

भारत में ग़ज़ल शैली का प्रसार करनें में सूफी संतों का बड़ा योगदान रहा है, इन सूफी संतों ने विभिन्न धर्मों तथा पंथों के बीच ऐक्य स्थापित करने का प्रयास किया।[28]

भारत में ग़ज़ल तथा कव्वाली के प्रर्वतन का श्रेय 13 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती को है। उन्होंने हिंदी व फारसी में कई ग़ज़ले लिखी।[29]

ग़ज़ल को प्रतिष्ठित करने में खिलजी और तुगलक साम्राज्य के राज कवि 'अमीर खुसरो' का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे राजकवि होने के साथ–साथ अच्छे ग़ज़ल गायक भी थे। अमीर खुसरो को उर्दु, हिंदी **ग़ज़ल के बाबा आदम** या **आद्य ग़ज़लकार** का सम्मान प्राप्त हुआ है। खुसरो ने (ई. स. 1243 से 1324) संवत तक उर्दु छंदों व शब्दों का तथा हिंदी छंदों एवं शब्दों का प्रयोग किया है।[30]

"घी के दियाना बारो, हमरे घर
मुहम्मद आये
चंदा सा मुखडा, नूर सा चेहरा दमके
कुतुब तारा माथे पे चमके"

खुसरों रचित कव्वालियों में खुसरों निजाम के **बलि–बलि जइहौं** जैसे हिंदी शब्द मिलते है, खुसरो स्वंय फारसी के कवि थे लेकिन उतना ही अधिकार ब्रजभाषा और भारतीय संगीत पर भी था। वे यहीं की मिट्टी में पैदा हुये थे। उनका जन्म (उत्तर प्रदेश) के ऐटा जिले के पटियाला ग्राम में हुआ था इसलिए हिन्दी का तो ज्ञान होना स्वाभाविक था।

"सईद नफीज़" द्वारा संपादित 'दीवाने–ए–कामिल' अमीर–खुसरो में देहलवी की फारसी ग़ज़लों की संख्या 1726 बतलाई गयी है। खुसरो की भाषा 'देहलवी' थी। कवि ने अपना परिचय देते हुये लिखा हैं कि वह तुर्की हिन्दुस्तान है, हिंदवी उसकी भाषा है।[31]

---

[27] डॉ. शिव शंकर मिश्रा/हिंदी ग़ज़ल की भूमिका/पृ. 22

[28] कृष्णस्वरूप/ग़ज़ल, ग़ज़ल की भाषा और ग़ज़ल गायिकी/संगीत पत्रिका/पृ. 3

[29] डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजपेय/भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल/संगीत पत्रिका/पृ. 10

[30] डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजपेय/भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल/संगीत पत्रिका/पृ. 10

[31] कृष्ण स्वरूप/ग़ज़ल, ग़ज़ल गायिकी/पृ. 11

खुसरों अरबी–फारसी, तुर्की और हिंदी के बहुज्ञाता कवि थे उनकी पहेलियाँ, मुर्कीया, दोहे और ग़ज़ले प्रसिद्ध है।[32]

"प्रोफेसर सिराजुद्दीन आजर के संग्रह में सुरक्षित 13वीं हिजरी के प्रारंभ में लिखी गयी ग़ज़ल को 'हिंदी की प्रथम' ग़ज़ल होने का गौरव प्राप्त हुआ है इस ग़ज़ल के शोधकर्ता महमूद शीरानी है।"[33]

भारतीय इतिहास का दिल्ली सल्तनत काल इसका प्रवेश काल माना जाता है। मुगल काल संगीत व ललित कलाओं का अगस्टन युग माना गया है। मुगल काल में ग़ज़ल को विकसित होने का पूर्ण अवसर मिला। बाबर, हुमाँयू, अकबर, शाहजँहा आदि मुगल सम्राट संगीत प्रेमी थे। अकबर के दरबार में सैयद खाँ, नोहार तथा दौलत आफजू माने हुये ग़ज़ल गायक थे। इसी प्रकार शाहजहाँ के समय ग़ज़ल गायकों में रोजा और अकबर प्रमुख थे। औरंगजेब के समय संगीत के विकास की गति एकदम धीमी हो गयी। गायक–वादक दिल्ली से चलकर लखनऊ, रामपुर, हैदराबाद आदि प्रादेशिक शासकों के आश्रय में चले गए। इन शासकों के राज दरबारों का आलम विलासपूर्ण था। दादरा, ठुमरी जहाँ गाए जा रहे थे वहीं ग़ज़ल ने भी प्रवेश किया। नृत्य के भाव प्रदर्शन के साथ ग़ज़ल गान पसंद किया जाने लगा। दिल्ली और लखनऊ ग़ज़ल गायिकी के प्रमुख केन्द्र बन गये। वाजिद अली शाह अवध के नवाब के समय दो महिला गायिकायें प्रसिद्ध थी घूमन और हसीना। वाजिद अली शाह के वंशज प्यारे साहब भी अच्छे ग़ज़ल गायक थे।[34]

18वीं सदी के प्रारंभ में दिल्ली उर्दु साहित्य का केन्द्र हो गया था। अंतिम मुगल बहादुर शाह जफ़र और उनके आश्रित गालिब और जौक ग़ज़ल के मशहूर शायर थे। आगे चलकर 19वीं सदी के मध्य में अवध के नवाब वाजिद अली शाह की रंगीन रूचियों से, ठुमरी व ग़ज़ल को बढ़ावा मिला। धीरे–धीरे घराने के गायक भी ग़ज़ले गाने लगे जैसे– उस्ताद फैयाज खाँ भी ग़ज़ल गाते थे। पटियाला घराने के स्वर्गीय उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ ने भी कई ग़ज़लें गाई हैं, धीरे–धीरे भारत में ग़ज़ल का विकास फिल्मी जगत में भी होने लगा। राजा मेहदी अली खाँ, साहिर लुधियानवी मशहुर शायर थे। तलत महमूद, के. एल. सहगल, नूरजहाँ, लता मंगेशकर, ने अपने भावपूर्ण गायन से इस शैली को लोकप्रिय बनाया। बाद में कुछ स्वतंत्र गायक हुये जिन्होंने ग़ज़ल गायिकी का प्रचार–प्रसार कर प्रसिद्धी दिलायी जैसे– मेहदी हसन, जगजीत सिंह, बेगम अख्तर, गुलाम अली, पंकज उदास, हरिहरन, तलत अज़ीज जिन्होंने ग़ज़ल गायिकी को अपना पेशा बनाकर श्रोताओं तक पहुँचाया।

---

[32] कृष्ण स्वरूप / ग़ज़ल, ग़ज़ल गायिकी / पृ. 11

[33] शोध ग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / पृ.11

[34] डॉ. श. श्री. परांजपेय / भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल / संगीत पत्रिका / पृ. 11

(द) स्वतंत्रता से पूर्व ग़ज़ल गायिकी का स्वरूप –

कला एक सामाजिक क्रिया है, और समाज से उसका अलग कोई अस्तित्व नहीं है। यह तो समाज की मानसिकता से निर्धारित होती है, और मानसिकता समाज की भौतिक स्थिति से तय होती है, कला समाज के अंदरूनी आर्थिक संबंधों और उससे पैदा हुए कई वर्गों के आपसी रिश्तों का नतीजा होता है, समाज का आर्थिक ढाँचा हमेशा एकसा नहीं रहता।[35]

अपने अस्तित्व को कायम रखने के लिए कलाकार लगातार संघर्ष करता रहता है, और अपनी कला में प्रगति लाने की कोशिश करता है। इसी प्रगतिशीलता के कारण कला के विकास में परिवर्तन होता जाता है। यहीं बात ग़ज़ल के विकास के पक्ष में भारत में स्वतंत्रता पूर्व व स्वतंत्रता के बाद के स्वरूप, गायिकी की रीति, प्रचार–प्रसार के संबंध में भी लागू होती है। स्वतंत्रतापूर्व गज़ल गायिकी के स्वरूप में भी काल, परिस्थिति, जनरूचि के अनुसार कुछ परिवर्तन आए जिसका विस्तृत अध्ययन निम्न प्रकार –

स्वतंत्रता से पूर्व ग़ज़लें केवल मुशायरों में ही पढ़ी जाती थी और मुशायरे ज्यादातर दरबारों में हुआ करते थे। जहाँ आम जनता एक तरह से नहीं हुआ करती थी। इसके अतिरिक्त पहले जो शायर हुआ करते थे, वे ही अपनी ही लिखी ग़ज़ल पढ़ते थे। आज–जैसा माहौल नहीं था कि दूसरों की लिखी ग़ज़ल कोई और भी गा रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा शायरों की ग़ज़लें कोठों पर सुनी जा सकती थी। क्योंकि वे ख्याति प्राप्त शायर हुआ करते थे, जैसे गालिब, सौदा, मोमिन, ज़फर, अनीस या दबीर इत्यादि। ग़ज़लों में प्रेम की अभिव्यक्ति अधिक रहा करती थी, लेकिन वे ऊँचे स्तर की हुआ करती थी, उनमें छिछलापन नहीं था, कुछ वज़न था और जीवन का तथ्य भी हुआ करता था। स्वतंत्रता पूर्व की गायकी भावप्रधान होते हुए भी परम्परागत थी।[36]

सूफी संतों के आश्रमों से निकली ग़ज़ल गायकी, जिसकी परवरिश पवित्र आध्यात्मिकता के बीच हुई थी, धीरे–धीरे राज दरबारों में आ गई और वातावरण के मिजाज़ में भी अंतर आया, जो ग़ज़लें कभी ईश्वर की महिमा में गाई जाती थी, वही बादशाह, राजा, महाराजाओं की महिमा में उनको प्रसन्न करने के लिए गायी जाने लगी। धीरे–धीरे ग़ज़ल का रंग बदलता गया, कही–कही तो यह अश्लीलता की सीमाओं को भी पार करने लगी। ग़ज़ल की गायकी अति शुद्र प्रकृति की होने के कारण गायक लोग इसे गाने में हिचकते थे। शायद यही सोचकर कि कहीं उनकी प्रतिष्ठा पर आँच न आए।[37]

---

[35] कृष्ण स्वरूप / ग़ज़ल, ग़ज़ल की भाषा और ग़ज़ल गायिकी / संगीत पत्रिका / पृ.5

[36] कृष्ण स्वरूप / ग़ज़ल, ग़ज़ल की भाषा और ग़ज़ल गायिकी / संगीत पत्रिका / पृ.7

[37] कृष्ण स्वरूप / ग़ज़ल और ग़ज़ल गायिकी / छायानट पत्रिका / पृष्ठ 61

कई तथ्यों से तो यह भी पता चला हैं कि अधिकांश गायिकाएँ तवायफें थी। जो कोठों पर रहकर लोगों का संगीत से मनोरंजन करती थी। अतः उन्होंने उसी प्रकार का गायन सीखा होगा, जो जनसाधारण में अधिक लोकप्रिय रहा होगा, इन्हीं ग़ज़लों को गाकर तवायफें अपने उस्तादों की खिदमत करती थी और अपना जीवन निर्वाह करती थी। यही कारण है कि इस काल में ग़ज़ल गायन स्त्री कंठ से सुनने को अधिक मिलता है।[38]

निम्नलिखित गायिकाएँ इस काल में हुई।

जैसे– (1) जद्दन बाई (2) मुमताज बेगम (3) मिस सत्यवती (4) जोहरा बाई (5) आगरे वाली (6) बेनजीर बाई लखनऊ वाली (7) मिस उषा रानी (8) मल्लिका पुखराज

स्वतंत्रता से पूर्व काल की ग़ज़ल गायकी पर बहुत कुछ ठुमरी, दादरा, टप्पा और कव्वाली शैलियों का प्रभाव रहा। इस काल में ग़ज़ल की बंदिश अंधिकाशतः किसी एक गायन शैली से प्रभावित तथा रागों पर आधारित होती थी। मुख्यतः कहरवा, दादरा, रूपक और कभी–कभी दीपचंदी तालों का भी प्रयोग किया जाता था। ग़ज़ल अधिकांशतः स्त्री कंठ से मुखरित होती थी। यदा–कदा तफरीह के बतौर पर पुरूष ग़ज़ल गा लिया करते थे।

ग़ज़ल की बंदिशें लगभग एक सुनिश्चित ढांचे में ढली होती थी, और उनकी बंदिशों के अन्तर्गत आलाप–तानों का प्रयोग भी करीब–करीब एक ही पैटर्न को लिये होता था। अधिकांशतः ताल वाद्य का प्रयोग स्थायी की प्रस्तुति के साथ किया जाकर, अंतरे के साथ कम ही होता था। संगत वाद्यों में हारमोनियम, सारंगी, तबले का ही प्रयोग अधिक प्रचलित था। अंतराल संगीत लगभग नहीं के बराबर होता था। ग़ज़ल के शब्दों के शुद्ध और सहीं उच्चारण के प्रति गायक–गायिकाएँ अधिक सावधान नहीं रहते थे। निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है। स्वतंत्रता पूर्व ग़ज़ल गायिकी केवल राजदरबारों में ही रही, उसके बाद कोठों पर तवायफों के द्वारा आजिविका कमाने के उद्देश्य से गायी जाने लगी।[39]

(क) स्वत्रंत्तोतर काल में ग़ज़ल गायिकी का स्वरूप –

हिन्दुस्तानी संगीत की हर विधा में स्वतंत्रता के पश्चात् काफी कुछ परिवर्तन हुए है, जिसका एक मुख्य कारण राजदरबारों का समाप्त हो जाना और वहाँ लगने वाली संगीत की महफिलों का लगभग बंद हो जाना था। दूसरा स्वतंत्रता के बाद तवायफों के कोठों पर लगने वाली संगीत की महफिलों का समाप्त हो जाना।[40]

---

[38] डॉ. प्रेम भंडारी/हिंदुस्तान संगीत में ग़ज़ल गायिकी/पृ. 62
[39] डॉ. प्रेम भंडारी/हिंदुस्तान संगीत में ग़ज़ल गायिकी /पृ. 69
[40] डॉ. प्रेम भंडारी/हिंदुस्तान संगीत में ग़ज़ल गायिकी/पृ. 71

स्वतंत्रता के बाद गायी ग़ज़लों में हुस्नों, इश्क और शराब के साथ–साथ ऐसी भी ग़ज़ले गायी जाने लगी, जिनमें आम आदमी की दैनिक जरूरतों, परेशानियों, हँसी–खुशी, आपसी रिश्तों और जीवन के दर्शन के बारे में भी भरपूर जिक्र किया गया है। आम बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग बहुतायत से हुआ। ग़ज़ल की भाषा क्लिष्ट नहीं रही।[41]

इस समय जनमानस भी खुले तौर से संगीत के संपर्क में आने लगा था और जनमानस की समग्र सामाजिक व सांगितिक धारणा का परोक्ष प्रभाव हिन्दुस्तानी संगीत की सभी विधाओं पर पड़ने लगा था।[42]

सांगितिक बंदिशों में शुद्ध रागों के प्रयोग के साथ–साथ, चयनित रागों में विवादी स्वरों का प्रयोग भी बड़ी खूबी से किया जाने लगा। ग़ज़ल की सांगितिक बंदिशें पहले ठुमरी, दादरा, टप्पे तथा कव्वाली से प्रभावित रहती थी, परन्तु इस नये दौर में रागों के शुद्ध स्वरूप को ध्यान में रखते हुए भी ऐसी बंदिशें बनायी जाने लगी जो दादरा, ठुमरी, ख्याल, टप्पा, कव्वाली की तरह नहीं होकर सीधी–सीधी किंतु सांगितिक तत्वों से युक्त बंदिश होती थी।[43]

ग़ज़ल की बंदिश करते समय अथवा धुन बनाते समय गायक शब्दों को उनसे उत्पन्न भावों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त राग का चयन करता है, जिससे उसकी भावाभिव्यक्ति उचित रूप में हो। स्वतंत्रता के बाद निर्मित ग़ज़लें अधिकतर यमन, तोड़ी, भैरवी, बागेश्री, दरबारी, भीमपलासी, पहाड़ी आदि रागों में हुई। ताले कहरवा, दादरा प्रयुक्त होती है।[44]

मूल ताल के परिवर्तित रूप ज्यादातर इस काल की ग़ज़लों के साथ बजाये जाने लगे। इस काल की ग़ज़लों में शब्दों के उच्चारण पर सर्वाधिक ध्यान दिया गया। संगत वाद्यों में विभिन्न प्रकार के देशी तथा विदेशी वाद्य यंत्रों का प्रयोग बहुतायत से होने लगा।

शेर व मतले के बीच अंतराल संगीत बजाया जाने लगा, जिससे गायक व गायिका सांस ले सके।[45] स्वतंत्रता के बाद ग़ज़ल गायन शैली बहुत विकसित हुयी।

स्वतंत्रता के बाद की ग़जलों में एक नया प्रयोग यह भी हुआ, कि सांगितिक प्रस्तुति स्त्री और पुरूष दोनों की आवाजों में की जाने लगी अर्थात् ग़ज़ल भी फिल्मी गीतों की तरह दो आवाजों में पेश की जाने लगी। जैस– राजेन्द्र मेहता–नीता मेहता की जोड़ी ने सबसे पहले

---

[41] डॉ. प्रेम भंडारी/हिंदुस्तान संगीत में ग़ज़ल गायिकी/पृ. 73
[42] रामावतार वीर/भारतीय संगीत का इतिहास/पृ. 68
[43] प्रेम भंडारी/हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी/पृ. 73
[44] प्रेम भंडारी/हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी/पृ. 73
[45] प्रेम भंडारी/हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी/पृ. 74

कदम रखा। इसके बाद जगजीत सिंह–चित्रा सिंह, राजकुमार रिज़वी–इन्द्रावी रिज़वी, भूपेन्द्र–मिताली आदि।[46]

इस समय बोलती फिल्मों का दौर भी तेजी से आगे बढ़ने लगा था, तथा उसमें परम्परागत हिन्दुस्तानी शास्त्रीय व उपशास्त्रीय शैलियों से कुछ भिन्न अंदाज का संगीत प्रस्तुत किया जाने लगा था, जो संगीत की जटिलता के सरलीकरण के दृष्टिकोण से प्रभावित था। ग़ज़ल में सांगितिक प्रस्तुति की दृष्टि से आने वाले इस परिवर्तन की झलक स्वतंत्रता से कुछ समय पहले बेगम अख़्तर, मल्लिका पुखराज आदि ग़ज़ल गायिकाओं की ग़ज़ल में देखने को मिलती है। लेकिन इसका स्पष्ट स्वरूप स्वतंत्रता के पश्चात् की ग़ज़ल गायिकी में ही दिखाई देता है।[47]

स्वतंत्रता के पश्चात् फिल्मी संगीत में भी ग़ज़ल की प्रधानता बढ़ी, स्वतंत्रता के तत्काल बाद ही कई फिल्मों में ग़ज़ल शैली को अपनाया गया, जिन्हें कुंदन लाल सहगल, तलत महमूद इत्यादि गायकों ने गाया। ग़ज़लों को फिल्मों के माध्यम से अधिक लोकप्रिय बनाने में मदद मिली।[48]

ग़ज़ल गायकी आज से 60 वर्ष पूर्व लगभग कोठों और गाने वालियों के साथ जुड़ी रही, यहाँ तक की उस्ताद बरकत अली खाँ जैसे धुरंधर गवैये का गाना भी लोग कोठों पर सुनने जाते थे। ग़ज़ल गायकी को कोठों से घर–घर तक पहुँचाने का श्रेय ग्रामोफोन, बेगम अख़्तर तथा कुंदन लाल सहगल को जाता है।[49]

सामान्य रूप से ग़ज़ल गायिकी का जो दौर शुरू हुआ वह बेगम अख़्तर के जमाने से ही मानना उचित होगा। संगीत का बाहरी रूप सादे से सादा होता चला गया तथा उसकी आत्मा हर रोज गहरी से गहरी ज्यादा गम्भीर होती चली गयी। बेगम अख़्तर की आखिरी ग़ज़लों की गायकी शास्त्रीय संगीत की गहराईयों को छुने वाली थी, तत्कालीन गायक, गायिकाओं ने भी उनका अनुकरण किया और नवीन कलाकारों के लिए ग़ज़ल गायन का मार्ग प्रशस्त किया। बेगम अख़्तर का यह अंदाज शोभा गुर्दु, कमला झरिया, शांति हीरानंद आदि की ग़ज़लों में स्पष्ट रूप से झलकता है।[50]

---

[46] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 76

[47] शोध ग्रंथ / ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / पृ. 22

[48] शोध ग्रंथ / ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / पृ. 22

[49] कृष्ण स्वरूप / ग़ज़ल और ग़ज़ल गायिकी / छायानट पत्रिका / पृ. 43

[50] रौशन भारती / ग़ज़ल और अमीर खुसरो / पृ. 36

इनके बाद मेहदी हसन साहब आए जो ग़ज़ल की दुनिया के बादशाह कहलाये। इन्होंने भी ग़ज़ल की अदायगी को एक नया रूप दिया तथा अपनी ग़ज़लों के माध्यम से रागदारी संगीत को प्रोत्साहित किया। स्वतंत्रता के बाद के गायकों में मेहदी हसन साहब की गायकी की छाप नज़र आती है। फिर इन्हीं से प्रभावित होकर जो गायक इस क्षेत्र में आये वे थे, जगजीत सिंह जी थोड़े दिन मेहदी हसन साहब को कोपी कर के गाया, लेकिन कुछ समय बाद ही अपनी गायिकी की एक अलग पहचान बनाकर ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में मील के पत्थर साबित हुए। इसी तरह गुलाम अली आए, जिनका नाम वर्तमान में हर जगह ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में चमकते तारे की तरह विद्यमान है। इन्होंने ग़ज़ल को गंभीर प्रकृति वाली गायिकी के ढाँचे से निकालकर चंचल प्रकृति के ढाँचे में समाहित किया। स्वतंत्रोत्तर काल में कई गायक आए किसी की गायकी में रागदारी थी, तो किसी की में आवाज की मधुरता तो, किसी की में शब्दों की सरलता जैसे– हरिहरन, असद मेहदी हसन, चंदन दास, पंकज उदास, तलत अजीज, राजकुमार रिज़वी इत्यादि।[51]

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है, कि स्वतंत्रता के पश्चात् ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में बहुत इज़ाफा हुआ। गायकों की संख्या भी लोकप्रियता की वजह से बढ़ी। स्वतंत्रता के बाद ग़ज़ल को सभी पंसद करते हैं चाहे वे उर्दु–भाषी हो या न हो मराठी, गुजराती, दक्षिण भारतीय सभी ग़ज़ल सुनना पसंद करते हैं। सभी प्रांत के लोग एक–दूसरे के निकट आए। इस दृष्टिकोण से यदि देखा जाए तो ग़ज़ल की बढ़ती लोकप्रियता यकीनन राष्ट्रीय एकता में सहायक रही।

(ख) ग़ज़ल गायकी : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन –

ग़ज़ल गायकी मूल रूप से दो तत्वों के संयोजन से मिलकर बनी है। (1) संगीत + (2) उर्दु काव्य। ग़ज़ल, जो मूल रूप में एक काव्यात्मक–साहित्यिक रचना है। संगीत के साथ संगठित होकर संगीत की एक विशिष्ठ शैली बन गई है और इस शैली ने उर्दु काव्य और संगीत दोनों ही कलाओं पर अपना पूर्ण आधिपत्य जमा लिया है। ग़ज़ल संगीत के बगैर सिर्फ काव्यात्मक अभिव्यक्ति के रूप में किताबों में सिमट कर रह जाती हैं यदि उसे स्वरों का आधार न मिलता। ग़ज़ल किताबों के दायरों से बाहर निकल कर जन–जन की जबान की अभिव्यक्ति व अनुभूति बन गई। स्वतंत्रोत्तर काल उर्दु काव्य और संगीत के बिना अधूरा है।[52]

---

[51] शोध ग्रंथ / 20वीं सदी में ग़ज़ल गायिकी का विकास / पृ. 87

[52] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 1

ग़ज़ल को उर्दु साहित्य में कविता का सबसे मुश्किल प्रारूप माना गया है। यही कारण है कि ग़ज़ल लिखना जितना मुश्किल है, उतना ही समझ पाना। ग़ज़ल के काव्य पक्ष के अभयन्तर देखा जाए तो ग़ज़ल विषय के अनुसार दो वर्गों में विभाजित की जा सकती है।

1. **तग़ज्जुल** – इसमें पूर्णतः लौकिक प्रेम को प्रधानता दी जाती है, नारी का सौंदर्य वर्णन ही प्रधान होता हैं लेकिन इसमें भी एक अंदाज होता है।

जैसे – "सांस लेती है, तो ज़मीन फिराक
जिसमें वो नाज़ से पुकारते है।"

2. **तसब्बुफ़** – उर्दु ग़ज़ल का सर्वोच्च, उत्कृष्ट रूप तसब्बुफ़ में मिलता है इसमें सूफी–वाद का पूर्ण प्रभाव है। सूफी प्रेम मार्गी थे। रहस्यवाद और अन्तःकरण में अद्वैत का समन्वय उनके प्रेम का प्रधान गुण था।

अतः सूफीवाद का प्रभाव होने से ग़ज़ल को रहस्यवाद एवं अद्वैत की अवस्थाओं से गुजरने व तसब्बुफ़ से ओत–प्रोत होने पर इन ग़ज़लों में प्रेम का वही रूप रहता है, जो सूर, तुलसी, मीरा की परम्परा से महादेवी वर्मा तक पाया जाता है। इसमें लौकिक प्रेम को आलौकिक प्रेम का माध्यम बनाया जाता है। प्रेमी अपने प्रिय परम ब्रह्म के प्रति किसी भी लौकिक माध्यम को लेकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करता है। तसब्बुफ़ की ग़ज़लों को कव्वाली रूप में गाया जाता है।[53]

तुकांतता के आधार पर ग़ज़ल दो प्रकार की होती है।

1. **मुअद्दस ग़ज़लें** – जिन ग़ज़ल के अश आरों में रदीफ और काफिया दोनों का ध्यान रखा जाता है।

2. **मुकफ़्फा ग़ज़लें** – जिन ग़ज़ल के अश आरों में केवल काफिया का ध्यान रखा जाता है।

भाव के आधार पर भी ग़ज़ल दो प्रकार की होती है।

1. **मुसल्सल ग़ज़लें** – जिनमें शे'र का भावार्थ एक–दूसरे से आद्यत जुड़ा होता है।

[53] शोधग्रंथ / 20वीं सदी में ग़ज़ल गायिकी का विकास / पृ. 34

2. **गैर मुसल्सल ग़ज़लें** – जिनमें हरेक शे'र का भाव स्वतंत्र होता है।[54]

ग़ज़ल गायिकी के प्रकार – पुराने और नए प्रकार को लेकर मोटे तौर पर ग़ज़ल गायिकी तीन प्रकार की है।[55]

1. **परम्परागत गायकी** – जो गिने–चुने रागों पर आधारित थी जैसे– खमाज, पीलू, यमन, भैरवी, काफी, झिंझोटी, देस इत्यादि। ऐसी ग़ज़लें बेगम अख़्तर, मल्लिका पुखराज इत्यादि गाया करती थी लेकिन ग़ज़ल गायिकी का यह प्रकार अब खत्म हो चुका है।

2. **फिल्मों के आगमन के बाद** – के.एल.सहगल ने अपनी शैली विकसित की। गालिब की कई ग़ज़लें गैर–फिल्मी थी। पंकज मलिक भी इस शैली में शामिल हुए और ग़ज़लों में (फिल्मों की वज़ह से) आर्केस्ट्रा का भी योगदान होने लगा। अच्छे स्तर की ग़ज़लों के कम्पोजर स्व. मदन मोहन को नहीं भुलाया जा सकता।

3. **आधुनिक ग़ज़ल गायिकी का दौर** – आधुनिक ग़ज़ल गायिकी का दौर जिसे मेहदी हसन ने आरम्भ किया। उसका क्षेत्र काफी विस्तृत है, गुलाम अली, हुसैन बख्श, जगजीत सिंह, राजकुमार रिज़वी, ए. हरिहरन इत्यादि ऐसी ही शैली गा रहे हैं। आधुनिक ग़ज़ल गायिकी पर फिल्म संगीत का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। यह फिल्म संगीत की मुहताज नहीं है।

निष्कर्ष – ग़ज़ल गायिकी किसे कहते हैं? यह जानने के बाद, उर्दु ग़ज़ल के प्रकार समझते हुए ग़ज़ल गायिकी के प्रकार भी समझे। ग़ज़ल उर्दु काव्य व संगीत से मिलकर बनी एक गायिकी है। जिसे संगीत के स्वरों में पिरोकर प्रस्तुत किया जाता है। ग़ज़ल के निर्माण से पहले ग़ज़ल की प्रकृति के अनुरूप ही राग का चयन होता है जिससे की ग़ज़ल की भावाभिव्यक्ति प्रभावी हो तथा श्रोता के मानस पटल पर छाप अंकित कर सके।

(ग) ग़ज़ल का संरचनात्मक अध्ययन –

ग़ज़ल केवल शिल्प नहीं है इसमें कथ्य भी हैं। यह संगम है तकनीक और भावना का तकनीकी रूप से ग़ज़ल काव्य की वह विधा है जिसके हर शे'र का अपना एक अलग विषय होता है लेकिन यह जरूरी शर्त भी नहीं कि एक ही विषय पर ग़ज़ल कही जा सकती है जिसे "ग़ज़ल मुसल्सल" कहते हैं। उदाहरण के तौर पर "चुपके–चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है"

---

[54] Gazal wikipedia Google

[55] कृष्ण स्वरूप / ग़ज़ल, ग़ज़ल की भाषा और ग़ज़ल गायिकी / संगीत पत्रिका / पृ. 8

बेहद प्रचलित ग़ज़ल है। ये ग़ज़ल मुसल्सल की बेहतरीन मिसाल है। ग़ज़ल को समझने के लिये इसके अंगों को जानना आवश्यक है। **सईद रही** की ग़ज़ल का उदाहरण लेकर इसके महत्वपूर्ण अंगों को समझने का प्रयास निम्न प्रकार है।

"कोई पास आया सवेरे–सवेरे
मुझे आजमाया सवेरे–सवेरे
मेरी दास्तां का ज़रा सा बदल कर
मुझे ही सुनाया सवेरे–सवेरे
जो कहता था कल तक संभलना संभलना
वही लड़खड़ाया सवेरे–सवेरे
कटी रात सारी मेरी मयकदे में
खुदा याद आया सवेरे–सवेरे"

(1) **शे'र** – दो पदों से मिलकर एक शे'र या बैत बनता है। दो पक्तियों में ही अगर पूरी बात इस तरह कह दी जाये कि तकनीकी रूप से दोनों पदों का वज़न समान हो जैसे–

कटी रात सारी मेरी मयकदे में
खुदा याद आया सवेरे–सवेरे

शे'र की दूसरी पक्ति का तुक पूर्व निर्धारित होता है। दिये गये (उदाहरण में "सवेरे–सवेरे" तुक) और यही तुक शे'र को ग़ज़ल की माला का हिस्सा बनाता है। कभी–कभी एक से अधिक शे'र मिलकर अर्थ देते हैं। ऐसे शे'र कता बंद कहलाते हैं। ग़ज़ल में सबसे अच्छे शे'र को 'शाहे बैत' कहा जाता है।

(2) **मिसरा** – शे'र का एक पद जिसे हम उर्दु में मिसरा कहते है। जैसे–

पहला हिस्सा – कटी रात सारी मेरी मयकदे में
दूसरा हिस्सा – खुदा याद आया सवेरे–सवेरे।

यह दोनों पद स्वतंत्र मिसरे हैं। पहला हिस्सा मिसरा उला तथा दूसरा हिस्सा मिसरा सानी मिलकर एक शे'र बनते हैं।

(3) **रदीफ** – रदीफ को पूरी ग़ज़ल में स्थिर रहना है। ये एक या दो शब्दों से मिलकर बनती है और मतले में दो बार मिसरे के अंत में और शे'र के दूसरे मिसरे के अंत में ये पूरी ग़ज़ल में प्रयुक्त होकर एक जैसा ही रहता है, बदलता नहीं है।

जैसे – सवेरे–सवेरे ग़ज़ल की रदीफ है। बिना रदीफ के भी ग़ज़ल हो सकती है। जिसे – गैर–मरद्दफ ग़ज़ल कहा जाता है।

(4) **काफिया** – परिभाषा की जाये तो ग़ज़ल के शेरों में रदीफ से पहले आने वाले उन शब्दों को काफिया कहते हैं, जिनके अंतिम एक या एकाधिक अक्षर स्थायी होते हैं और उनसे पूर्व का अक्षर चपल होता है। इसे आप तुक कह सकते हैं, जो मतले में दो बार रदीफ से पहले आती है और हर शे'र के दूसरे मिसरे में रदीफ से पहले काफ़िया ग़ज़ल की जान होता है और कई बार शायर को काफ़िया मिलने में दिक्कत होती है तो उसे हम कह देते हैं कि काफ़िया तंग हो गया।

उदाहरण ग़ज़ल में आया, आजमाया, लडखड़ाया, सुनाया ये ग़ज़ल के काफिए हैं।

(5) **मतला** – ग़ज़ल के पहले शे'र को मतला कहा जाता है। मतले के दोनों मिसरों में काफिया और रदीफ का इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण ग़ज़ल में मतला है।

"कोई पास आया सवेरे–सवेरे
मुझे आज़माया सवेरे–सवेरे"

मक्ता – अंतिम शेर, जिसमें शायर अपना उपनाम लिखता हैं मक्ता कहलाता है।

(6) **बहर** – छंद की तरह एक फारसी मीटर/ताल/लय/फीट जो अरकानों की एक विशेष तरकीब से बनती है।

(7) **अरकान** – फारसी भाषाविदों ने आठ अरकान ढूंढे और उनको एक नाम दिया जो आगे चलकर बहरों का आधार बने। रूक्न का बहुवचन है अरकान, बहरों की लम्बाई या वज्ऩ इन्हीं से मापा जाता है, इसे आप फीट भी कहते हैं। इन्हें आप ग़ज़ल के 8 सुर भी कहते है।

(8) **अरूज** – बहरों और ग़ज़ल के तमाम असूलों की मालूमात को अरूज़ कहा जाता है और जानने वाले अरूजी।

(9) **तख़ल्लूस** – शायर का उपनाम मकते में इस्तेमाल होता है, जैसे मैं 'ख्याल' का इस्तेमाल करता हूँ जिसे हिंदी में उपनाम व अग्रेंजी में 'Pen Name' भी कहा जाता है।

(10) **वज़्न** – मिसरे के अरकानों के तराजू में तौलकर उसका वज़्न मालूम किया जाता है। इस विधि को तकतीअ कहा जाता है।[56]

[56] सतपाल ख्याल/ग़ज़ल की बुनियादी संरचना/15 Dec 2008

(11) **कलमा और कलाम** – जिस लफ्ज़ के कुछ अर्थ होते हैं, उसे कलमा तथा जिससे पूरी बात समझ में आती है और भाव स्पष्ट होते है उसे कलाम कहते हैं।

(12) **शायर** – शे'र लिखने वाले को शायर कहते हैं।

(13) **नसर** – जो कलाम किसी बहर में नहीं होता है उसे नसर कहते हैं।

(14) **दीवान** – किसी शायर की ग़ज़लों के मजमूए संग्रह को दीवान कहते हैं। ग़ज़लों के ऐसे संग्रह को दीवान कहते हैं, जिससे हर हर्फ से कम से कम एक ग़ज़ल अवश्य हो। उर्दु का पहला दीवान शायर कुतुबशाह था।

(15) **कुलियात** – किसी शायर के हर किस्म के कलाम के मजमूए को कुलियात कहते हैं।

(16) **गुलदस्ता** – कई शायरों के मलाम के मजमूए को गुलदस्ता कहते हैं।

(17) **ग़ज़ल गो** – जिस शायर की सभी कविताओं में ग़ज़ल सर्वश्रेष्ठ हो और जो अपनी ग़ज़ल की अभिव्यक्ति सहज व भावपूर्ण ढंग से करता हो उसे ग़ज़ल गो कहते है।

(18) **ग़ज़ल गोई** – ग़ज़ल कहने की रीति को ग़ज़ल गोई कहा जाता है।

(19) **ग़ज़ल सराई** – जो ग़ज़ल सुनता हैं, गुनगुनाता है और उसका पाठ करता है उसे ग़ज़ल सराई कहते है।[57]

संक्षेप में

- ग़ज़ल विभिन्न शेरों की माला होती है।
- ग़ज़ल के शेरों का काफ़िया और रदीफ की पांबदी में रहना आवश्यक है।
- ग़ज़ल का प्रत्येक शे'र विषयवस्तु की दृष्टि से स्वयं में एक संपूर्ण ईकाई होता है।
- ग़ज़ल का आरंभ मतले से होना चाहिये।
- ग़ज़ल के सभी शे'र एक ही बहर–वजन के होने चाहिए।
- ग़ज़ल का अंत मकते के साथ होना चाहिये।[58]

निष्कर्ष स्वरूप यदि ग़ज़ल को सीखना व सुनना है तो, ग़ज़ल के उपरोक्त वर्णित तत्वों की जानकारी अति आवश्यक है। बिना ग़ज़ल के संरचनात्मक तत्वों को समझे ग़ज़ल का आनंद उठाना सम्भव नहीं है।

---

[57] शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न गायकों का योगदान / पृ. 44

[58] सतपाल ख्याल / ग़ज़ल की बुनियादी संरचना / 15 Dec 2000

द्वितीय अध्याय

बेगम अख़्तर घराना

द्वितीय अध्याय

बेगम अख़्तर घराना

(अ) बेगम अख़्तर : जीवन परिचय

"ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया
जाने क्यूँ आज तेरे नाम पे रोना आया"

शकील बदायूँनी

शकील बदाँयूनी शायर साहब द्वारा रचित इस ग़ज़ल को जिसने अपनी आवाज़ से अमर कर दिया। उस आवाज को किसी पहचान की आवश्यकता नहीं हैं जैसे ही यह ग़ज़ल सुनाई देती है। लब्जों पर एक ही नाम आता है बेगम अख़्तर "मल्लिका–ए–ग़ज़ल"।

हिन्दुस्तान में शास्त्रीय रागों पर आधारित ग़ज़ल गायकी को नई ऊँचाईयों तक पहुँचाने वाली विख्यात गायिका बेगम अख़्तर के परिचय में उर्दू के अज़ीम शायर क़ैफ़ी आज़मी की कही यह पंक्ति ही काफी है – "ग़ज़ल के दो मायने होते हैं, पहला ग़ज़ल और दूसरा बेगम अख़्तर"।

जिनकी आवाज ने गायिकी की इस विधा को लोकप्रिय बनाया, उनकी गायिकी का अंदाज इतना निराला हैं कि जो भी सुने वह वही ठहर जाता है।

बेगम अख़्तर अपनी मखमली आवाज़ में ग़ज़ल, ठुमरी, दादरा और ख्याल पेश कर मशहूर होने वाली एक सदाबहार गायिका थी। उनकी गायकी आज भी लोगों को दीवाना बना देती है। बेहद साफ़ आवाज़ और शुद्ध उर्दू उच्चारण रखने वाली बेगम अख़्तर हिन्दुस्तानी संगीत की कोहिनूर हीरा है।

भारत में इस विधा को प्रचलित करने का श्रेय इस शख़्सियत को ही जाता है। जो उनकी ग़ज़ल को एक बार सुन लेता है वह गुनगुनाये बिना नहीं रह सकता है।

बेगम अख्तर की गायकी जहाँ एक ओर चंचलता और शारव भरी थी, वहीं दूसरी ओर उसमें शास्त्रीयता और दिल को छू लेने वाली गहराईयाँ भी थी। आवाज में गजब का लोच, रंजकता और भाव के कैनवास को अनंत रंगो से रंगने की क्षमता के कारण उनकी गायी ग़ज़ले बेजोड़ है।[1]

[1] Your Story 13 Jul. 2011

"यूँ तो हर शाम उम्मीदों पे गुजर जाती है
आज कुछ बात है, जो शाम पे रोना आया"

इस अनूठी गायिका के गायन को लेकर तो काफी कुछ लिखा और पढ़ा गया है। मगर उनके जीवन और व्यक्तित्व के बारे में लोग बहुत ज्यादा नहीं जानते हैं। बेगम अख़्तर जितनी अनूठी गायिका थी, उतना ही अनूठा उनका जीवन और व्यक्तित्व था।

मशहूर गायिका बेगम अख़्तर जी शुद्ध उर्दु का उच्चारण करने वाली व दादरा व ठुमरी की साम्राज्ञी थी, अभी भी अपनी गायिकी के वजह से सबसे दिलों में है। जब भी कोई उनकी ग़ज़ल सुनता है तो रोम–रोम झंकृत कर देने वाली उनकी गायिकी उनकी याद को तरोताजा कर देती है।

उनकी गायी ग़ज़ल "कभी तकदीर का मातम, कभी दुनिया का गिला/ मंज़िल–ए–इश्क़ में हर ग़म पे रोना आया", यह ग़ज़ल उनकी जिंदगी की पूरी कहानी बयां करती है।[2]

उनके जाने के बाद भी वह अभी भी संगीत प्रेमियों के हृदय में बसी हुई है। भले ही उनका शरीर पंच तत्व में विलिन हो गया है, लेकिन फिर भी उनकी गायिकी अमर है।

"बेगम अख़्तर का जन्म 1914 में उत्तर प्रदेश के फैंजाबाद नामक स्थान पर हुआ। उनकी माता 'मुश्तरी बाई' नवाबों के दरबार की दरबारी गायिका थी। लेकिन शादी के बाद उन्होंने अपना गायिकी का पेशा छोड़ दिया। उनके पिता असगर अली जो लखनऊ के बहुत ही सम्मानीय जज थे। उर्दु शायरी व ग़ज़ल के शौकीन थे।"[3]

बेगम अख़्तर अपनी माता मुश्तरी बाई बेगम के साथ

[2] Dainik Bhaskar.com, Oct. 7, 2014
[3] रूपा चारूवती/ बेगम अख़्तर – The queen of Gazal/ पृ. 8

बेगम अख़्तर का फैजाबाद स्थित पुश्तैनी मकान

"बेगम अख़्तर की एक जुड़वा बहन थी जिसका नाम जौहरा था। उसकी मृत्यु बचपन में ही हो गयी थी। बेगम अख़्तर को प्यार से 'बीबी' बुलाते थे।

उनके पिता चाहते थे कि 'बीबी' अपनी पढ़ाई पूरी करे और अपना परिवार बनाये। उनकी माँ भी यही चाहती थी क्योंकि वे जानती थी कि समाज में गायिकाओं को सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। और वो अपनी बेटी के साथ फिर से वह नहीं दोहराने देना चाहती थी जो वो खुद सह चुकी थी।

शुरूआती दौर में बेगम अख़्तर जब इस क्षेत्र में आयी उन्हें भी तवायफ ही समझा गया। बेगम अख़्तर की 73 साल की शिष्या ने उन पर एक किताब लिखी है। जिसमें एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा था कि मुम्बई में एक तवायफ संगठन में मुश्तरी बाई से उनकी बेटी को उन्हें सौंपने का अनुरोध किया, बदले में एक लाख देने को कहा लेकिन उनकी माँ ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया।

आर्थिक परेशानियों का सामना करते हुये भी वे डगमगाई नहीं और धीरे–धीरे शोहरत बढ़ी और अख्तरी बाई के प्रशंसक भी बढ़ गए।"[4]

[4] रीता गांगुली / E– Mohabhat Reminiscing Begum Akhtar / पृ. 2

"लेकिन बीबी को पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं थी उनका शौक सिर्फ संगीत में लगता था। मामूली पढ़ाई के बावजूद उन्होंने उर्दु शायरी की अच्छी जानकारी हासिल कर ली थी। केवल 7 वर्ष की उम्र में उन्हें सभी फिल्मी गीत याद थे। शांति हीरानंद जो कि बेगम अख़्तर के निकटम शिष्यों में से एक है, कहती हैं कि कई बार बेगम अख़्तर स्कूल छोड़कर गायन की प्रस्तुति देखने थियेटर चली जाया करती थी।

बचपन से ही बेगम अख़्तर शरारती व स्वच्छ व्यक्तित्व वाली रही, जो उनके व्यक्त्वि में साफ झलकता था। वे बिंदास आवाज वाली, एक रूतबा रखने वाली, एक प्रतिभाशाली ग़ज़ल गायिका थी।"[5]

(ब) पारिवारिक परिचय –

"बेगम अख़्तर का कलकत्ता से वापस लखनऊ आना बहुत बडा फैसला था। वे उस समय की चर्चित नायिका व गायिका थी। लेकिन उन्होंने इस प्रसिद्धि, चकाचौंध, नाम, शोहरत और पैसे को छोड़कर लखनऊ आना तय किया।

यह बेगम अख़्तर जी के कठिन पड़ावों में से एक था। फिर से उन्हें एक नयी शुरूआत करनी थी। उनका संगीत प्रेम ही था जो उन्हे फिर से खीच लाया। जहाँ वे एक तरफ अपने शास्त्रीय संगीत की तैयारी कर रही थी और वहीं दूसरी ओर उनके विवाह की बातें भी चलने लगी थी।

अब बेगम अख़्तर भी थक चुकी थी, वो भी किसी की बेगम कहलाना चाहती थी। चर्चित गायिका बेगम अख़्तर से शादी करने को रामपुर के नवाब सहित कई राजा–रजवाड़े भी इच्छुक थे, पर वह चाहती थी, कि जिससे उनकी शादी हो उसका कुछ सामाजिक रूतबा हो और वह उसकी दूसरी व तीसरी बेगम बनकर न रह जाए।"[6]

"शौहर चुनने में अख़्तरी ने अपने दिल की सुनी। बेरिस्टर इश्ताक अहमद अब्बासी साहब जो उन दिनों लंदन से लौटे ही थे। इश्तियाक अहमद अब्बासी काकोरी के जमींदार खानदान के बेटे थे। वह लखनऊ में वकालात करते थे। वर्ष 1994 में अख़्तरी व इश्तियाक अहमद अब्बासी ने निकाह कर लिया।

---

[5] रूप चारूवती / बेगम अख़्तर – The queen of Gazal / पृ. 10

[6] रूपा चारूवती / बेगम अख़्तर / The queen of Gazal / पृ. 38

बेगम अख़्तर अपने शौहर इश्तियाक अहमद अब्बासी साहब के साथ

अख़्तरी बाई अब शादी के बाद "बेगम अख़्तर" के नाम से जानी जाने लगी। अब्बासी साहब का परिवार लखनऊ का एक सम्मानीय परिवार था। पति के खातिर बेगम अख़्तर ने गाना छोड़ दिया। शुरूआती दौर में उन्हे इस बात का आभास नहीं हुआ लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया वे स्वयं को अकेला महसूस करने लगी।"[7]

"अब्बासी साहब वकालात के साथ–साथ संगीत व उर्दु शायरी में भी रूचि रखते थे। स्वयं भी बहुत अच्छे शायर थे, लेकिन कभी उन्होंने अपनी बीवी को आगे बढ़ाने की बात नहीं सोची।"[8]

"वे अपने घर छोटी–छोटी संगोष्ठियाँ आयोजित किया करते थे। अब्बासी साहब के एक मित्र एल.के.मल्होत्रा जो कि 'All india Radio' लखनऊ में कार्यरत थे। उन्होंने बेगम अख़्तर जी से गाने के लिये निवेदन दिया। जवाब में बेगम अख़्तर जी ने बोला कि मैं गाना छोड़ चुकी हूँ। अन्ततः मल्होत्रा साहब ने उन्हें गाने के लिये मनवा ही लिया। किंतु उनकी एक शर्त थी कि वो जो भी गाएगी प्रकाशित नहीं होगा तथा श्रोताओं के सामने नहीं आएगी।

उन्होंने तीन ग़ज़लें और एक दादरा Lucknow All India पर रिकार्ड किया, जब वे बाहर आयी तो खुद के आंसूओं को रोक नहीं पायी।"[9]

वे अपने ससुराल में घरेलू परिवेश में अन्य महिलाओं की तरह ही रहा करती थी। उनकी स्वयं की कोई संतान नहीं थी, किंतु परिवार के सभी बच्चों को अपने ही बच्चों की तरह प्यार करती थी।

---

[7] S. Kalidas / Begum Akhatar Love's Own music / पृ. 45

[8] शांतिहीरानदं / The story of my Ammi / पृ. 18

[9] रूपा चारूवती / बेगम अख़्तर / The queen of Gazal / पृ. 41

एक बार जब किसी ने उनसे पूछा कैसा लगता है, इतने बड़े खानदान की बहु होना? जवाब में बेगम बोली– "मुझे पता था कि कोठे से कोठी पर जाऊँगी तो पेशे के तौर पर गाने की कोई गुंजाइश नहीं रहेगी। क्योंकि गाने वालियों को इज्जतदार नहीं माना जाता, पर मुझे कोई मलाल नहीं है।"[10]

"वे स्वयं को अपने पति के परिवार के तौर–तरीकों में ढाल चुकी थी। वे स्वयं भी खुद को अब्बासी की बेगम कहलवाने में गर्वित महसूस किया करती थी। किंतु कहीं न कहीं वे बहुत अकेली थी। अकेलापना दूर करने के लिये वो सिगरेट का सहारा लिया करती थी, धीरे–धीरे वो इनकी आदत बन गयी।"[11]

"1950 में बेगम अख़्तर की माँ की मृत्यु हुयी, उसके बाद से बेगम अख़्तर दुःखी रहने लगी यहाँ तक कि वे अवसादग्रसित हो गयी। अक्सर अपनी माँ की कब्र के पास जाकर रोया करती थी। डॉक्टर ने अब्बासी साहब को सलाह दी कि इन्हें गाने दीजिये, संगीत ही इन्हें ठीक कर सकता है। अब्बासी साहब इस बात के लिए राजी हो गये, लेकिन उनकी शर्त थी कि तुम इन पैसों को घर खर्च में प्रयोग नहीं करोगी। यह उनकी वापसी थी। लोग अभी भी अख़्तरी फैजाबादी को नहीं भूले थे, जो बाद में बेगम अख़्तर कहलायी।"[12]

"उनका सीधा प्रसारण 7 साल बाद "शंकरलाल महोत्सव" में हुआ। धीरे–धीरे उन्होंने Concert में गाना शुरू किया और संगीत निमंत्रण भी लेने लगी साथ ही संगीत कार्यक्रमों में गाने लगी। उम्र के साथ स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता था।"[13]

"बेगम अख़्तर को पहला Heart Attack 1967 में आया, उसके बाद से वे स्वस्थ्य नहीं रहने लगी थी। डॉक्टर ने उन्हें अधिक व्यस्तता वाली दिनचर्या को कम कर आराम करने की सलाह दी, लेकिन वो किसी की कहाँ सुनने वाली थी। 26 Oct. 1974 को जब वे अहमदाबाद में एक संगीत कार्यक्रम में प्रस्तुती दे रही थी। उन्होंने अपने जन्म दिवस के मौके पर यह ग़ज़ल गायी **"वो तेग मिल गयी, जिससे हुआ था कत्ल मेरा, किसी के हाथ का लेकिन वहाँ निशां नहीं मिलता।"** उसी समय उन्हें दिल का तीसरा दौरा पड़ा। संगीत कार्यक्रम बीच में ही रोकना पड़ा। और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, लेकिन तब तक वे अपने श्रोताओं को रोता बिलखता हुआ छोड़ कर हमेशा–हमेशा के लिये जा चुकी थी।"[14]

---

[10] रीता गांगुली / E Mohabhat – Reminicing Begum Akhatar / पृ. 27

[11] Memories of Begum Akhtar / संगीत नाटक अकादमी Journal / पृ. 27

[12] डॉ. सुधा सहगल, डॉ. मुक्ता / बेगम अख़्तर व उपशास्त्रीय संगीत 2007 / पृ. 33

[13] शोध ग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / दिल्ली विश्वविद्यालय / पृ. 59

[14] रूपा चारूवती / बेगम अख़्तर – The queen of Gazal / पृ. 49

बेगम अख़्तर की लखनऊ के बसंत बाग में स्थित मज़ार

किसी को यह मालुम न था कि कभी आजमी साहब द्वारा रचित इस ग़ज़ल का यह मिसरा इतनी जल्द सच हो जाएगा लखनऊ के बसंत बाग में उन्हें सुपुर्द–ए–खाक किया गया। लेकिन वो सदैव जीवित है, अपनी पुरज़ोर गायिकी की वजह से।

"बेगम अख़्तर जी को कई अवार्ड व उपाधियों से भारत सरकार द्वारा नवाजा गया है।

बेगम अख़्तर संगीत नाटक अकादमी अवार्ड प्राप्त करते हुए

पद्म श्री – 1968

संगीत नाटक अकादमी अवार्ड – 1972

पद्म भूषण (मरणोपरान्त) 1975"[15]

[15] बेगम अख़्तर / Google wikipedia

"इसके अलावा 1994 में सबसे पहला डाक–टिकट बेगम अख़्तर के नाम से निकाला गया।"[16]

बेगम अख़्तर जी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा जारी सिक्के और डाक टिकट

"आर.एल.पाठक के द्वारा बेगम जी को "ठुमरी की रानी" उपाधि से नवाजा है।"[17]

"मशहूर गायिका बेगम अख़्तर की जन्म शताब्दी पर उनकी याद में सरकार ने 6 Oct. 2014 को 100 रू व 5 रू के सिक्के जारी किये।"[18]

"साथ ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने बेगम अख़्तर जी की याद में प्रतिवर्ष "बेगम अख़्तर अवार्ड" प्रदान करने की घोषणा की। यह अवार्ड उस युवा कलाकार को दिया जाएगा जो कला के क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य कर रहा है और साथ ही साथ उसे 5 लाख की राशि भी दी जाएगी।

प्रथम बेगम अख़्तर पुरूस्कार प्राप्त करने वाली जरीना बेगम

[16] बेगम अख़्तर जो कभी थकती नहीं थी/संगना Journal/पृ. 1

[17] हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र/ 30 अक्टूबर 1993

[18] बेगम अख़्तर की याद में सिक्के जारी किये/ नई दिल्ली/ 6 अक्टूबर 2014

प्रथम बेगम अख़्तर पुरूस्कार उन्हीं की दो शिष्याओं को दिया गया –

1. 22 अगस्त 2015 – ज़रीना बेगम

2. 22 अगस्त 2015 – सुनीता झिंगरन"[19]

"इसके साथ ही इस प्रतिभाशाली गायिका की जन्मशती को भारत सरकार ने यादगार बनाने का फैसला लिया है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये एक राष्ट्रीय समिति गठित की गयी है, जिसके अध्यक्ष केन्द्रिय मंत्री होगे, यह समिति सालभर मनाए जाने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करेगी।

बेगम अख़्तर के सम्मान में दिल्ली, लखनऊ, हैदराबाद, भोपाल, में खास कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। उनके यादगार कार्यक्रमों के Web–Portal डीजिटलाइजेशन डाक्यूमेरेशन इत्यादि तैयार किए जाएगे। इसके अलावा प्रर्दशनियाँ, प्रकाशन, विचार–गोष्ठियाँ आदि का आयोजन भी होगा।

संगीत नाटक अकादमी उनके नाम पर हर साल छात्रवृत्ति भी देगी।"[20]

"हाल ही में फ़ैजाबाद यूनिवर्सिटी में बेगम अख़्तर के नाम से "बेगम अख़्तर संगीत अकादमी" बनायी जायेगी, जिसके लिये सरकार ने 60 करोड़ की राशि प्रदान की है, वहाँ बेगम अख़्तर की गायिकी को सिखाया जाएगा, तथा साथ ही संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा भी दी जाएगी। अकादमी की स्थापना उनके जन्म स्थान फैजाबाद से 5 किमी. की दूरी पर ही स्थापित की जाएगी, वहाँ एक बेगम अख़्तर का म्यूजियम भी बनेगा जिसमें उनकी फोटों, रिकार्ड आदि रखे जाएँगे।"[21]

"2018 का "बेगम अख़्तर अवार्ड" उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी के द्वारा 29 मार्च 2018 को लखनऊ के शास्त्रीय गायक पंडित धर्मनाथ मिश्रा व उस्ताद शैखावत हुसैन को दिया गया।"[22]

"हाल ही में Google ने बेगम अख़्तर की 103 जन्मशती पर बेगम अख़्तर का डुडल बनाकर सम्मान दिया।"[23]

---

[19] Times of india Lucknow / 23 Aug 2015

[20] बेगम अख़्तर, ठुमरी ग़ज़ल की वह आवाज है जिसे आज भी / आज तक / 7 अक्टूबर 2018

[21] She the people Tv. / 21 April 2018

[22] The Stateman / 29 मार्च 2018

बेगम अख़्तर जी के 103वें जन्मदिन पर गूगल ने डुडल बनाकर सम्मानित किया

(स) संगीत सफर –

"जिंदगी कुछ भी नही फिर भी जिए जाते हैं
तुझपे ऐ वक्त हम एहसान किये जाते हैं।"

बेगम अख़्तर सांगितिक प्रस्तुति के दौरान

"बेगम अख़्तर को संगीत का शौक तो बचपन से ही था। और माँ सरस्वती से इतना अच्छा कंठ उपहार मे मिला था।

[23] Economics times / 7 Oct 2017

लेकिन सही शब्दों में बेगम अख़्तर जी के सांगितिक सफर की शुरूआत जब वे 7 वर्ष की थी तब हुयी।

बेगम अख़्तर के मन में गायिका बनने का ख्याल उस दिन आया जब उन्होंने गायिका चंदाबाई का गायन सुना। उस दिन से बेगम अख़्तर ने निश्चय कर लिया था, कि वे एक गायिका ही बनेगी।"[24]

"किंतु बेगम अख़्तर की माँ मुश्तरी बाई के दिमाग में अपनी बेटी को लेकर कुछ और ही योजना थी। वे चाहती थी उनकी बेटी अच्छी पढ़ाई करे, उसके बाद किसी अच्छे खानदान में शादी हो जाये।

लेकिन उनके एक चाचा ने उन्हे सलाह दी, कि वे अपनी बेटी के हुनर को बर्बाद न करे। उसे संगीत सिखाये।"[25]

"उनकी सलाह को मानते हुये मुश्तरी बाई अपनी बेटी को पटना घराने के प्रसिद्ध सारंगी वादक इमदाद खान के पास ले गयी। उस्ताद 7 वर्ष की लड़की की आवाज के हुनर से प्रभावित हो गये और उन्होंने सीखाने के लिये हाँ कर दिया।"[26]

"इमदाद खान बहुत सख्त व अनुशासनप्रिय थे। उस्ताद ने उन्हें राग कामोद से रियाज शुरू करवाया जो 8 वर्ष के बालक–बालिकाओं को सिखाया जाना कठिन था।"[27]

"बेगम अख़्तर ने उसके बाद पटियाला घराने के उस्ताद अता मोहम्मद खान से सीखा उस्ताद ने डेढ वर्ष तक अख़्तरी को सिर्फ राग भैरवी ही सीखाया।"[28]

"अता मोहम्मद खान के बाद बेगम अख़्तर ने अब्दुल वहीद खां जो कि किराना घराने के प्रवर्तक थे, उनसे सीखा। वे अनुभवी शिक्षक थे, जो आगे चलकर अख़्तरी की शास्त्रीय संगीत की नींव तथा शक्ति बने, उन्होंने अख़्तरी को ध्रुपद व ख्याल की पेचीदगी सिखायी।"[29] अंत में बेग़म अख़्तर उस्ताद झण्डे खां की शार्गिदा हो गयी।

---

[24] गाने की रूह तासीर बेगम अख़्तर के साथ / संगीत नाटक अकादमी Journal / पृष्ठ. 38
[25] रूपा चतुर्वेदी / बेगम अख़्तर – The queen of Gazal / पृ. 11
[26] S. Kalidas / Begum Akhtar – Love's own Voice / पृ. 29
[27] रूपा चारूवती / बेगम अख़्तर – The queen of Gazal / पृ. 12
[28] रीता गांगुली / E– Mohabbat – Reminicing Begum Akhtar / पृ. 40
[29] S. Kalidas / Begum Akhatar– Lovels own Voice / पृ. 28

"इस पूरे सफर में उनकी माँ मुश्तरी बाई उनके साथ थी। बेगम अख़्तर अपने गुरूओं के प्रति बडी कृतज्ञ थी वे कहा करती थी, कि आज में जो भी जिस मुकाम पे हूँ मेरे गुरूओं की देन है।"[30]

"1934 में जब वह 20 वर्ष की थी तब कलकत्ता के अलफ़्रेड थियेटर में पहली बार श्रोताओं के सम्मुख मंच पर उतरी। कलकत्ता में यह विशेष आयोजन बिहार के भूकंप पीडितो के लिये किया गया था। उसी कार्यक्रम में कवियत्री, श्रीमती सरोजनी नायडू भी आयी थी। सरोजनी नायडू ने कार्यक्रम के बाद बेगम अख़्तर से कहा कि जब में क्रांफ्रेंस में आयी थी तो मेनें सोचा था कि मैं यहाँ थोड़ा ही समय रूकूँगी, लेकिन तुम्हारे संगीत ने मेरा मन जीत लिया और मुझे बाँध के रखा। अगले दिन सरोजनी नायडू ने एक खादी की साडी उन्हे भेंट में भिजवायी थी।"[31]

बेगम अख़्तर जी की पहली रिकॉर्डेड ग़ज़ल का रिकॉर्ड

"बेगम अख़्तर जी की पहली रिकॉर्डिंग जो दादरा व ग़ज़ल की मिश्रण थी 'HMV' कंपनी के द्वारा की गयी, 'वो अशीरे लम्हें' जो बहुत ही लोकप्रिय हुयी। बेगम अख़्तर जी बहु प्रतिभा की धनी थी, खुद ग़ज़ल लिखकर खुद ही गाया करती थी।"[32]

"उन्होंने कई फिल्मों में अभिनय भी किया। जैसे –

1. नाल ओ दमयंती
2. मुमताज बेगम (1934)
3. अमीना जवानी का नशा (1938)

[30] समकालिका संगीतम / बेगम अख़्तर– मल्लिकाएँ ग़ज़ल / पृ. 60
[31] इब्राहिम दवेश / ग़ज़ल और मल्का–ए– ग़ज़ल बेगम अख़्तर / पृ. 29
[32] शांतिहीरानंद / The Story of my Ammi / पृ. 6

फिल्म रोटी (1942) में बतौर नायिका बेगम अख़्तर

कई फिल्मों में गीत भी गाए है –

1. दाना पानी (1953) – ए इश्क मुझे और तो कुछ याद नहीं है।
2. एहसान (1954) – हमें दिल में भी बसा लो।
3. सत्यजीत रे (1958) – की फिल्म 'जल सागर'"[33]

"लेकिन इन सब के बीच वे अपनी संगीत की तैयारी को भूलती जा रही थी। वहीं उनके संगीत गुरू भी उनसे खफ़ा थे, क्योकि उन्होंने उनके द्वारा दी शिक्षा का सदुपयोग नहीं किया।

जब बेगम अख़्तर जी ने जछन बाई, गौहर जान, माइजुद्दीन खान को सुना तो उनका संगीत प्रेम लौट आया और उन्होंने निश्चय किया कि वे अपना सारा ध्यान अपने रियाज़ को देगी, उन्होंने 10–10 घंटे रियाज़ करना शुरू किया और उसके बाद ही वह मुकाम हासिल करने में कामयाब रही।"[34]

बेगम अख़्तर की संगीत यात्रा बेहद ही तनावपूर्ण, संघर्षमयी व आर्थिक संकट से ग्रस्त थी फिर भी उन्होंने अपनी मेहनत व लगन के द्वारा एक ऐसा मुकाम हासिल करने में सफल रही जो इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों से सज गया। यह कथन सत्य है कि कोई भी कलाकार बिना संघर्षों के लोकप्रिय नहीं बनता।

---

[33] बेगम अख़्तर / Wikipedia Google

[34] रूपा चारूवती / बेगम अख़्तर / The queen of Gazal / पृ. 27

(द) बेगम अख़्तर की गायिकी –

"बेगम अख़्तर जी की गायिकी उनकी पहचान है जो ग़ज़ल के क्षेत्र में उनका सर्वोच्च स्थान रखती है। बेगम साहिबा की गायिकी को यदि कहा जाए तो वे ठुमरी अंग की गायिकी गाती थी। उनकी ग़ज़ल गायिकी शुद्ध रूप में न होकर ठुमरी, दादरा, टप्पा आदि गायन शैलियों से प्रभावित थी। बेगम अख़्तर की गायी ग़ज़लों की बंदिशें भी ठुमरी, दादरा अथवा टप्पा किसी भी एक शैली से प्रभावित होती थी।"[35]

"बेगम अख़्तर अपनी जादूई आवाज़ और अनोखे अंदाज़ से गायिकी की दुनिया में मशहूर थी। बेगम अख़्तर ने अपनी विशिष्ट आवाज़ और अनूठे अंदाज़ के कारण गायिकी के क्षेत्र में प्रसिद्धि हासिल की।"[36]

"बेगम अख़्तर जी की गायिकी में पूरब व पंजाबी अंग का सम्मिश्रण स्पष्ट रूप से नज़र आता था। उनकी आवाज आकर्षण युक्त व सुरीली थी। जिस तरह से उनके नाम में परिवर्तन आया। अख़्तरी फैजाबादी से बेगम अख़्तर बनने का जो सफर उन्होंने तय किया। वो ही उनकी गायिकी में भी दिखा। विवाह से पहले उनकी गायिकी में चुलबुलापन व हल्कापन था। धीरे–धीरे समय बदलता गया और उनकी गायिकी सादगी और गंभीरतापूर्ण होने लगी।"[37]

सांगितिक प्रस्तुति के दौरान बेगम अख़्तर

[35] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 150

[36] Your Story हिन्दी / जुलाई 13 / 2017

[37] शांति हीरानंद / The story of my Ammi / पृ. 101

"प्रसिद्ध सितार नवाज पंडित रवि शंकर ने अपनी किताब "अनुराग" में कहा है कि वे बेगम अख्तर की गायकी को पसंद किया करते थे, वे कहते थे, कि बेगम अख़्तर की गायिकी एक अद्वितीय एकीकरण की गायिकी है, जो उन्हें अनोखी गायिका साबित करती है। यद्यपि वे अपने तरीके से गाती थी, लेकिन फिर भी वे अपनी गायिकी में ख्याल, लोकगीत के साथ ग़ज़ल, दादरा व टप्पे के साथ मिलाकर प्रस्तुत करती थी।"[38]

"उनकी गायिकी में लखनऊ अंग की ठुमरी और पंजाब और पूरब अंग की ठुमरी का एक सुनहरा रूप बेहद ही सुंदर व आकर्षण (ढंग) मे प्रस्तुत किया करती थी।"[39]

"The doyenne of gazals, Begum Akhatar raised the singing of Urdu Ghazals to the level of an art form, making her name synoymous with the concept of gazal singing, Having a solid foundation of classical music her amazing voice and simple styly of singing easily conneted her with the audience"[40]

"उच्चारण की दृष्टि से देखा जाये तो बेगम अख़्तर का उच्चारण यूं तो बहुत ही अच्छा था अर्थात् काफ, बड़े काफ़ का फ़र्क, ग़ाफ़ गेन का फ़र्क, ज़ीम जे का फ़र्क आदि शब्दों को वे बड़ी खूबी से अदा करती थी।"[41]

"शांति हीरानंद जी कहती हैं कि उनकी अदा और अंदाज, शब्दों पर बराबर रूकना, कहने का तरीका, आवर्तन का अंदाज बिल्कुल लखनऊ के नवाबी समृद्धि का समृद्ध रूप था।"[42]

"बेगम अख़्तर अक्सर कहा करती थी कि ग़ज़ल एक चित्रकार की तस्वीर को रंगने जैसा है। वह कहती थी कि फ्रेम चित्र को निखारता हैं ना कि फीका करता है।"[43]

यही कारण था कि वे अपनी ग़ज़ल गायिकी के दौरान ज्यादा सांगितिक अंलकरण जैसे– मींड़ गमक, मुर्की, आदि का प्रयोग ज्यादा नहीं किया करती थी।

उनकी आवाज इतनी ज़ोरदार और प्रभावशाली थी कि सीधा सुनने वाले के जहन पर असर करती थी।

---

[38] रूपा चारूवती / बेगम अख़्तर – The queen of Gazal / पृ. 35
[39] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 150
[40] Malika –E – Gazal / Samakalika / Sangeetham / पृ. 60
[41] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 151
[42] शांति हीरानंद / The story of my Ammi / पृ. 37
[43] शोध ग्रंथ / बेगम अख़्तर जी की गायिकी का निर्वाह करने वाले प्रमुख शिष्य / पृ. 79

"ठुमरी, दादरा में रचना का चयन तथा रचना के अनुसार राग एवं रागानुसार स्वर–शब्द संयोजन आपकी सूझ का प्रत्यक्ष प्रमाण है। जहाँ एक ओर उनकी गायिकी में पूरबअंग अर्थात् गायन में भाव प्रवणता, ठहराव, स्वर–शब्द, संयोजन की झलक इत्यादि सम्मिलित था, तो दूसरी और तालीम के प्रभाव से पंजाब अंग की छोटी–छोटी हरकतों का काम, तान, कण, खटके, मुर्की इत्यादि का भी समावेश था।"[44]

"उनकी गायिकी में शास्त्रीयता का सम्पुट नज़र आता था वे अप्रचलित रागों जैसे– कलावती, चंद्रकोस कालिंगडा, कौंसी कानड़ा, छायानट, नारायणी आदि रागों में बांधकर ग़ज़लों को बहुत ही मार्धुयता से गाया करती थी।"[45]

"Begum Akhtar was well known for her singing of thumri and dadra in which she had combined both the poorab and the punjab styles with a characteristic flavour of her own. Her rendering of gazals was of a rare quality"[46]

"बेगम अख़्तर जी की ग़ज़ले स्वरचित हुआ करती थी तथा उनके पसंदीदा शायर हसरत जयपुरी, जिगर मुरादाबादी, शकील बँदायूनी, कफी आजमी आदि थे।

शकील बँदायूनी साहब द्वारा रचित ग़ज़ल
"ऐ मोहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया"
यह ग़ज़ल वास्तव में ही बेगम अख़्तर जी की पर्याय बन गयी है।

ग़ज़ल गायकी में उर्दु के मशहूर शायरो की नाजुक कशिश और जज़्बाती कैफियत, उर्दु के अदब को मौसिकी के साथ जोड़ने का सलीका तथा खुद को किसी भी गायन शैली में ढाल लेने की क्षमता में बेगम अख़्तर किसी चमत्कार से कम न थी।"[47]

"Begum Akhatar Said Azmi Single handedly elevated the Ghazal to a status parallel to that of the khayal"[48]

"बेगम अख़्तर की परिपक्व कल्पना, माधुर्य, गहरी अन्तर्दृष्टि के साथ उपशास्त्रीयता प्रधान घटकों का प्रयोग भी परिलक्षित होता था।"[49]

---

[44] जश्न–ए–बेगम अख़्तर / स्वरापर्ण / संगीत नाटक अकादमी / 5–8 अक्टूबर 2015
[45] शोध ग्रंथ / उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं का सौन्दर्य बोध / पृ. 48
[46] जश्न–ए–बेगम अख़्तर / स्वरापर्ण / संगीत नाटक अकादमी / 5–8 अक्टूबर 2018
[47] रवि प्रताप उपाध्याय / बेगम अख़्तर की विरासतें कोलकाता व पूणे में भी है / छायानट Journal / पृ. 106
[48] Tribute to a Gazal queen / Indian Express New delhi / 30 Oct 1986

"I am a huge fan of Begum Akthar" said Shubha Mudgal – Fortunately for us, we had Begum Akhtar to tell us the true meaning of Gazal. Her rendition was so moving that people were atomatically drawn to her. It is difficult to find an artisle of her stature. Of course, we have great singers, but there can never be another Begum Akhtar. Her style is unmatched, her style of singing has so difficult, it's impossible to be like her. That will be a true tribute to her, merely copying her style and singing in her style."[50]

संगीत नाटक अकादमी की 'एवार्डी' बेगम अख़्तर ने ही तरन्नुम से गायी जाने वाली ग़ज़लों को शास्त्रीय रागों में बांधकर एक नया रंग दिया।

"वे संगत में सिर्फ हारमोनियम और सारंगी का ही प्रयोग करती थी। तबला बजाने का ढंग भी ठुमरी की संगत जैसे ही होता था। स्थाई में मूल ठेका बजाया जाता था। अंतरे के पहले मिसरे में अक्सर, तबला वादन नहीं होता था और दूसरे मिसरे के पूरा होने से पहले ही तबले की संगत लग्गी लड़ीयों के साथ होती थी तथा तिहाई बजाकर सम दिखाया जाता था।"[51]

एक अच्छी गायिका होने के साथ–साथ वे बहुत ही सरल ह्रदय और अच्छे स्वभाव वाली महिला थी। अनिता सिंह जो बेगम अख्तर की प्रशंसक है और स्वयं हिन्दुस्तानी संगीत परिषद दिल्ली की आयोजक भी है।

उन्हे बेगम अख़्तर की बहुत रोचक यादें याद है –

"वे कहती हैं कि वे अक्सर मुझे बेटी कहकर बुलाया करती थी। उनका व्यवहार बहुत ही स्नेहशील व माँ के जैसा था। वे बहुत ही विनम्र स्वभाव की थी जब कोई कभी उनकी तारीफ किया करता था तो वे बहुत ही विनम्र स्वभाव से उसे टालते हुए कहती थी कि उनकी गायिकी अल्लाह की देन है।"[52]

खुद स्वयं एक बहुत ही सम्मानीय संगीतज्ञ होकर दूसरे संगीतज्ञों का सम्मान किया करती थी। चाहे उनसे उम्र में छोटे क्यों ना हो।

---

[49] डॉ. सुधा सहगल / उपशास्त्रीय गायन विधाएँ – ठुमरी, दादरा बेगम अख़्तर के संदर्भ में / संगीत पत्रिका / पृ. 12

[50] Oct. 12/2014, Times of India

[51] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 150

[52] शोध ग्रंथ / उपशास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं पर शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का विश्लेषात्मक अध्ययन / पृ. 53

बेहद ही अनोखी प्रतिभा की धनी थी बेगम अख़्तर। उनके जैसा फिर से कोई जन्म लेना इस धरती पर नामुकिन है।

(क) बेगम अख़्तर घराना –

बेगम अख़्तर व इनका उपशास्त्रीय गायन किसी परिचय पर अवलम्बित नहीं है। ग़ज़ल–मल्लिका और ग़ज़ल–कोकिला जैसी उपाधियों से अलंकृत बेगम अख़्तर विश्व–स्तर पर ग़ज़ल गायिकी के दिये गए योगदान हेतु सराही गई है।

उनकी गायकी का निर्वहण उनके शिष्य बूखबी कर रहे है।

दादरा, ठुमरी व ग़ज़ल में अपना नाम इतिहास के पन्नों में दर्ज करने वाली बेग़म अख़्तर ने अपनी गायिकी से एक मिसाल कायम की।

बेगम अख़्तर बेहद ही अच्छी गायिका होने के साथ–साथ बहुत ही अच्छी गुरू भी थी। उनकी शिष्य परम्परा में कई शिष्य हैं जो उनकी गायिकी का निर्वहन आज भी कर रहे हैं साथ ही उसे आगे बढ़ाते हुये उनकी गायिकी को जीवित रखे हुये है।

यह बात सत्य हैं कि कोई बेगम अख़्तर का शिष्य हो या ना हो लेकिन उनकी गायी ग़ज़लों को वैसे ही गाने की पूरी कोशिश करते है, जैसी रूह बेगम अख़्तर जी ने उस ग़ज़ल में कायम की थी।

(i) बेगम अख़्तर घराने का विशेषताएँ –

1. ग़ज़लों की बंदिश में ठुमरी, दादरा, टप्पा का प्रभाव
2. उच्चारण की स्पष्टता का अभाव
3. ग़ज़ल गायिकी में मुर्की, खटका, तान, आलाप का समावेश
4. तिहाई बजाकर सम पर आना मुख्य
5. पूरब व पंजाबी अंग सम्मिश्रण की गायिकी
6. अधिकतर अप्रचलित रागों का प्रयोग जैसे – कलावती, चंद्रकोंस, नारायणी, कालिगंडा, कोंसी कानडा आदि।

उनकी शिष्य परम्परा में कई प्रमुख शिष्यों के नाम आते है। जिनका परिचय अग्रिम पृष्ठों में दिया गया है।

(ii) बेगम अख़्तर घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप –

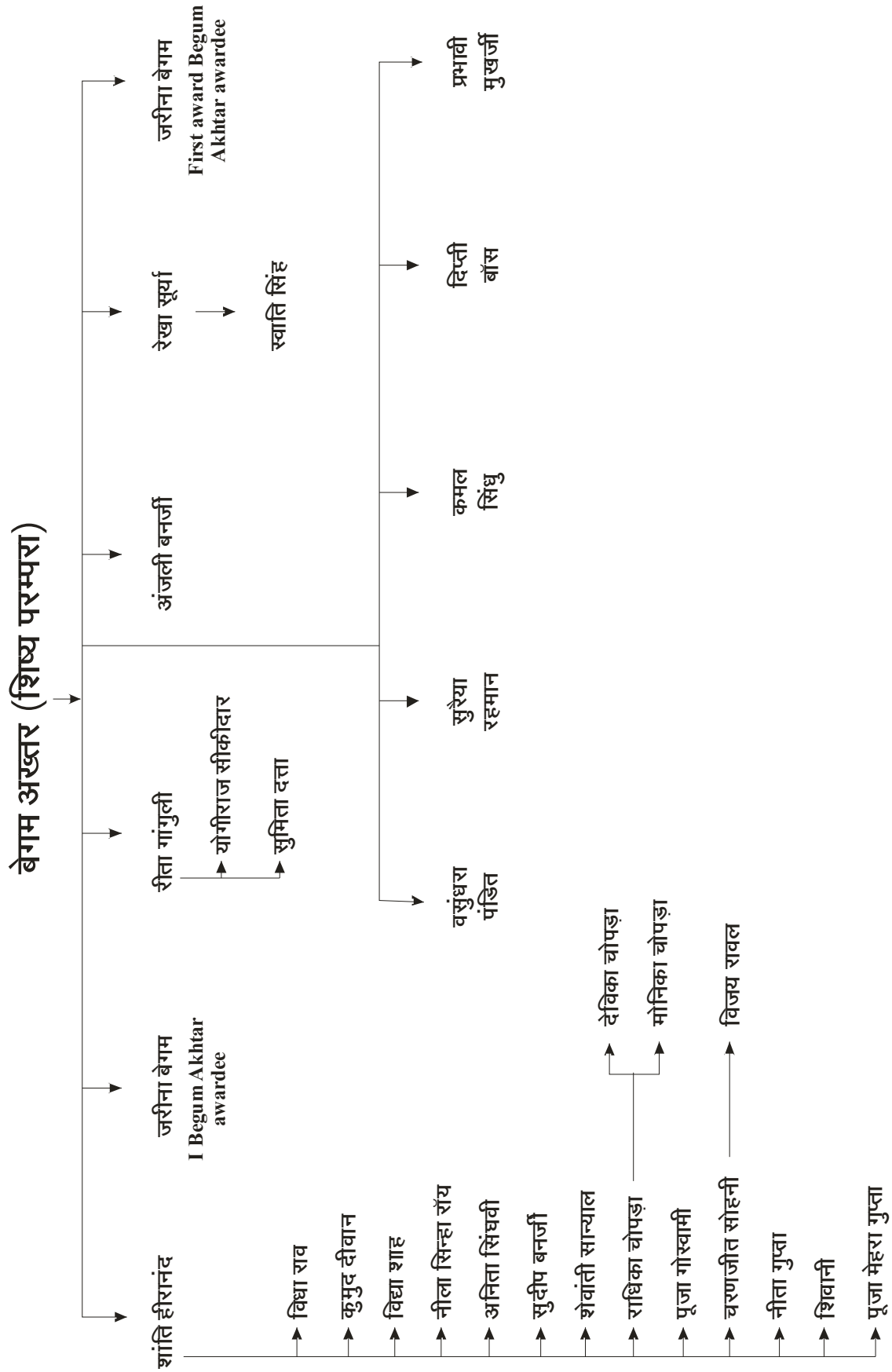

(iii) बेगम अख़्तर के कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय –

शांति हीरानंद –

"शांति हीरानंद जी का जन्म लखनऊ में हुआ। इनके माता–पिता 1920 में सिंध हैदराबाद (पाकिस्तान) से आए थे। इनके पिताजी का अपना कारोबार था। शांति जी के घर में किसी का भी संगीत से सम्बन्ध नहीं था। परन्तु शांति जी को संगीत की अच्छी समझ और अच्छी आवाज ईश्वरीय कृपा से प्राप्त हुई। शांति जी की शुरूआती शिक्षा लखनऊ संगीत महाविद्यालय में ही हुई। लाहौर में 'इन्द्रा कोहली' नाम की लड़की से संगीत सीखा।

शांति जी ने लाहौर रेडियों से अपने कैरियर की शुरूआती की। उनका पहला कार्यक्रम लाहौर रेडियों से मार्च में प्रसारित हुआ।

लखनऊ आने के बाद शांति जी ने रामपुर के उस्ताद रजा खाँ साहब से सीखा। शांति जी ने 1948 से 1952 तक उनसे संगीत सीखा।

1952 में उनकी मुलाकात बेगम अख़्तर जी से हुई। शांति जी बेगम अख़्तर जी को 'अम्मी' कहकर बुलाया करती थी।

बेगम अख़्तर अपनी शिष्या शांति हीरानंद के साथ

शांति हीरनंद ने बेगम अख़्तर जी से शास्त्रीय संगीत के साथ–साथ ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल भी सीखा।

शांति हीरानंद बेगम अख़्तर के साथ 25 साल तक रही। दोनों के बीच माँ–बेटी का रिश्ता था।

शांति हीरानंद बताती है "कि अम्मी कहा करती थी कि यदि मेरी मौत के बाद मुझे सुनना चाहते हैं तो शांति को सुनिएगा।"

शांति जी ने घंटों रियाज किया और इतने वर्षों की साधना के बाद इस मुकाक तक पहुँची। शांति जी वर्तमान में "त्रिवेणी कला संगम" दिल्ली अपनी सेवाएँ दे रही है।

साथ ही शांति जी देश–विदेश में कई प्रस्तुतियाँ दे चुकी है। शांति जी सबसे पहली भारतीय महिला कलाकार थी जिन्होंने पाकिस्तान में अपना कार्यक्रम दिया।

शांति जी रेडियों पर 46 वर्षो से गा रही हैं।

शांति जी को कई पुरूस्कार व उपाधियों से भी नवाजा गया है।

1. साहित्य कला परिषद पुरूस्कार
2. पद्मश्री
3. सिंधी अकादमी अर्वाड – संगीत नाटक अकादमी अक्टूबर 2015
4. संगीत नाटक अकादमी अर्वाड अक्टुबर 2015

वर्तमान में वे अपनी शिष्यों को सीखा रही है। जो उन्होंने उनके गुरू से सीखा उसे आगे बढ़ाने का सफल प्रयास कर रही है उनके शिष्य भी बहुत अच्छा कर रहे हैं।

कुछ नाम इस प्रकार है।

1. चरणजीत सोहनी
2. विद्या राव
3. पूजा गोस्वामी
4. अनिता सिंघवी आदि।"[53]

[53] शोध ग्रंथ/ बेगम अख़्तर की गायिकी का निर्वाह करने वाले प्रमुख शिष्य/ पृ. 26

रीता गांगुली –

"प्रो. रीता गांगुली जी का जन्म 1940 को लखनऊ के एक संभ्रांत और सांस्कृतिक परिवार में हुआ।

इनके पिताजी डॉ. के एल. गांगुली एक स्वतंत्रता सेनानी थे। रीता जी अपनी तीन बहनों और माता–पिता के साथ लखनऊ में रहती थी।

मूलतः उन्होंने सर्वप्रथम ध्रुपद गायकी की शिक्षा विष्णुपुर घराने के 'गोपीश्वर बंदोपध्याय' जी से प्राप्त की।

लेकिन पहले रीता जी की नृत्य में अधिक रूचि थी। और 5–6 साल की आयु में ही वह नृत्य के कई कार्यक्रम दे चुकी थी।

'बेबी' रीता के नाम से जानी जाती थी। लगभग 11–12 की आयु में उन्हे शांति निकेतन भेजा गया, और वहाँ उन्होंने नृत्य और संगीत दोनों की तालीम ली। साथ ही साथ अपनी स्नातक डिग्री भी ली।

रीता जी ने शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ग्वालियर घराने के पी.एन. संसोरे और पी.वी. वजलवर जी से प्राप्त की। उन्होंने मालविका कानन के पिताजी "रविन्द्रलाल राय जी" से भी संगीत की शिक्षा प्राप्त की।

रीता जी को "सिद्धश्वरी देवी" की प्रथम गंडाबद्ध शार्गिद होने का सम्मान भी प्राप्त है। उन्होंने किराना घराना के प. मणिप्रसाद जी से भी संगीत की शिक्षा प्राप्त की।

उसके बाद लगभग 9 वर्षो तक बेगम अख़्तर जी से पटियाला घराने तथा ग़ज़ल गायिकी की शिक्षा भी प्राप्त की।

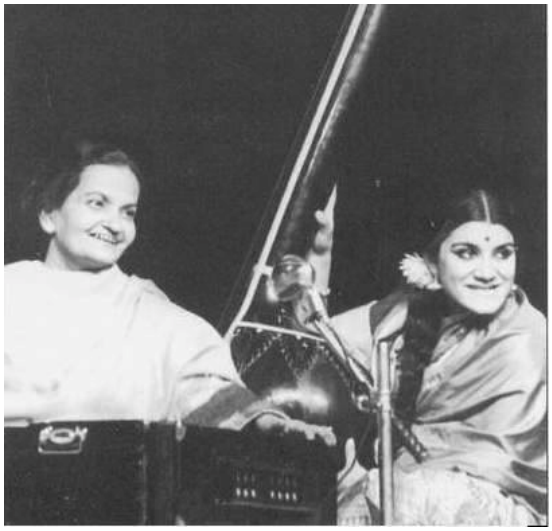

बेगम अख़्तर अपनी शिष्या रीता गांगुली के साथ

रीता जी को विश्व भारती विश्व विद्यालय से कथक्कली, मणिपुरी, हिन्दुस्तानी, शास्त्रीय संगीत तथा रविन्द्र संगीत में स्वर्ण पदक प्राप्त है।

रीता जी ने विख्यात पद्मभूषण गुरू कुंजुकुरूप और पद्म श्री गुरू चंदुपाणिकर जी से कथकली में भी निपुणता हासिल की है। श्रीमती रूकमणी देवी जी से भरतनाट्यम भी सीखा।

रीता जी एक बहुमुखी प्रतिभा की धनी व्यक्तित्व है। रीता जी ने अपने कैरियर की शुरूआत यू. एस. ए. थिएटर पर्सन से की। रीता जी ने 16–17 साल की उम्र से ही अम्मी के पास शास्त्रीय संगीत की तालीम लेना शुरू कर दिया, उनसे कई रागें और ग़ज़लें सीखी।

रीता जी देश की ऐसी कलाकारा है, जिन्होंने भारतीय संगीत को बढावा दिया और निखारा। रीता जी पिछले पाँच दशकों से "कलाधर्मी" नामक संस्था के निदेशक पद पर कार्यरत है।

रीता जी ने ग़ज़ल गायकी को बढ़ावा देने के लिए बाग – (BAAG Begum Akhatar Academy of Gazals) की स्थापना भी की है।

रीता जी ने बेगम अख़्तर जी की जिंदगी पर "एकल" कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकी है। रीता जी को कई पुरूस्कारों और मानद उपाधियों से नवाजा गया है।

1993 – में बांग्लादेश का' 'मल्लिका–ए–मौसिकी' अवार्ड प्राप्त किया।

2003 – पदम् श्री

2000 – संगीत नाटक अकादमी अर्वाड

1575 – दिल्ली स्टेट अर्वाड

वर्तमान में कई शिष्यों को शिक्षा दे रही है, उनके शिष्य जैसे योगीराज सीकीदार सुमिता दत्ता। साथ ही देश–विदेशों में भी संगीत प्रस्तुति भी दे रही है।"[54]

[54] शोध ग्रंथ/ बेगम अख़्तर की गायिकी का निर्वाह करने वाले प्रमुख शिष्य/ पृ. 30

अंजली बनर्जी –

"अंजली बनर्जी का जन्म पटना में 1942 में हुआ। अंजली जी को संगीत सीखने के लिए प्रोत्साहन अपने माता–पिता से मिला क्योंकि अजंली जी की माता ने भी इसराज सीखा और उनके पिताजी ने भी गाना सीखा था

इसलिए इनके घर में शुरू से ही संगीत का माहौल था। अंजली बनर्जी के सबसे पहले गुरू किशोरी शरण मिश्र से सीखा जो पटवर्धन जी के शिष्य थे।

बेगम अख़्तर अपनी शिष्या अंजली बनर्जी के साथ

लगभग 1954 में बेगम अख़्तर जी की शिष्या बनी। जब उनकी आयु 11–12 वर्ष की थी। बेगम जी लखनऊ में रहती थी, इसलिए अंजली जी का उनसे सीखना आसान रहा क्योंकि अंजली की पिताजी का स्थानान्तरण उस वक्त लखनऊ में हुआ था।

अंजली जी ने 12 वर्ष की उम्र से लेकर उनके इंतकाल तक उनसे सीखा। अंजली जी ने संगीत शौकीया तौर पे सीखा, इसे कभी अपना व्यवसाय नहीं बनाया।

वे दिल्ली University के आई.पी. कॉलेज में अंग्रेजी के पद पर लगभग 30 वर्षों तक कार्यरत रही। अंजली जी भी कई शिष्यों को संगीत सीखाती है। अंजली जी ने पार्शियन भाषा में बहुत गाने गाए है।

अंजली जी ने इन्डो–पर्सन सोसायटी में बहुत कार्यक्रम दिए है। बेगम अख़्तर जी के इंतकाल के बाद उन्होंने बडे गुलाम अली खाँ साहब के बेटे मुन्नवर अली साहब से भी सीखा।

अंजली जी को 80 के दशक में "इमोश्नल इंटीग्रेशन अर्वाड" भी मिला। उनकी अन्तिम प्रस्तुति 1996 में थी। उसके बाद उन्होंने किन्हीं कारणों से प्रस्तुति देना छोड़ दिया।"[55]

ज़रीना बेगम –

बेगम अख्तर अपनी शिष्या जरीना बेगम (दाएं से दूसरे स्थान पर) के साथ

"ज़रीना बेगम लखनऊ में रहती थी जो बेगम अख़्तर की शिष्या व अवध दरबार में गाने वाली अंतिम गायिका थी। 88 वर्ष की उम्र में उनका इंतकाल हो गया। ज़रीना बेगम को प्रथम बेगम अख़्तर अर्वाड से नवाज़ा गया। जो उन्हें लखनऊ के मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से प्राप्त हुआ। बेशक यह एक गौरव की बात होगी किसी भी शिष्य के लिए कि उसे उसके गुरू के नाम का पुरूस्कार दिया जाए।"[56]

---

[55] शोध ग्रंथ/ बेगम अख़्तर की गायिकी का निर्वाह करने वाले प्रमुख शिष्य/ पृ. 34

[56] Times of India – 23 Aug 2015

रेखा सूर्या –

बेगम अख़्तर अपनी शिष्या रेखा सूर्या के साथ

"रेखा सूर्या जी भी बेगम अख़्तर जी की शिष्या है, जो वर्तमान में बेगम अख़्तर जी की गायकी को आगे बढ़ा रही है।

उनका जन्म लखनऊ में हुआ, वो वर्तमान में दिल्ली में निवास करती है। रेखा सूर्या जी ने अंग्रेजी साहित्य में स्नातक दिल्ली के मिरानडा हाउस से किया उसके बाद उन्होंने संगीत में रूचि के अनुसार बेगम अख़्तर जी से सीखा। बेगम अख़्तर जी के साथ में ज्यादा समय नहीं रह पायी लेकिन जितना भी समय रही उन्हे बहुत कुछ सीखा।

इन्होंने एक किताब भी लिखी है। जिसका नाम "Sensual Style" ये किताब 23 अप्रैल 2015 के प्रकाशित की। ये बेगम अख़्तर जी से सीखने वाली अंतरिम शिष्या थी।

अवध विश्वविद्यालय में "मल्लिका–ए–ग़ज़ल" बेगम अख़्तर के नाम से खुलने वाली संगीत कला अकादमी में उनकी सबसे छोटी शिष्या रेखा सूर्या अतिथि प्रोफेसर होगी।

वर्तमान में भी वे आए दिन कार्यक्रम प्रस्तुति देती रहती है। मेरा उनसे मिलना व्यक्तिगत रूप से चेन्नई में हुआ, वे किसी कार्यक्रम के दौरान वहाँ आई थी, तभी उनसे वार्तालाप हुआ और कई जानकारियाँ उनसे व बेगम अख्तर जी से सम्बन्धित मिली।"[57]

बेगम अख़्तर जी के और भी कई शिष्य है। जिन्होंने उनसे बहुत कम समय की सीखने का दावा किया। जैसे – वसुधंरा पंडित/ सुरैया रहमान/ कमल सिंदु आदि।

(iv) बेगम अख़्तर के शिष्यों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं की प्रति –

गजल के पुराने अंदाज की वापसी

जनसत्ता 18.4.2000

रवींद्र मिश्र

कुछ साल पहले ही फिल्मी गीतों की तरह आरकेस्ट्रा पर आधारित गजल गाने का दौर जोर शोर से शुरू हुआ था। पर इस तरह हल्के-फुल्के ढंग से गाई जाने वाली गजल लोगों को लंबे समय तक रिझा नहीं सकी। गजल में रुख को बदलने और बेगम अख्तर की अनूठी गायकी के प्रति लोगों में रुझान पैदा करने में उनकी कई इनी

गायन

गिनी शिष्याएं बार-बार सामने आईं। उनमें एक नाम है रेखा सूर्या। वे बेगम अख्तर की अंतिम शिष्या हैं।

ऊर्जाभरी और दमदार आवाज की धनी रेखा ने बेगम के ठुमरी अंदाज को बखूबी सीखा और अपने गायन में उतारा है। बीस साल से गजल गायकी में अपना नाम दर्ज कराती आ रही रेखा सूर्या ने देश विदेश में गजलों की कई महफिलें सजाई। अमेरिका और कनाडा में सैकड़ों लोग उनकी गजल के चहेते हैं।

दिल्ली में इस बार उन्होंने इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में अपनी आवाज का जादू जगाया। गजल के अलावा बनारस- पटियाला अंदाज की ठुमरी और पूरब अंग का दादरा होरी ठुमरी, चैती, झूला और कजरी गाने में भी उन्हें महारत है। बेगम अख्तर की शैली में गाने वाली रेखा सूर्या अपने गुरु की कार्बन कापी नहीं है। गाने में उन्होंने अपना भी एक अंदाज ईजाद किया है। उपशास्त्रीय संगीत की हर चीज को वे एक खूबसूरत अदायगी में पेश करती हैं।

गाने की शुरुआत उन्होंने दादरा से की। छह मात्रा में बंधी बंदिश 'बिकल जिया होए तुम्हारे कारन' को गाने में रेखा ने बनारस की मशहूर गायिका रसूलन बाई की याद दिलवा दी। बंदिश के एक-एक शब्द को स्पष्ट गाने और रचना के भाव के अनुसार बोल बनाव और उनको संवारकर पेश करने में पूरब गायिकी की सरसता उनके गाने में खूब उभरी। कैफी आजमी के लिखे अंतरे- 'पनघट पे छेड़े, डगरिया पे छेड़े' की दादरा में प्रस्तुति भी मोहक रही।

इसरार अंसारी की राग खमाज में नज्म 'चंद' लम्हो के लिए दिल में बसाया क्यों था, दूर जाना था, तो पास बुलाया क्यों था' और राग पीलू में अश्क अंबालवी की गजल- दिल तो क्या चीज है, हम जां से गुजर जाते हैं, जिंदगी तेरी तमन्ना में मर जाते हैं। इसमें शायर की कल्पना में दर्द के भाव को रेखा ने खूबसूरत अंदाज में उभारा। दादरा की तरह गजल में बोल बनाव और सुर व लय बांध कर पेश करने में उनकी एक अच्छी सूझ थी।

उनके गायन को रंग देने में तबला पर शांति भूषण की संगत भी खूब जमी।

बेगम अख़्तर शिष्या रेखा सूर्या

[57] शोध ग्रंथ/ बेगम अख़्तर की गायिकी का निर्वाह करने वाले प्रमुख शिष्य/ पृ. 38

LIBRARY

HIT CITY 9-4-2003

Begum Akhtar's Disciple Is The New Queen Of Ghazals

Barsha Nag Bhowmick

THE AUDIENCE at Kamani Auditorium was enchanted as Rita Ganguly presented her melodious numbers for the Thumri Festival, organised by the Indian Council for Cultural Relations (ICCR). Her eyes glinted with a playful innocence, and there was a deep reverence as she spoke of her Guru Begum Akhtar. "A life like Begum Akhtar's seems stranger than fiction as it is dipped in solitude and tears. I've got national awards – Sangeet Natak Akademi as also Padmashree this year, only because gurus like Siddheshwari Devi and Begum Akhtar have given me something which is invaluable," she says.

In fact, endowed with a rich voice, Ganguly has developed a distinct style of rendering *thumri*, and is known as one of the foremost performers of the light classical forms of Hindustani music; her intimacy with music influencing her performance on stage. The pitch, high and low, of her tune is intertwined with the ever-changing mood of the life-story of the *mallika* of semi-classical music.

Rita Ganguly has developed a distinct style of rendering *thumri*

PHOTO: ANIL GIROTA

"*Thumri* has acquired much importance in the realm of musical performance for the classes as well as masses. Compared to the *khayal* or *dhrupad*, the *thumri* is easy on the ear and it commands a bigger audienc," remarks Ganguly.

How did the *thumri* originate? She explains, "The term *thumri* has evolved from the root word *thumakana*, which is making a dance-like movement. The nomenclature itself indicates the close bond that exists between *thumri* and dance." She further adds, "Music is something more than mere technique. You go beyond the technique and that is where music starts. Techniques are nothing more than mere mathematics."

In her performance, the *raga* is well and truly brought out and one can hardly complain of any weakening of *sur* anywhere. But what really strikes the audience is her adroit and aesthetic employment of what is called *bol banana* in the *thumri*, which invariable follows.

This artistic device is no mere variety in the utterance of words but its skilful adaptation to possible changes of feeling and fancy in contemplating, during the course of singing itself, the meaning of the song's amatory text. ■

बेगम अख़्तर शिष्या रीता गांगुली

STATESMAN, AUGUST 12. 1991

Anjali Banerji the virtuoso ghazal singer

Ghazals galore at FICCI Auditorium

By a Correspondent

A festival of ghazals, organized by the Sahitya Kala Parishad, at the FICCI Auditorium got off on Friday on a note of alarm. The jampacked hall was witness to a bomb hoax. Things settled down when the police arrived with sniffer dogs, searched the place and declared an all-clear.

However, the mode of the poetic evening was set when Anjali Banerji sang mellifluously a Jigar composition, a philosophical paen to the muse of wine: "Yeh ha maikada, yehan rind hain, yehan saki sabka imam hai".

Later, on request, she sang another of Jigar's popular lyrics: "Koi kehde gulshan gulshan".

Anjali, who is Begum Akhtar's favourite pupil, has been schooled in the classical school and insists on maintaining the purity of the ghazal in her rendering. Her singing is noted for her Andaz (style) as well as Talaffus (enunciation).

She regaled the capacity audience with a ghazal in Persian and sang from the works of Fana Kanpuri, Bahzad and Shamim Jaipuri.

Shamim's ever popular "Taseere chashme tar na dikhadun to baat kya", went home and drew repeated ovation.

Anjali was accompanied on the tabla by Fateh Mohammad of the Delhi gharana.

Anjali was followed by Ahmed Hussain and Mohammad Hussain of Jaipur. Accompanied by the alien guitar, they sang duet style in a popular manner and at once the tone and tempo fell from the sublime to that of the cocktail circuit. Their favourite was Dagh Dehalvi and they rendered a couple of his well-known ghazals.

Saturday's evening began with ghazals sung by Sudeep, a pupil of Shanti Hiranand who too hails from the Begum Akhtar school. Endowed with a fine voice range, he rendered ghazals with a degree of authenticity. However, he is yet to mature to his full prowess.

The evening was rounded off by Shaila Hattangadi. She is personable and sings with a husky voice. Her poet of the day was Ashq, popular and easily accessible. Her singing bore the stamp of the late music director Jaidev, her mentor.

Sunday evening features Mahima Devohuti Casewa and Chhaya Ganguly, the well-known ghazal artistes from Bombay.

बेगम अख़्तर शिष्या अंजली बनर्जी

110001 LIBRARY

How not to render the ghazal

THE HINDU, Friday, August 13, 1993.

Shanti Hiranand, the well-known disciple of Begum Akhtar, presented her latest show in New Delhi the other day. By all indications she appears to have lost her touch, reports Prakash Wadhera...

In a programme titled 'Yeh Ghazal Hai' at New Delhi's India International Centre the other day, the late Begum Akhtar's well-known disciple Shanti Hiranand presented an evening of ghazals after the formal release of her cassette by Mr. Vasant Sathe. Rais Mirza, who compered the show, was in his usual creative vein where ghazal and Urdu poetry was concerned. Music, he said, was the only balm to heal the wounds caused by today's strife-torn world.

I have always entertained a very special respect for Shanti Hiranand for her able and steadfast perpetuation of the inimitable style, spirit and in some ways the personality of Begum Akhtar's music. Shanti has been the one to have bestowed total allegiance and devotion to the latter without looking to anyone else. She can be said to have achieved a fuller identification with her late teacher. Her ghazals have always cut deeper and left a purer, more undefiled, a kind of one-strand impact on the mind. They have never striven to mix different melodic tinctures. And therein lies her strength as that of Begum Akhtar herself.

However, in this particular programme I had the feeling that Shanti Hiranand's musical statements were coming out routinely and impassively, a product of dormant, unstirred soul. To my thinking whenever a piece of music fails to cut deep the chief reason always lies in the lack of warmth and sincerity in expression. In the absence of the latter, an artiste's musical ideas seem limited, stereotyped and a rehash of his or her usual jog-trot. One felt that a comparative disuse of throat and a laying down of her (practising) sails had rather diminished its mobility. And to be sure a distrust of one's technical and executional abilities has a corrosive influence on ones creativity. Such an artiste chooses to translate only the safe, straight ideas, keeping the complex ones at an arm's length even though they be properly his own. It could be observed that in repeating the same line or Antra of her various ghazals Shanti did not alter a wee bit their musical scheme, curbing even the natural temptation of employing the most natural or readily available grace-note or supporting phrase in re-rendering the same line. That imparted to her ghazals a tame and stereotyped texture. It is not difficult to see if a piece of music is provoked or unprovoked. Scarcely a crisp ornamentation or a smart and jerky musical usage lending variety and colour to the slovenly proceedings crossed the recital.

The absence of instant emotion for the first time made one conscious of the circumscribed musical vocabulary of the artiste. Evocation had taken a back seat. I think that Shanti Hiranand's broad and loud 'Aakar' especially on the high notes (Tar Shadja) sours her singing. The loud tone comes in a blast of sound, doing injury to the delicate sentiments expressed in the ghazal. Such an 'Aakar' would have gone well with classical music. But a ghazal is made up of more fragile and elfin stuff. The idea or sense enclosed in a lyric withers and withdraws within itself like a flower when hot wind blows. This open-mouthed 'Aakar' I am quite sure, has not come to her from Begum Akhtar whose expositions too were concentrated, for the greater part on the Tar Shadja. And yet the note never grew violent or jarring. It used to be ever wrapped in velvety modulations. This kind of vocal articulation appears to be a "foreign import" in Shanti's music.

During the first half of her journey in the middle octave — especially on the steady and unflagging 'Aadhar Shadja' — her broad articulation comes as a virtue, giving a sense of majesty and power to her music and showing hers as a firm, classically trained voice. As she dug herself in on the ground Sa in her opening ghazal of Qateel one tended to like the wide blade of her voice. It also exhaled a fine feeling of relaxation, absence of all haste or hurry. But as the landscape unfolded itself, sameness of motif and phrase set in. The feeling of personal relish was missing and with it any urge or curiosity to discover new paths. The initial melodic scheme of the lyric in Maru Bihag came to rest in the lap of Eman.

The next ghazal of Jigar was in the 'usual' Kalavati in which the dramatic potential of an emphasised and 'Andolit' Komal Nishada was too undisguisedly exploited. The late Begum Akhtar also employed it similarly. But in her case her modulated and distilled melody on the swara in place of Shanti's loud and unusually pronounced one, transformed the note into a glowing figure of expression.

The following Fani ghazal showed its unwillingness to step out of the preceding swara-track. It, therefore appeared to be only an extension of the previous, musically speaking. The mention of 'Door taq chhaye the badal' in another Qateel lyric was a provocation enough to invoke the aid of Malhar though clearly amateurishly. The usages of Malhar sounded surfacy and rather crude, the dabbling of a person in whom the spirit of Malhar had scarcely soaked in.

Shanti Hiranand.

Prolific imagination

Sur Sangeet Society's musical homage to the late Ustad Bade Ghulam Ali Khan and Amir Ali Khan at the Triveni Kala Sangam the other day vainly seeking to mix ghazals with recitals of classical music remained a damp affair. There was not even a single artiste of ranking and in form. The concert thus did not rise above amateurish level. The only compensation was a thumri of Marghoob Husain Khan, son of the late Amir Ali.

Marghoob, whom I was hearing for the first time, is gifted with a melodious voice and a prolific imagination. His expression is full of grace and suppleness. Besides he is completely at home in the specialised repertoire of effects and ornamentations which is the forte of the Patiala style. His vocalism moves with a delightful alacrity. His thumri in Khamaj depicting a love-lorn woman, terrified by lightning and thunder besides the absence of her sweetheart, was in essence a Kajri. He is certainly worth listening to more.

Out of practice

For all her graceful hand, mellow plucking and gentle tone on the sitar, Sharmista Sen's recital could at best be described as sparsely populated in musical ideas. She used to reveal greater space and finesse earlier. She appears to be out of practice now. Upon that she picked up a raga — Tilak Kamod — which imposes a good many restraints and hurdles, not permitting a smooth, straight movement. Perpetual mellowness of her strike begins to sound rather timid and listless after a time. It craves to be punctuated with some gutsy work. A phrase such as Ga Ma Pa and another Ri Ga Ma Pa could be heard. One could not say whether they were intentional or resulted from a slip of the hand. The work on the Razakhani or the fast Gat was skeletal. Sarmishta concluded with a composition in the monsoon mode Gaur Malhar.

Jumbled music

More often than not, concerts present their star item at the end. But in this case no wine followed the preceding measures of water. A vocal rendering of raga Malkauns by Manorama Ahuja turned out to be a drab affair. Not that she faltered in swara or raga but her jumbled music, going back and forth on the octaves without a plan was shorn of character. She is said to have learnt from late Bade Ghulam Ali Khan. On view was a fair enough natural instinct which had not been trained to observe the restraint and discipline enjoined by classical music. The topsy turvy ideas, reclining now on one note and the next moment on another spent themselves in no time to leave few options to the singer compelling her to round off both the slow and fast Khayals in 20 minutes. Few ragas in the Hindustani system are as accommodating and spacious as Eman and Malkauns. But if you fritter away your wealth with both hands, ere long you find yourself a pauper. A situation soon arose when every time she took off, there was only note — Tar Shadja — in her vision. And on this she perched inexorably, persistently.

Film awards

The Cine Technicians Association of South India honoured film personalities last week. The Ramnoth award for 1993 went to the veteran lab technician and director R. Krishnan of Krishnan-Panchu for his distinguished contribution to the motion picture industry. The AVM award winner was dance master Prabhu Deva for his choreography in Tamil and Telugu films. The Bommai Nagi Reddy award went to music director A. R. Rahman. Film editor K. S. Sankunni got the L. V. Prasad award while director Hariharan received the MGR award.

The Kalaingnar Karunanidhi award went to Kamal Hasan for his screenplay and dialogue ("Thevar Magan") and the "Pesum Padam" Ramanath award went to K. Bhagyaraj. Cinematographer Jayanan Vincent was the recipient of Van Der Auwere Award and the K. Subramaniam award was received by producer R. B. Chowdary.

The awards were given away by Mr. A. Natarajan, Director, Doordarshan Kendra, Madras. Messrs M. Saravanan, D. Ramanujam, A. Ramesh Prasad, B. Viswanatha Reddy, Valampuri Somanathan, Mohan Gandhiraman and Dr. M. K. Pavithran felicitated the award winners. The President of the Association, Seegampatti Rajagopal welcomed the gathering and compered the function and the secretary Mr. S. V. Rao proposed a vote of thanks.

बेगम अख़्तर शिष्या शान्ति हीरानंद

SANGEET NATAK AKADEMI NEW DELHI 110001 LIBRARY

Devoted to ghazal singing

The Hindustan Times 16.10.2003

Aasheesh Mamgain

SHE HAS an emotional bond with music. It brings tears to her eyes and adds joy to her life. A singer of ghazals and devotional songs, Shevanti Sanyal feels singing ghazals brings the best out of her. But the opposite is also true. She brings the best out of ghazals.

Shevanti's musical career started early with an award winning performance in a Youth Festival in West Bengal. A Vasant Kunj resident, Shevanti started learning singing virtually in her mother's lap. "My mother Protima Mazumdar was a singer from the Gwalior Gharana and was a regular singer for AIR Kolkota.

Later on, she trained under Rameshwar Pathak of Gaya Gharana and Pt. Jagdish Prasad of Patiala Gharana. She honed her ghazal siging under Begum Akhtar's disciple Shanti Hiranand. She holds a Sangeet Visharad degree from Prayag Sangeet Samiti. In her long career, Shavanti has come out with one album of *ghazals* called *Hayat* and four cassettes of devotional songs. But live performances remain her forte.

Some of her best days as a performer were in Mauritius where she went under an ICCR programme. "They have seven day-long Shivratri celebrations. Being a part of it and performing there was a totally out of the world experience for me," says she. She adds, "The audience in places like Jaipur, Udaipur, Banaras, Jabalpur and Jodhpur have very good knowlegde about music and are perfect listeners." Other places she loved presenting devotional songs include Chitrakut Ramayan Mela in Mansa Devi (Panchkula). Shevanti has also performed in London and in Moscow on several occasions as a representative of Sahitya Kala Parishad and under the Indo Russian Friendship Society.

Shevanti has also featured in DD's programme, *Ghazal ke saaye mein*. Shevanti is a top grade artist of All India Radio (AIR) and has performed many times on DD national Network.

SANJEEV VERMA/HT

Shevanti Sanyal is a regular ghazal singer at AIR Kolkata.

She has also directed and sung for dance-drama Lalleshawri, made by Abhinav Cultural Society. The dance-drama, for which music was composed by Rajendra Kachroo, is on the life of a little known Bhakti singer from Kashmir.

She exhibits a child-like exuberance when asked about what she likes in music. "I like raags like Yaman, Pilu, Bhairavi, Kirwani and Behag. But Darbari touches me like nothing else does. There is a surge of emotions whenever I hear it." Though, she does not get much chance to present a thumari but it is something that she is quite good in rendering.

Shevanti is highly inspired by the singing of Farida Khanum and thinks Mehdi Hassan is the undisputed king of ghazals. But today's music scene according to her is not very inspiring. "The music scene in the Ghazal is very poor and music companies are just not ready to take any sort of risk. Live performance is now the only way to reach the audience. Today is the time of remixes. The people who sing them are no doubt talented but I still cannot understand their existence," says she. She does have an immediate desire. Says she, "It is my desire to prepare a musical with underprivileged children. I have been working on it and hope that it will soon be realised."

शान्ति हीरानंद की शिष्या शैवान्ती सान्याल

गजल, दादरा व कजरी से सजी एक सुरमयी शाम

गजलों, दादरा, कजरी व गीतों से सजी थी वह शाम। गालिब से शुरुआत हुई और कतील की नज़्म से होते हुए हफीज़ जालंधरी के तराने 'अभी तो मैं जवां हूं....' से परवान चढ़ी। गायिका थीं सुमिता दत्ता और उन्हें अपनी गुरु प्रो. रीता गांगुली के सामने गाने का अवसर मिला, त्रिवेणी कला संगम में। पेशे से म्यूजिक टीचर सुमिता दत्ता ने यूं तो बहुत से बच्चों को संगीत में पारंगत बनाया, लेकिन मंच पर वह खुद एक शिष्या की ही तरह लग रही थीं। सामने बैठी उनकी गुरु उन्हें बार-बार खुलकर गाने और माइक दोष को ठीक करने को कह रही थीं।

कार्यक्रम का आगाज सुमिता ने किया गालिब की मशहूर गजल 'दायम पड़ा हुआ हूं, तेरे दर पर नहीं हूं मैं...'। ये पंक्तियां बरबस ही बेगम अख्तर की याद को ताजा कर गईं। दरअसल, गालिब की गजलों के साथ बेगम की आवाज इस कदर जुड़ गई है कि एक का जिक्र आते ही दूसरे का नाम लब पर आ जाता है। बेगम अख्तर ने गजल गायकी का एक अलग अंदाज विकसित किया और सुमिता भी उसी परम्परा से खुद को जोड़ती हैं। इतना ही नहीं, सुमिता ने अपनी गुरु रीता गांगुली की ही तर्ज पर शास्त्रीय गायन में परम्परागत लोक संगीत का मेल (फ्यूजन) भी प्रयोग किया है, जिसे लोगों ने काफी पसंद किया। इस कार्यक्रम में एक गीत में उनके इस प्रयोग की बानगी भी देखने को मिली।

कतील की गजलों से कुछ खास लगाव है सुमिता को। उन्होंने उनकी दो गजलें पेश कीं -- 'अपने हाथों की लकीरों में बसा ले मुझको' और 'तुम पूछो और मैं न बताऊं, ऐसे तो हालात नहीं...'। फिर बारी आई गालिब की और उनकी मशहूर गजल 'रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ' को आवाज दी सुमिता ने। दादरा और कजरी भी सुमिता को बहुत पसंद हैं। बहुत दिन बीते सइयां को देखे (दादरा) और सावन की झड़ी लागी (कजरी) को काफी भावपूर्ण अंदाज में पेश किया उन्होंने। इसके बाद हफीज जालंधरी की हर दिल अजीज नज़्म 'अभी तो मैं जवां हूं...' भी पेश की सुमिता ने। हालांकि इसमें जिस तरह की आवाज व खनक की दरकार थी, वह सुमिता लाने में पूरी तरह असफल रहीं। दरअसल, उस दिन सुमिता पूरे आत्मविश्वास के साथ नहीं गा पा रही थीं और ये कमी छुपाए नहीं छुप रही थी। सुमिता के साथ मंच पर सारंगी पर संगत दे रहे गुलाम साबीर खान ने वाद्य पर अपनी पकड़ से दर्शकों को अपना कायल बना लिया और खूब तालियां बटोरीं। उस्ताद गुलौज गुलाम तबले पर और हार्मोनियम पर थे सज्जाद अहमद खां।

भाषा सिंह

रीता गांगुली की शिष्या सुमिता दत्ता

MELODY TODAY

A rising star in the world of ghazals

NEW DELHI 110001 LIBRARY

It started with Zee TV's search for a young singer to share a plat form with artistes like Mehdi Hassan, Ghulam Ali, Munni Begum etc. for it's popular ghazal series *Rang Barse* — the new youngster they came up with was — Sudeep. Sudeep took to music at an early age but it was his training in classical music and the nuance of ghazal rendition under Shanti Hiranan — the foremost disciple of Begum Akhtar,that gave form to his passion for ghazal singing. He is one of the few ghazal singers well versed in Urdu and it's literary idioms which allows him access to a repository of Indian and Pakistani poetry as also the unexplored collection of classical poetry.

Today,his repertoire includes Zafar Ghalib, Faiz, Firaq and gems from the treasury of Begum Akhtar. His latest offering *Phir bhi* is a mirror to the emotions of millions whose life is not what the doctor ordered. The gems that stand our are Mir Taqi Mir's *Fakirana aaye* and *Koi aarzoo nahin hai* and Saba Afgani's *Yeh dil jaata hai.* Sudeep has a style of rendering which reminds you of the older ghazal singers and yet, would appeal to the modern generation. The music has been composed by Sudeep himself along with Anand Kunal. Like all poetry, even the sad-dest thought carries with it a silver lining of hope and optimism and the choice in this collection fulfills that. Sudeep seems to have started off on a career that will make him go places. The album has been released by Magnasound whose intent it is to bring back the ghazal to the domain of good poetry and take it away from the shallowness of superficial thought.

By Lata Khubchandani

The Free Press Journal, 9 February 1996

शान्ति हीरानन्द का शिष्य सुदीप

तृतीय अध्याय

मेहदी हसन घराना

तृतीय अध्याय

मेहदी हसन घराना

(अ) मेहदी हसन : जीवन परिचय –

"रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ
आ फिर मुझे छोड़ के जाने के लिए आ"

अहमद फराज

"अहमद फराज" की लिखी इस ग़ज़ल को जिस शख्स ने मशहूर किया है वह शख्सियत किसी परिचय की मोहताज नहीं है।

मेहदी हसन इस नाम से कौन वाकिफ नहीं होगा।

उन्होंने कई ग़ज़लकारों के कलामों को अपने सुरों में सजाकर नया आयाम दिया उनकी मखमली अवाज के दरमियां जब अल्फाज मौसिकी का दामन पकडती है, तब हम खुदाओं की सेर करते हैं।

"मोहब्बत जिंदगी है, और तुम मेरी मोहब्बत हो,
नवारिश करम शुक्रिया मेहरबानी"

जैसी खूबसूरत ग़जलें गाने वाले पाकिस्तानी गायक मेहदी हसन की मखमली आवाज सभी के दिलों में अपनी खास जगह रखती है।

'मेहदी हसन' ग़ज़ल की तरह ही एक मखमली रूमानी नाम और दिलशिकस्तों के लिए एक रूहानी नाम। पहले ग़ज़ल साहित्य की एक विधा थी, उसे संगीत की विधा बनाया मेहदी हसन साहब ने। मेहदी हसन को हम किस तरह याद करेंगे ये सोचना मुश्किल नहीं है क्योंकि उन्हें सुनते रहिए तो भूलने की हिमाकत तो ही नहीं पाएगी। मुश्किल तो ये सोच पाना है कि उन्हें भुलाया कैसे जाएगा। कोई रंग, कोई फूल, कोई मौसम, कोई आग और कोई अहसास अछूता नहीं रहा उनकी आवाज से। कोई एक गीत, नज़्म, या ग़ज़ल उठा लीजिए। मेहदी हसन वाकई उन सारी हदों से परे एक शख्सियत का नाम है जो जिंदगी मौत के दौर से इसलिए गुजरती है क्योंकि कुदरत का यही निजाम है। वरना अमर हो जाने की परिभाषा कोई और हो ही नहीं सकती।

"मेहदी हसन का जन्म सन् 1933 में राजस्थान के ही जयपुर डिवीजन के झुंझुनु डिस्ट्रिक्ट के गाँव लूणा में हुआ। विभाजन के पश्चात् उनका परिवार पाकिस्तान के साहीवाल जिले में चींचावतनी तहसील में जाकर बस गये।"[1]

"मेहदी हसन साहब के दादा उस्ताद इमाम खाँ जो ध्रपुद–धमार की जानी मानी हस्ती थे। मेहदी हसन के पिता उस्ताद अजीम खाँ और चाचा उस्ताद इस्माइल खाँ का ध्रुपद–गायन प्रसिद्ध था।"[2]

मेहदी हसन का मौसिकी से जुड़ा होना स्वाभाविक सी बात थी क्योंकि मेहदी हसन साहब को संगीत का संस्कार अपने ही परिवार की जड़ों से प्राप्त हुआ।

(ब) पारिवारिक परिचय –

"मेहदी हसन साहब का जन्म राजस्थान के लूणा गाँव में एक साधारण परिवार में अजीम खाँ मिरासी के घर हुआ।

[1] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृष्ठ 154
[2] अखिलेश झा / मेरे मेहदी हसन / प्रकाशन–रेमाधव आर्ट प्राइवेट लिमि. / पृष्ठ 39

मेहदी हसन के दादा उस्ताद इमाम खाँ जो ध्रुपद–धमार की जानी मानी हुई हस्ती थे। वे कलावंत परिवार की 16वीं पीढ़ी थे। मेहदी हसन बाबर गौत्र से थे और कहा जाता है कि इस बाबर गौत्र के कलाकारों का आज तक कोई सानी नहीं है।"[3]

"इमाम खाँ साहब के दो बेटे–अज़ीम खाँ और इस्माइल खाँ हुए। उनके दोनों बेटे भी ध्रुपद–धमार में माहिर थे। मेहदी हसन अपने पिता उस्ताद अजीम खाँ की दूसरी और छोटी संतान थे। बडे भाई गुलाम कादिर भी कम उम्र में ही राज्याश्रय प्राप्त करने में सफल रहे थे इनसे छोटी एक बहन भी थी। अजीम खाँ साहब को दूसरी शादी से भी दो बेटे और दो बेटियाँ थी।" गाने से तआल्लुक पंडित गुलाम कादिर और मेहदी हसन का ही रहा।[4]

"मेहदी हसन साहब की पहली बीवी का नाम शकीला बेगम और दूसरी बीवी का नाम सुरैया खानम। किसी पंडित ने मेहदी हसन साहब का हाथ देखकर ये बोला था कि तुम्हारे हाथ में दो शादियाँ लिखी हैं और दूसरी शादी से तुम्हारी किस्मत खुलेगी।

मेहदी हसन अपनी पत्नि सुरैया खानम के साथ

[3] शब्द ब्रह्म/ग़ज़ल गायकी के मसीहा उस्ताद मेहदी हसन/17 जनवरी 2017/पृष्ठ 28
[4] अखिलेश झा/मेरे मेहदी हसन/प्रकाशन–रेमाधव आर्ट प्राइवेट लिमि./पृष्ठ 38

यह बात सत्य साबित हुई उनके बेटे स्वयं यह बताते हैं कि इस शादी के बाद मेरे वालिद का सितारा चमका और मेरे वालिद का सितारा चमका जब तक मेरी वालिदा रही, माशा अल्लाह उनका सितारा बुलदियों पर ही रहा।"[5]

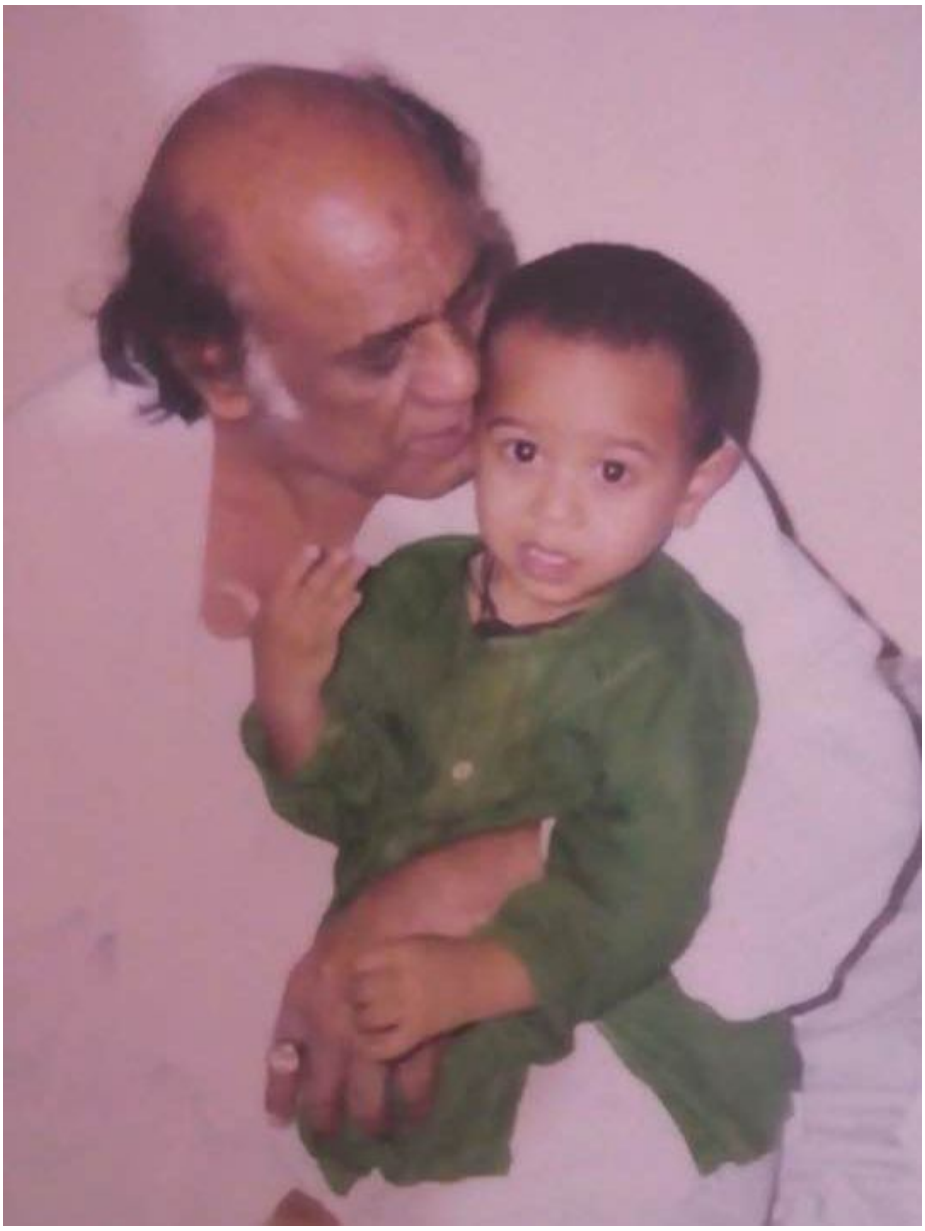

मेहदी हसन अपने पौते मुहम्मद मेहदी हसन के साथ

मेहदी हसन की दो शादियों से 14 संताने थी। 9 बेटे और 5 बेटीयाँ। पहली शादी से 6 बेटे और 3 बेटीयाँ और दूसरी शादी से 3 बेटे और 2 बेटियाँ थी। वे अपने बच्चों को नंबर के हिसाब से याद रखते थे। मेहदी हसन साहब की बेटियाँ भी बहुत सुर में है।

[5] अखिलेश झा/मेरे मेहदी हसन/प्रकाशन–रेमाधव आर्ट प्राइवेट लिमि./पृष्ठ 58–59

"वर्तमान में उनके बेटे आसिफ मेहदी एक जाने माने पाकिस्तानी ग़ज़ल गायक है। मेहदी हसन साहब अपने पीछे 14 बच्चे और कई शिष्यों को रोता–बिलखता व इस संसार को अपनी गायिकी से रूख़सत करके 13 जून 2012 को सदैव के लिए अलविदा कर चले गये।

मेहदी हसन साहब की करांची पाकिस्तान में स्थित मज़ार

पाकिस्तान सरकार ने उनके सम्मान में कई निर्माण करवाये तथा उन्हें कई पुरूस्कारों से भी नवाज गया –

मेहदी हसन साहब तमघा–ए–इम्तियाज अवार्ड प्राप्त करते हुए

कराची (पाकिस्तान) में मेहदी हसन नाम का एक पुल व पार्क का निर्माण होगा।"[6]

"2010 में उन्हें पाकिस्तान सरकार की ओर से हीलाल–ए–इम्तियाज अवार्ड से नवाजा गया था। 2012 में उन्हें पाकिस्तान सरकार की ओर से निशान–ए–इम्तियाज पुरूस्कार से नवाजा गया।

पाकिस्तान सरकार द्वारा मेहदी हसन साहब की स्मृति में जारी किये गये डाक टिकट

1983 में गोरखा दकशिना बाहु अवार्ड से नेपाल सरकार की ओर से नवाजा गया। तमघा–ए–इम्तियाज अवार्ड से भी नवाजा गया है।"[7]

मेहदी हसन साहब की स्मृति में करांची पाकिस्तान में स्थित फैमिली पार्क

[6] संगीत पत्रिका / जून 2011 / पृ. 57
[7] मेहदी हसन / विकिपिडिया गूगल

"25 जनवरी 2012 को कराची (पाकिस्तान) में मेहदी हसन फैमिली पार्क का उद्घाटन सिंध गर्वनर का ईश्तरातुल इबाब खान के द्वारा किया गया। उद्घाटन से मेहदी हसन के बेटे आरिफ हसन और उनके भाई निसार मेहदी मौजुद थे।"[8]

मेहदी हसन की स्मृति में पाकिस्तान (कराची) में एक म्युजोलियम बनेगा। पाकिस्तान सरकार ने 200 sq. feet की जमीन दी है, वही पर मेहदी हसन साहब की मजार भी बनायी जाएगी और म्युजिक लाइब्रेरी बनेगी जिसमें मेहदी हसन साहब से जुड़ी किताबे व ग़ज़लों की cassets का संलग्न होगा।[9]

मेहदी हसन साहब के 91वें जन्मदिन पर गूगल द्वारा डुडल बनाकर सम्मानित किया

(स) संगीत सफर –

"मोहब्बत करने वाले कम नहीं होंगे
तेरी महफिल में हम नहीं होंगे"

"मेहदी हसन के पिता उस्ताद अजीम खाँ और चाचा उस्ताद इस्माइल खाँ का ध्रुपद–गायन प्रसिद्ध था, जाहिर हैं मेहदी हसन को जन्म से ही संगीत का संस्कार प्राप्त था। इनके आरम्भिक गुरू इस्माइल खाँ साहब ही थे। उन्होंने इन्हें ध्रुपद के साथ ख्याल, ठुमरी एवं दादरे की भी शिक्षा दी। राजस्थान का लोक संगीत तो वहाँ के लोगों की साँसों में बसा होता है, मेहदी हसन भी लोक–अंग से अपने शास्त्रीय अंग को परिपूरित करते रहे।"[10]

---

[8] Pakistan Today/25 January 2012
[9] News 18/ June-17/ 2012
[10] अखिलेश झा/मेरे मेहदी हसन/पृष्ठ 39

"He Born into a family of traditional musicians. He claims to be the 16th generation of hereditary musicians hailing from the kalawant clan of musicians."[11]

"मेहदी हसन संगीत के जयपुर घराने से ताल्लुक रखते हैं। पहले मेहदी हसन सिर्फ एक ट्रेक्टर मैकेनिक के रूप में काम करते थे। 1952 में उन्होंने सबसे पहली बार रेडियो पाकिस्तान में गाया। इसके बाद 1656 में पाकिस्तानी फिल्म "शिकार" के लिए पहला गाना गाया, जो था "नज़र मिलते ही बात का चर्चा ना हो जाए" बहुत लोकप्रिय हुआ।"[12]

"मेहदी हसन को गायन विरासत में मिला उनके दादा इमाम खान बड़े कलाकार थे, जो उस वक्त मंडावा व लखनऊ के राजदरबार में ध्रुपद गाते थे।"[13] मेहदी हसन का लगाव संगीत के प्रति जन्म से ही हो गया था।

"बचपन में मेहदी हसन को गायन के साथ पहलवानी का भी शौक था। मेंहदी हसन अपने साथी नारायण सिंह व अर्जुन लाल जांगिड़ के साथ कुश्ती में दावपेंच आजमाते थे।"[14]

"पाकिस्तान आने के बाद मेहदी हसन की पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं थी। परिवार को आर्थिक सहयोग देने के लिये मेहदी हसन साहब ने मोटर साइकिल मरम्मत की दुकान खोली इस कार्य से उनके परिवार का पालन–पोषण किया, लेकिन संगीत को उन्होंने इस संघर्ष काल में भी जारी रखा, संगीत का दामन उन्होंने कभी नहीं छोडा, संगीत में उनकी रूह बसती थी।"[15]

"मैकेनिक का कार्य उम्दा होने के कारण उन्हें "बेस्ट मैकेनिक अवार्ड फार्गुसन कम्पनी" के द्वारा दिया गया।"[16]

अंतहीन संघर्ष के बावजूद मेहदी हसन साहब ने अपनी संगीत–साधना जारी रखी। वे अपनी बदहाली के उस दौर में भी संगीत के लिए ही चिंतित रहते थे। वे एक शहर से दूसरे शहर इसी आशा में भटकते रहे कि उन्हें संगीत–साधना को कोई आधार मिल जाए। पाकिस्तान में हिन्दुस्तान की तरह वैसे राजघराने नहीं थे जहाँ उन्हें राज्याश्रय मिलता।

---

[11] Indian Express New Delhi / 19–1–86 / Page 5

[12] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 154

[13] प्रभा–साक्षी न्यूज नेटवर्क / June 15, 2018

[14] जमील अहमद खान / मेहदी हसन पहलवानी का शौक भी रखते थे / पत्रिका न्यूज पेपर / 18 July 2016

[15] दीपाली रमेश महिपति / 20वीं सदी में ग़ज़ल गायिकी का विकास / शोध ग्रंथ / दिल्ली विश्वविद्यालय–2004

[16] पुरूषोतम कुमार / ग़ज़ल के पर्याय– उस्ताद मेहदी हसन / संगीत कला विहार / Nov. 2013 / पृ. 17

"बात 1952 की है। कराची पहुँचकर मेहदी हसन साहब ने रफीक साहब की फिल्म 'शिकार' के लिए गाने रिकार्ड किए। यह फिल्म 1956 में रिलीज हुई, फिल्म अधिक सफल नहीं रही लेकिन गाना "नज़र मिलते ही, दिल की बात का चर्चा ना हो जाए" बेहद ही मशहूर रहा। यह बात कहना ही होगी कि मेहदी हसन साहब का फिल्म–संगीत से सम्पर्क स्थापित करने में रफीक अनवर साहब का महत्वपूर्ण योगदान रहा।"[17]

"1964 की बात है जब फिल्म–फिरंगी की एक ग़ज़ल दुनिया के सामने आई। ग़ज़ल के बोल थे **"गुलो में रंग भरे, बाद–ए–नौहार चले, चले भी आओ"** फैज अहमद फैज की इस ग़ज़ल को राग झिंझोटी में उनके बड़े भाई गुलाम कादिर ने कंपोज किया था इसके बाद तो मेहदी हसन ग़ज़ल गायिकी के पर्याय बन गये।"[18]

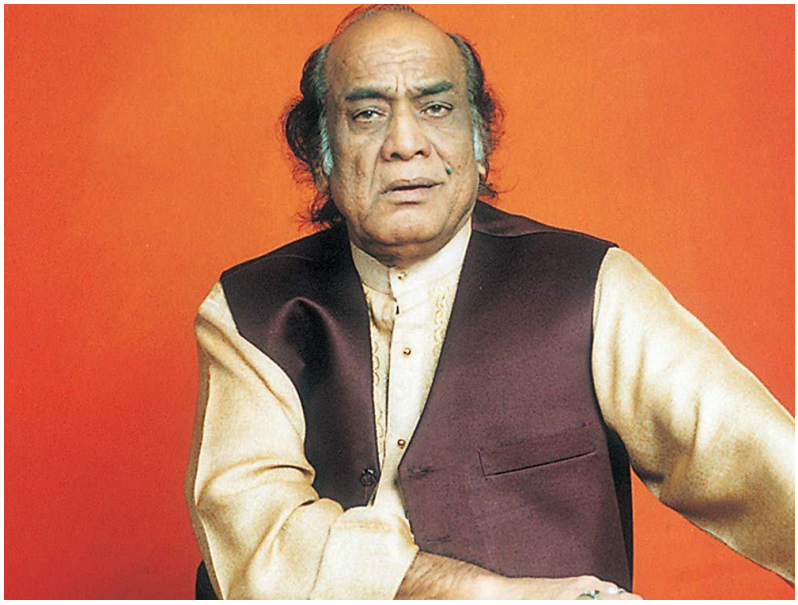

मेहदी हसन साहब प्रस्तुति देते हुए

उनकी गायकी के चर्चे चारों तरफ होने लगे। उस नई आवाज को सबने बहुत पंसद किया। लाहौर के बाद कराची की महफिलों के भी अंजुमन आरा हो गए मेहदी हसन। उन्हें भी अब महसूस होने लगा कि संघर्ष और दुःख के बादल छटने लगे हैं और उनके सपनों का सवेरा होने को है।

धीरे–धीरे उनकी गायिकी का जादू पाकिस्तान में ही नहीं भारत और सम्पूर्ण विश्व में फैलने लगा था। उनकी गायकी ने उन्हें "शहंशाहे–ग़ज़ल" कहलवाया।

---

[17] अखिलेश झा / मेरे मेहदी हसन / पृ. 51

[18] गाँव कनेक्शन 11 / 05 / 2017

(द) मेहदी हसन की गायिकी –

"मुझे तुम नज़र से गिरा तो रहे हो
मुझे तुम कभी भी भुला ना सकोगे
ना जाने मुझे क्यूं यकीन हो चला है
मेरे प्यार को तुम मिटा ना सकोगे
मुझे तुम नज़र से....."

फिल्म 'दोराहा' (1967) पाकिस्तानी फिल्म के लिए राग 'रागे श्री' में जो यह ग़ज़ल मेहदी हसन साहब ने गायी है। उसकी तासीर इतने सालों के बाद भी वहीं है। मेहदी हसन साहब की गायकी एक कुदरती तौफा है, जो ना किसी को मिला है, ना मिलेगा।

मेहदी हसन साहब की गायकी के बारे में बात करते हुए भी कोई सौ बार सोचता होगा, जब तक इंसान सोचता है, तब तक उनकी आवाज वो असर पैदा कर जाती हैं कि कोई व्यक्ति अपनी सोचने, समझने की शक्ति भूलकर और उनकी गायिकी की धारा में प्रवाहित होकर स्वयं को भूल बैठता है। उनकी ग़ज़लें और हमारे जज्बात आपस में बातें करते हैं। ऐसी जादुई व करिश्माई गायकी यदि किसी की है तो वह सिर्फ और सिर्फ मेहदी हसन साहब हैं।

"उनके एक मित्र श्री नारायण सिंह शेखावत ने मेहदी हसन पर कुछ पक्तियाँ लिखी हैं जो बेहद ही सटीक है।

"जनमे यहाँ ही उपने, बस्यों जा सीमा पार
एक बार गाँव में आव तू, ग़ज़लों के सरदार
जग में गायक बहुत है, ग़ज़ली और कव्वाल
लूणा गाँव में जनमिया, जग का प्यारा लाल
मेहदी हसन तेरो नाम है, मेहदी जैसा रंग लाया
मेहदी लगाते ही भा गई, सुहागण छोड़ी काया
ग़ज़ल गुणी जग में घणा, गाते रोज जरूर
लूणा घरा में ऊफनिया, भारत का कोहिनूर
मेहदी रंग लाती है, हाथों में
मेहदी हसन रंग लाता है ग़ज़लों में"

उनके मित्र सिंह नारायण सिंह शेखावत ने उपरोक्त सभी पक्तियों में मेहदी हसन की गायकी को सब गायकों में सर्वोपरी बताया है। उन्हें भारत का कोहिनूर भी कहा है।"[19]

जैसे किनारों से दिखने वाले पत्थरों के ऊपर से पानी निकलता है, जैसे बादलों के गरजने से एक गूंज महसूस होती है। भारी भी और मीठी भी, उसके अलावा कानों तक कुछ नहीं पहुँचने देने की ताकत भी। एक दम वैसी ही आवाज थी मेहदी हसन की।

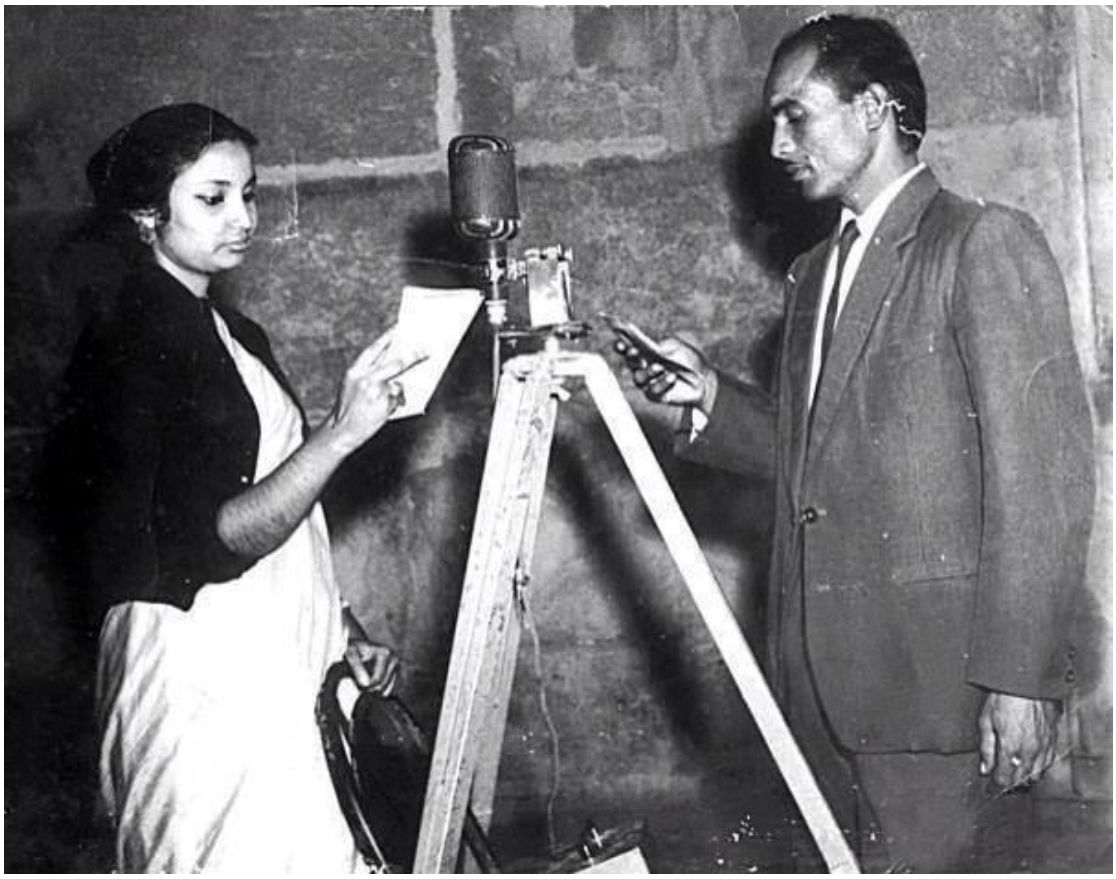

मेहदी हसन बांग्लादेश की गायिका फिरदौसी रहमान के साथ गाना रिकॉर्ड करते हुए

मेहदी हसन ने ग़ज़लों एवं फिल्मी गीतों के साथ–साथ ख्याल, सूफी कलाम, ठुमरी, दादरा, राजस्थानी–पंजाबी लोकगीत के साथ ही हिंदी गीत भी उतनी ही शिद्दत से गाए।

"उनके एक ऐसे ही कलाम **"की जाणा मैं कौन"** को मेहदी हसन ने अपनी रूहानी आवाज में इस तरह गाया है कि उनको सुनने के बाद आमतौर पर गाए जाने वाले सूफी कलाम में कुछ कमी सी महसूस होने लगती है। इस कलाम को ठुमरी–शैली में और राजस्थानी गायिकी के अंग में बांधकर मेहदी हसन ने बुल्लेशाह की रचना को एक नया रूप दे दिया।

[19] नारायण सिंह शेखावत / मेहदी हसन–यशबावनी नई दिल्ली

मेहदी हसन द्वारा गाए गए बुल्लेशाह के कलाम, इसलिए भी अधिक असर करते हैं, क्योंकि उनमें व्याप्त निश्छल लोक भावना, लोकभाषा के टेड़े–मेड़े शब्द और फकीरी–फाकामस्ती मेहदी हसन के मिजाज से बहुत मेल खाती है।"[20]

"मेहदी हसन की गायकी में स्वरों की सच्चाई है, उनकी आवाज हल्का सा खरखरापन तथा खुमारी लिए है। बहुत ऊंची आवाज का इस्तेमाल मेहदी हसन नहीं करते हैं। अधिकतर मंद सप्तक के पंचम और तार सप्तक के गंधार तक गाते हैं। ज्यादातर उनका गायन मध्य सप्तक से ही होता है। स्वरों को शुद्धता के साथ लगाने में मेहदी हसन को महारत हासिल है।"[21]

Mehdi Hasan –"No other male singer in his genre had the mallebillity of voice or the control over pitch he was famous for. These qualities stayed with him even in old age. Even as his health began to fail and his voice grew feeber, He never ever went out of tune." [22]

Waiting for a passage to India

मेहदी हसन साहब रियाज़ करते हुए

[20] अखिलेश झा / केसरिया बालक पधारो म्हारे देस / संगीत पत्रिका / मई 2010 / पृष्ठ 30

[21] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी / पृ. 154

[22] Partha Chatter jee/ master of Gajal / frontline – volume 29 / 13 June – 30 July 2012

"मेहदी हसन को ग़ज़ल गाते वक्त एक राग से दूसरे राग में जाने और हर राग को बखूबी निभाने में महारथ हासिल थी। ग़ज़ल के भाव समझकर उसे गाना आसान नहीं होता। इसमें पेचीदगियाँ आती है, बहुत से गायक कोई भी ग़ज़ल सुनकर चुन लेते हैं और गाने लगते हैं। लेकिन वो बेहद ही तसल्ली से किसी ग़ज़ल को लेते थे।"[23]

"बहुत ही कम लोगों को पता होगा कि मेहदी हसन साहब एक अच्छे गायक होने के साथ ही लगभग सभी प्रचलित साजों में भी उतने ही सिद्धहस्त थे।"[24]

"शायर अहमद फराज की ग़ज़ल **"रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ"** गाकर मेहदी हसन को पहली बार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली।"[25]

मेहदी हसन ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, व दादरा भी बड़ी खूबी के साथ गाते थे।

इसी कारण कोकिला कंठ लता मंगेशकर कहा करती थी "कि मेहदी हसन के गले में तो स्वयं भगवान बसते है।" मेहदी हसन साहब भी लता जी की आवाज के कायल थे। लेकिन मेहदी हसन लता जी के साथ भारत आकर रिकार्डिंग नहीं कर सकते थे तब 2009 में फरद शहजाद की एक ग़ज़ल को पकिस्तान में मेहदी हसन की आवाज में रिकार्डिंग और फिर मुम्बई आकर लता जी की आवाज में रिकॉर्ड किया गया।"[26] आबिदा परवीन ने उन्हें संगीत के क्षेत्र का "टाइटेनिक फिगर" कहा है।

"The Singing of Mehdi Hasan is uniquely sonorous with extra ordinary warbling and Cadence. He sings with full throated ease and his notes are based on harmonious rendition of Poetry. While computing musical notes for creating the desired melody and effect. He adopts a magical sequence of sounds with controlled velocity and shuns licentious speed."[27]

"मेहदी हसन अपनी गायन शैली में छोटी–छोटी तानों और आलापों का प्रयोग जरूरत के अनुसार बड़ी खूबी से करते हैं। अपनी ग़ज़ल के मतले और शे'र में अलाप तानों का प्रयोग इतना नहीं करते हैं कि ग़ज़ल ख्याल अथवा ठुमरी का रूप ले ले।

---

[23] BBC News 13 June 2012

[24] अखिलेश झा / मेरे मेहदी हसन / पृ. 57

[25] पुनीत उपाध्याय / e.aajtak.in / नई दिल्ली 13 जून 2018

[26] जनसत्ता / 13 जनवरी 2018

[27] PARWAZ KIULB HUSHAN/ the doyen of gazal/ tribule /16–12–2007 / पृ. 8

सरगम का प्रयोग मेंहदी हसन की गायिकी में नहीं के बराबर होता है। मेहदी हसन की गायकी में यथास्थान मींड, खटका, मुर्की तथा कर्ण स्वरों का प्रयोग बखूबी किया हुआ सुनने को मिलता है। ये शे'र के पूरे मिसरे को एक बार बिना बढ़त के साथ गा देते थे। मेहदी हसन अपनी गायकी और आवाज के माध्यम से प्रेम, वियोग, सुख, दुख अनुनय, विनय अधिकार आदि भागों को बड़ी खूबी के साथ प्रदर्शित करने की चेष्टा करते थे।"[28]

"मेहदी हसन एक बार बताते हैं कि राग भूपेश्वरी के रचित नज़्म **"अबके हम बिछड़े तो शायद कभी ख्वाबो में मिले"** उसके स्वर इतने मुश्किल हैं कि उन्हें गाते वक्त इस बात का डर लगता था कि कही बेसुरे नहीं हो जाए।"[29]

"ग़ज़ल गायिकी में मेहदी हसन ने बहलावे, फिरत, लपक, ज़मज़मा, सूत, झपक आदि तानों का प्रयोग शुरू किया उन्हें जहाँ भी उपयुक्त लगता, वे ध्रुपद, ख्याल से लेकर ठुमरी, दादरा और लोकसंगीत के तत्व भी ग़ज़ल गायिकी में सहजता से अनुस्यूत कर देते, बल्कि ऐसा कहना बेहतर होगा कि ये तत्व उनकी गायकी के दौरान स्वयमेव आ जाते। संगीत की इन सारी विधाओं पर उनका इतना जबरदस्त रियाज़ था कि कब कहाँ, कौन–सा स्वर लगे, किसका विस्तार हो, यह सब अनायास हो जाता था, सायास नहीं। मेहदी हसन साहब की मुरकियों के तो क्या कहने, उनकी मुरकियों में कोई दिखावा नहीं होता था और न ही उसमें कोई झटका महसूस होता था। इन सबके साथ एक और काबिल–ए–गौर बात है कि वे संगीत की विधाओं से घालमेल नहीं करते।"[30]

मेहदी हसन साहब के साथ तबले पर संगत करने वाले उस्ताद तारी खान से जब पूछा गया? एक Interview के दौरान –

"प्र.1 What did you like about Mehdi Hasan's singing?

Ans. Ustad Tari Khan – The quality of his voice its richeness, Poignancy, resonane and depth is unique. He sings with feeling, and with a lot of expression and understanding. He created complex note patterns by using creative and for biddingly diffcult permutations of musical notes. It was very difficult to play tabla with him. It is so easy to get lost in his music and forget what you are doing."[31]

---

[28] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी / पृष्ठ – 155

[29] First Post/15 July 2008

[30] अखिलेश झा / मेरे मेहदी हसन / पृ. 68

[31] The friday times– Pakistan's first independant weekly paper/ Allay Adnana/ oct 26-Nov. 1, 2012 / Vol – XXIV / पृष्ठ 27

"मेहदी हसन की गायी ग़ज़लों की भाषा बहुत मुश्किल नहीं है, इनकी गायिकी के साथ वाद्य यंत्रों के नाम पर सिर्फ दो हारमोनियम तथा तबले का ही प्रयोग अधिक होता था।"[32]

मेहदी हसन साहब की गायिकी इस संसार में अदभुत थी। सभी प्रमाणों व तथ्यों में यही पाया कि उनकी गायिकी सर्वोपरी है और सदैव रहेगी मेहदी हसन साहब की गायकी अतुलनीय है।

(क) मेहदी हसन घराना –

मेहदी हसन ग़ज़ल–गायिकी के क्षेत्र में एक बड़ा नाम है। इनकी ग़ज़ल–गायिकी, शब्दों के सही उच्चारण के साथ रागदारी का प्रयोग, तालों का सरल प्रयोग, शब्दों के साथ स्वर आलापों का प्रयोग, भाव और रस की उत्पत्ति के लिए आवाज और स्वर संयोजनों का प्रयोग आदि, ऐसी कई विशेषताओं का संगम है, ऐसा लगता है जैसे मेहदी हसन साहब की ग़ज़लों ने अंदर का खालीपन पहचानकर बड़ी खूबी से खालीपन को भर दिया हो। जिनका उनके बाद के कई ग़ज़ल गायक अनुसरण कह रहे हैं तथा अपने विद्यार्थियों व परिवार के सदस्यों को सीखा रहे हैं तथा अपनी गायिकी के द्वारा मेहदी हसन साहब की गायिकी को लोगों के दिलों में जिंदा रखने का प्रयास कर रहे है। मेहदी हसन साहब की गायिकी ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में अपना एक प्रमुख स्थान रखती है। उन्होंने अपनी गायिकी को पूरे विश्व में फैलाया हैं तथा अपनी गायिकी को अपने पुत्रों व विद्यार्थियों को सिखाया हैं तथा उन्हीं के सिखाये हुए शार्गिद वर्तमान में मेहदी हसन जी की गायिकी की उस परम्परा का निर्वाह और उसे संरक्षण व संवर्धन प्रदान करने का अटूट प्रयास कर रहे हैं।

मेहदी हसन साहब की गायिकी सभी ग़ज़ल गायकों में एक अलग पहचान रखती है मेहदी हसन ग़ज़ल गायिकी की तमाम बारिकियाँ समझते थे। यही बातें उनकी गायिकी को खुबसूरत बनाती थी। उनकी गायिकी के तरीके को यदि घराने में तब्दील किया जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

(i) मेहदी हसन घराने की विशेषताऐं –

1. गायन में गहराई व गम्भीरता
2. तार सप्तक का प्रयोग कम
3. अधिकतर मंद्र सप्तक से पंचम तक गायन

---

[32] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी / पृष्ठ 135

4. स्वरों की शुद्धता का ध्यान
5. छोटी–छोटी तानों व आलापों का कम प्रयोग
6. अधिकतर प्रयोग राग– यमन, गौडमल्हार, पहाड़ी, खमाज, मांड, भूपाली आदि।
7. ग़ज़ल के मतले व शे'र का प्रयोग कम
8. मिसरे के किसी खास शब्द को लेकर आलाप करना
9. ठेके का मूल रूप इस्तेमाल करना

(ii) मेहदी हसन घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप –

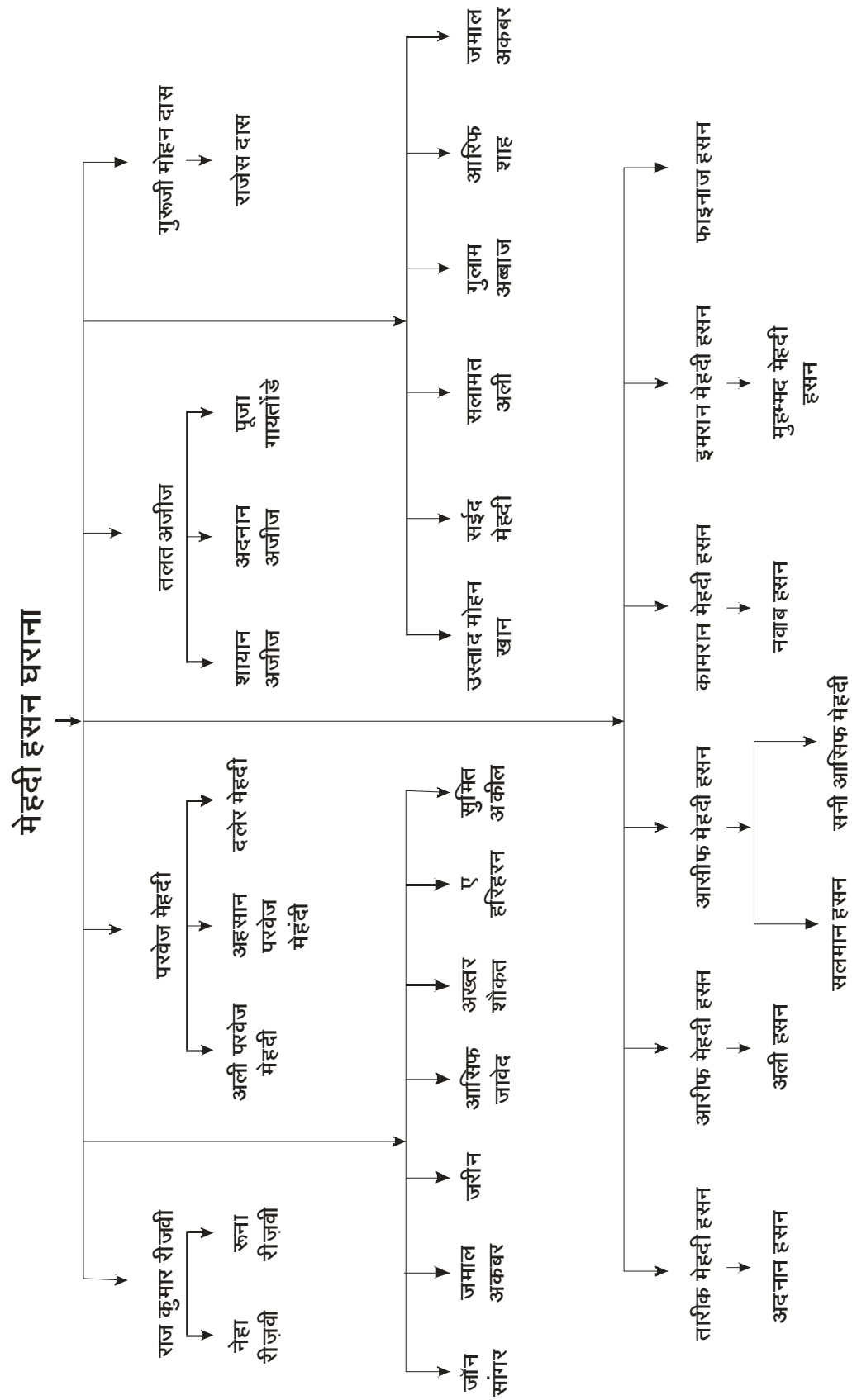

(iii) मेहदी हसन के कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय –

राजकुमार रिज़वी –

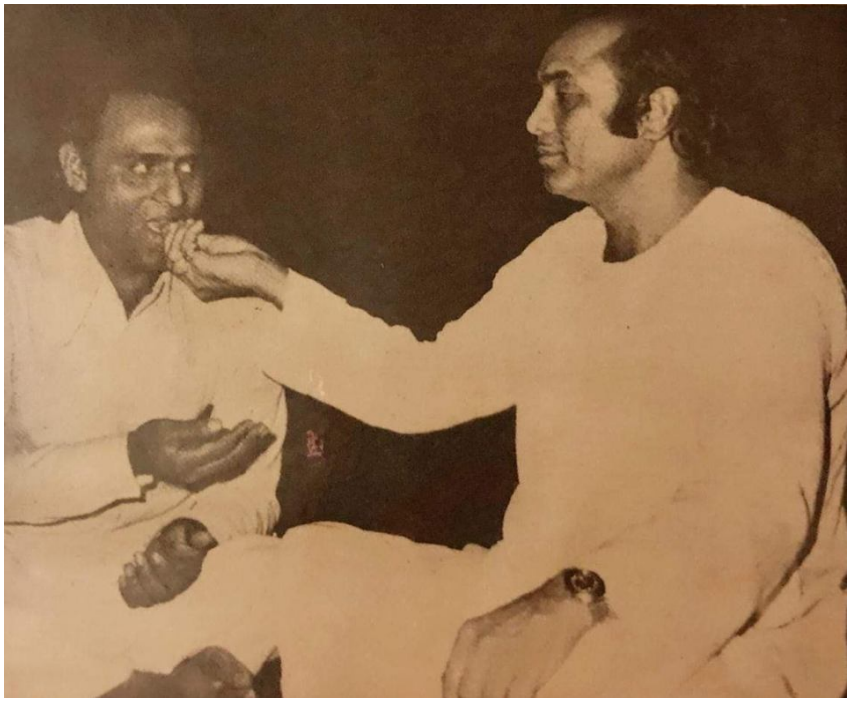

मेहदी हसन अपने शिष्य राजकुमार रिज़वी की गंडाबद्धी रस्म करते हुए

"राजकुमार रिज़वी का नाम ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में एक बहुचर्चित नाम है। इनका जन्म राजस्थान के कलावंत घराने में हुआ और अपने पिता से ही संगीत की शिक्षा लेने लगे और बाद में ये मेहदी हसन के शागिर्द भी हुए।

राजकुमार रिज़वी की गायन शैली में मेहदी हसन की गायन शैली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। ये मेहदी हसन साहब के सबसे पहले शागिर्द थे। इन्होंने शास्त्रीय–संगीत की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ठुमरी और ग़ज़ल गायन का क्षेत्र चुना।

राजकुमार रिज़वी और उनकी पत्नी साथ मिलकर एक 'भारतीय संगीत संस्थान' नाम से एक संगीत संस्था चला रहे हैं जिसका मुख्य उद्देश्य शास्त्रीय संगीत की महत्ता व ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में आए नवयुवकों के हुनुर को पहचानना व उन्हें मौका देना है। उनकी दो बेटियाँ हैं, नेहा रिज़वी व रूना रिज़वी। उन दोनों को भी राजकुमार रीज़वी ने ग़ज़ल गायिकी की शिक्षा दी। वर्तमान में वे दोनों भी संगीत के क्षेत्र में अच्छा काम कर रही हैं।"[33]

---

[33] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तान संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 166

तलत अजीज़ –

मेहदी हसन अपने शिष्य तलत अजीज के साथ

"तलत अजीज़ का जन्म 11 नवम्बर 1946 को भारत के एक मशहूर शहर हैदराबाद में हुआ। तलत अजीज़ एक लोकप्रिय ग़ज़ल गायक हैं। इनके पिता अज़ीम खान और माता साईदा आबिद दोनों ही लोकप्रिय उर्दु लेखक व कवि हैं। तलत अजीज़ ने B.com किया। उसके बाद उनकी रूचि संगीत में थी। प्रारम्भिक तौर पर उन्होंने किराना घराने के उस्ताद सामाद खाँ से शिक्षा ली। उसके बाद उन्होंने शहनशाहे ग़ज़ल मेहदी हसन साहब से ग़ज़ल की शिक्षा ली।

"मेहदी हसन साहब' ने उन्हें स्वयं बुलाकर कहा था, तुम्हारी आवाज बहुत अच्छी लेकिन उसे तराशने की जरूरत है, मैं तुम्हे अपना शागिर्द बनाऊँगा। जब भी भारत आऊँगा तुम्हें जरूर सिखाऊँगा।"

तलत अजीज़ की पहली एलबम फरवरी 1980 को "Jagjit Singh Presents Talat Ajij" के नाम से रिलीज हुई जिसे जगजीत सिंह साहब ने कम्पोज़ किया था। तलत अजीज़ ने कई फिल्मों में टीवी सीरियल में भी गाया है। जिसके लिए उन्हें कई पुरूस्कारों से नवाज़ा गया है।

वर्तमान में वे देश–विदेशों में अपने कार्यक्रम दे रहे हैं साथ ही अपने दोनों बेटों और शिष्यों को अपने गुरू द्वारा मिली तालीम को आगे बढ़ाने का काम बखूबी कर रहे हैं।"[34]

परवेज मेहदी –

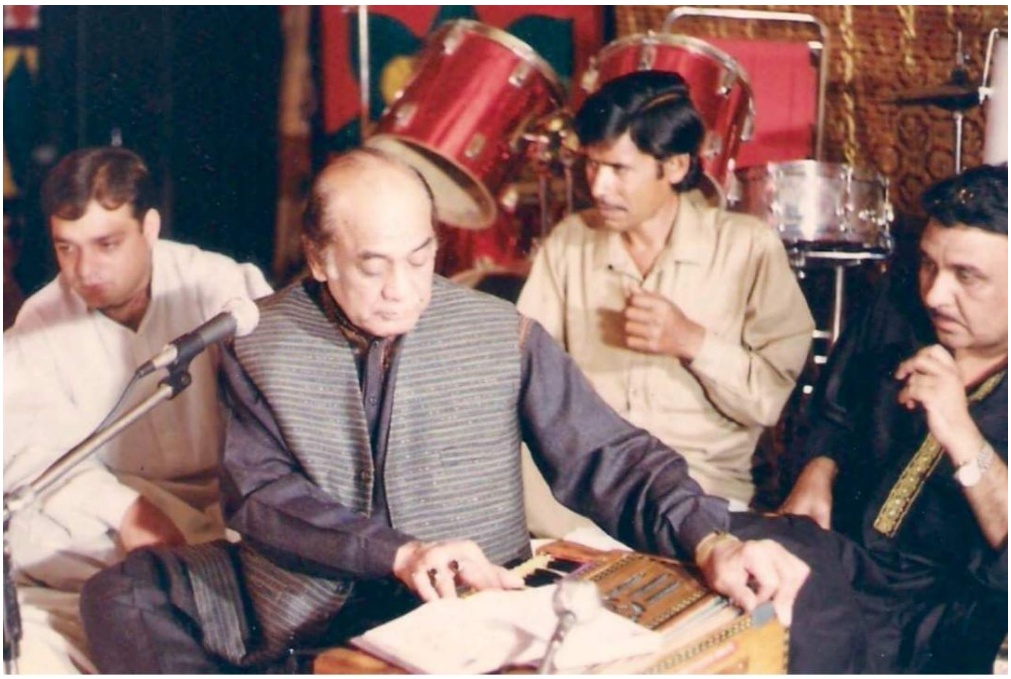

मेहदी हसन साहब अपने शिष्य परवेज़ मेहदी के साथ

"परवेज मेहदी का जन्म 1947 को एक सांगितिक परिवार में हुआ। उनका वास्तविक नाम परवेज अख़्तर था। शुरूआती सांगितिक शिक्षा उन्होंने अपने पिता बशीर हुसैन रानी से ली। फिर अहमद कुरैशी से सितार की तालीम भी ली तथा बाद में वह मेहदी हसन साहब के शागिर्द हुए। जिन्होंने उन्हें परवेज मेहदी नाम दिया।

उनको पहला मौका अपने गुरू की तरह रेडियो पाकिस्तान में 1968 में मिला। परवेज मेहदी ने कुछ ही Album निकाली है भारत और पाकिस्तान में। उन्होंने कई गाने, ग़ज़लें, लोकगीत गाये हैं। परवेज मेहदी को प्रसिद्धि सन् 1970 में गाये हुए "माये नाए जाना परदेश" गाने ने दिलाई, जो लाहौर रेडियो से गाया गया था।

---

[34] विकिपिडिया गुगल – तलत अजीज़

उन्हें उनकी गायकी के लिए पाकिस्तान के राष्ट्रपति से "सितारा–ए–इम्तियाज़" पुरूस्कार भी प्राप्त हुआ है। उनके पाँच बेटे हैं। जिन्हें उन्होंने संगीत की शिक्षा दी।"[35]

"जाने माने पंजाबी पोप और पार्श्व गायक दलेर मेहदी परवेज मेहदी को अपना आध्यात्मिक गुरू मानते हैं और उन्होंने विधिवत् रूप से उनसे सीखा भी है। परवेज मेहदी ने फिल्मों में भी गीत गाए हैं। उनका पहला फिल्मी गीत 1973 में चाँद तारे बेहद लोकप्रिय रहा।

रियाज़ अली खाँ उनके बारे में बताते हैं कि उन्होंने मेहदी हसन साहब के सानिध्य में सीखकर खुद की गायिकी की एक अलग पहचान बनाई। 70 वर्ष की उम्र में 29 Aug 2005 वे सदैव के लिए इस दुनिया से चले गये, लेकिन उन्होंने अपने गुरू की शिक्षा को अपने बेटों में बांटने का प्रयास किया।"[36]

"इनका बेटा अली परवेज मेहदी पाकिस्तान का बेहद ही जाना माना गायक है। अली परवेज मेहदी का जन्म लाहौर में हुआ और अली परवेज मेहदी ने संगीत शिक्षा अपने पिता परवेज मेहदी से ली। और इनके दूसरे बेटे अहसान परवेज मेहदी पाकिस्तान के बेहद ही जाने माने संगीत निर्देशक हैं। दोनों भाई मिलकर सांगितिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते रहते है।"[37]

आसिफ मेहदी –

मेहदी हसन पुत्र आसिफ मेहदी व पत्नी शकीला बेगम के साथ

[35] विकिपिडिया गुगल – परवेज मेहदी
[36] Express tribute / 30 Aug 2014
[37] Facebook Profile – Ali Parwez Mehdi

"आसिफ मेहदी पाकिस्तान के जाने माने ग़ज़ल गायक व पार्श्व गायक भी है। इनका जन्म पाकिस्तान में 1966 में हुआ। इनके पिता का नाम किसी से भी छुपा नहीं है। ये उस्ताद मेहदी हसन साहब के बेटे है। 13 वर्ष की उम्र से ही इन्होंने अपने पिता से सीखना शुरू कर दिया था तथा चाचा गुलाम कादिर से भी सीखा।"[38]

"आसिफ मेहदी भारत कई बार आए हैं। एक Interview के दौरान उन्होंने कहा कि, मैं भारत पहली बार अपने पिता के साथ 1986 में आया था। वे मेरे पहले गुरू थे। मैं ग़ज़लों को प्रोत्साहित करने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ और पाकिस्तानी सरकार से भी सहयोग की गुजारिश की है।

आसिफ मेहदी की आवाज अपने पिता की आवाज से काफी मिलती जुलती हैं, इन्होंने अपने बच्चों व शार्गिदों को भी सीखाया है।"[39]

इमरान मेहदी –

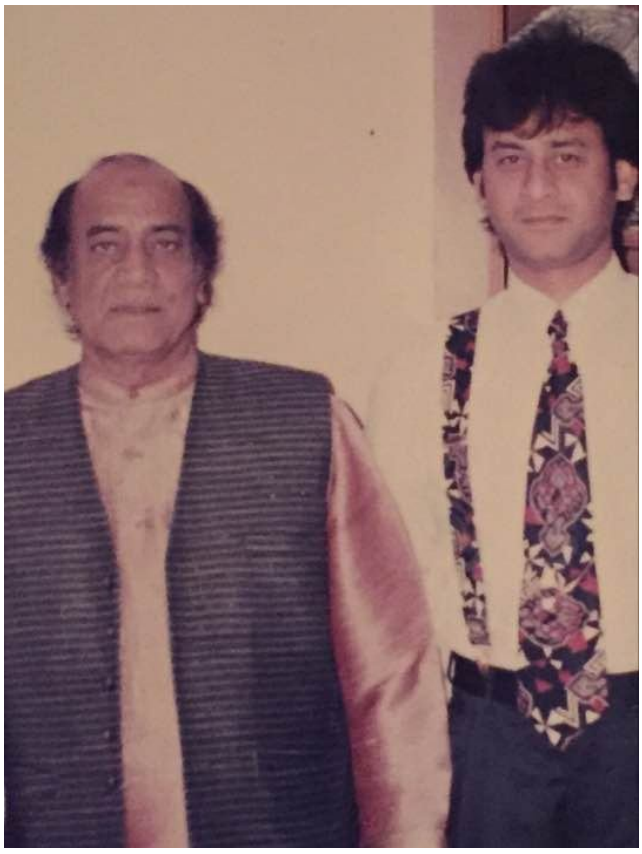

मेहदी हसन अपने पुत्र इमरान मेहदी हसन के साथ

[38] विकिपिडिया गुगल – Aasif Mehdi

[39] डेकान हेराल्ड / 10 Dec. 2009/ New Delhi

"इमरान मेहदी हसन भी मेहदी हसन साहब के बेटे हैं। उन्हीं की तरह वे भी ग़ज़ल गायक व संगीतकार हैं। वर्तमान में वे शिकागो में रहते हैं। उसका बेटा मुहम्मद हसन भी बहुत ही बेहतरीन तबला वादक है जो उनके साथ कार्यक्रमों में संगत करता है। उनका बेटा मुहम्मद हसन भी तैयारी में है। वो कई तालें, द्रुत, रेला, पलटा, कायदा जबरदस्त बजाता है।"[40]

कामरान मेहदी हसन –

मेहदी हसन अपने पुत्र कामरान मेहदी हसन के साथ

"कामरान मेहदी हसन भी शहंशाहे ग़ज़ल मेहदी हसन साहब के बेटे है। वे भी जाने माने ग़ज़ल गायक है। पाकिस्तान, भारत, विदेशों में कई कार्यक्रम देते है। कामरान मेहदी हसन ने कई एलबम भी रिलीज की है, जैसे आगाज़, मेरी आवाज़ आदि। मेहदी हसन के सम्पूर्ण विश्व भर में जो भी श्रोता हैं, वे कामरान मेहदी हसन से यही आशा करते हैं कि वे अपने पिता की गायकी को ऐसे ही आगे बढ़ाये जिससे आने वाली पीढ़ी को फायदा हो। वर्तमान में ये भी शिकागो (U.S.A) में निवास करते हैं।"[41]

---

[40] इमरान मेहंदी / facebook

[41] Facebook – कामरान मेहदी Profile

आरिफ मेहदी हसन –

मेहदी हसन अपने पुत्र आरिफ मेहदी हसन के साथ

"ये भी मेहदी हसन साहब के ही बेटे हैं। ये भी उनके और बेटों की तरह ग़ज़ल गायक है। वर्तमान में लाहौर में निवास करते हैं। उन्होंने भारत सरकार से यह प्रार्थना की थी, कि मेरे पिता बहुत अच्छे गायक थे और इस देश को खुब दिया है उनके नाम से एक समाधि व पुस्तकालय बनवाया जाये।"[42]

आरिफ शाह –

"आरिफ शाह मेहदी हसन साहब का एक शिष्य है जो इंदौर (मध्यप्रदेश) में निवास करता है। उसे पाकिस्तान में बैठे–बैठे सीखाया ही नहीं बल्कि, उसकी लगन देखते हुए उसे अपना शिष्य भी बनाया। उन्होंने जब आरिफ को सुना तो बोला की आरिफ को शिष्य जरूर बनाना है, उसकी समझ अच्छी है।"[43]

---

[42] Facebook – आरिफ मेहदी हसन

[43] Bhaskar.com / 13 जून– 2013

(iv) मेहदी हसन के शिष्यों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं की प्रति –

Exclusive interview with Ustad Rajkumar Rizvi and Neha Rizvi

By **Suvi Pandey** · Apr 21, 2016

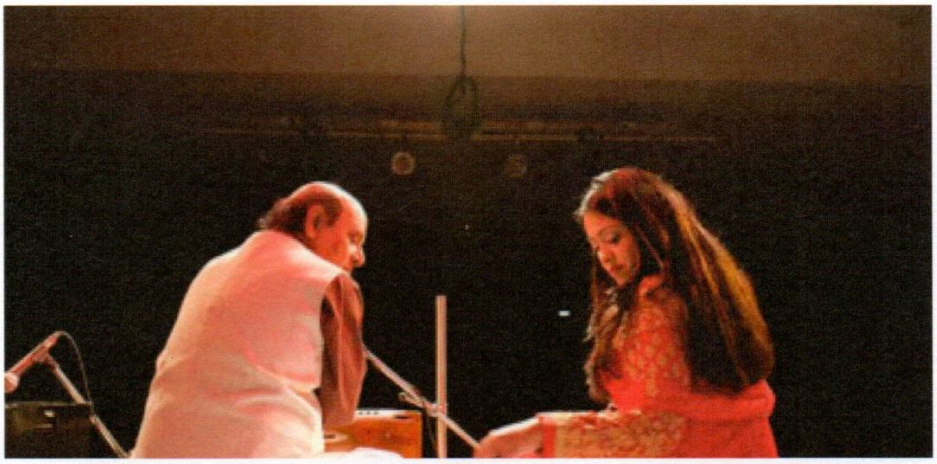

Ustad Rajkumar Rizvi is a highly acclaimed Ghazal singer and represents one of the few living legends of Raga-based classical Ghazal gayaki in India. Neha Rizvi daughter of world renowned Ghazal maestro Rajkumar & Indrani Rizvi. NewsAurChai got this opportunity to interview these to amazing artists.

NewsAurChai: So tell us how different is it from being Gharana than any normal student?

"When you are from a Gharana you are trained and polished in more than one way , A person from Gharana can play with raags, the same word can be expressed in ten different melodious ways by them,so basically the difference is in versatility." Said Ustad Rajkumar Rizvi Ji with thoughtfulness. Aso Neha added " When you are from a Gharana you notice small things and patterns, so if we find it good we praise and if we find something wrong we cringe. Because of immense practicing of hours we are bound to notice all this"

NewsAurChai: Time for something really tricky tell us who is a better singer and favourite daughter for you Rizvi Ji.

"Very difficult question! Both my daughters are brilliant singers,both have a different type of voice. Where Neha has a soothing and melodious songs type voice , Runa has heavy voice ustadi sur. So I can't compare" "He is never biased to music.. whoever sings the same song better he will be on their side" added Neha.

मेहदी हसन के शिष्य राजकुमार रिज़वी अपनी बेटी नेहा रिज़वी के साथ

Lahore
TUESDAY 34° 27°

Daily Times

Trending: IMF Dollar Your right to know Tuesday, August 06, 2019 ePaper

HOME PAKISTAN WORLD EDITORIALS & OPINIONS BUSINESS SPORTS ARTS, CULTURE & BOOKS LIFESTYLE E-PAPER INVESTOR INFO

LIFESTYLE

Parvez Mehdi : Mehdi Hassans prodigy Part II

By Dr Amjad Parvez
APRIL 28, 2016

It was a Sunday morning and snow had fallen. We went in the hall, only to find just a handful of listeners present. We requested Parvez Mehdi to withdraw from performing as we assumed that his sponsor might have fleeced him, forcing him to perform in such a scenario. In our view, Parvez's stature was much higher.

He agreed and remained our guest for many days. The incident was forgotten when we heard two of his Punjabi duets composed and recorded at the Radio Pakistan's office in Lahore by Ustad Tassaduq Ali Khan. The female voice was none other than that of Reshma. These songs glorified both the singers. The songs were "Ja Ve Pardesia Ve Dairan Kahnu Laaiyan" and "Gorie Main Jaana Pardes". These songs further received hype when they were rendered live in Ashfaq Ahmad's famous PTV music programme 'Nikhar' in 1974. The tabla was played by Muhammad Hussain Alvi in this episode. The audience comprised Farida Khanum, Roohi Bano, Tassaduq, Sajjad Kishwar and many more TV personalities. The latter song has its base in Raag Malti. This raag is also known as Shehor Ranjni Raagni and is a raag of separation. Each song composed in this raag is full of pain and sorrow and can only depict sadness. Through such songs, Mehdi developed his own identity as a singer. He never looked back since then. His all-time hit Punjabi song is "Merian Galan Yaad Karaingi", a geet by Rasheed Habibi. Another lovely Punjabi song that became popular was 'Tak Pattari Waalia Laikh Mere/Mere Hath Vich Weengian Leekan Nei". Mehdi was very proficient in singing Punjabi songs. "Rog Labha Na Tabiba Na Tu Mere, Dawaiaan De Ke Saar Chadeya" is one such song that has been sung on the medium of fast rhythm. Sushil Kumar is one of his fans who observed after listening to this song that Mehdi was a great singer. One of Mehdi's forte was singing Heer Waris Shah.

One of Mehdi's thrilling performances was in Keherwa Taal played by Ustad Tari Khan for the ghazal "Kya Zamana Tha Ke Hum Roz Mila Karte The". Generally speaking, while singing he used to keep his smiling countenance intact and hence invite appreciation of listeners. Munir Niazi's ghazal "Bechain Buhut Phirna Ghabraei Hue Rehna" is also available in proper studio recording with the beautiful use of santoor and sitar in his audio album 'Rang-e-Zindagi'. The same ghazal is available in the audio album 'Ghazal Nawaz'. Another ghazal by Mehdi from this album is Qamar Jalalvi's "Jo Tauba Hum Ne Ki Saqi Tau Mekhane Pe Kya Guzri". A melancholy mood is available in the song "Nigahain Chura Kar Kho Jane Waley" in a catchy rhythm penned by Sajid. From the same album, another gem is poet Iftikhar Arif's ghazal with the introduction on sarangi. The lyrics are "Phool Mehke Hain Mere Aangan Main Saba Bhi Aai". It is a beautiful tune made by Mehdi himself. The instrumentalist on sarangi never leaves the singer alone and keeps on complimenting him throughout the song. That is the forte of Indian recording of ghazals, in general. Raag Pahari was well captured in the ghazal "Apne Saei Se Bhi Ashkon Ko Chupa Ke Rona". This Nisar Tareen Jazib's poetry was composed by Mehdi himself for his album 'The Best Of Ghazals'.

मेहदी हसन के शिष्य परवेज़ मेहदी

चतुर्थ अध्याय

गुलाम अली घराना

चतुर्थ अध्याय

गुलाम अली घराना

(अ) गुलाम अली : जीवन परिचय

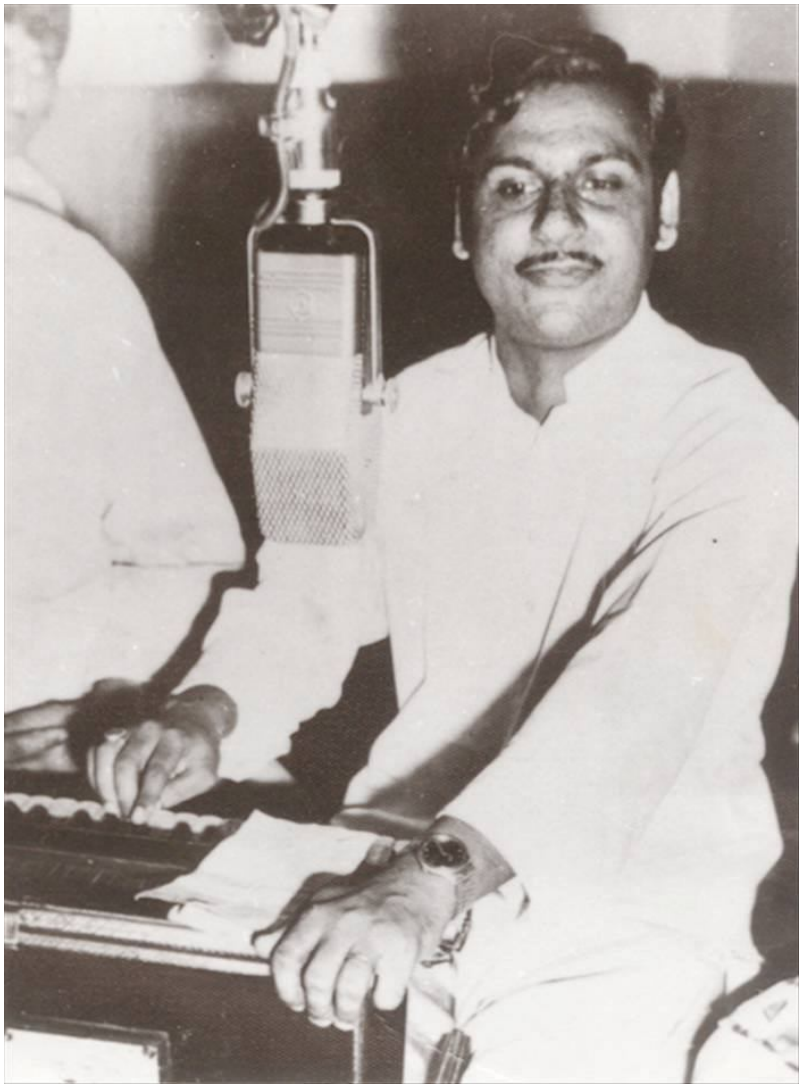

"हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली है
डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है"

अकबर इलाहाबादी

अकबर इलाहदाबादी की इस ग़ज़ल को जिसने अपनी आवाज़ से हमेशा–हमेशा के लिए सजीव बना दिया है, उस गायक को कौन नहीं जानता।

जैसे ही यह ग़ज़ल कही सुनाई देती है जुबां पे एक ही नाम आता है "गुलाम अली"

गुलाम अली ग़ज़ल गायिकी का वह नायाब सितारा है, जिसने ग़ज़ल गायिकी को एक नई पहचान दी है। जो गायिकी अब तक शांत गंभीर मानी जाती रही, उस गायिकी को गुलाम अली जी ने अपनी पंजाब की मस्ती भरी और चंचल आवाज़ से निःसंदेह एक नयी आकृति प्रदान की है। गुलाम अली को अपने समय के सबसे अच्छे ग़ज़ल गायको में शुमार किया जाता है ग़ज़ल गाने का अंदाज और गायिकी में विविधता के कारण उनकी एक अलग पहचान है।

भले ही उनका जन्म पाकिस्तान में हुआ हो, लेकिन वर्तमान में उनके सबसे अधिक श्रोता भारत में निवास करते है।

उनकी आवाज़ में वो जादू है जो दो देशों की सरहदों को मिलाती है। गुलाम अली स्वयं कहा करते है, कि भारत में उन्हे जितना प्यार व सम्मान मिला है शायद ही वो कही अन्य उन्हें मिला होगा।

"गुलाम अली का जन्म सन् 1940 को कोलके नामक ग्राम जो कि सियालकोट जिले का हिस्सा था में हुआ।"[1]

"गुलाम अली के वालिद दौलत अली जो कि स्वयं एक अच्छे सांरगी वादक थे तथा माता खुर्शीद बेगम भी सांगतिक परिवार से संबंधित थी।"[2]

गुलाम अली का जन्म सांगितिक परिवार में हुआ। गुलाम अली का बचपन शास्त्रीय रागों व सारंगी की धुनों को सुनकर ही बीता, तो जाहिर सी बात थी कि गुलाम अली की रूह संगीत से अछुति कैसे रह सकती थी।

"गुलाम अली के दादा नवाजुद्दीन भी एक अच्छे सांरगी वादक व सूफी गायक थे बाल्यकाल से ही उनकी तालीम उनके पिता द्वारा शुरू की जा चुकी थी।"[3]

गुलाम अली के जन्म से जुड़ी एक बेहद ही रोचक व आश्चर्यजनक घटना भी है।

"एक बार एक फकीर उनके घर पानी की तलाश में आया। उनकी माँ खुर्शीद बेगम ने उन्हें पानी पिलाया। फकीर ने उन्हें आर्शीवाद दिया तथा अपनी झोली में से एक आम निकाला और खुर्शीद बेगम को दे दिया और कहा – कि इसे खाना और इस आम की मिठास की तरह ही तुम्हारी होने वाली संतान की आवाज़ भी मीठी होगी तथा उसका नाम पूरे विश्व में होगा।"[4]

---

[1] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 156

[2] लघु शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप / दिल्ली विश्वविद्यालय / पृ. 74

[3] लघु शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप / दिल्ली विश्वविद्यालय / पृ. 75

[4] साधना सेठ / ग़ज़ल Wizard गुलाम अली / पृ. 11

ऊपर वाले की रहमत से फकीर की बात सच हो गयी। उनके घर एक ऐसी शख्सियत का जन्म हुआ, जिसका नाम आज पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। जिसे दुनिया आज "गुलाम अली" के नाम से जानती है।

(ब) पारिवारिक परिचय –

गुलाम अली का जन्म बिल्कुल एक साधारण व आर्थिक स्थिति से कमजोर गरीब परिवार में हुआ।

"पिता दौलत अली स्वयं एक अच्छे सारंगी वादक थे अपने परिवार के भरण–पोषण के लिये कव्वालियों, संगीत समारोह में सारंगी वादन करते थे। उससे होने वाली आमदनी से अपना घर चलाते थे।

माता खुर्शीद बेगम भी सांगितिक परिवार से ताल्लुक रखती थी। गुलाम अली के दादा भी अच्छे सांरगी वादक व सूफी गायक थे।

दादा का भी यही सपना थी कि उनका पौता उनके पुश्तैनी काम सांरगी वादन को आगे बढ़ाये। लेकिन पिता दौलत अली का सपना था कि उनका बेटा अच्छा गायक बने।

क्योंकि उनका मानना था कि संगीतकार को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। गुलाम अली के पिता पटियाला घराने के बड़े गुलाम अली खाँ के प्रशंसक थे और यह उनकी दिली–ख़्वाहिश थी कि वे अपने बच्चे को उन्ही के सानिध्य में रखे।"[5]

"परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी, फिर भी गुलाम अली को स्कूल भेजा गया। गुलाम अली पढ़ने में बहुत अच्छे थे लेकिन उनका दिलों–दिमाग संगीत की धुन में ही लगता था।

माता–पिता ने खूब जोर दिया कि वे पढ़ाई ना छोड़े, लेकिन गुलाम अली को सिर्फ संगीत की धुन ही सुनाई देती थी।

पिता दौलत अली ने जब यह देखा कि गुलाम अली की संगीत में ही रूचि है तो वे उन्हें अपने साथ संगीत कार्यक्रमों ले जाने लगे। पिता से ही गुलाम अली की प्रारम्भिक संगीत शिक्षा आरम्भ हुयी।"[6]

---

[5] शख़्सियत / राज्य सभा टीवी. साक्षात्कार / गुलाम अली / समीना के द्वारा / 27 जन. 2015

[6] अमर उजाला नई दिल्ली / पृ. 15 / काव्य चर्चा

"पिता दौलत अली को गुलाम अली के भविष्य की चिन्ता होने लगी। पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं होने पर भी पिता ने गुलाम अली को कराची भेज दिया। अपने चचेरे भाई के पास, फिर वहाँ उनकी तालीम शुरू हुई। तबला सीखा, हारमोनियम भी सीखा।"[7]

गुलाम अली उस्ताद जाकिर हुसैन के सामने तबला वादन करते हुए

"उसके बाद वे पटियाला घराना के बड़े गुलाम अली खाँ के शिष्य बने उसके बाद बरकत अली खाँ से सीखा और धीरे–धीरे वे गुलाम अली को अपने साथ संगीत कार्यक्रमों में ले जाने लगे।

जब गुलाम अली ने 1960 में लाहौर रेडियो पर गाना आरम्भ किया उसके बाद से उनका पूरा परिवार लाहौर आकर रहने लगा।"[8]

"गुलाम अली का निकाह नसीम बेगम से हुआ। सन् 1983 तक वे दोनों साथ रहे। जब एक कार्यक्रम के लिये वे U.S.A गये हुए थे, उसी दौरान उनकी पत्नी की मृत्यु हो गयी। उनसे उनकी दो बेटीयाँ है फ़िजा व समीना। उसके बाद कराची में एक कार्यकम के दौरान उन्हें सयीदा बेगम मिली दोनों ने कोर्ट में निकाह किया। उनसे उनके दो बेटे और बेटी है। आमीर अली और इमरान अली जो वर्तमान में उनके साथ संगीत कार्यक्रमों में नज़र आते हैं और बेटी का नाम राबिया है।"[9]

---

[7] शोधग्रंथ/दिल्ली विश्वविद्यालय/ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप/विपिन पटवा/ पृ. 75

[8] Canada One TV. के साथ साक्षात्कार 29 अगस्त 2018

[9] शोध ग्रंथ/दिल्ली विश्वविद्यालय/ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप/विपिन पटवा/ पृ. 76

गुलाम अली साहब अपने परिवार के साथ

(स) संगीत सफर –

कुछ दिन तो बसो मेरे आँखों में,
फिर ख़्वाब अगर हो जाओ तो क्या

ओबैदुल्लाह अलीम

"गुलाम अली के संगीत की शुरूआत उनके परिवार से ही हुयी। गुलाम अली के वालिद, दादा, चाचा सभी संगीत से संबंधित थे। किसी न किसी रूप में जाहिर सी बात थी, वह छवि गुलाम अली पर भी आयी।

सभी माता–पिता की तरह गुलाम अली के माता–पिता की भी यह दिली–ख़्वाहिश थी कि उनका बेटा एक जाना माना संगीत कलाकार बने, उसका खूब नाम हो, लोग उसकी गायिकी से उसे जाने।"[10]

"गुलाम अली के पिता दौलत अली पटियाला घराने के उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ के प्रशंसक थे। उनका सपना था, कि उनका बेटा गुलाम अली उनसे सीखे, इसी कारण उन्होंने अपने बेटे का नाम गुलाम अली रखा।"[11]

"1960 की बात है बड़े गुलाम अली खाँ कराची एक कार्यक्रम के सिलसिले में आए हुए थे, वहाँ से लौटते वक्त अपने भाई बरकत अली खाँ से मिलने लाहौर चले गए।

यह बात जब दौलत अली को मालूम हुई तो वे अपने बेटे गुलाम अली को लाहौर लेकर गये। वहाँ पहुँचकर दौलत अली बड़ी दबी सी आवाज में बोले कि – उस्ताद मेरी इच्छा है, कि आप मेरे बेटे को संगीत सीखाएं।

शुरूआत में बडे गुलाम अली खाँ ने यह कहते हुए मना कर दिया कि में अधिकतर भारत में ही रहता हूँ तो यह सम्भव नहीं हो पाएगा। फिर उन्होंने गुलाम अली को कुछ सुनाने को कहा – गुलाम अली जी ने पीलू राग में ठुमरी (सैया बोलो तनिक मोसे) जो बड़े गुलाम अली जी की ही गायी हुई थी, उसे सुनाया।

सुनकर बड़े गुलाम अली खाँ बेहद खुश हुए गले लगाया और बोला कि मैं तुम्हे सीखाऊँगा। फिर गुलाम अली उनके गंडाबद्ध शागिर्द हुये।"[12]

"बड़े गुलाम अली खाँ के बाद उनकी शिक्षा गुलाम अली जी के भाई बरकत अली व मुबारक अली के सानिध्य में हुई।

गुलाम अली ने लाहौर Radio से 1960 में गाने की शुरूआत की। उन्हें काफी सराहा गया, उनके पिता भी बेहद खुश थे।"[13]

---

[10] शोध ग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / दिल्ली विश्वविद्यालय – 2001 पृ. 94

[11] दर्द भरी आवाज है ग़ज़ल / जनसत्ता दिल्ली / 10 अप्रैल 1999

[12] साधना सेठ / ग़ज़ल – Wizard गुलाम अली / पृ. 30

भारत में उनका सबसे पहला कार्यक्रम कमानी सभागार में हुआ। गुलाम अली साहब ने कई फिल्मों में भी गाया है।

"उनकी ग़ज़ल "चुपके–चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है" B.R.चोपड़ा की फिल्म निकाह (1982) में गाया। जो बहुत ही लोकप्रिय हुयी आज भी जब कही उनका कार्यक्रम होता है यह श्रोताओं की फरमाइश में शामिल होती है।

गुलाम अली जी ने हीर राझां फिल्म में भी हीर गाना गाया है। 'आवारगी' फिल्म में इनकी गायी ग़ज़ल **"चमकते चांद को टूटा हुआ तारा बना डाला"** काफी मशहूर हुई है। "मांटी मागे खून" फिल्म में भी "दिल ये पागल दिल मेरा" इतनी मशहूर हुई कि आज इनकी कोई महफिल बिना इस ग़ज़ल के अधूरी सी प्रतीत होती है।

एक अन्य फिल्म 'बेवफा' में भी इनकी एक ग़ज़ल वर्तमान में खूब प्रसिद्ध हुयी।

यूं तो हर चीज मिट जाती है,
बेकरारी बन के हमें सताती है
याद–याद बस याद याद रह जाती है।"[14]

"वैसे गुलाम अली जी ग़ज़ल गायन की प्रस्तुति अपने खुद के एकल स्वर में ही करते हैं, परन्तु पहली बार उन्होंने आशा भोंसले के साथ कुछ ग़ज़लें गायी हैं और इन ग़ज़लों का एक L.P. रिकार्ड भी बना है।"[15]

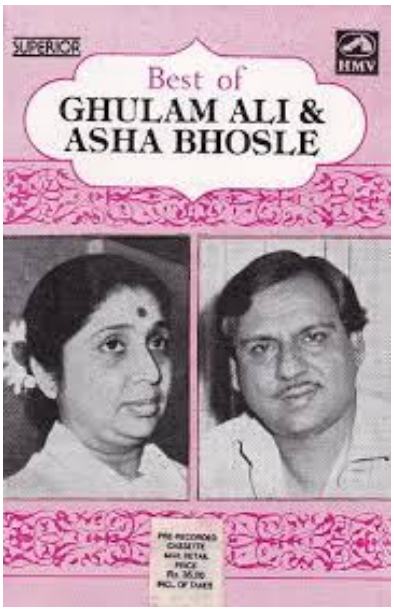

[13] Gazal maestro who Prefers to quantity/ The Tribute, New Delhi – 24/3/ 2003
[14] गुलाम अली / विकिपिडीया – गूगल
[15] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 160

गुलाम अली साहब को कई पुरूस्कारों से भी नवाजा गया है।

"2012 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति के द्वारा "सितारा–ए–इम्तियाज" पुरूस्कार से सम्मानित किया गया है।

1979 में "तम्घा–ए–हुस्न–ए" नामक अवार्ड से भी नवाजा गया है।"[16]

भारत में मोरारी बापू ट्रस्ट के द्वारा 22 अप्रैल 2016 को "हनुमंत पुरूस्कार" से भी नवाजा गया।

"गुलाम अली को पहला "स्वरलया ग्लोबल अवार्ड" तिरूवंतपुरम (केरल) में 15 जनवरी 2016 को दिया गया।"[17]

गुलाम अली साहब प्रथम स्वरलया ग्लोबल अवार्ड प्राप्त करते हुए

9 अगस्त 2017 को गुलाम अली साहब को दुबई के प्रिंस सोहेल के द्वारा लाइफ टाइम अवार्ड से भी नवाजा गया है।

गुलाम अली दुबई के प्रिन्स द्वारा लाइफ टाईम अचीवमेन्ट अवार्ड प्राप्त करते हुए

[16] गुलाम अली विकिपिडिया

[17] The Hindu/15 Jan. 2016

(द) गुलाम अली गायिकी –

"कुछ दिन तो बसो मेरी आँखों में
फिर ख़्वाब अगर हो जाओ तो क्या"

औबेदुल्लाह अलीम

जैसे ही गुलाम अली साहब की यह ग़ज़ल कानों में पड़ती है तो व्यक्ति तत्क्षण जीवन के उन पलों को दुबारा जीने लगता है। गुलाम अली साहब से मुहब्बत करने वाले ये मानेंगे कि उन्होंने अपने जीवन की हर अवस्था, हर खुशी, हर उदासी के पल, सरल या कठिन समय को गुलाम अली जी की ग़ज़लों में पाया है। प्रेम की मीठी पीड़ा को अभिव्यक्त करने के निराले अंदाज की वज़ह से उनकी ग़ज़लें सुनने वाले को सम्मोहित–सा कर लेती हैं, उन्मत्त बना देती है, समय के थपेड़े भी गुलाम अली साहब की ग़ज़लों का असर कम नहीं कर पाए हैं, बल्कि समय बीतते–बीतते पुरानी शराब की तरह ये अमूल्य और नशाआवर होती जा रही हैं, एक बेहद सौम्य चेहरे पर सदाबहार मुस्कान के साथ गुलाम अली की आवाज़ उनकी हर ग़ज़ल को आपको अपनी तरफ खींचने के लिए मजबूर कर देती है।

"मस्ताना पिए जा यूँ ही मस्ताना पिए जा"

उनकी अदायगी में इतना कन्विक्शन है कि शराब न पीने वाले भी एक तरह की खुमारी में आ जाते हैं, ये नशा और भी बढ़ जाता है जब उस्ताद गुलाम अली साहब आवाज़ की लर्जिशों से एक हंगामा–सा बरपा कर देते हैं।

"हंगामा है क्यों बरपा थोड़ी सी जो पी ली है।"

अकबर इलाहाबादी की इस ग़ज़ल के शे'र अपने आप में ग़ज़ल की प्रचलित परम्परा से थोड़ा अलग, अज़ब, तीखे और तंज भरे तो हैं ही, गुलाम अली ने उन्हें जिस तरह से लहरदार अंदाज़ में अदा किया है, एक अलग ही समां बँध जाता है इसे सुनते –

"ना–तज़र्बाकारी से, वाइज़ की ये बातें हैं,
उस रंग को क्या जानें, पूछो तो कभी पी है"

उनके ख़जाने का एक और नगीना है, एक रोमांटिक ग़ज़ल – "बहारों को चमन याद आ गया है"। इतने सहज और सुमधुर तरीके से गाते हैं वो, लगता है कि आपके जीवन में भी बहार लौट आई है। इस ग़ज़ल में एक शब्द है – बाँकपन। सुनिए किस तरह से लचकती शाख़ की तरह किसी का बाँकपन हौले–हौले से लचकता नज़र आता है –

"लचकती शाख़ ने जब सर उठाया,
किसी का बाँकपन याद सा आ गया"

खुद उस्ताद का ये कहना है कि 'सुर वैसे, जैसे लफ्ज़ गवाही दे' उनके ऊपर बिल्कुल ठीक बैठता है। उनके कहने का मतलब यह है कि सुर इस तरह से लगने चाहिये कि जिस तरह के अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए गए हैं।

"दिल में इक लहर सी उठी है अभी" सुनकर कौन ऐसा सुनने वाला होगा जो 'लहर' के तलफ्फुज़ में एक लहर सी पैदा कर देने वाले गुलाम अली को चाहने न लगेगा या फिर "इतनी मुद्दत बाद मिले हो" ग़ज़ल में न सिर्फ एक शब्द 'बाद' की अदायगी से मुद्दत की लंबाई न आँकने लग जाएगा।

गुलाम अली साहब की वो आवाज़ जो सबके दिलों पर राज करती है, वो आवाज़ जो भारी और मद्धम है, तीखी नहीं, कानों पर पड़ती नहीं, धीरे–धीरे दिल में उतरती है, बहुत बारीक़ और कोमल कम्पन्न के साथ वो आवाज़, जो इतनी रियाज़ में है कि रोमांस की पुलक को भी उतनी ही शिद्दत से उतार लेती है, जितनी गहन निराशा, दर्द और टूटन को, वो आवाज़ जिसमें इतने उतार–चढ़ाव है कि रिफ़त सुल्तान, फैज़ अहमद फैज़, मोमिन, हसरत मोहानी, अक़बर इलाहाबादी से आनंद बक्षी जैसे हर रंग और नूर के शायरों के कलाम के साथ न्याय कर सकती है, वो आवाज़ जो एक ही शे'र को बार–बार दुहराती है और जितनी बार दुहराती है, शे'र को नए मायने मिल जाते हैं, आप हर बार नए अहसास से जकड़ जाते हैं। वो आवाज़ जिसकी दो रेंडिशन कभी एक जैसी नहीं रही।

"जब देखने वाला कोई नहीं
बुझ जाओ तो क्या, जल जाओ तो क्या?"

मूल ग़ज़ल में दूसरा मिसरा इस तरह से है 'बुझ जाओ तो क्या, गहनाओ तो क्या', पर उस्ताद गहनाओ की जगह 'जल जाओ' रखते है। 'गहनाओ' ग्रहण लगने से संबंधित है, शायद सुनने वालों की सहूलियत के लिए, वो सुनने वालों के गायक हैं।

किसी ने कभी ये सच ही कहा था कि गुलाम अली वाक्यांशों को अप्रत्याशित तरीके से आसानी से घुमाने में माहिर हैं, उनका तलफ्फुज़ कमाल है, हर शब्द अपने पूरे अर्थ में इस तरह से आता है कि पूरी ग़ज़ल आपके सामने परत–दर–परत खुलती जाती है। वो एक ही शे'र को पाँच बार, अलग–अलग अर्थ के साथ गा सकने में सक्षम हैं, कभी–कभी बहुत कम अशआर की ग़ज़लें पन्द्रह बीस मिनट तक चलती हैं और आप बंधे रहते हैं, ऊबते नहीं, 'इतनी मुद्दत बाद मिले हो' ग़ज़ल का शे'र 'तेज़ हवा ने मुझसे पूछा' देखिये हवा ने नहीं, तेज़ हवा ने। सिर्फ शब्दों के इस मिसरे को कान्सर्ट्स में पाँच बार गाते हैं और आप इस शे'र के जितने मानी हो सकते हैं, सबसे गुज़र लेते हैं।

गुलाम अली श्रोताओं को अनोखे, हल्के–फुल्के जिंदादिल अंदाज़ में शे'र के मायने बताते चलते हैं, जिससे सुनने वाले पूरे कार्यक्रम के दौरान उनके साथ हो जाते हैं, जैसे इसी ग़ज़ल की शुरूआत में वो चलते हुए म्यूज़िक के दरम्यान कहते हैं – 'ये ग़ज़ल ओबैदुल्ला अलीम की है, छोटी बहर की ग़ज़ल है, अक़्सर आपने मुझसे सुनी होंगी, छोटी बहर की ग़ज़लें ज्यादा गाता हूँ। इसलिए कि ज़रा मुश्किल पसंद–सा ज़ेहन है, जो न चीज़ तैयार हो सके, उसे तैयार करने की कोशिश करता हूँ'। और मत्तला यानि पहला शे'र गाने के बाद कहते हैं – 'ये लफ़्ज़ मैंने अपने लिए कहे, मेरे लिए मुश्किल है ये, आसान कर दे अल्लाह पाक़ तो और अच्छी बात होगी...'। कितनी विनम्रता और कितनी सादगी, कहा ना सुनने वालों के गायक। 'बहर' जिसके बारे में वो बात कर रहे हैं, उसे छंद या मीटर कहते हैं, दूसरे शब्दों में कहें तो वज़न जिस पर ग़ज़ल के शे'र या मिसरे आधारित होते हैं, छोटी बहर को संगीतबद्ध करना या गाना बहुत मुश्किल होता है, क्योंकि इसमें बड़ी या मध्यम मीटर की ग़ज़लों की तुलना में स्पेस कम मिलता है, लय टूटने का खतरा ज्यादा रहता है, उस्ताद गुलाम अली मुश्किल छोटी बहरें ज्यादा पसंद करते हैं, जैसे –

"अपनी धुन में रहता हूँ,
मैं भी तेरे जैसा हूँ।"

इतनी सिद्धहस्तता उस्ताद को कहीं आकाश से टपक कर नहीं मिल गई, न ही रातों–रात प्राप्त हो गई, खुद उनका मानना है कि 'यद्यपि ग़ज़ल गायिकी आसान, सुखद और

रूचिकर लगती है, पर है ये गायन की सबसे कठिन शैली। कम से कम पन्द्रह साल इसे सीखने में लगते हैं, दस साल तो मौसीक़ी, तलफ्फुज़, ज़ुबान, शायर या लेखक को समझने में और सबसे बढ़कर परिपक्वता प्राप्त करने में ही लग जाते हैं। ग़ज़ल बहुत रियाज़ और प्रशिक्षण माँगती है और इसे जानकार गुरू से ही सीखना चाहिए'।

इसके साथ–साथ वो, एक शायर भी है जिन्हें "सूफी बाबा" कहते थे, के संपर्क में भी आए, जिन्होंने गुलाम अली को ग़ज़ल की आत्मा तक पहुँचाया, उसके सौन्दर्यबोध से परिचय करवाया, शे'र को उसके मायने और खूबसूरती को बनाए रखते हुए कैसे बोलना है, कहाँ रूकना है, किस जगह पर दबाव देना है, मिसरे को कहाँ से तोड़ना है और कैसे उसे दोहराना है, जैसी बारीकियाँ सिखाई।

"इक आइना था सो टूट गया,
अब खुद से अगर .... शर्माओ तो क्या"

उस्ताद अपनी ग़ज़लों के लिए धुन व संगीत खुद ही तैयार करते हैं। राग आधारित होती है ये धुनें, अक्सर उनमें रागों का एक वैज्ञानिक मिश्रण भी होता है, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत और ग़ज़ल के खूबसूरत बोल मिलकर जादू ही कर देते हैं, गुलाम अली ऊँचे सुरों पर भी अपनी पिच पर पूरा नियंत्रण रखते हुए गाते हैं और टोन भी इस तरह से संतुलन में रखते हैं कि न तो बेसुरे होते हैं, न ही कहीं आवाज़ में चुभन महसूस होती है और सुनने वाले इन बारीकियों का स्वाद भी बखूबी ले पाते हैं। आशा भोंसले यूँ ही नहीं उन्हें "ईश्वर का चमत्कार" कहती हैं, वो खुद अपनी गायिकी का श्रेय रियाज़ को देते हैं। उनका कहना है कि मेरी आवाज़ रियाज़ की वज़ह से परिपक्व हुई, सिर्फ रियाज़ ही किसी गायक को बेहतर कर सकता है, जितना ज्यादा आप अभ्यास करेंगे, आपकी आवाज़ उतना ही खुलती जाएगी।

उनकी एक और अनूठी उपलब्धि है – नेपाली भाषा की ग़ज़लें। उन्होंने नेपाल के पूर्व राजा महेंद्र बीर बिक्रम शाह देव की लिखी नेपाली ग़ज़लों को भी अपनी आवाज़ से सजाया है और हिन्दी फिल्मों में उनकी गायी ग़ज़लों का तो कहना ही क्या –

"चुपके–चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है,
हमको अब तक आशिकी का वो जमाना याद है"

सय्यद फ़ज़्ल–उल–हक़ उर्फ मौलाना हसरत मोहानी, वे क्रांतिकारी भी थे। इंकिलाब जिंदाबाद के साथ उन्होंने हमें यह ग़ज़ल भी दी –

"तुझसे मिलते ही वो कुछ बेबाक़ हो जाना मेरा
और तेरा दाँतों में वो उंगली दबाना याद है"

काफी ठाठ पर आधारित इस ग़ज़ल को अपने अनोखे अंदाज़ में 1976 में फ़िल्म 'निक़ाह' में इसका एक छोटा संस्करण गुलाम अली ने ही संगीतकार रवि के लिए गाया, जो उनकी गायकी के सफ़र में मील का पत्थर साबिह हुआ।

"दोपहर की धूप में मेरे बुलाने के लिए,
वो तेरा कोठे पे नंगे पाँव आना याद है"

इस ग़ज़ल में एक खास किस्म का नोस्टाल्जिया है, विसाल के लम्हों की याद है, जुदा होने के लम्हों की याद है, बहुत छोटे–छोटे से जीवन के क्षण हैं, बिम्ब है, जिनका असर ताउम्र रह जाता है, प्रेम ऐसा भी होता है, बहुत सूक्ष्म, कभील–कभी एकदम अदृश्य, अन्दर ही अन्दर महसूस होता हुआ सा, गुलाम अली जी की आवाज़ इस बारीक़ी को पकड़ती है।

आज के दौर में जब संगीत की दुनिया में हंगामेदार रीमिक्स म्यूजिक और तेज़ आवाज़ों को एक शोर बरपा हुआ है, इस किस्म की सहज–सरल गायिकी, जिसके मंद–मंद मुस्कान के साथ उन बोलों को गुनगुना रहा हो, जिनके गहरे मायने हैं, विचित्र लग सकती है। लेकिन ग़ज़ल गाने वाले, सुनन वाले इससे भली–भाँति वाक़िफ़ हैं, सौम्य संगीत के साथ पोएटिक एक्सप्रेशन सिर्फ गुलाम अली जी की गायिकी में ही मिल सकता है।"[18]

"चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है,
हमको अब तक आशिकी का वो ज़माना याद है"

– हसरत मोहानी

'हसरत मोहानी' साहब की रचित इस ग़ज़ल को गुलाम अली जी ने आवाज के जादु से लोकप्रसिद्ध कर दिया।

यह ग़ज़ल गुलाम अली जी की पहचान बन गई है। जहाँ भी यही सुनाई देती है, यही सुनाई देता है ''वाह! 'गुलाम अली' जी ने क्या बखूबी गाया है।''

गुलाम अली साहब की गायिकी एक करिश्मा है, जो जड़ से चेतन तक असर कर जाती है।

[18] रूचिता तिवारी/अमित श्रीवास्तव/कुछ दिन तो बसो मेरी आँखों में/काफल ट्री मैग्जीन/6 जुलाई 2019

"गुलाम अली साहब की ग़ज़ल गायिकी में शब्दों को भावों की अभिव्यक्ति बड़ी सहजता से मिलती है इनकी गायिकी बहुत परिपक्व है। आवाज और गायिकी में शास्त्रीय संगीत का रियाज़ साफ झलकता है।

गुलाम अली जी की आवाज गायकी तथा लय की विविधता का सहारा लेकर शब्दों को प्रधान बनाने में बड़ी सफल रही है।"[19]

"गुलाम अली की गायी ग़ज़लों में शब्दों की भावाभिव्यक्ति बहुत ही सशक्त ढंग से हुई है। **"दिल में इक "लहर"** से उठी है अभी कोई ताजा हवा चली है अभी" नासिर आजमी की इस ग़ज़ल में उन्होंने 'लहर' शब्द को अपनी गायिकी के द्वारा सजीव करने की बड़ी कामयाब कोशिश की है।"[20]

"गुलाम अली की गायिकी में ऐसी फुर्ती और लपक है कि श्रोता अपनी सुध खो बैठता है। वो श्रोता को इतना समय भी नहीं देते कि वो कुछ ओर सोच सके।

उनका बारह सुरों पर इस कदर अधिकार है कि कब कहाँ पहुँच जाएँ कोई नहीं जान सकता।"[21]

"गुलाम अली की गायिकी में जहाँ एक और शब्द और स्वर का अदभुत समन्वय हैं। वहीं दूसरी और स्वरों के माध्यम से शब्दों की भावनाओं को मूतरूप देने की अद्‌भुत क्षमता भी है। आकर्षक टुकड़े – मधुर मुर्कीयाँ तथा वज़न द्वारा गमक इनके गायन की विशेषता है। गुलाम अली ने अपनी गायिकी में अपने गुरू के गायन के सभी अंग अपनाये है।"[22]

"गुलाम अली का उर्दु जैसी नज़ाकत भरी भाषा के साथ–साथ पंजाबी जैसी मस्ती भरी भाषा पर भी पूर्ण पकड़ नज़र आती है। गुलाम अली पंजाबी गानों को भी उतनी ही मस्ती से गाते हैं जितनी सादगी नज़ाकत से वे उर्दु भाषा के लफ़्जों का प्रयोग करते है। सहसा कोई यह अंदाजा नहीं लगा सकता कि गुलाम अली साहब ही दोनों भाषाओं में गा रहे है।"[23]

उनकी यह खूबी उन्हें अन्य गायकों से अलग बनाती है।

---

[19] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 157

[20] शोध ग्रंथ / बेगम अख़्तर एक व्यक्तित्व व कृतित्व / रौशन भारती / पृ. 103

[21] शोध ग्रंथ / दिल्ली विश्वविद्यालय / 20वीं सदी में ग़ज़ल / गायिकी का विकास / दीपाली रमेश महिपति / 2004 / पृ. 97

[22] ग़ज़ल Wizard गुलाम अली / साधना सेठ / पृ. 36

[23] शोधग्रंथ / रौशन भारती / बेगम अख़्तर एक व्यक्तित्व व कृतित्व / जयपुर विश्वविद्यालय / पृ. 67

गुलाम अली की ग़ज़ल गायकी में एक आग सी लपक है जो स्वर, लय और शब्द की रोशनी बिखेरती है।

"गुलाम अली अपनी ग़ज़लों की बंदिश पहले कई रागों में, शब्दों को ध्यान में रखकर करते है। उसके बाद किसी एक बंदिश को चुन कर उसमें आलापों, तानों और मुर्कियों में से जो स्वर संयोजन उन्हे शब्दों के संदर्भ में सबसे उचित प्रतीत होता है उसे अपनी गायिकी में श्रोताओं को सुनाने के लिये दिल और दिमाग में याद रखते है, और प्रदर्शन के समय उन्ही चुनिन्दा स्वर संयोजन को सुनाते है।"[24]

गुलाम अली की गायिकी में लोच और स्वरों की रफ्तार की तेजी हैं जो सिर्फ उन्हीं ही की गायिकी में नजर आती है।

गुलाम अली अपनी गायिकी में मौलिक सृजन करना पसंद करते है।

"गुलाम अली गायक के साथ–साथ एक बहुत अच्छे कम्पोजर भी है। गुलाम अली कहते है –

"मैं पहले बहुत से राग इस्तेमाल करता हूँ ग़ज़ल का भाव देखकर किसी राग का चुनाव करता हूँ। एक शब्द ध्यान से देखता हूँ, वह सुर ढूढंता हूँ, जो उन लफ़्जों का सही तर्जुमा कर सके। फिर ग़ज़ल का भाव देखकर किसी राग का चुनाव करता हूँ, धुनें बनाता हूँ, जब धुनों के मुकाबले में किसी धुन में ज्यादा मज़ा आने लगता है तो समझता हूँ बात बन गई।"[25]

यह भी ध्यान रखता हूँ कि उस पर अपनी छाप रहे दरअसल अपनी शैली बनाना बहुत मुश्किल है।

"However, no words would be adequate to express Gulam ali's superlative craft and skill his uncanny and unmisfiring sense of swara, told and the most in conceivable and complex combination of notes and pitches in whatever octave they may life He seems to have accomplished all that a man or musician can."[26]

"His voice left one warm and glowing, despite the biting chill. The undulating notes of his music spoke to the audience..... laughing, teasing, mocking, flrting ....

---

[24] प्रेम भंडारी / हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 158

[25] शोधग्रंथ / उपशास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं पर शास्त्रीय संगीत का प्रभाव / राजेन्द्र कु. शर्मा / दिल्ली विश्वविद्यालय / पृ. 69

[26] Patriot / New Delhi/ Sunday / 11 March 1990

His sargam went ocean deep, his aalap mountain high...

The magic of Gulam Ali's voice combined with the breath taking back drop made time linger as if hesitant to move on."[27]

"गुलाम अली ग़ज़ल को शास्त्रीय रागों के आधार पर प्रस्तुत करते है।

गुलाम अली की पंसदीदा राग दरबारी, भैरवी, पहाड़ी, बागेश्री, भूपाली आदि हैं। दरबारी और भैरवी राग का रंग लिये उनकी गायी ग़ज़ले "हंगामा है क्यूं बरपा थोड़ी सी जो पी ली है।"

गुलाम अली की ग़ज़ल–गायन शैली में तबले की संगत का एक विशेष महत्व है। उनके साथ जिस शैली का तबला बजाया जाता है वो उनकी गायिकी के अनुरूप ही होता है।

गुलाम अली अपने साथ साजों की संगत के नाम पर सिर्फ दो हारमोनियम और एक तबला जोड़ी रखते हैं। गुलाम अली ने पुराने उस्ताद शायरों के साथ–साथ नये शायरों की ग़ज़ले भी अधिक गायी हैं।"[28]

"गुलाम अली ने नासिर काजमी, अहमद नदीम कासमी, अहमद फ़राज, फैज, कैसर उल ज़ाफरी आदि शायरों की ग़ज़लें अधिक गाई है। कैसर उल जाफरी गुलाम अली के अजीज़ शायर है।"[29]

"Gulam Ali is often considered to be a magician who can weave his thoughts with melodious tunes and make the listencr lose track of his present surrounding.

He soon became known as a path breaker in ghazal singing.

Ali songs make the listeners forget his very existence in this materialistic world."[30]

"His style and variations in singing Ghazals has been notes unique as he plended hindustani classical music with Ghazals."[31]

---

[27] Times of India/ Gazal king holds fort/ 10/ 2/ 17

[28] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 158

[29] साधना सेठ / Gazal wizard–गुलाम अली / पृ. 38

[30] CD – Gazal legends – Gulam ali ASIN – B009B76IRW

[31] सुनील आनंद / ग़ज़ल / Sings – Ustad Gulam ali

"His Compositions are raga – based and sometimes include a scientific mixture of ragas. He is known for blending gharana gaayaki into Gazal. He beautifully sing punjabi songs too."[32]

"His recent ablum 'Hasratein' was nominated in the Best Ghazal Album Category at Gima 2004."[33]

गुलाम अली की गायिकी की विशेषताओं के बारे में जानकर यह बात सामने आयी हैं कि उनकी गायिकी अद्वितीय है तथा प्रभावी है जिसका प्रभाव व चमक वर्तमान में भी बरकरार है।

(क) गुलाम अली घराना –

वर्तमान समय में गुलाम अली ग़ज़ल गायकी के क्षेत्र में एक जाना माना वो नाम है जो अपनी आवाज और नित नये प्रयोगों से इस गायकी को विश्व में लोकप्रिय बनाये हुए है। गुलाम अली ने अपनी गायिकी को एक नई पहचान दी है।

"उनकी गायकी में मेंहदी हसन की गम्भीरता के साथ बेगम अख़्तर की ताल, मुरर्कीयों खटकों आदि का लहजा साफ़–साफ़ जाहिर होता है। गुलाम अली अपनी तैयारी और मिठास के ज़रिये श्रोताओं के लिए एक फनकार है।"[34]

"बेशक गुलाम अली की तालीम शास्त्रीय संगीत की रही है, मगर जब उन्हें लगा कि लोग शास्त्रीय संगीत का पूरा आनन्द नहीं ले पा रहे है। तो उन्होंने स्वरों के साथ शब्दों को जोड़ा तथा ग़ज़ल गायन को अपनी सांगितिक अभिव्यक्ति से नई पहचान दिलायी।"[35]

और यह अलग गायिकी ही उनकी पहचान बनी, जिसे अन्य ग़ज़ल गायकों से अलग कर पहचाना जा सकता है।

इस शैली को वो आने वाली पीढ़ी को भी सीखा रहे है। गुलाम अली के वर्तमान में कई शिष्य हैं, जो उनकी गायिकी का अनुसरण आज भी कर रहे हैं।

"एक इन्टरव्यू के दौरान जब गुलाम अली से प्रश्न किया गया।

---

[32] Hindustan times/Even my dreams are made of Gazals/July/20/1994

[33] The Hindu/Gulam Gazal and Geet/15/9/2004

[34] शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप / दिल्ली विश्वविद्यालय / पृ. 79

[35] शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न कलाकारों का योगदान / दिल्ली विश्वविद्यालय / 2011 / पृ. 94

हरीश शर्मा – आपके बेटे के अलावा भी शिष्य है? आपके।

गुलाम अली– बहुत सारे है, कई मुल्कों में है।

यहाँ भारत में भी है, यहाँ नईम अली है। जावेद अली है और भी है विदेशों में अमरीका व कनाडा में है– मोहन जुटले, अमीन मुख्तार।"[36]

इस उत्तर से स्पष्ट है कि गुलाम अली जी अपनी गायन शैली को सिर्फ अपने बेटों तक ही सीमित नहीं रखना चाहते हैं बल्कि उसे आगे बढ़ाने में विश्वास रखते हैं, यह उनकी गायकी को जिवित रखने का प्रयास है।

"गुलाम अली जी ने लाहैर में 'ग़ज़ल अकादमी' भी खोली है जिसका उद्देश्य है अच्छी आवाज़ को लोगों तक पहुँचाने की एक कोशिश। वो हुनर को आगे बढ़ाने में मदद कर रहे हैं।"[37]

(i) गुलाम अली घराना विशेषताएँ –

1. शब्दों की भावाभिव्यक्ति में सहजता
2. गायिकी में लोच व स्वरों में रफ्तार
3. ग़ज़ल का भाव देखकर राग चयन
4. आकर्षक टुकड़े, मधुर मुर्कीया तथा वजन द्वारा गमक प्रमुख विशेषता
5. छोटी–छोटी मुर्कीयों और तानों का बहुतायत से प्रयोग
6. ग़ज़ल की बंदिश मुख्यत – राग दरबारी / भैरवी/ पहाड़ी / बागे श्री/ भूपाली इत्यादि में निबद्ध
7. छोटी बहरों की ग़ज़लों से सटीक भावाभिव्यक्ति पैदा करना विशेषता।
8. उच्चारण में पंजाबी लहजा प्रदर्शित होना।

[36] हिन्दुस्तान/हर ग़ज़ल खुद में नया प्रयोग है/13/7/1996

[37] Interview / गुलाम अली खान साहिब/तारज सुधान धा 'लदंन'/6/Oct/2011

(ii) गुलाम अली घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप –

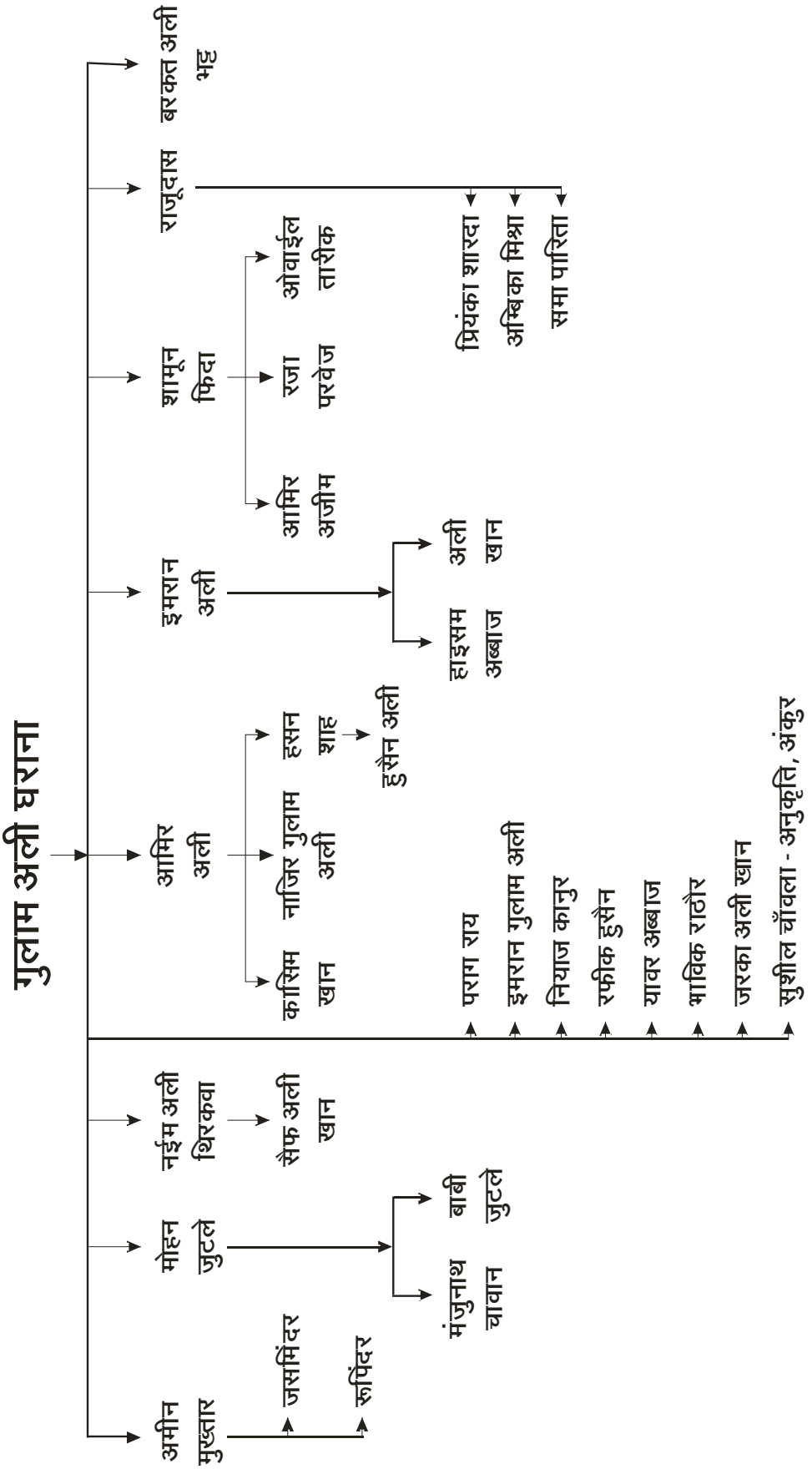

(iii) गुलाम अली के कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय –

जावेद अली –

गुलाम अली अपने शिष्य जावेद अली के साथ

"जावेद अली का जन्म दिल्ली में 5 जुलाई 1982 में हुआ। इनके पिता उस्ताद हमिद प्रसद्धि कव्वाली के गायक है। जावेद अली बचपन से ही गायन में निपुण थे। इनका पूरा नाम जावेद हुसैन है, इनके गुरू, गुलाम अली के नाम से प्रभावित होकर। इन्होंने अपना नाम जावेद अली कर लिया। जब गुलाम अली ने इन्हें सुना तो गुलाम अली बोले ये भविष्य में बहुत बड़ा गायक बनेगा। गुलाम अली जी ने इन्हें अपने लाइव कार्यक्रम में गाने का मौका भी दिया।

वर्तमान में जावेद अली भारतीय सिनेमा में पार्श्व गायन के ज़रिये अपनी आवाज़ श्रोताओं के दिलों तक पहुँचा रहे हैं।

इसके अलावा कई सामाजिक कार्यक्रमों से भी जुड़े है अपनी लाइव प्रस्तुति भी देते रहते हैं।"[38]

[38] जावेद अली / Wikipedia google

मोहन जुटले –

"इनका पूरा नाम मोहन सिंह जुटले है। वर्तमान में ये लंदन में निवास करते हैं इनका जन्म भारत में ही हुआ है। इनके माता–पिता को इनका संगीत के प्रति लगाव बिल्कुल पसंद नहीं था कि वे नहीं चाहते थे कि मोहन जुटले इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाए। इन्होंने कभी सीखा नहीं।

इनके दो बेटे व एक बेटी है वे भी इस क्षेत्र में रूचि रखते हैं। इनके बेटे बॉबी जुटले जो बहुत ही अच्छे तबला वादक हैं, उन्होंने इनके गुरू गुलाम अली व जगजीत सिंह जी के साथ भी संगत की है।

इनके बेटे के साथ मिलकर इन्होने 2009 में हसरत अलबम भी निकाली। जिसमें शब्दों को दोनों बाप–बेटे ने बड़ी बखूबी से सवाँरा तथा 8 अलग–अलग गायकों से गवाया।

मंजु नाथ चावान ने "Jutleys triumph of a belief" 2013 नाम से इनके ऊपर आधारित एक किताब भी लिखी है। जिसको इनके बेटे और इन्होंने Launch किया। हारमोनियम बजाने में भी इन्हें कमाल हासिल है।

भारत से ये केन्या चले गये। वहाँ अपनी पढ़ाई भी जारी रखी, साथ ही संगीत का शौक भी बराबर बना रहा और बच्चों को सीखाते रहे।

उन्होंने कहा कि उनके कभी कोई उस्ताद नहीं रहे। उनकी तमन्ना थी कि वे भी सीखे उनकी मुलाकात गुलाम अली साहब से 1978 में हुयी। वे उनके साथ रहे और सीखा।

इन्हें मौसिकी विरासत में नहीं मिली।"[39]

रफीक हुसैन –

"एक Interview के दौरान गुलाम अली साहब ने बताया था कि उनके शार्गिद रफीक हुसैन ने विसाल कैसेट में कुछ ग़ज़ले कम्पोज की है।"[40]

---

[39] मोहन जुटले Interview / Bobby Song. ftv/19 सितम्बर 2010

[40] सुबह सवेरे Interview / 19 Sep. 2017

पराग राय –

गुलाम अली अपनी शिष्या पराग राय की गंडाबद्धी की रस्म अदा करते हुए

"ये गुलाम अली साहब की हाल ही 10 अगस्त 2016 को शागिर्दा हुई हैं। मूलतः ये कलकत्ता की निवासी हैं।

शुरूआती शिक्षा मिस्टर नानी नान्देय और उसके बाद पंडित जयंता बॉस से ली। पराग राय कनाडा में मिनिस्ट्रटी चाइल्ड एड यूथ सर्विस में कार्यरत हैं।

पराग राय की हिंदी, उर्दु, पंजाबी, बंगाली आदि भाषाओं पर अच्छी पकड़ है। विधिवत् तरीके से गंडाबद्धी की रस्म निरवाना रेस्टोरेंट में की गयी। गुलाम अली ने उन्हें शागिर्दी रस्म के बाद आर्शीवाद दिया और उनके लिये कहा। उसकी आवाज़ अच्छी और अद्वितीय है और गुलाम अली ने कहा की पराग की आवाज भावाभिव्यक्ति से पूर्ण व असरदार है। जब ये ग़ज़ल व सूफी संगीत में आयेगी। तो वर्तमान पीढ़ी के लिये करिश्मा कर देगी।

पराग राय इस समय भावुक हो गयी। उन्होंने कभी सोचा भी न था कि वे ग़ज़ल के अली गुलाम अली की शागिर्दा बनेगी।

उनके लिये एक सपना सच होने जैसी बात थी।

उनकी एक Album पराग – A Revival of Bangla Thumris के नाम से अक्टूबर 2010 को रीलिज हुई। ये एलबम बेगम अख़्तर के कार्यों से प्रभावित थी। उनकी दूसरी एलबम 2015 में आयी।

उन्हे संगीत की समझ है। वर्तमान में वे गुलाम अली जी से सीख रही हैं और साथ ही अपना जॉब भी कर रही है।"[41]

आमिर गुलाम अली –

गुलाम अली अपने बेटे आमिर गुलाम अली व पोते नाज़िर गुलाम अली के साथ

"ये गुलाम अली जी के बेटे है। इनका जन्म लाहौर में हुआ। शुरूआती दौर में इनका इस क्षेत्र में आने का कोई इरादा नहीं था लेकिन धीरे–धीरे उनका रूझान हुआ और उसके बाद से संगीत सफ़र जारी है। इन्होंने कई ग़ज़लों की कैसेट्स निकाली है। कई फिल्मों में गाया है। वर्तमान में अपने पिता के साथ देश–विदेश में कार्यक्रम देते है इनका एक बेटा भी है नाजिर गुलाम अली, वो भी संगीत में रूचि रखता है, और अपने घराने की गायिकी को आगे बढ़ाने में प्रयासरत् है।"[42]

---

[41] Magzine– Canadian Immigrant / 10 Aug/ 2010 By Baisakhi Roy

[42] Interview / Royal New 24/7 / The Weekend show with Aamir Gulam Ali / 14 May 2017

शमून फिदा –

गुलाम अली अपने शिष्य शमून फिदा की गंडाबद्धी रस्म अदा करते हुए

"ये भी गुलाम अली साहब के गंडाबद्ध शागिर्द है। इनका जन्म गुलबर्ग पंजाब पाकिस्तान में हुआ, इनका बचपन से ही संगीत की तरफ रूझान था, इनके दादा मास्टर जितमझी भी अच्छा गाते थे, पिता भी बेहद अच्छा गाते थे तथा इनके चाचा परवेज फिदा साहब जो बेहद ही जाने माने कलाकार थे चाचाजी से बहुत कुछ सीखा शुरूआती दौर में शिक्षा उस्ताद फिदा हुसैन से सीखा। उसके बाद गुलाम अली साहब के 27 सितम्बर 2017 को गंडाबद्ध शागिर्द हुए। तथा T-Series से इनकी 'चश्मे–ए–एतबार' ग़ज़ल एलबम भी निकाली है वर्तमान में इन्होंने एक संगीत Academy लाहौर में 'सबरंग' नाम से खोली है, जिसमें अपने शिष्यों को सीखा रहे व संगीत कार्यक्रम दे रहे है।"[43]

[43] Interview शमून फिदा / LMTA Live Episode –6/22 / Sep / 2017

सुशील चावला :–

गुलाम अली अपने शिष्य सुशील चावला (बायें) के साथ

"सुशील चावला भी गुलाम अली जी के शिष्य हैं। यह जालंधर से संबंधित हैं। पिछले 20 वर्षों से यह ग़ज़ल गायिकी क्षेत्र से जुड़े हुए हैं तथा यह रेडियो व टी.वी. आर्टिस्ट भी रह चुके हैं। इनकी दो कैसेट्स रिलीज हुई हैं, जिनमें से एक को अनूप जलोटा जी के द्वारा रिलीज की गई है तथा सन् 2000 में इन्होंने भारतीय कलाकार के तौर पर हांगकांग में प्रस्तुति भी दी है। साथ ही साथ गायिकी के ये "कोशिश चेरिटेबल सोसाईटी" जालंधर से भी जुड़े हैं, जिसके कोशिश से फ्री स्कूल चलाया जा रहा है, सामाजिक तौर पर भी यह बहुत कार्यशील है।"[44]

[44] सुशील चाँवला / World Artist Gallary

(iii) गुलाम अली के शिष्यों से संबंधित पत्र–पत्रिकाओं की प्रति–

गुलाम अली के शिष्य शमून फिदा

YOUTH TODAY

पंजाब केसरी

मंगलवार, 30 अगस्त, 2016

हिन्दुस्तानी ज्यादा दरियादिल

आमिर गुलाम अली

पाकिस्तान के मुकाबले हिन्दुस्तान के लोगों का दिल कलाकारों के लिए ज्यादा बड़ा है। मैं यहां के लोगों का तहेदिल से शुक्रिया अदा करता हूं कि जब भी मेरे अब्बा गुलाम अली खान के साथ मैं यहां शो करने आता हूं तो हमें यहां लोगों से इतना प्यार मिलता है कि उसको बयां करने के लिए मेरे पास अल्फाज नहीं है। मेरा मानना है कि पाकिस्तान के मुकाबले हिन्दुस्तान में कलाकारों की ज्यादा इज्जत करती आती है। पाकिस्तान में कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि इस्लाम में संगीत हराम है। मेरा मानना है सुर हमेशा सच्चा होता है और वह हराम नहीं हो सकता। ये बातें मशहूर पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली के बेटे आमिर गुलाम अली ने पंजाब केसरी के कार्यालय में संवाददाता से विशेष बातचीत में कही।

वे यहां अपनी गजल 'नहीं मिलेंगे' के प्रमोशन के सिलसिले में पहुंचे थे। उन्होंने बताया कि कोलकाता के बाद जून में दिल्ली में उन्होंने अपने अब्बा गुलाम अली खान साहब के साथ सिरीफोर्ट ऑडिटोरियम में शो किया था। जब भी भारत में उनका कोई शो होता है उन्हें बहुत प्यार मिलता है। ऐसा नहीं है कि पाकिस्तान में उन्हें प्यार नहीं मिलता लेकिन भारत के लोगों को संगीत की समझ ज्यादा है। पिछले दिनों कराची में पाकिस्तानी कव्वाल अमजद साबरी की हत्या के बारे में उन्होंने कहा कि मुझे ... दुख है। वह मेरे भाई जैसे थे। कलाकार का किसी से कोई ... नहीं होता। संगीत अल्लाह तक पहुंचने का जरिया है। ... लिए कोई सरहद नहीं होती। अमजद साबरी साहब की ... भी हत्या की इस्लाम के नाम पर वे धब्बा हैं। ... जाने के नाम पर बेगुनाहों का खून बहाते हैं ... कि जन्नत में नहीं दोजख में जाएंगे। आज फिल्मों में गजल ... जगह कम हो रही है? इस सवाल के जवाब में उन्होंने ... कलाकारों का कसूर नहीं है बल्कि सुनने वालों का भी ... गजल की जो गहराई है वह मॉडर्न म्यूजिक में कहीं ... शोर-शराबे को गाना नहीं कहा जा सकता। गजल दिल ... सुकून देती है।

—आदित्य

गुलाम अली साहब के बेटे आमिर गुलाम अली

7.2.2002 THE TRIBUNE, THU

A ghazal singer a difference

SANGEET NATAK AKADEMI NEW DELHI 110001 LIBRARY

Sushil Chawla of Jalandhar has the distinction of being the only "ghazal" singer of the northern region who exhibits his talent in hotels — not due to some compulsion, but for his passion for small gatherings and his view that only a few people appreciate ghazals nowadays at a time pop is dominating the world of music.

Chawla, a product of DAV College here, is a disciple of Ghulam Ali, the "king of ghazals" and it was the famed ghazal "Chupke chupke raat din, aansoo bahana yaad hai", of the latter which inspired him to be a ghazal singer. "The day I had listened to this ghazal, I decided that I'll not pursue any other profession except music, particularly, ghazals. Hence I approached Ghulam Ali, who after a trial of four years, took him under hit tutelage in 1994. Since then I have been going to him during weekends to take lessons in ghazal singing", said Sushil, who has a number of awards and prizes to his credit and is currently working with the Ranbir Prime Hotel in Jalandhar. Earlier, he was a ghazal singer with a local hotel, Lilly Resorts.

Asked why he was not performing on the stage, he maintained that people hardly tend to be attentive and serious listeners during stage shows. "If you want to project your inner self by using ghazal as a medium, you need serious listeners and I think there is no better place than good hotels," said Chawla. The youthful singer has given a number of presentations in a Tokyo hotel and yearns to teach the art of ghazal singing to those with a yen for soulful music.

गुलाम अली के शिष्य सुशील चावला

पंचम अध्याय

जगजीत सिंह घराना

पंचम अध्याय

जगजीत सिंह घराना

(अ) जगजीत सिंह : जीवन परिचय –

"ये दौलत भी ले लो ये शोहरत भी ले लो
भले छीन लो मुझ से मेरी जवानी
मगर मुझको लौटा दो वो बचपन का सावन
वो कागज की कश्ती वो बारिश का पानी"

– सुदर्शन फकीर

सुदर्शन फकीर के द्वारा रचित इस ग़ज़ल को जिस शख्सियत ने अपनी सादगीपूर्ण व खनकदार आवाज देकर इस ग़ज़ल को हमेशा के लिए अमर कर दिया उस व्यक्तित्व को किसी पहचान की आवश्यकता नहीं है।

वह है ग़ज़ल सम्राट "जगजीत सिंह"

उनकी आवाज का दर्द तन्हा दिलों का दर्द मिटाता है, झुकी–झुकी सी नजर, कागज की कश्ती, और न जाने अपने गीतों श्रोताओं के दिल में बसने वाले ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह ने 70 के दशक में संगीत की फीकी पड़ती इस विधा में नई जान फूंकी।

"Asha Rani Mathur" ने अपनी Book "Beyond time the ageless music of Jugjit singh" में लिखा है। "The world of music would not be complete without ghazals. The world of gazal would not be complete without Jugjit Singh. Jagjit Singh contribution to the world of music is unique."

"जिस प्रकार संगीत का संसार ग़ज़ल के बिना अधूरा है, उसी प्रकार ग़ज़ल का संसार भी जगजीत सिंह के बिना अधूरा है।"[1] जगजीत सिंह वह कलाकार है, जिनकी ग़ज़लों पर युवा नाच उठते हैं और उमरदराज लोगों की आखें भर आती है।

जगजीत सिंह की आवाज़ खुदा की नेमत है और उनकी शोहरत इसी नेमत की वसीयत है।

"जगजीत सिंह राजस्थान में रहने वाले एक सिक्ख परिवार के घर में पैदा हुए। इनका जन्म 8 फरवरी 1941 को राजस्थान के श्रीगंगानगर में हुआ, पिता अमर सिंह धीमन एक सरकारी कर्मचारी थे, तथा बच्चन कौर जो धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। मूलतः ये पंजाब (भारत) के रोपड जिले के दल्लागाँव के रहने वाले थे।

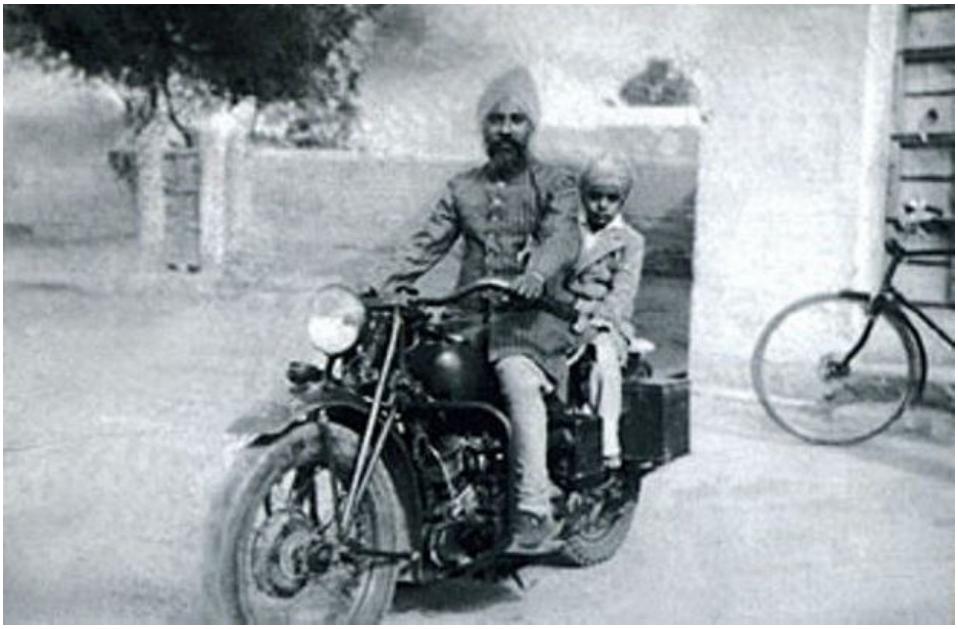

जगजीत सिंह अपने पिता अमरसिंह धीमन के साथ

इनके पिता जी का सपना था, कि अपने बेटे को अभियंता बनाये लेकिन बचपन से ही जगजीत सिंह को संगीत का शौक था।"[2]

[1] Asha Rani Mathur/ Beyond time the ageless music of Jugjit Singh/ P.N. 01

"जगजीत सिंह के बचपन का नाम 'जीत' था लेकिन एक ज्योतिष के कहने पर 'जगजीत' हुआ। उन्होंने भविष्यवाणी की थी ये जग को जीतेगा और ज्योतिष की यह भविष्यवाणी सत्य हुयी और वे ग़ज़ल के सम्राट के रूप में पूरे विश्व में अपनी कला के माध्यम से छाये रहे।"[3]

"इन्हें "बुलबुले राजस्थान" के नाम से भी जाना जाता था। जगजीत सिंह का जन्म बहुत ही साधारण परिवार में हुआ। जगजीत सिंह स्वयं बताते हैं कि उनके घर रोडियों भी नहीं हुआ करता था। समाचार सुनने के लिये उन्हें पड़ोस के घर जाना पड़ता था।"[4]

"जगजीत सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा खालसा विद्यालय में हुई, जहाँ उन्होंने अलीफ, बे आदि सीखा। इसके बाद में वे जालंधर आ गए उन्होंने D.A.V. कॉलेज से स्नातक की डिग्री ली और फिर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से इतिहास में M.A. किया।"[5]

"जगजीत सिंह जी की रूचि पढ़ाई से ज्यादा संगीत में थी, कॉलेज में कई संगीत प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया करते थे। जगजीत सिंह जी कहते हैं कि उन्होंने एक बार कॉलेज में संगीत प्रतियोगिता जीतकर अपना चुनाव दिल्ली की राजपूताना University के लिए करवाया।"[6]

एक साधारण परिवार में जन्म लेकर जगजीत सिंह ने अपनी मेहनत व लगन से ये साबित कर दिया कि "कमल तो कीचड़ में ही खिलता हैं" बुलदियों के आसमान को छू कर 'ग़ज़ल सम्राट' कहलाये।

(ब) पारिवारिक परिचय –

"जगजीत सिंह का जन्म राजस्थान के श्रीगंगानगर जिले के सिक्ख परिवार में हुआ। पिता अमर सिंह धीमान व माता बच्चन कौर के सात संतानें थी। जगजीत सिंह उनमें से एक थे मध्यमवर्गी परिवार में जन्म लिया, पिता साधारण कर्मचारी थे। संगीत में रूचि के कारण सब छोड़कर बम्बई भाग आए।"[7]

---

[2] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 160
[3] शोधग्रंथ / ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान / पृ. 78
[4] आप की अदालत / Interview – जगजीत सिंह / 3 मई 2016
[5] मखमली आवाज के जादूगर थे जगजीत सिंह / Live Hindustan. com
[6] जगजीत सिंह Interview / एक मुलाकात / 18 अगस्त 2017
[7] ग़ज़लों के राजा जगजीत सिंह का जीवन परिचय / अंकिता / 26 अप्रैल 2018

"यहाँ से उनके संघर्ष की दूसरी कहानी का प्रारम्भ हुआ। ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में इस जोड़ी को शायद ही कोई नहीं जानता होगा जगजीत–चित्रा की जोड़ी। जो भी जगजीत सिंह को जानता है वह उनकी पत्नी चित्रा सिंह को भी बड़ी अच्छी तरह से जानता होगा, जैसे ही जगजीत नाम आता है। स्वतः ही चित्रा सिंह मुहँ से निकल जाता है। यह जोड़ी ग़ज़ल के क्षेत्र में काफी लोकप्रिय रही है। चित्रा सिंह भी एक ग़ज़ल गायिका रही है।"[8]

"जगजीत और चित्रा की पहली मुलाकात बम्बई में बेहद ही अलग ढ़ंग से हुई। चित्रा जी के पहले पति देबो प्रसाद दत्ता थे। वे भी संगीत के शौकीन थे। चित्रा जी भी उन दिनों गाया करती थी हाँलाकि वे सीखी हुई नहीं थी, लेकिन अपनी माँ जो कि एक शास्त्रीय संगीत की गायिकी थी उन्हें सुन–सुनकर बहुत कुछ सीखा।"[9]

"चित्रा सिंह जी भी जिंगल्स गाया करती थी। एक निर्माता ने कहा कि आप को एक पुरूष गायक के साथ जिंगल गाना है। वे बोली कोन है? जगजीत सिंह जी उनके घर आये और उन्होंने हारमोनियम से कुछ गाया। वे निर्माता को बोली हम दोनों ही आवाज अलग–अलग गायिकी के लिये बनी है, ये नहीं होगा।

लेकिन निर्माता बोले ऐसा नहीं है फिर से एक बार कोशिश करते है। धीरे–धीरे जगजीत सिंह जी का चित्रा सिंह के घर आना जाना होने लगा। उनके पति देबो प्रसाद को जगजीत की गायिकी बेहद पंसद थी। वे अक्सर उन्हें बुलाकर सुना करते थे।"[10]

"1976 में एच.एम.वी. कम्पनी में एक L.P. रिकार्ड "द अनफॉरगेटबेल्स" के नाम से जगजीत व चित्रा की गायी ग़ज़लों का निकला गया। इस रिकार्ड के बाद यह जोड़ी ग़ज़ल के क्षेत्र में प्रसिद्ध जोड़ी बन गई।"[11]

---

[8] सत्या सरन / बात निकलेगी तो फिर एक ग़ज़ल नामा / पृ. 63

[9] Asha Rani Mathur/ Beyond time– the ageless music of Jugjit Singh/ पृ. 52

[10] दर्द को मिटाती है जगजीत सिंह की आवाज / webdunia/ 10 Oct 2011

[11] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 161

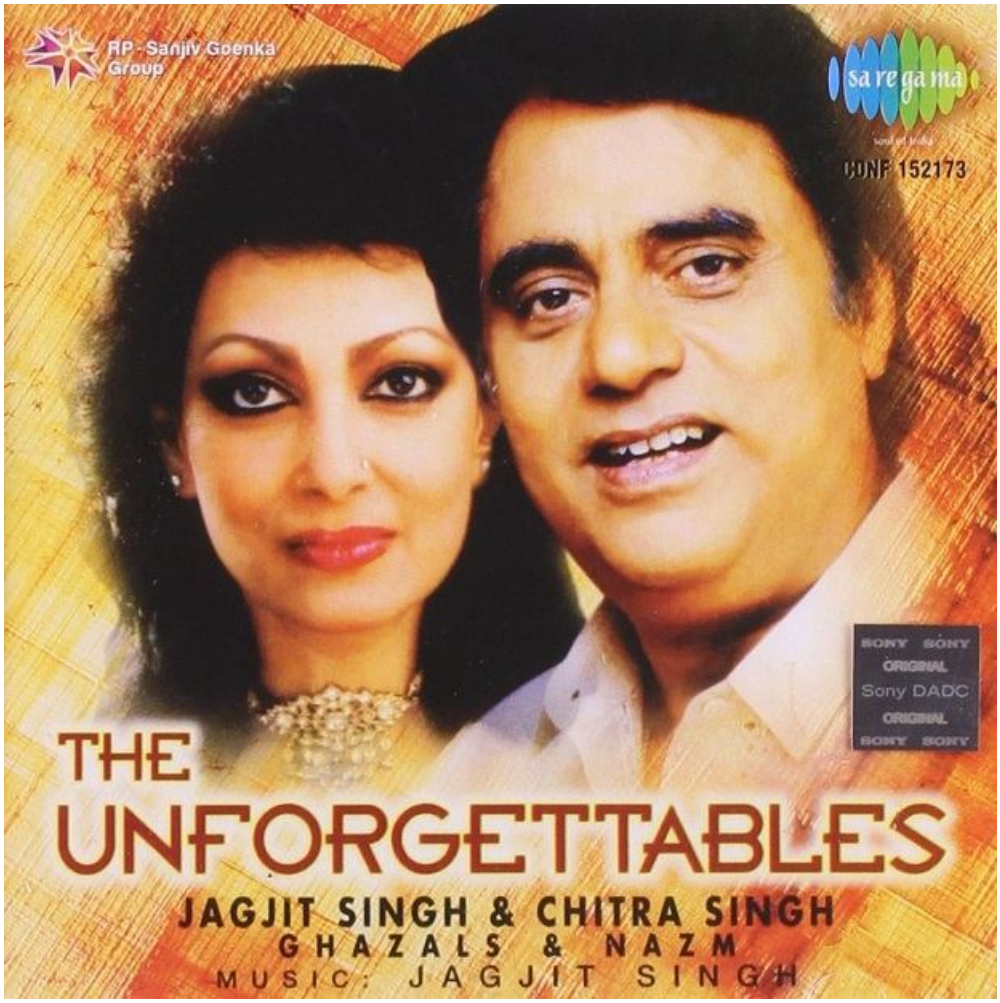

जगजीत सिंह और चित्रा सिंह की जोड़ी की पहचान ''द अनफोरगेटेबल्स'' से ही हुई

"धीरे–धीरे दूसरी तरफ चित्रा सिंह व जगजीत सिंह एक दूसरे को पंसद करने लगे थे तथा चित्रा सिंह की शादीशुदा जिंदगी देबो प्रसाद दत्ता के साथ ठीक नहीं चल रही थी। चित्रा जी ने उनसे तलाक लिया व जगजीत सिंह से शादी कर ली। चित्रा जी की पहली शादी से एक संतान मोनिका चौधरी थी, जो उन्हीं के पास रहती थी।

शादी के बाद मोनिका अवसाद ग्रस्त रहने लगी और एक दिन खबर आयी कि मोनिका ने अपने घर में खुदखुशी कर ली।

जगजीत ओर चित्रा का बेटा 'बाबू' जिसका जन्म 1971 में हुआ। 'बाबू' में जगजीत सिंह की जान बसती थी। उनकी गृहस्थी बड़ी अच्छी चल रही थी। जगजीत सिंह शो करने जाते थे तथा चित्रा सिंह गृहणी बनके घर की देखरेख व बाबू का ध्यान रखती थी।

जगजीत सिंह पत्नी चित्रा एवं बेटे बाबू के साथ

अपने साथ संगीत कार्यक्रमों में भी ले जाते थे। लेकिन ईश्वर की विडम्बना देखो, जब वह मात्र 20 वर्ष का था। उसकी एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। यह बेहद ही दर्दनाक सूचना थी।

इस घटना ने दोनों के जीने का सहारा छिन लिया। उस दिन से चित्रा जी ने गाना छोड़ दिया था। जगजीत सिंह ने फिर हिम्मत करके दुबारा एक शुरूआत की वो बोलते थे कि बाबू हमेशा मेरे साथ है।

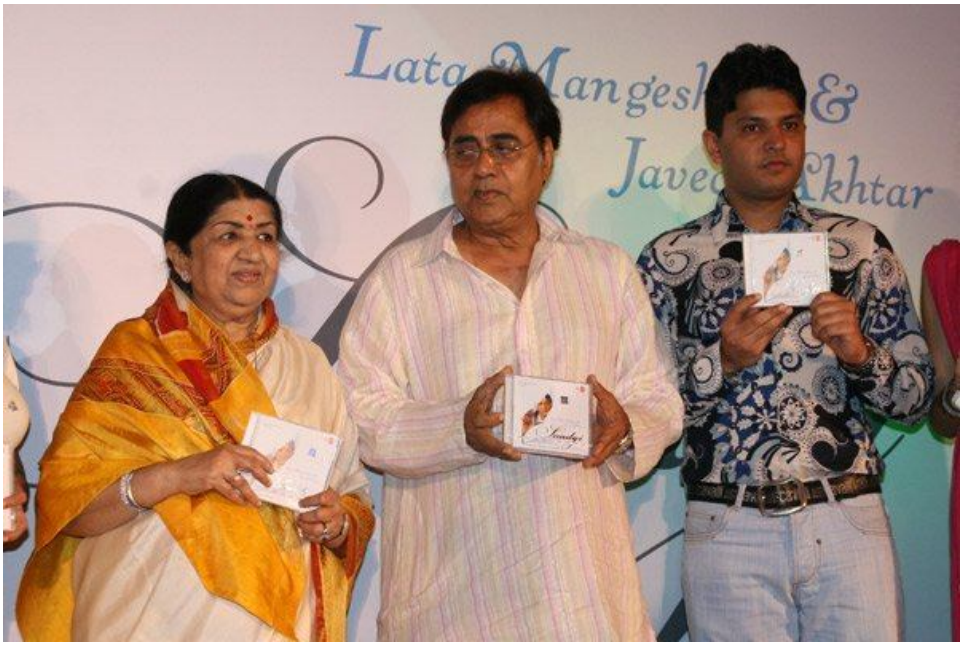

जगजीत सिंह गायिका लता मंगेशकर के साथ ''सज़दा'' कैसेट रिलीज़ करते हुए

ये जीवन है, आगे तो बढ़ना है और उन्होंने लता मंगेशकर के साथ मिलकर 'सजदा' एलबम से अपनी वापसी की और स्वयं को गायिकी में इतना व्यस्त कर लिया, ताकि वे उस गम को भुलाने की कोशिश कर सके। धीरे–धीरे समय बीतता गया।"[12]

"जगजीत सिंह भी शारीरिक रूप से स्वस्थ्य नहीं रहते थे। 10 अक्टूबर 2011 को एक ऐसी अंधेरी रात जगजीत सिंह के जीवन में आयी जो जगजीत सिंह को आंधी की तरह उड़ा ले गयी।

U.K. में 23 सितम्बर 2011 को उनका एक कार्यक्रम गुलाम अली साहब के साथ होना तय था लेकिन ईश्वर को कुछ ओर ही मंजूर था। उन्हें ब्रेन हेमरेज हुआ, वहाँ से उन्हें भारत लाया गया, करीब 10 दिन लीलावती अस्पताल बम्बई में भर्ती रहे, लेकिन कुछ काम न आया और वे हमेशा–हमेशा के लिए अपने श्रोताओं को छोड़कर 10 अक्टूबर 2011 को इस दुनिया से अंतिम विदाई ले के चले गए।"[13]

इस खबर से संपूर्ण विश्व में शोक की लहर दौड़ गयी। यह भारतीय संगीत में ग़ज़ल क्षेत्र में बेहद बड़ा नुकसान था। लेकिन फिर भी जब उनकी ग़ज़ले सुनाई देती है। तो लगता हैं वे कही नहीं गये हैं वे जिंदा है। सभी दिलों में और सदैव अपनी गायिकी के जरिये रहेंगे। जगजीत सिंह एक ऐसा नाम है जो अमर है। **"होठों से छू लो तुम, मेरा गीत अमर कर दो",** बेशक उनके गीत अमर हैं।

[12] Asha Rani Mathur/ Beyond time– time ageless music of Jagjit Singh/ पृ. 109
[13] यादे– जगजीत सिंह की 10 सदाबहार ग़ज़ले / 10 अक्टूबर 2016

(स) संगीत सफर –

"बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जाऐगी,
लोग बेवजह उदासी का सबब पूछेंगे।"

"जगजीत सिंह जी के पिता अमर सिंह धीमन स्वयं संगीत के शौकीन थे। उन्होंने अपने बेटे जगजीत की आवाज में एक खूबी देखी।

उन्होंने अपने बेटे की प्रतिभा को समझा और जब वे मात्र 12 वर्ष के थे, उनके पिता उन्हें पंडित छगन लाल शर्मा के पास ले गये। जिनसे उन्होंने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा ली व सुरों की समझ विकसित की।"[14]

"संगीत की विधिवत् शिक्षा इन्होंने सेनिया घराने के स्वर्गीय उस्ताद जमाल खां से प्राप्त की। उस्ताद जमाल खां से उन्होंने कई रागों में बंदिशें, ठुमरी, ध्रुपद सीखा। उस्ताद जमाल खां ने जगजीत सिंह जी को सर्वप्रथम राग "बगेश्री" की बंदिश सीखायी।"[15]

"जगजीत सिंह जी कहते हैं कि वे बता नहीं सकते, जो भी उन्हें उस्ताद जमाल खाँ जी ने सीखाया वो बेहद अमूल्य है।"[16]

---

[14] ग़ज़ल के सिंह जगजीत सिंह / संगीत पत्रिका / पृ. 54

[15] शोध ग्रंथ / ग़ज़ल गायन में शास्त्रीय पक्ष का विकास एवं ह्रास एक विश्लेषणात्मक अध्ययन / पृ. 79

"जगजीत सिंह ने सबसे पहली प्रस्तुति, जब वे 9th कक्षा में पढ़ते थे, तब एक कवि दरबार में "कि तेरा एतबार ओ रहिया" गाकर की। सभी श्रोताओं ने सराहा और एक और गाने को कहा तब उन्होंने "ओ दुनिया के रखवाले" गाया, जो उन दिनों बहुत ही चर्चित गीत था।"[17]

उस दिन जगजीत सिंह को एक उत्साह व हौंसला मिला आगे बढ़ने का। समय के साथ–साथ जगजीत सिंह का संगीत सफर जारी रहा। "1965 में जगजीत सिंह बम्बई पहुँचे और छोटी महफिलों में अपनी कला का प्रदर्शन करने लगे।"[18]

"इतने बड़े शहर में खुद की एक अलग पहचान बनाना बेहद ही संघर्षपूर्ण था। शुरूआती दौर में जगजीत सिंह जी ने विज्ञापनों में जिंगल्स गाकर अपनी आजिविका का इंतजाम किया। जगजीत सिंह जी बताते हैं कि उन दिनों सिर्फ फिल्मी गायक या शास्त्रीय गायकों को ही सुनने का चलन था। सुगम और गैर फिल्मी संगीत का चलन बिल्कुल भी नहीं था।"[19]

उस समय संगीत के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाना बड़ा ही संघर्षपूर्ण साबित हुआ। उस समय लोग जो सुनना पंसद कर रहे थे उसके सामने ग़ज़ल गायिकी बेहद ही कठिन कार्य था, जैसे तूफान में स्वयं को डटे रखना स्वरूप कार्य था।

जगजीत सिंह गायिका आशा भोंसले जी के साथ रिकॉर्डिंग के दौरान

---

[16] ग़ज़ल वही है उसकी जुंबा आसान हो रही है / जगजीत सिंह / हिन्दुस्तान– 27 अप्रैल 2002,
[17] Asha Rani Mathur / Beyond time - the ageless music of Jugjit Singh/पृ. 19
[18] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 160
[19] सत्या सरन / बात निकलेगी तो फिर एक ग़ज़ल नामा / पृ. 37

"1968 में जगजीत सिंह जी का पहला गीत जो गुजराती फिल्म 'बहुरूपी' के लिये रिकार्ड किया, जिसके बोल थे – **'राम मिलन में....'** बेहद लोकप्रिय रहा। उनका पहला ई.पी. रिकार्ड एच.एम.वी. कम्पनी के द्वारा सन् 1965 में निकाला गया। इस रिकार्ड में उन्होंने दो ग़ज़लें गायी, इसके दो वर्ष बाद इनका एक ई.पी. रिकार्ड और निकला।"[20]

"फिल्म अमन जो 1967 में रिलीज हुई थी उसमें जगजीत सिंह जी ने बतौर सहायक अभिनेता के रूप में भी कार्य किया था। यह बात बहुत कम लोगों को मालूम है।"[21]

धीरे–धीरे उन्होंने अपने गायिकी अंदाज से पहचान बनाना शुरू कर दिया, लोग उन्हें जानने लगे। "संजीव कोहली जी बताते हैं कि मेरे पिताजी के जन्मदिन पर एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लता जी ने मेरे पिता जी को कहा कि "एक लड़का है, मदन जी उसकी बहुत तारीफ सुनी है, मैंने सुना है, बहुत अच्छा गाता हैं उसको बुलाते है।"

उस दिन जगजीत को बुलाया गया, उन्होंने कई ग़ज़लें गायी, सभी लोगों ने खूब सराहा, वहाँ से उनके लिए संगीत इंडस्ट्री के दरवाजे खुल गए।"[22] जगजीत सिंह ने अपनी गायिकी की नवीनता व मौलिकता से अलग पहचान बनायी। धीरे–धीरे वे अपने मुकाम को पाने में सफल रहे।

सपनों के शहर बम्बई में आखिर उन्होंने अपना सिक्का जमा ही लिया था। "उन्होंने कई फिल्मों में भी गाया है, जैसे – 1966 में 'बहुरूपी' फिल्म में सबसे पहला गाना गाया जो गुजराती फिल्म थी।

– 1981 में 'प्रेम गीत' फिल्म में – 'होठों से छु लो तुम मेरा गीत अमर कर दो'

– 1982 में 'अर्थ' फिल्म में – 'झुकी–झुकी सी नज़र बेकरार'

– 1999 में सरफरोश फिल्म में – होश वालों को खबर क्या।

आदि कई फिल्मों में गाया और श्रोताओं के बीच काफी लोकप्रिय रहे।"[23]

---

[20] ग़ज़ल गायिकी को नया आयाम दिया जगजीत सिंह / पत्रिका / 10 अक्टूबर 2016

[21] विरासत – जगजीत सिंह, पार्ट 1, अक्टूबर 18, 2016

[22] Asha Rani Mathur/ Beyond time– the ageless music of Jugjit Singh / पृ. 43

[23] Google Wikipedia/Jugjit Singh

"संजीव कोहली जी बताते हैं जब जगजीत सिंह बम्बई आये थे तब उन्हें कई संघर्षों का सामना करना पड़ा। जगजीत सिंह ने फिल्म इंडस्ट्री के दरवाजे भी खटखटाये लेकिन सब व्यर्थ गया। जगजीत सिंह जी के बड़े भाई करतार सिंह जी कहते है –

"When he was new in Bombay, All Big film people would call him to their house to sing.

They use to make false promises that giving him a chance in films trust so that he would perform free for them."[24]

लेकिन जगजीत सिंह जी ने अपना सपना नहीं छोड़ा। कई विपरीत परिस्थितियों का उन्होंने डटकर मुकाबला किया, जो हर किसी के लिए मुमकिन नहीं है। कई राते फुटपाथ पर सोकर बितायी लेकिन घर वापस नहीं गये।

उन्होंने धीरे–धीरे बम्बई शहर में पैर जमाना शुरू किया और कई संगीत क्लब कार्यक्रमों में अपनी प्रस्तुति देना शुरू किया।

"उनकी और उनकी पत्नी चित्रा सिंह की जोड़ी भी ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुई। सन् 1970 और 1980 में उनकी जोड़ी का एक अलबम निकला "अर्थ और साथ–साथ" फिल्म से जो एच. एव. वी. का सबसे अधिक बिकने वाला एलबम साबित हुआ।"[25]

फिल्मों के अलावा भी जगजीत सिंह ने देश–विदेशों में अपनी प्रस्तुति भी दी। जगजीत सिंह जी का संघर्षों से सफलता तक का या यूँ कहे कि एक आम आदमी से ग़ज़ल सम्राट बनने का सफर बेहद ही जटिल व प्रेरणादायक था।

जगजीत सिंह ने अपनी मेहनत से यह साबित कर दिखाया की हौसलों में उड़ान हो तो कुछ की मुश्किल नहीं, बशर्ते उतनी लगन होनी चाहिए।

[24] Asha Rani Mathur/ Beyond time– the ageless music of Jugjit Singh / पृ. 55
[25] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 161

जगजीत सिंह राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम साहब से पद्म भूषण प्राप्त करते हुए

"जगजीत सिंह को कई उपाधियों और पुरूस्कारों से भी नवाजा गया है।

1. पदम् भूषण– 2003
2. राजस्थान रतन– 2012 (राज. सरकार द्वारा)
3. साहित्य अकादमी अवार्ड – 1998
4. संगीत नाटक अकादमी अर्वाड
5. लता मंगेशकर सम्मान– 1998 (मध्यप्रदेश सरकार द्वारा)
6. गालिब अकादमी पुरूस्कार– 2005 दिल्ली सरकार द्वारा"[26]

"9 फरवरी 2014 को भारत सरकार ने जगजीत सिंह जी के सम्मान व स्मृति में दो डाक टिकट भी जारी किए।"[27]

जगजीत सिंह जी की स्मृति में भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकट

[26] जगजीत सिंह / Google wikipedia

[27] Times of india / 9 फरवरी 2014

"1926 में जगजीत सिंह जी ने भारत के राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के लिए स्वागत गान भी लिखा था। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से भी जगजीत सिंह का अटुट रिश्ता रहा है। उन्होंने अटल जी की लिखी कविताओं को अपनी आवाज दी ओर वे कविताएँ बेहद लोकप्रिय रही। 2002 में अटल जी व जगजीत सिंह की एलबम "संवेदना" काफी सफल रही। इस एलबम का गीत "क्या खोया पाया" बहुत ही प्रसिद्ध हुआ।"[28]

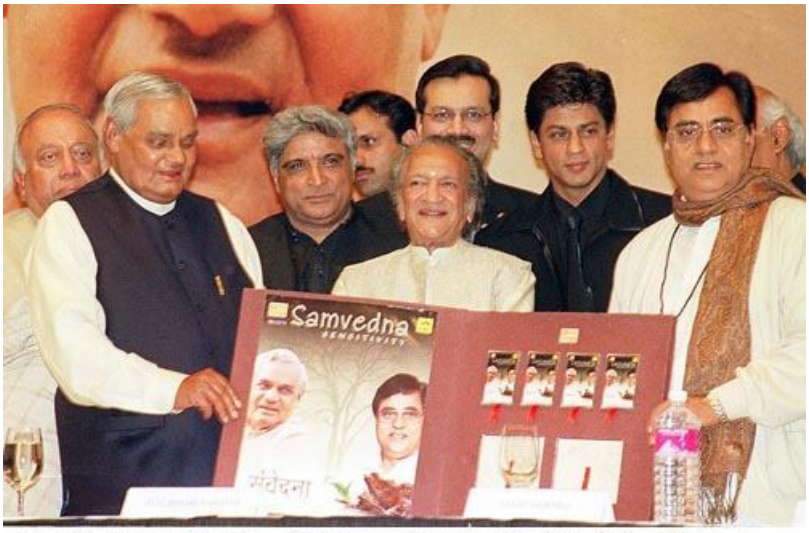

प्रधानमंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी १० फरवरी, २००२ को नई दिल्ली में म्यूजिक एलबम "संवदेना" जारी करते हुए। इस एलबम में श्री वाजपेयी की कविताओं को गजल गायक जगजीत सिंह ने गाया है और फिल्म कलाकार शाहरुख खान पर फिल्मांकन किया गया है।

"हाल ही में गूगल ने जगजीत सिंह जी की 72वीं जयंती पर सुरों के बादशाह कहे जाने वाले जगजीत को उनके करोड़ों प्रंशसकों के साथ–साथ सर्च इंजन गूगल ने भी अपने डुडल में उन्हें श्रृद्धांजली अर्पित की।"[29]

"जगजीत सिंह पर एक फिल्म "कागज की कश्ती" बनी है, जो 2 नवंबर 2018 को PVR सिनेमा घरों में रिलीज हुयी।"[30]

[28] Times now / 16 Aug 2018
[29] NDTV / 8 feb. 2013

"हाल ही में जगजीत सिंह की द्वितीय पुण्य तिथि पर जगजीत सिंह की अप्रकाशित ग़ज़लों की कैसेट उनकी पत्नी चित्रा सिंह के द्वारा रिलीज की गयी, जिसका Title "Universal Music" रखा गया।"[31]

सभी तथ्यों से यही कहा जा सकता हैं कि जगजीत सिंह का संगीत सफर बेहद ही संघर्षपूर्ण था। संघर्षों के बादलों को पार कर 'ग़ज़ल का सम्राट' सामने आया।

(द) जगजीत सिंह की गायिकी –

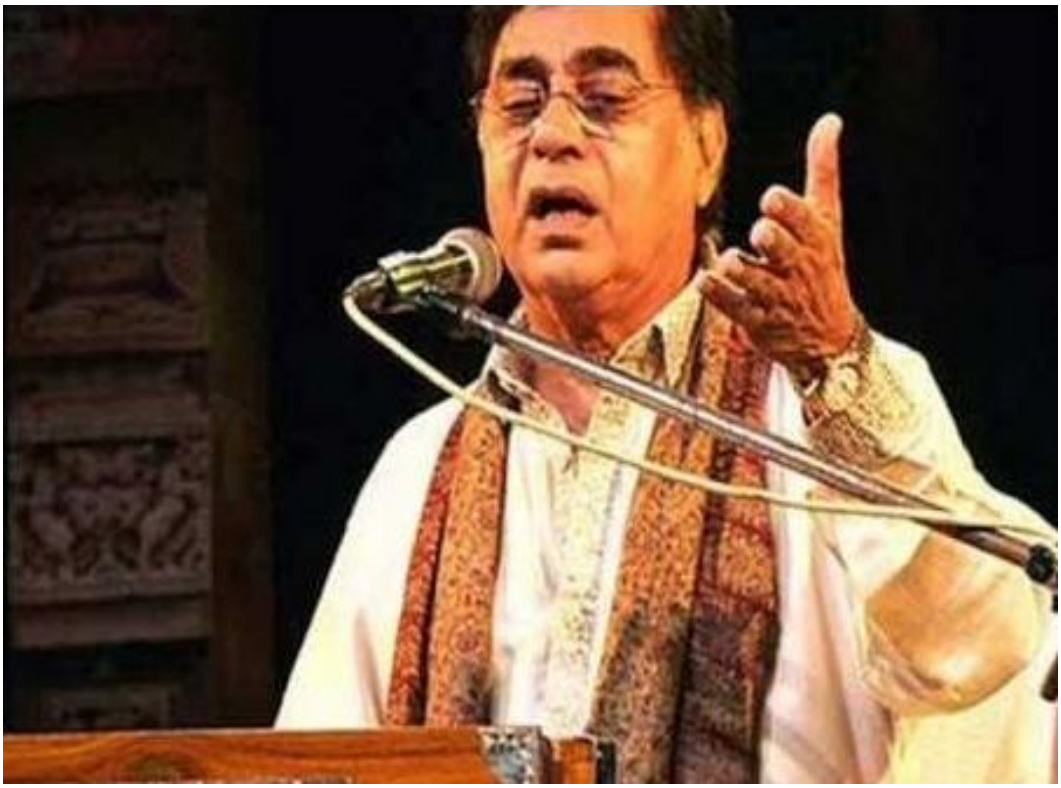

"जिंदगी का साज भी क्या साज है
बज रहा है और बे आवाज है"

"अपनी मखमली और पुरूसोज आवाज से ग़ज़ल को नई रंगत और शोहरत देने वाले जगजीत सिंह ने अपनी गायिकी से एक अलग पहचान बनायी है।

जगजीत सिंह एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ है, जिसकी रोशनी के बिना भारतीय ग़ज़ल गायिकी की चमक फीकी पड़ जाती है।

---

[30] India Tv / 22 oct 2018
[31] Times of India/Oct. 12, 2013

जगजीत सिंह ने सेमी क्लासिकल संगीत की परिधि से ग़ज़ल को बाहर निकालकर ग़ज़लों का क्षेत्र विस्तृत किया।"[32]

जगजीत सिंह ने सरल शब्दों के प्रयोग से आमजन की ग़ज़ल गायकी में परिवर्तन किया है जगजीत सिंह के नए प्रयोग आम जनता को खूब भाए।

"खुदा की नेमत की हिफ़ाज़त जब इंसान की मेहनत नहीं करती तो खुदा अपनी नेमत को वापस भी ले लेता है। ऐसी कई गुमनाम मिसालें पेश की जा सकती हैं। मेंहदी हसन की आवाज़ हो या बेगम अख़्तर का अंदाज़, बिना रियाज़ या मेहनत के शोहरत नहीं पाते।

जगजीत नास्तिक नहीं थे, वे खुदा को मानने वाले थे, लेकिन खुदा के साथ वे संसार में इंसान के कद्रदान थे। इसी इंसान की कद्रदानी के एहसास ने उनकी शख़्सियत में भगवान और इंसान के रिश्ते को नई तरह से परिभाषित किया था।

जगजीत हक़ीकत में ग़ज़ल सिंगर के रूप में एक संत थे। मंदिर, मस्ज़िद, गिरिजा और गुरूद्वारे में विभाजित खुदा को उन्होंने नए सिरे से जोड़कर अपने दिल में बसा लिया था।"[33]

"जगजीत सिंह ने ग़ज़ल गायिकी को शास्त्रीय–संगीत के भारी बोझ से हल्का कर, शास्त्रीय–संगीत के सूक्ष्म प्रभावशाली तत्वों का उपयोग कर, अपनी ग़ज़ल गायन शैली में सीधी–सीधी और उर्दु फारसी के गूढ शब्दों से रहित ग़ज़लों का चयन कर श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया है।"[34]

"जगजीत सिंह जी की ग़ज़ले सहज व सादगी पूर्ण है, वे अपनी ग़ज़लों में बेहद ही साधारण शब्दों का इस्तेमाल करते थे। जबकि उर्दु भाषा से भलीभाँति परिचित थे।"[35]

"उनकी ग़ज़ले आत्मीयतापूर्ण होती थी। उनकी गायिकी का अंदाज स्वतंत्र था। उनकी मखमली और सच्चे सुरों की गायिकी अन्य गायकों से अलग थी।

गुलज़ार साहब की कई ग़ज़लों को जगजीत सिंह ने अपनी आवाज देकर सदा के लिये अमर कर दिया।"[36]

---

[32] ग़ज़ल के सिंह जगजीत सिंह / संगीत पत्रिका / पृ. 58
[33] काफल ट्री / तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो / 8 फरवरी 2019
[34] मखमली आवाज के जादूगर थे जगजीत सिंह / Live Hindustan. com
[35] प्रेम भंडारी / हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी / पृ. 130
[36] ग़ज़ल गायिकी को नया आयाम दिया जगजीत सिंह / पत्रिका / 10 अक्टूबर 2016

"गुलजार साहब उनकी प्रशंसा में कहते हैं कि –

"एक बौछार था वो

एक बौछार था वो शख्स

बिना बरसे किसी अबर की नमी से जो भिगो देता था

एक बौछार ही था वो जो कभी धूप की अफसा भर के

दूर तक सुने हुये चिरहों को छिड़क देता था

निम तारीख से होल में आँखे चमक उठती थी"[37]

गुलजार साहब की ये खूबसूरत पक्तियाँ जगजीत सिंह की गायिकी को परिभाषित करने में सक्षम है।

"जगजीत सिंह जी ने क्लासिकी शायरी के अलावा साधारण शब्दों में ढली आम–आदमी की जिंदगी को भी सुर दिये "अब मैं राशन की दुकानों पर नज़र आता हूँ", "मैं रोया परदेस में", "माँ सुनाओ मुझे वो कहानी" जैसी रचनाओं ने ग़ज़ल न सुनने वालों को भी अपनी ओर खींचा।"[38]

"जगजीत सिंह की गायिकी की ये विशेषता थी कि वे शब्द और स्वरों के सच्चे लगाव तथा अपनी अलंकारिक भावपूर्ण प्रस्तुति से लोगों के दिल में गहराई तक उतर जाते थे। यही कारण था कि ग़ज़ल गायकों की भीड़ में जल्दी ही शीर्ष स्थान पर पहुँच गए। जगजीत सिंह की ग़ज़ल गायिकी की ये खूबी थी कि वे अपनी ग़ज़लों को जब सुरों में पिरोते थे, तो वे अपने श्रोताओं की पंसद व उनकी समझ के अनुसार ही गढ़ते थे।"[39]

"उनकी ग़ज़ल गायिकी रागों पर आधारित होती थी। जगजीत सिंह की ग़ज़ल गायिकी में ठहराव, सफाई, गम्भीरता सभी विशेषताएँ थी। जगजीत सिंह की आवाज मंद्र सप्तक के सा से तार सप्तक के गं तक बड़ी सफाई से जाती थी। कभी–कभी वे अति मंद ध्वनि का काम भी बड़ी खूबसूरती से कर दिखाते थे।"[40]

---

[37] एक नज़्म जगजीत सिंह को–गुलजार नामा/13 मार्च 2012

[38] Jugjit Singh/Wikipedia

[39] ग़ज़ल के सिंह जगजीत सिंह/संगीत पत्रिका/पृ. 59

[40] शोध ग्रंथ/ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न ग़ज़ल गायकों का योगदान/पृ. 98

"जगजीत सिंह शास्त्रीय संगीत के सूक्ष्म तत्वों तथा मींड, मुर्की खटका, कण स्वर इत्यादि का प्रयोग बडी ही नफ़ासते से करते थे।"[41]

"शब्दों के उच्चारण की दृष्टि से भी जगजीत सिंह शीर्षस्थ स्थान पर आते हैं। उनके होठों से शब्द ऐसे निकलते थे जैसे शब्द के अर्थ मूर्त रूप ग्रहण कर के सामने खड़े हो रहे है। उनके उच्चारण और आवाज के ज़रिये शब्द स्वयं ही अपना अर्थ पा जाता है।"[42]

"ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह के बेहतरीन जोड़ीदार रहे निदा फाजली का कहना है कि उनके पास ऐसी आवाज थी, जो हर सुनने वाले को मंत्रमुग्ध कर देती थी, उनकी आवाज में अजीब तरह का जादू था, व परत्तदार थी।

हमे महसूस होता हैं कि वे मुस्कुराते हुये गा रहे हैं लेकिन शब्दों के भीतर वे रोते हैं और हम सब को रूला देते है।"[43]

यह उनकी कमाल की कला थी "जगजीत सिंह की आवाज खुदा का दिया हुआ तोहफा थी। जगजीत सिंह का शायर चुनने का अंदाज भी बड़ा ही निराला होता था। वे उन शायरों को चुना करते थे जो इस क्षेत्र में नये हो, और लोकप्रिय भी ना हो। वे नये शायरों को मौका देने में विश्वास रखते थे।"[44]

"उनका नये वाद्यों का प्रयोग उनकी ग़ज़लों के लोकप्रिय होने का एक मूल कारण था। इससे पहले तक ग़ज़ल गायक केवल हारमोनियम व तबले का ही प्रयोग किया करते थे।

जगजीत सिंह ने अपनी ग़ज़लों में संगत के तौर पर गिटार/वायलिन/संतुर/ बांसुरी/स्पेनिश गिटार"[45] आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग बड़ी खूबी से किया है।

कई लोगों ने उनकी आलोचना भी की, कि जगजीत सिंह ग़ज़ल गायिकी के ढाँचे को बिगाड़ रहे है, नये–नये वाद्यों का प्रयोग कर। लेकिन हर नये कार्य में मुश्किलें जरूर आती है। और उन्होंने इन मुश्किलों को पार करके अपनी गायिकी को अलग ढंग से प्रस्तुत किया और सफल रहे। "निदा फाजली ने Beyond times the ageless music of Jugjit Singh में कहा है This is the magic of Jugjit voice It has the sweetness of the mother. The beauty of a

---

[41] शोधग्रंथ/रौशन भारती/बेगम अख़्तर एक व्यक्तित्व व कृतित्व/पृ. 174
[42] प्रेम भंडारी/ हिंदुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी/पृ. 162
[43] जगजीत सिंह तेरी आवाज नज़र आती है/निदा फाजली/webdunia
[44] सत्या सरन/बात निकलेगी तो फिर एक ग़ज़ल नामा/पृ. 102
[45] शोधग्रंथ/ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप/पृ. 109

deep Relationship and is like a soothing ointment upon one's would it comes to you, and without talking anything goes away."[46]

"जगजीत सिंह की गायिकी युवा पीढ़ी को सबसे ज्यादा प्रभावित करती है। षड्ज की आवाज व गाने में ठहराव है, तलफ्फुज की सफाई है, और उनके स्वर में जो कण है, वे सब उनकी ग़ज़लों को प्रभावकारी बनाने में बहुत सहायक है।"[47]

"जगजीत सिंह की आवाज रूह तक उतर जाती है। जीवन के हर पड़ाव और सवालात जैसे जगजीत सिंह की ग़ज़लों में रचे बसे हैं।"[48]

"डॉ मनमोहन सिंह ने जब जगजीत सिंह जी की गायिकी को सुना तो प्रंशसा करे हुये बोले कि उन्होंने भारत में एक ऐसा अंदाज अपनाया जिसने ग़ज़ल को एक नई जिंदगी दी।"[49]

"डोलर मेहता जो पेशे से स्वयं एक ग़ज़ल गायक है, उन्होंने ने भी जगजीत साहब पर शोध किया। शोध शीर्षक "स्वंतत्रोत्तर ग़ज़ल गायिकी का उत्थान" नामक शीर्षक में जगजीत सिंह की तारीफ करते हुए कहा कि ग़ज़ल गायिकी राज दरबारों में प्रतिबंधित थी। जगजीत सिंह के आने से ग़ज़ल गायिकी को प्रचार–प्रसार मिला है।"[50]

जगजीत सिंह के मन में यह लक्ष्य स्पष्ट था कि रिवायती अंदाज से हटकर कुछ नया नहीं किया गया तो रही–सही ग़ज़ल भी मर जाएगी। वे सुनने वालों के मूड को अपने गणित से भाँपते थे और क्या गाना है क्या नहीं, महफ़िल देखकर तय करते थे।

निदा फ़ाजली जी बताते हैं – "जगजीत से मेरी दोस्ती, मेरी एक ग़ज़ल के माध्यम से हुई थी, ग़ज़ल का मतला था –

"दुनिया जिसे कहते हैं, जादू का खिलौना है
मिलजाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।"

यह ग़ज़ल जगजीत ने उर्दू की किसी पत्रिका से पढ़ी थी और रिकार्ड भी कर ली थी। इसके रिकार्ड होने की सूचना मुझे एच.एम.वी. से एक चैक के ज़रिये मिली।"[51]

---

[46] Asha Rani Mathur/ Beyond time– time ageless music of Jagjit Singh/ पृ. 136
[47] गज़ल वहीं है उसकी जुंबा आसान हो रही है– जगजीत सिंह / हिंदुस्तान / 27 अप्रैल 2002
[48] तेरी आवाज नज़र आती है / निदा फाजली / webdunia
[49] 8 फरवरी / पत्रिका न्यूज पेपर
[50] Ahemdabad/Dec.01/zeenews.india.com
[51] Kafal Tree – तुम इतना जो मुस्कुरा रहे हो / 8 फर. 2019

(क) जगजीत सिंह घराना –

जगजीत सिंह जी का नाम बेहद लोकप्रिय ग़ज़ल गायकों में शुमार है, उनका संगीत अत्यंत मधुर है, और इनकी आवाज संगीत के साथ खूबसूरती से घुल मिल जाती है।

खाली उर्दु जानने वालों की मिल्कियत समझी जाने वाली, नवाबों, रक्कासाओं की दुनिया में झनकनी और शायरों की महफिलों में वाह–वाह की दाद पर इतराती ग़ज़लों को आम–आदमी तक पहुँचाने का श्रेय अगर किसी को पहले पहल दिया जाना हो, तो जगजीत सिंह का ही नाम जुबां पर आता है, उनकी ग़ज़लों ने न सिर्फ उर्दु के कम जानकारों के बीच शेरों–शायरी की समझ में इज़ाफा किया बल्कि गालिब, मीर, मजाज़, जोश और फिराक जैसे शायरों से भी उनका परिचय कराया। देखा जाए तो जगजीत सिंह जी की गायिकी ने ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया, उनसे पहले जो गायक रहे जैसे बेगम अख़्तर, तलत महमूद, कुन्दनलाल सहगल, मेहदी हसन जो इस क्षेत्र के बादशाह कहलाते थे उन सभी से अलग हटकर जगजीत सिंह जी ने ग़ज़ल गायिकी को एक नया रूप दिया, उन्होंने ग़ज़ल गायिकी को साधारण लोगों तक पहुँचाया। जो व्यक्ति ग़ज़ल की समझ न रखता हो, वो भी ग़ज़ल क्या होती है समझने लगा, सुनने लगा यह जगजीत सिंह जी के द्वारा किये गये करिश्में की वजह से ही था। उनकी गायिकी सभी ग़ज़ल गायकों से भिन्न थी, उनकी गायिकी के आधार पर जगजीत सिंह घराना बनाया जाए तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।

(i) जगजीत सिंह घराने की विशेषताएँ –

1. साधारण शब्दों का प्रयोग– आमजन अनुरूप
2. शब्द व स्वरों का सच्चा लगाव
3. गायिकी में ठहराव, सफाई, गम्भीरता
4. मंद्र सप्तक के सा से तार सप्तक के गं तक बड़ी सफाई से जाना
5. आलाप, तानों का सीमित प्रयोग
6. शब्दों का उच्चारण स्पष्ट
7. आधुनिक व पाश्चात्य वाद्य यंत्रों का प्रयोग

(ii) जगजीत सिंह घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप –

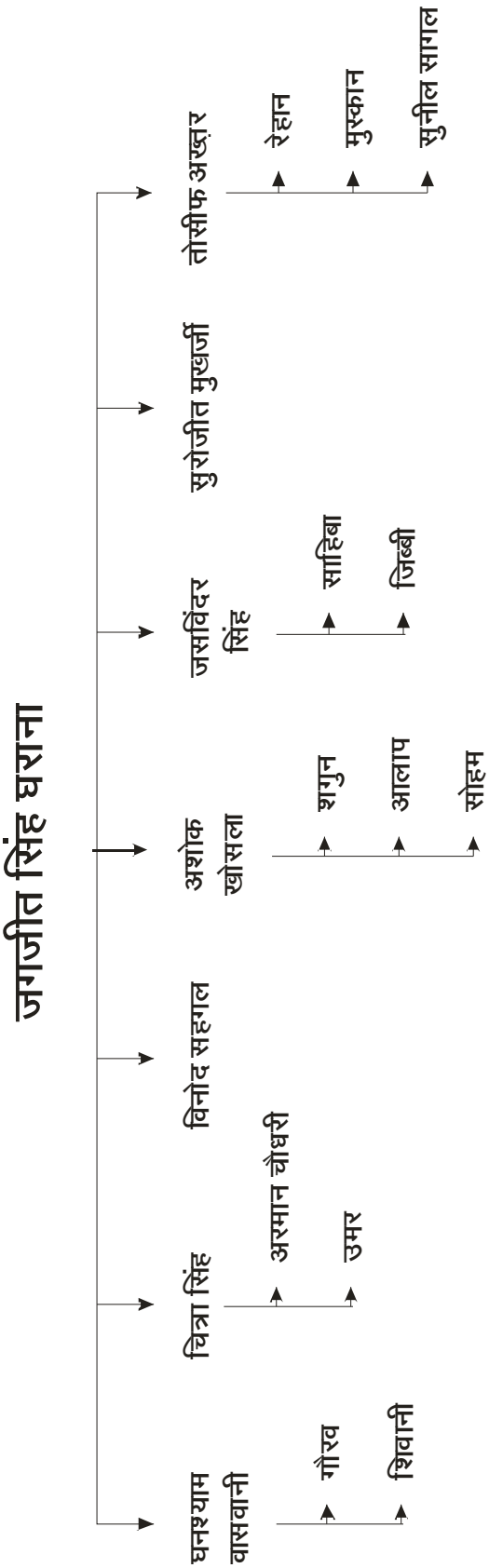

(iii) जगजीत सिंह के कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय –

घनश्याम वासवानी –

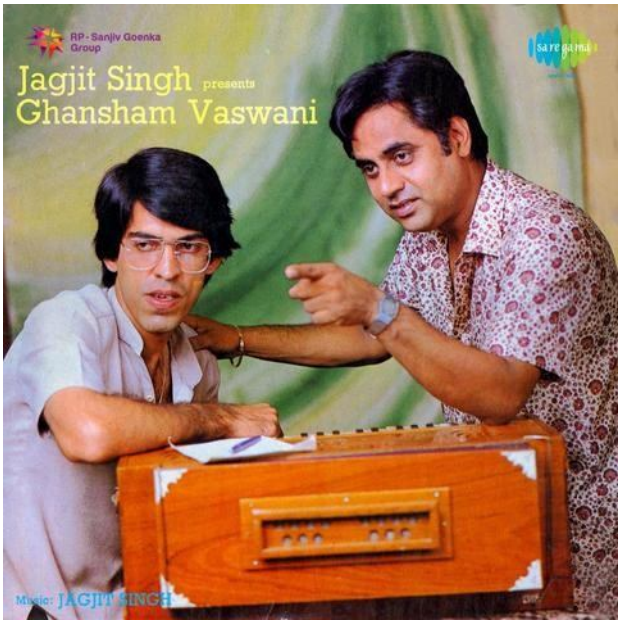

जगजीत सिंह अपने शिष्य घनश्याम वासवानी के साथ

"घनश्याम वासवानी का जन्म 24/8 /1954 को मुम्बई में हुआ, इनके पिता का नाम संतदास वासवानी था, वे भी जाने माने सिंधी गायक थे। घनश्याम वासवानी ने शुरूआती संगीत शिक्षा अपने पिता से ली। उसके बाद शास्त्रीय संगीत की तालीम उस्ताद अहमद खान व पंडित अजय पोहनकर से ली। उसके बाद घनश्याम वासवानी ने डॉ. सुशीला पोहनकर और पंडित राजाराम शुक्ला से भी सीखने का दौर जारी रखा। उसके बाद उनकी मुलाकात ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह जी से हुयी, उन्होंने इन्हें अपना शागिर्द बनाया, और ग़ज़ल गायिकी की बारीकियाँ सीखायी तथा Jugjit Singh Presents Ghansham Vaswani नाम से एक 10 Junary 2006 को Album भी रिलीज की। घनश्याम वासवानी ने B.Sc/ LLB/ D.M.M जैसी डिग्रीयाँ लेने के बाद में भी अपना भविष्य संगीत क्षेत्र में ही बनाया।

इनकी पत्नी श्रीमती मीनाश्री वासवानी भी एक गायिका है, बेटी भी उन्हीं के सानिध्य में सीखी ओर आगे चलकर इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाया।

घनश्याम वासवानी ने T.V. Serial में गाकर अपने Career की शुरूआती की थी, जैसे महफिलें/ आरोही/ ग़ज़ल के साये आदि। घनश्याम वासवानी जी ने कई हिन्दी फिल्मों में भी गाया है, जैसे सातवां आसमा/ अंकुश/ कालका आदि।

कई सिंधी फिल्मों में भी जैसे – 'हाल ट भाजी हालुन' साथ ही वे दुरदर्शन व आकाशवाणी के भी प्रसिद्ध व जाने–माने कलाकार रहे है, घनश्याम वासवानी को कई पुरूस्कारों से नवाजा गया है जैसे – गोल्ड मेडल – 1993 में जयपुर जस्टिस इंदर सेन इसरानी द्वारा तथा 1955 में प्रकाश भारद्वाज द्वारा।

वर्तमान में कई देश–विदेशों में अपने कार्यक्रम देते है साथ ही कुछ विद्यार्थियों को सीखाकर अपने गुरू की तालीम से आगे बढ़ा रहे है।"[52]

अशोक खोसला –

जगजीत सिंह अपने शिष्य अशोक खोसला के साथ

"अशोक खोसला भी एक जाने माने ग़ज़ल गायक हैं। ये भी जगजीत सिंह के शागिर्द, है। संगीत का शौक बचपन से ही था। धीरे–धीरे सीखना शुरू किया तो पंडित लक्ष्मीप्रसाद जयपुर वालों से सीखा। कुछ समय इनको किशोरी अमोडकर जी का सानिध्य भी प्राप्त हुआ, उनसे भी बहुत सीखा। फिर उनकी मुलाकात जगजीत सिंह साहब से हुई जिन्होंने उन्हें पहला मौका अपनी कैसेट् "Brightest Talent of the 80" में दिया, और उनके द्वारा गायी "अजनबी शहर के" 80 के दशक की पंसदीदा ग़ज़ल बन गयी। उसी के बाद से उनके संगीत सफर का दौर शुरू हो गया। उन्होंने ग़ज़लों के साथ–साथ कई भजन की भी Album बनायी है। उन्होंने

[52] The sindhu world /Ganshayam Vasvani Biography

हिंदी फिल्म अंकुश में "इतनी शक्ति हमें देना दाता" गाया वो भी बेहद लोकप्रिय रहा। इनकी पहली Solo album 1984 में 'तारूफ' नाम से Hit रही। प्रति वर्ष मुंबई में "ग़ज़ल बहार" नाम से एक कार्यक्रम करवाते हैं, जिसमें नये कलाकारों को गाने का मौका दिया जाता है।

ये संगीत के अलावा समाज सेवक के रूप में भी कार्य करते है। इन्होंने एक वृद्धाआश्रम खोला हैं जहाँ जाकर के ये उनके साथ समय बिताते हैं। 2014 में जो ग़ज़ल बहार कार्यक्रम से पैसा आया वो सब इन्होंने वृद्धाआश्रम में लगाया। वर्तमान में कई देश–विदेशों में कार्यक्रम दे रहे है। साथ ही अपने गुरू की तालीम को अपने कुछ चुंनिदा विद्यार्थियों को सीखाकर आगे बढ़ा रहे हैं।"[53]

तौसीफ़ अख्तर –

जगजीत सिंह अपने शिष्य तौसीफ़ अख्तर के साथ

"तौसीफ़ अख़्तर भी एक जाने माने ग़ज़ल गायक है। तौसीफ़ अख़्तर के पिता आजाद अख़्तर एक जाने माने शायर और कव्वाल रहे। तासीफ़ अख़्तर को संगीत विरासत में मिला। साथ ही उन्होंने विधिवत् संगीत की तालीम पंडित गोविद प्रसाद जयपुर वालों से ली। उसके बाद किराना घराने के दिलशाद खाँ से सीखा। जगजीत सिंह से वे बचपन से ही जुडे हुए थे। जगजीत सिंह ने एक बार तौसीफ़ अख़्तर के लिये कहा था कि "यह सुरीली आवाज़ किसी तारूफ की मोहताज नहीं है तोसीफ अख़्तर मेरे होनहार शागिर्दों में से एक है। उन्होंने अपने ग़ज़ल का सफर खुद तय किया है।"

[53] शख्सियत Interview / अशोक खोसला / राज्य सभा TV / 21 Sep 2014

जगजीत सिंह साहब से उन्होंने उर्दु की बारीकी व ग़ज़ल की बारीकियाँ सीखी। वास्तविक नाम परवेज अख़्तर था संगीत जगत में आने पर नाम बदलकर तौसीफ़ अख़्तर हुआ।

तौसीफ़ अख़्तर ने कई फिल्मों में अपनी आवाज दी। कुसुर/राज/धड़कन/तुम से अच्छा कौन है, आदि।

इन्होंने ग़ज़ल को अंतर्राष्ट्रीय लेवल पर लेकर गये 'ग़ज़ल' को विदेशों में भी सुनाया।

– 1991 में गुलशन कुमार जी के साथ 'आशियाना' अलबम में कुछ ग़ज़लें Compose भी की।

– नदीम श्रवण जी के साथ भी इन्होंने कई सालों तक कार्य किया।

लेकिन फिल्मी दुनिया को छोड़कर वापस ग़ज़ल के क्षेत्र में फिर से कदम रखा। 2011 में इनके द्वारा गाया गया ग़ज़ल की बहार का Titlle Song बेहद ही लोकप्रिय रहा। इनका बेटा रेहान भी इन्हीं की परम्परा को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है।

वर्तमान में भी तौसीफ अख़्तर का संगीत सफर जारी है साथ ही अपने गुरू जगजीत सिंह की गायिकी को अपने बेटे व विद्यार्थियों को सीखकर आगे बढ़ा रहे हैं।"[54]

जसविंदर सिंह –

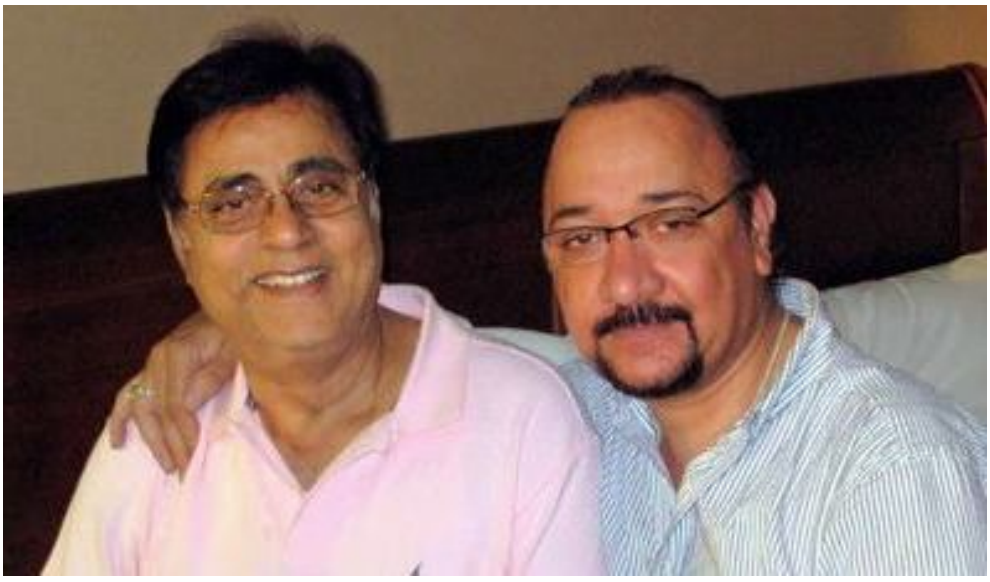

जगजीत सिंह अपने शिष्य जसविंदर सिंह के साथ

[54] शख्सियत Interview/तौसीफ अख़्तर/राज्य सभा TV/4 मई 2015

"जसविंद सिंह भी जगजीत सिंह के अजीज शागिर्दों में से एक है। जसविंदर सिंह ने शुरूआती संगीत शिक्षा अपने पिता से ली। उसके बाद गांधर्व महाविद्यालय से संगीत की विधिवत् शिक्षा ली, जब वे कॉलेज में थे। उनका रूझान ग़ज़ल की तरफ हुआ, फिर उनकी मुलाकात ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह से हुई। उन्होंने जसविंदर सिंह को अपना शागिर्द बनाया और ग़ज़ल की बारीकियाँ सिखायी और बतौर कम्पोजर इनके हुनर को निखारा और अपने साथ मंच भी साझा किया।

1998 में जगजीत सिंह जी ने इनकी एलबम "आगे–आगे देखिये" को HMV के द्वारा रिलीज करवाया। उसके बाद से उन्हें देश–विदेश में कई कार्यक्रम मिलने लगे।

2003 फरवरी में U.K. में उन्होंने जगजीत सिंह जी के साथ कार्यक्रम दिया। उन्होंने कई एलबम निकाली जैसे तमन्ना, अक्स, मेरी विनती सुनो है राम आदि। उन्हें संगम कला ग्रुप 'नई दिल्ली' के द्वारा अवार्ड भी दिया गया।

वर्तमान में वे न्यूर्याक में निवास कर रहे हैं। साथ ही अपनी नयी एलबम पर काम करने के साथ संगीत कार्यक्रम देश–विदेशों में कार्यक्रम देने का दौर जारी रखे हुए हैं।"[55]

विनोद सहगल –

जगजीत सिंह अपने शिष्य विनोद सहगल के साथ

[55] Inspiration master interview LLG / 19 oct. 2018

"विनोद सहगल भी जगजीत सिंह के शिष्यों में एक जाना–माना नाम है। सहगल का परिवार सरगोधा से सम्बन्धित है, जो वर्तमान पाकिस्तान का हिस्सा है। इनके पिता सोहन लाल सहगल भी अच्छे गायक रहे हैं, उन्होंने विनोद सहगल को सीखने के लिये प्रोत्साहित किया। विनोद सहगल कई शिक्षकों के पास शिक्षा लेने के लिये भटके, पारिवारिक हालात कमजोर होने के कारण विनोद सहगल ने कपड़े की दुकान पर भी कार्य किया। मास्टर अनिल की माता दुकान पर आयी, उन्होंने कहा गाना सुनाओ, तब विनोद सहगल ने रफ़ी साहब का "मेरे दुश्मन तू मेरी दोस्ती को तरसे" सुनाया, उनकी माँ बोली "तुम बम्बई आओ"। बहल ने उन्हें अपना असिस्टेंट कम्पोजर रखा, तभी वो गायकों को सिखाते थे कि गाने को कैसे गाना है, तभी उन्होंने खुद गाया। 1980 में सहगल की मुलाकात जगजीत सिंह जी से हुई। उन्होंने विनोद सहगल की फिल्म रावण का गाना रिकार्ड करने में मदद की। बाद में विनोद सहगल की खुद की एलबम रिलीज हुई जिसका शीर्षक था "Jagjit Singh Presents Vinod Sehgal" बाद में उन्होंने कई पंजाबी फिल्मों में गाया तथा माचिस फिल्म के बाद उन्हें Train To Pakisthan" में मौका मिला। उन्होंने कई फिल्मों में गाया, दिया जले सारी रात, सोने की जंजीर, भागमाटी एलबम में भी गाया, गुलजार, मिर्जा गालिब, मैं ग़ज़ल हूँ तथा स्वयं की एलबम भी "सावन" शीर्षक से रिलीज की।"[56]

[56] The Private Life of Vinod Sehgal / Open Magzine / 30/Oct/2010

(iv) जगजीत सिंह के शिष्यों से संबंधित कुछ पत्र–पत्रिकाओं की प्रति –

स्मृति-शेष

तुमको देखा तो ये खयाल आया

जसविंदर सिंह

सन् 2006 के आसपास की बात है। मेरे पास जगजीत जी का फोन आया कि मैं तुरंत लंदन आ जाऊं। मैं उस समय अपने घर न्यूयॉर्क में था। दरअसल, बात यह थी कि अपने शो के सिलसिले में जगजीत जी लंदन आए हुए थे और यहां आकर उनका गला खराब हो गया था। उन्होंने मुझसे कहा कि मेरा गला खराब है, तुम यहां आ जाओ। मैं तुम्हें प्रमोट करूंगा। मैं जब पिछले दिनों मैं जब मुंबई आया तो मुझे उनकी कमी बहुत खली। उस समय मुझे उनकी गाई गजल 'आज फिर आपकी कमी-सी है' याद आ रही थी। जिस इनसान ने गालिब को फिर से जिंदा कर दिया हो, वह मर नहीं सकता।

उनकी जिंदादिली भी गजब की थी। एक बार बफलो में उनका शो था। हम जब गाड़ी में उन्हें छोड़ने एयरपोर्ट जा रहे थे तो एकाएक उन्होंने रास्ते में अपने टिकट फाड़ दिए। वे बोले अब हम गाड़ी में ही मजे से बातें करते हुए जाएंगे। मैंने उनसे कहा कि मेरे पास तो कपड़े भी नहीं हैं, तो वे बोले रास्ते में खरीद लेंगे। और इस तरह

उनके बुलावे पर वहां गया तो उन्होंने मुझे पांच हजार श्रोताओं के सामने गाने का मौका दिया। यही नहीं, उन्होंने मेरी एल्बम 'तमन्ना' को भी प्रमोट किया। मेरे लिए यह फख्र की बात है कि उन्होंने अपने इतने सारे शागिर्दों में से मुझे याद किया। उसके बाद उन्होंने जितने भी शो किए, उन सभी में मुझे अवसर दिया। यूएस में जब भी उनके शो होते, वे मेरे परिवार से मिलने जरूर आते और शो में मुझे जरूर मौका देते। मुझे आज भी याद है कि 9/11 की दुर्घटना के बाद उन्होंने पहले दिन ही फोन करके मेरे हालचाल पूछे। वे सही मायनो में 'डाउन टू अर्थ' आर्टिस्ट थे। मैं उस शो में उनके साथ पहुंचा। इसी तरह कुछ साल पहले न्यूजर्सी में एक शो था। उन्होंने मुझे स्टेज पर बुलाया। म्यूजिक के साथ ही गाना शुरू हो गया–'तुमको देखा तो ये खयाल आया'। जब मैंने इसका दूसरा अंतरा गाना शुरू किया तो जगजीत जी ने मुझे टोक दिया और खुद ही गाना शुरू कर दिया–'हम चले जाएंगे तो सोचोगे, तुमने क्या खोया (श्रोताओं की तरफ इशारा करके) और तुमने क्या पाया (मेरी तरफ इशारा करके)।' यह मुझे आज महसूस होता है कि हमने क्या खोया है।

(लेखक जगजीत सिंह के शागिर्द और न्यूयॉर्क में गजल गायक हैं)

को मेरे बारे में पता चला। अपने संगीत निर्देशन में जगजीत जी ने मुझसे काफी गवाया। 'लांग दा लश्कारा', 'दीवा बले सारी रात' (पंजाबी फिल्म) में मैंने गाया। हिंदी फिल्मों 'कालका', 'राही', 'आज', 'निर्वाण' में भी गाया।

उन्होंने कभी भी दूसरे आर्टिस्ट का कॉनफिडेंस नीचे नहीं होने दिया। उनकी खासियत थी कि वे कभी ऐसा होने ही नहीं देते थे। जिस वक्त मेरा फिल्म 'रावण' का गीत रिकॉर्ड हो रहा था, रिहर्सल के दौरान मेरे चेहरे पर परेशानी देखकर वे बोले, 'परेशान क्यों हो?' तो मैंने कहा, 'अगर मैं यह गाना अच्छा न गा पाया तो?' इस पर वे कहने लगे, 'तुम यह गाना आज नहीं गाओगे तो कल भी तुम्हीं गाओगे और परसों भी तुम्हीं गाओगे।' इस बात ने मुझे बड़ी हिम्मत दी। और शायद इसीलिए गाना पहली बार में ही 'ओके' हो गया।

एक जगजीत के घर कुछ नए हारमोनियम आए थे, वे मुझसे पूछने लगे, 'तुम्हें बाजा चाहिए'। मैंने कहा, 'हां, बिल्कुल चाहिए।' इस पर वे बोले, 'साढ़े तीन हजार रुपये का है।' तब मैंने कहा, 'मेरे पास तो पंद्रह-सौलह सौ रुपये हैं और मुझे रोटी भी खानी है।' जब हम उठकर जाने लगे तो वे मुझसे बोले, 'स्टूडियो में पहुंच जाना।' मैं दूसरे दिन 10 बजे स्टूडियो पहुंच गया। वहां वे मुझसे दिन भर एडवरटाइजमेंट के गाने गवाते रहे और शाम को जब प्रोड्यूसर ने पेमेंट की, जो साढ़े तीन हजार रुपये थी, तब उन्होंने मुझसे कहा कि यह पैसे मुझे दे दो और कल बाजा ले जाना। इसका मकसद यह था कि आर्टिस्ट का कॉनफिडेंस कमजोर न हो। वे चाहते तो मुझे कितने ही बाजे दिलवा देते। वे आर्टिस्ट से ही काम करवाकर यह दिखाना चाहते थे कि उसमें हीन भावना न आए।

इस सबके अलावा सन् 1985 में वे मुझे अपने साथ अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड लेकर गए और पब्लिक के सामने अपनी स्टेज से मुझे चांस दिया। मैं उनकी सोहबत में 23 साल रहा, उस सारे दौर का बताने को तो बहुत कुछ है।

जब उनके बेटे की मृत्यु हुई, तब मैं हरियाणा में था। कुछ दिन बाद जब मैं उनके घर अफसोस प्रकट करने के लिए गया तो उन्होंने ध्यान डायवर्ट करने के लिए तानपूरा उठाया और रियाज करने लगे। वे ॐ का उच्चारण कर रहे थे। बेटे की मौत ने उन्हें भीतर से हिला दिया था। इस सदमे से बचने के लिए उन्होंने अपने आपको संगीत में डुबो दिया था। मेरा मानना है कि वे भले ही शारीरिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन संगीत के रूप में दुनिया में हमेशा मौजूद रहेंगे।

(लेखक जगजीत सिंह के शिष्य और मशहूर गजल गायक हैं)

जगजीत सिंह के शिष्य जसविंदर सिंह

" INDIAN EXPRESS " BOMBAY 8/11/86

GHANSHAM VASWANI: Gifted with a melodious voice and adequate training under Jagjit and Chitra.

New voice on the ghazal scene

YOUNG Ghansham Vaswani provides one more example to prove that science and music can blend together. The 32-year-old science graduate followed up his career as an LL.B. and then by becoming a diploma-holder in marketing management. In fact, he had a promising business career in textiles before he ended up as a *ghazal* artiste of fame.

Perhaps the background influence of a father who was himself a reputed musician of Sindhi *Kalam* played a key role in the decision. But then while the father was a senior Government official, it must have been a difficult choice for him to allow his son to abandon a good business and chart into the world of music.

The turning point perhaps came with Gansham's participation in a music competition at the Government Law College where Jagjit Singh, the reputed maestro of *ghazals* was one of the judges. It was Jagjit who spotted the dormant genius of Ghansham. Thereafter, he had first a stint at All India Radio, then participated in the Arohi programme of Doordarshan and of course accompanied Jagjit and Chitra whenever they had their concerts.

Where all has he had his initial training? Apart from the family influence, his learning took place for about five years under the reputed Ghulam Mustafa Khan and his brother, Aftab Ahmed Khan, to whom he was introduced by A. Hariharan. As regards his training in the field of *ghazal*, there could have been no better *gurus* than the Jagjit-Chitra couple.

Then two more triumphs came his way. One was his participation in Sur Singar programme in which he gave a rendering of the famous song of Manna Dey, sung in a classical vein which thrilled both the audience and the panel of judges which included such celebrities as Jaidev, Ravindra Jain and Hari Prasad Chaurasia. A first prize in such an event was no mean achievement.

Then came his entry in the film world when his song *Ae Mere Dil* was recorded which must have been quite a thrilling experience for a youngster making his debut in this new line. No wonder that with the gift of a melodious voice and adequate training, he has now become a much sought-after musician in his own right.

His next triumph came when his mentor Jagjit Singh released a record in which he had grouped five budding artistes. The list included names like Ashok Khosla, Vinod Sehgal, Seema Sharma and of course Ghansham himself who was allotted two *ghazals* in the same cassette. This then was the thin edge of the wedge and with the introduction and backing of Jagjit, there could thereafter be no looking back for Ghansham.

One song in particular gave him added prominence and recognition by way of an award, to say nothing of a citation. This was *Uske Dushman Hain Bahut Admi Achha Hoga* which met with instant success and was adjudged the best at an Indo-Pakistan-Emirate Film Festival held in Dubai.

Then came the release of a cassette entitled: 'Jagjit presents Ghansham Vaswani'. Here the musical score was composed by Jagjit himself and the lyrics provided by poets like Nida Fazli, Ibrahim Ashonk, Krishan Adeeb, Saeed Shahib and Kamladdin Kamal Siddiqui. The cassette consists of eight songs and has been produced by EMI.

Uske Dushman... has been rendered with so much feeling and has such a charm about it that even if you are not a singer, you will keep humming the tune again and again. For that matter, *Mil Mil ke Biccharne ka Maza Kyon Nahin Dete* as impresses.

Art cannot possibly thrive on empty and airy nothings even when musicians like Ghansham like to be idealistic and would continue to perform ardently in the distant hope of reaping rewards. Ghansham regrets that HMV dropped him out of a promotional programme of *ghazals* entitled *Jashne Ghazal*, while many others were invited.

What are Ghansham's future aspirations? It is now certain that with his distinctive voice and adequate training, he has a bright future ahead of him. Already he has lent his voice to a number of films like *Banda Nawaz, Ek Mausam Chhota Sa, Ae Mere Dil, Ek Naya Itihas*, to say nothing of a Sindhi film *Hal Ta Bhaji Haloon* (literally, 'let's run away').

R. T. Shahani

जगजीत सिंह के शिष्य घनश्याम वासवानी

षष्टम् अध्याय

उपसंहार

षष्टम् अध्याय

"उपसंहार"

मानव भावनाओं की सुंदरतम अभिव्यक्ति का साकार रूप ही कला है, जब मानव अपने किसी गुण की अभिव्यक्ति सुंदर व आकर्षक ढंग से कर लेता हैं तो उसके उस गुण की अभिव्यक्ति ही कला का रूप ले लेती है। मनुष्य का जीवन कला के अधीन है। कला के बिना मनुष्य रूपी जीवन की कल्पना अधुरी है। कला के कई रूप है, जैसे चित्रकला, संगीत कला, काव्य कला, वास्तुकला, मूर्तिकला आदि। इन्हीं सभी कलाओं में संगीत कला को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

संगीत कला में लौकिक, आलौकिक, भौतिक, आध्यात्मिक सभी आनंद प्राप्त होते है, संगीत कला किसी भी प्राणी के ह्रदय पर सीधा प्रभाव करती है, संगीत के बिना कोई भी व्यक्ति जिवित नहीं रह सकता है। संगीत मानव की एक कलात्मक उपलब्धि है, यह लयकारी सांस्कृतिक परम्पराओं का एक मूर्तिमान प्रतीक है, और भावना की उत्कृष्ट त्रुटि है। अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप देने का माध्यम है। संगीत मानव, सृष्टि, प्रकृति के रोम–रोम एवं कण–कण में व्याप्त है। संगीत अखंड, असिमित व अंनत है। संगीत अन्तर्आत्मा की बाह्रय अभिव्यक्ति है। मन में सुप्त भावनाओं का साकार रूप ही कला है।

संगीत स्वर, लय, ताल का ऐसा संगम है, जिसमें पशु–पक्षी, मानव–देवता जड़–चेतन सभी बंध जाते है। संगीत भी लोगों की रूचि व देश, काल, परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है, परिवर्तन संसार का नियम है।

लेकिन सृष्टि के प्रारम्भ से ही संगीत विद्यमान है, चाहे वह किसी भी रूप में हो वेदों, पुराणों, ग्रंथों में भी संगीत का वर्णन है। सभी काल में संगीत का रूप वहाँ की जनरूचि, काल, परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तित रहा और यह प्रक्रिया निरतंर कार्यरत है। संगीत कला को भी चार भागों में बाँटा गया है,

शास्त्रीय संगीत – नियमबद्ध व राग में बंधा होता है – जैसे ध्रुपद

उपशास्त्रीय संगीत– जिसमें न तो शास्त्र की कड़ी नियमबद्धता है और न ही लोक संगीत की जैसे अत्याधिक सरलता है। जैसे ठुमरी, दादरा, सादरा, टप्पा आदि।

लोक संगीत – ऐसा संगीत जिसमें शास्त्र का बंधन नहीं है। जो जनसाधारण के द्वारा जनसाधारण के लिए बनाया गया है।

सुगम संगीत – जिसे भावगीत या लाईट म्युजिक भी कहा जाता है। संगीत की ऐसी विधा है, जिसकी न कोई भाषा हैं न किसी श्रेय विशेष से संबंध है और ना ही शास्त्रीय संगीत की तरह शास्त्रगत बंधन है, यह ऐसा संगीत प्रकार है जिसे जन मानस द्वारा आसानी से ग्रहण किया जा सकता है जैसे भजन, कव्वाली, ग़ज़ल, फिल्मी संगीत आदि।

इसी सुगम संगीत की विधा का प्रकार है 'ग़ज़ल' जिसे वर्तमान में काफी पंसद किया जा रहा है, हिंदुस्तानी संगीत की विधाओं में यू तो ग़ज़ल गायन को सुगम संगीत के अन्तर्गत माना जाता है। परंतु इसे गाने के लिए शास्त्रीय संगीत का ज्ञान होना परम् आवश्यक है, इसके अलावा सधी हुई गम्भीर आवाज, भाव पक्ष, अदायगी आदि का होना भी अति आवश्यक है, ग़ज़ल को एक उपशास्त्रीय संगीत विधा कहना उचित होगा।

ग़ज़ल निःसंदेह एक आयतित विधा हैं लेकिन वर्तमान में इसकी बढ़ती लोकप्रियता को देखकर यह कहना गलत न होगा कि ग़ज़ल का उद्‌भव व विकास हिंदुस्तान की धरती पर ही हुआ है।

भारतीय श्रोता इस संगीत विधा के मुरीद हो गए हैं। उन्हें इसकी क्लिष्ट उर्दु भाषा को समझने में भी कोई तकलीफ नहीं है। ग़ज़ल गायकी का जन्म ईरान में हुआ, लेकिन भारतीय संस्कृति ने इसे अपनाकर अपनी संस्कृति का हिस्सा बना लिया। निःसंदेह ग़ज़ल ने दो संस्कृतियों को जोड़ने का काम किया है।

ग़ज़ल गायकी के लिए यह कहा जा सकता है कि यह गायिकी का वह प्रकार हैं जिसने यह साबित कर दिया कि संगीत ईश्वरीय रूप है। यह किसी भी राष्ट्र, काल, सीमा में बंधा हुआ नहीं है।

यह स्वच्छंद गायकी हैं। जो निर्बाध रूप से बह रही हैं, तथा लोग इसे पंसद कर रहे है, सुन रहे है, सीख रहे है। किसी भी कला को सीखना अतिआवश्यक हैं। कला उसके सही रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक गुरू–शिष्य परम्परा द्वारा ही पहुँचती है। संगीत कला तथा ग़ज़ल गायन कला इस सिद्धान्त पर ही अविलम्बित है, और खास तौर पर संगीत कला तो आज भी गुरू शिष्य परम्परा पर ही आधारित हैं यद्यपि शिक्षा का प्रयोजन ही योग्य गुरू के द्वारा शिष्य की चिंतन शक्ति में विकास किया जाना है।

घराना या समुदाय गुरू शिष्य के संयोग से बनता है। गुरू शिष्य परम्परा शास्त्र तथा कला दोनों के लिये आवश्यक मानी गई है। घराना रीति या शैली का ही दूसरा नाम है, जिसे संगीत में घराना कहते हैं। उसे ही दक्षिण में सम्प्रदाय व पाश्चात्य देशों में स्कूल्स कहते है। प्राचीन काल में भी संगीत में शिवमत बहुमत, भरतमत, सोमेश्वर मत जैसे विभिन्न समुदाय थे। वहीं मराठी में 'रूढी' कहते है।

जब कोई गायक व कलाकार अपनी कला में एक चीज पर अधिकार कर लेता हैं तथा वह यह चीज अपने पुत्र या योग्य शिष्य को सिखाता हैं तभी घराने का जन्म होता है। घराने को सफलतापूर्वक चलाने के लिए शिष्य में भी अनुकरणीयता का गुण आवश्यक है।

एक योग्य गुरू व प्रतिभाशाली शिष्य के होने पर ही सम्प्रदाय या घराने का जन्म होता है। यदि हमारी संगीत परम्परा में घराने न होते तो हमारे संगीत की पैतृक संपति सुरक्षित न रहती। यहीं कारण हैं कि संगीत की हर विधा में घराने हैं चाहे गायन हो, वादन हो, नृत्य सभी में घराने देखने को मिलते है। गायन में ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी आदि के घराने मौजूद है।

जब भी हम किसी गायक को सुनते हैं, तो उसकी गायकी की कुछ खास गायन विशेषताओं से ही पहचान जाते हैं कि यह अमुख घराने से संबंधित है या अमुख घराने की गायिकी इसके गायन में नज़र आ रही है। कुछ विशेषताएँ गुरू अपने शिष्यों को सिखाकर घराने का निर्माण करता हैं और अपनी गायन परम्परा को सुरक्षित रखते हुए पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानान्तरित करने का कार्य करता है।

जब मैंने पाया कि संगीत की हर विधा में घराने हैं जैसे ख्याल, घराना, ठुमरी घराना, ध्रुपद घराना। वहीं मेरा ध्यान ग़ज़ल गायिकी की ओर गया। यदि यह गायकी वर्तमान में इतनी लोकप्रिय हैं तो इसमें घराने क्यों नहीं बनाये जा सकते? क्या इस गायन परम्परा को सुरक्षित रखना आवश्यक नहीं है? इसकी समस्या को लेकर "ग़ज़ल के प्रमुख घराने" नामक शीर्षक को लेकर शोध के द्वारा, विभिन्न सहायक साम्रगियों की सहायता लेते हुए इस काल्पनिक समस्या का समाधान अपने शोध के द्वारा करने की कोशिश है।

प्रस्तुत शोध ग्रंथ को छः अध्याय में विभाजित कर ग़ज़ल को समझते हुए व इस गायकी के क्षेत्र में जो प्रमुख गायक व गायिकाएँ हुयी, जिन्हें लोग सुनते पंसद करते हैं जो ग़ज़ल गायकी के आधार या नींव है। उनके जीवन से जुड़े सभी तथ्यों को, उनकी गायकी की विशेषताओं को अन्य गायकों की गायकी से अलग कर तथा उनकी गायन परम्परा का निर्वाह किन शिष्यों के द्वारा किया जा रहा है। यह सभी प्रस्तुत शोध में वर्णित करने का प्रयास किया है।

प्रथम अध्याय –

"ग़ज़ल की उत्पत्ति व विकास" शीर्षक अध्याय में निष्कर्ष के तौर पर यह पाया कि ग़ज़ल का अर्थ हुस्न, इश्क और जवानी का हाल बयान करने वाली काव्य विधा है। साथ ही ग़ज़ल एक काव्यात्मक, संगीतात्मक अभिव्यक्ति है। ग़ज़ल के संबंध में विभिन्न विद्धानों द्वारा दी परिभाषा के तौर पर यह पाया कि ग़ज़ल के भिन्न आयाम है, सभी के समझने का तरीका अलग है, ग़ज़ल एक विस्तृत विषय है। कोई ग़ज़ल को महबूब से बात करना बताता है, तो कोई इसे आलौकिक प्रेम से जोड़ता है।

ग़ज़ल की उत्पत्ति के संबंध में महत्वपूर्ण रूप से यह तथ्य समाने आया कि मूलतः ग़ज़ल अरब में जन्मी लेकिन ईरान से होती हुयी भारत आयी। आगे निष्कर्ष के तौर पर सामने आया कि ग़ज़ल को भारत में प्रचारित प्रसारित करने का श्रेय सूंफी संत निजामुद्दीन औलिया और अमीर खुसरो को रहा है। ग़ज़ल का स्वतंत्रता पूर्व स्वरूप मिला जिसमें ग़ज़ल का प्रचार दरबारों तक ही सीमित था। आमजन से बहुत दूर थी। धीरे–धीरे यह अश्लीलता की सीमाओं को पार कर कोठों पर तवायफों के द्वारा गायी जाने लगी। जिससे वे अपना जीवन निर्वाह करती थी।

ग़ज़ल एक आजिविका का प्रमुख स्त्रोत भी रहा। स्वतंत्रोत्तर ग़ज़ल गायिकी के स्वरूप में भी बहुत अंतर पाया गया जैसे गायन में, काव्य में, अदायगी में, रागों में, तालों में व प्रस्तुतीकरण आदि में, अब ग़ज़ल फिल्मों में आयी उसके बाद इसके स्वतंत्र गायक हुये जिन्होंने स्वयं की गायिकी के द्वारा इस क्षेत्र में अपनी एक अलग पहुँचाने बनाते हुए, ग़ज़ल गायिकी का क्षेत्र विस्तृत किया जैसे बेगम अख्तर, मेहदी हसन, जगजीत सिंह, आदि।

मुख्य बात निष्कर्षत तौर पर यह सामने आयी कि ग़ज़ल को सुगम संगीत की श्रेणी में रखा जाता है। लेकिन यह देखा जाए तो उपशास्त्रीय विधा है क्योंकि इसमें लयों का प्रयोग होता है, बिना राग के कोई ग़ज़ल नहीं बन सकती और निष्कर्षतः यह बात सामने आई की ग़ज़ल गायिकी को भली–भांति समझने के लिये इसके सरंचनात्मक तत्वों का अर्थ समझना अति आवश्यक है।

द्वितीय अध्याय –

गायिकी को लेकर भारत हमेशा से ही धनी रहा है, यहाँ कई ऐसे कलाकार हुए, जिन्होंने कला को अलग–अलग रंग दिया। ऐसी ही एक गायिका थी पद्मश्री और पद्मभूषण

अवार्ड से सम्मानित "मल्लिका–ए–ग़ज़ल" अख़्तर जिनकी आवाज़ आज भी कानों में रस घोलती है।

"बेगम अख्तर घराना" शीर्षक में निष्कर्ष स्वरूप बेगम अख्तर "मल्लिका–ए–ग़ज़ल" के व्यक्तित्व व कृतित्व को बहुत स्पष्ट रूप से जानने में सफल रही है। बेगम अख्तर का जन्म 1914 में फैज़ाबाद नामक स्थान (उत्तर प्रदेश) में हुआ। संगीत शिक्षा शुरूआत में पटना घराने के प्रसिद्ध सांरगी वादक इमदाद खाँ से हुयी कालान्तर में पटियाला घराने के उस्ताद अता मोहम्मद खां की शागिर्दा हुयी और अंत में झण्डे खाँ की शार्गिदा रही। बेगम अख्तर ने कई फिल्मों में भी गाया और अभिनय भी किया फिर चकाचौंध की दुनिया से निकलकर ग़ज़ल क्षेत्र में कदम रखा। फिर इश्तियाक अहमद अठबासी की बेगम बनकर अख्तरी बाई से बेगम अख्तर कहलायी। शादी के कई सालों बाद फिर से गायन प्रारम्भ किया और अंतिम सांस तक गाती रही, भारत सरकार के द्वारा भी कई पुरूस्कार दिये गये। इन्हीं सभी तथ्यों की जानकारी करते हुए इस अध्याय में आगे बढ़ने पर बेगम अख़्तर जी की गायिकी पर ध्यान दिया उनकी गायिकी में ऐसी खास बाते हैं जो उन्हें अन्य ग़ज़ल गायकों से अलग बनाती है, उच्चारण की स्पष्टता का अभाव अधिकतर अप्रचलित रागों का प्रयोग करती थी, ग़ज़ल गायन में ठुमरी, टप्पा, दादरा आदि गायन शैलियों का प्रभाव स्पष्ट झलकता था। एक विशेष बात इस अध्याय में निष्कर्ष के तौर पर सामने आयी कि इनकी गायिकी की भिन्नता के आधार पर बेगम अख्तर घराना बनाया जा सकता है।

शोध करने पर पता लगा उनके बहुत से विद्यार्थी हैं जो वर्तमान में उनकी गायिकी का अनुसरण कर रहे है। जैसे पद्म श्री शांति हीरानंद, रीता गांगुली, रेखा सूर्या आदि जब हम उन्हें सुनते हैं तो बेगम अख्तर की गायिकी नज़र आती है।

रेखा सूर्या जी से जब व्यक्तिगत रूप से मिली और उन्हें सुना तो यह बात और स्पष्ट हो गयी। बेगम अख्तर जी के प्रमुख शिष्यों में से कुछ का परिचय शोधग्रंथ में वर्णित किया है जो वर्तमान में उनकी गायिकी का अनुसारण कर आगे बढ़ा रहे हैं तथा बेगम अख्तर के घराने को शिष्यों के द्वारा ही एक श्रृखंलाबद्ध रूप दे पायी।

तृतीय अध्याय –

"मेंहदी हसन घराना" शीर्षक अध्याय में निष्कर्षत स्वरूप यह पाया कि ऐसी कौनसी बात है। इस शख्सियत की गायिकी में जो देश–विदेश में 'ग़ज़ल के शहनशाह' कहलाये। मेंहदी हसन की गायिकी के तरीके को जानने से पहले उनके जीवन से जुड़ी कुछ बातों का अध्ययन किया ताकि उनके व्यक्तित्व की पूरी जानकारी प्राप्त कर सकूं जैसे– मेंहदी हसन का जन्म सन्

1933 में राजस्थान के गाँव लूणा (झुझुनु) में हुआ। भारत–पाकिस्तान विभाजन के समय यह पाकिस्तान जाकर बस गये। वहाँ काफी संघर्षपूर्ण जीवन जिया। लेकिन फिर भी अपने संगीत का सफ़र जारी रखा। संगीत की शिक्षा पिता से ही मिली, यह सेनिया घराने के 16 वीं पीढ़ी के कलावंत थे, इनकी ग़ज़ल "रंजिश ही सही दिल दुखाने के लिए आए है" विश्व प्रसिद्ध ग़ज़ल है। यह उनकी singnature ग़ज़ल बन गयी।

साथ ही मेंहदी हसन को पहलवानी का भी शौक था। इन सभी जानकारियों को ज्ञात कर मैंने इनकी गायिकी का अध्ययन किया तथा पाया कि मेंहदी हसन साहब कि गायिकी की कुछ विशेषताऐं हैं जो अन्य ग़ज़ल गायक में नहीं है। जैसे – ग़ज़ल के मतले व शे'र का प्रयोग कम, मिसरे के किसी खास शब्द को लेकर आलाप करना, ठेके का मूल रूप इस्तेमाल, रागों पर आधारित गायिकी आदि।

इनके कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय मिला जो मेंहदी हसन साहब की गायिकी को जिवित रखे है। वर्तमान में उसका प्रचार–प्रसार, देश–विदेश, शिष्यों व अपने परिवार के मध्य कर रहे है। शिष्यों के परिचय से ही मेंहदी हसन घराने को श्रृंखलाबद्ध रूप दे पायी। तथा गुरू–शिष्यों की कुछ फोये व पत्र–पत्रिकाओं की प्रति भी सम्मिलित की।

चतुर्थ अध्याय –

'गुलाम अली घराना' शीर्षक अध्याय में निष्कर्षत स्वरूप में पाया कि गुलाम अली जो "वर्तमान ग़ज़ल गायिकी का नया दौर" के नाम से जाने जाते है। इसके पीछे क्या कारण रहे होंगे।

"हंगामा है क्यों बरपा" गाने वाले इस गायक की गायिकी में वह क्या बात है जिसने संपूर्ण विश्व में हंगामा कर दिया, इन सभी बातों का उत्तर प्राप्त करने के लिए कई जानकारियों को इकट्ठा किया संगीत की इस प्रतिभा को यह मुकाम पाने के लिए किन–किन संघर्ष कालों से गुजरना पढ़ा, क्योंकि कोई भी कलाकार बिना संघर्ष के कलाकार नहीं बनता। गुलाम अली के साथ भी यही हुआ गुलाम अली साहब का जन्म सियालकोट (पंजाब प्रांत) में हुआ। पिता दौलत अली व दादा नवाजुद्दीन भी इस क्षेत्र से संबंधित थे शुरूआती संगीत शिक्षा परिवार में ही मिली।

लेकिन पिता पटियाला घराने के उस्ताद बड़े गुलाम अली खां से बेहद प्रभावित थे, उन्हीं के नाम से प्रभावित होकर इनका नाम गुलाम अली रखा गया। पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं होने पर पिता ने इनके सिखाने का सफर जारी रखा। इसलिए बेटे को लाहौर भेज दिया,

वह अपने बेटे को एक ऐसी आवाज बनता देखना चाहते थे। जिसे कोई भी सुने तो यह कहे यह गुलाम अली गा रहा है। और उनका यह सपना ऊपर वाले की रहम से सच हुआ।

गुलाम अली के संघर्षों की कहानी को जानने के बाद उनकी गायिकी ने वर्तमान ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में क्या परिवर्तन किए। इसकी और ध्यान आकर्षित किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया कि उनकी गायकी के द्वारा उन्होंने पुरानी ग़ज़ल गायिकी को जो अब तक गंभीर व शांत गायिकी मानी जाती रही है को उस आइने से निकल कर चंचल प्रकृति की गायिकी में तब्दील किया जो ग़ज़ल के श्रेत्र में बहुत बड़ा परिवर्तन था।

उनकी गायिकी की एक अनोखी बात यह भी हैं कि वे एक ही शब्द को कई तरह से प्रस्तुत करने में समर्थ थे, जैसे– उनकी गायी ग़ज़ल "दिल में इक लहर सी उठी है" उसमें लहर शब्द को उन्होंने इतने तरह से प्रस्तुत किया हैं शायद अन्य कोई नहीं कर सकता। उनकी अदायगी का तरीका सबसे जुदा है।

उनकी गायिकी में लोच व स्वरों में रफ्तार है, उच्चारण में पंजाबी लहजा प्रदर्शित होता है, उनकी गायिकी का अंदाज निराला है। इस अध्याय में मुख्यतः निष्कर्ष स्वरूप यह बात समाने आयी की गुलाम अली जी ने ग़ज़ल गायिकी जो कि अब तक एक शांत गंभीर प्रकृति की गायिकी मानी जाती रही है, उसे एक चंचल व चपल प्रकृति की गायिकी में तब्दील कर ग़ज़ल की परम्परागत शैली में बदलाव किया। आगे उनकी गायिकी की विशेषताओं का अध्ययन किया तथा उनके प्रमुख शिष्यों का पता लगाया जो वर्तमान में उनकी गायिकी के अनुकरणकर्ता है तथा उनकी गायिकी को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है। इन्हीं शिष्यों के समूह से गुलाम अली घराने को श्रृंखलाबद्ध रूप देने में समर्थ रही। साथ ही गुरू–शिष्यों की कुछ फोये व पत्र–पत्रिकाओं की प्रति भी सम्मिलित की।

पंचम अध्याय –

"जगजीत सिंह घराना" शीर्षक अध्याय में निष्कर्ष स्वरूप पाया कि 'गजल सम्राट' कहे जाने वाले जगजीत सिंह ने ऐसा क्या काम किया जो इतने से ही वर्षों में 'ग़ज़ल सम्राट' कहलाये और यकीनन जब इस शख्सियत को नजदीक से जानने का प्रयत्न किया तो आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। इस शख्यिसत ने इतने से ही वर्षों में ऐसा काम कर दिखाया जो न कभी कोई करा है और ना ही कर पाएगा। क्योंकि ग़ज़ल सम्राट एक ही है और वह है जगजीत सिंह।

इस अध्याय में मुख्यतः निष्कर्ष स्वरूप पाया कि जगजीत सिंह ने ग़ज़ल गायिकी के वर्तमान दौर में एक क्रांतिकारी परिवर्तन किए। उन्होंने ग़ज़ल की क्लिष्ट भाषा को सरल कर आमजन की भाषा में गाया जिससे ग़ज़ल गायिकी के श्रोताओं की संख्या बढ़ी। उनकी गायिकी के विषय ईश्वर व प्रेम से हटकर रोजमर्रा के विषय भी रहे जैसे – बचपन, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक सभी तरह के विषयों से संबंधित उन्होंने ग़ज़ल गायी।

उन पर कई ईलजाम भी लगे कि वे ग़ज़ल के परम्परागत स्वरूप के साथ छेड़छाड़ कर रहे हैं लेकिन आप की अदालत में हुए उनके साक्षात्कार में उन्होंने स्वयं इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि सिर्फ प्रस्तुतीकरण का तरीका बदल दिया है। उन्होंने कहा कि उन्होंने ग़ज़ल के ढ़ाचे के साथ छेड़छाड़ नहीं की है।

उनके आम आदमी से ग़ज़ल सम्राट बनने तक का सफर संघर्षों से परिपूर्ण था। राजस्थान के मध्यमवर्गी परिवार गंगानगर में जन्म लेकर, पिता की इच्छा के विरूद्ध इस क्षेत्र को चुना और बम्बई आ गये, बम्बई में फुटपाथ पर सोये, कई विज्ञापनों में गाया, आर्थिक तंगी देखी लेकिन वापिस घर नहीं गये, वहीं तूफान में डटे रहकर 'ग़ज़ल सम्राट' बनकर ही विजय हासिल की।

इन सभी बातों को जानने के बाद उनकी गायिकी की कुछ खास बातों को जाना जिसके आधार स्वरूप 'जंगजीत सिंह घराना' को स्थापित कर पायी। साधारण शब्दों का प्रयोग, शब्द व स्वरों का सच्चा लगाव, गायकी में ठहराव, सफाई, गम्भीरता, शब्दों का उच्चारण स्पष्ट, आधुनिक व पाश्चात्य वाद्य यंत्रों का प्रयोग आदि बातों को जानने के बाद यह निष्कर्ष स्वरूप पाया कि वर्तमान में कौनसे शिष्य इस गायक द्वारा लाये क्रांतिकारी परिवर्तन को आगे बढ़ाने में सहायक है।

उनके कुछ प्रमुख शिष्य जैसे घनश्याम वासवानी, अशोक खोसला, विनोद सहगल आदि नाम प्राप्त हुये जिनके फलस्वरूप ही जगजीत सिंह घराने को श्रृंखलाबद्ध रूप प्रस्तुत करने में समर्थ रही।

"ग़ज़ल गायिकी के प्रमुख उदीयमान घराने" शीर्षक के शोधनोत्तर मैंने मुख्य रूप से एक बात निष्कर्ष तौर पर पायी जो मेरे शोध कार्य को सुदृढ़ता प्रदान करने में सहायक रही। मैंने प्रस्तुत शोध के प्रमुख ग़ज़ल गायकों की कुछ ऐसी ग़ज़लों को एकत्रित किया जो किसी एक ही शायर द्वारा लिखी थी लेकिन जिसे दो भिन्न ग़ज़ल गायकों ने अपने–अपने अंदाज में प्रस्तुत किया हुआ था।

जैसे "वो जो हम में तुम में करार था, तुम्हें याद हो के न हो – मोमिन खाँ" इस ग़ज़ल को मेंहदी हसन साहब तथा बेगम अख्तर साहिब दोनों ने अपने–अपने गायिकी के अंदाज से गाया है।

इसी प्रकार – दिल–ए–नादा तुझे हुआ क्या है, आखिर इस दर्द की दवा क्या है – मिर्जा गालिब द्वारा रचित इस ग़ज़ल को मेहदी हसन साहब व जगजीत सिंह दोनों ने अपने–अपने गायिकी अंदाज से प्रस्तुत किया है। यह बात ओर हैं कि श्रोताओं को जिसकी गायी हुई ग़ज़ल पंसद आयी और वह उस गायक की सिग्नेचर ग़ज़ल बन गयी। लेकिन निष्कर्षत यह कहना गलत न होगा कि एक शायर द्वारा रचित ग़ज़ल को दो भिन्न गायक द्वारा गाना 'ग़ज़ल घराने' को जन्म देने में सहायक है।

जैसे हम यमन राग की बंदिश "ए री आली" सुनते हैं। यह यमन की परम्परागत बंदिश है जो सालों से यही चली आ रही है। इस बंदिश को कई बडे–बडे कलाकारों ने अपने–अपने अंदाज में गाया हैं हमें जिसकी गायिकी पंसद आती है वहीं हम बार–बार चुनते है।

संगीत कल्पनाप्रधान विषय है, जिसने स्वरों की जैसी कल्पना की उसने वैसा गाया यह बात ख्याल में ही नहीं संगीत की हर विधा में लागू होती है। कल्पना ही संगीत को सदैव प्रगतिशील रखने में सहायक है।

आगे कुछ ग़ज़लों को लिपिबद्ध कर व उनका विश्लेषात्मक अध्ययन कर मैंने अपनी परिकल्पना की सत्यता करते हुए वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँची। अततः मैंने मेरी परिकल्पना की पुष्टि हेतु कुछ ऐसे लोगो का साक्षात्कार फोन व व्यक्तिगत रूप से मिलकर लिया जिन्होंने मेरे प्रश्नों के उत्तर देकर मेरे मन मे उठ रहे कई प्रश्नों का समाधान दिया तथा मेरे शोधकार्य को सृदृढ़ता व स्पष्टता प्रदान करने में सहायता की।

साथ ही निष्कर्ष स्वरूप में शोध वर्णित ग़ज़ल गायकों के शिष्यों की जानकारियाँ पत्र–पत्रिकाओं के संकलन के माध्यम से की। जिससे में इस बात की पुष्ठी कर पायी कि संबंधित व्यक्ति मेरे शोधवर्णित ग़ज़ल गायक का शिष्य है तथा घराने का श्रृंखलाबद्ध रूप देने में सक्षम रही।

सभी तथ्यों सहायक सामग्रियों, साक्षात्कारों को सम्मिलित कर मैंने मेरे शोधकार्य **"ग़ज़ल गायिकी के प्रमुख उदीयमान घराने"** शीर्षक को ईश्वर की कृपा से पठनीय रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की। त्रुटि होना स्वाभाविक व मानवीय भूल है।

लेकिन आशा करती हूँ, कि मेरा शोधकार्य आगामी शोध विद्यार्थियों व समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध सारांश

शोध सारांश

साहित्य, संगीत, कला समाज और जीवन रूपी वृक्ष के तने से निकली तीन शाखाएँ है, तीनों का आधार समान होने के नाते तीनों परस्पर प्रायः संयुक्त है, संस्कृत में जो साहित्य संगीत कला विहीन कहा गया है वह उनके प्रति एक संज्ञक आस्था का ही परिचायक और प्रमाण है। फिर भी तीनों के अपने–अपने आयाम है, विकास की अपनी–अपनी दशाएँ है, सूचना के अपने–अपने प्रतीक है। साहित्य अर्थ प्रधान है, संगीत ध्वनि प्रधान है, कला प्रतीक प्रधान है। परम्परा तीनों की अपनी–अपनी काया में, पट में सूत की तरह बुना हुआ, हार के फूलों में सूत की तरह पिरोया हुआ तंतु है, जिससे भिन्न न उनकी स्वतंत्र स्थिति हो सकती थी और न उनका अद्यावधि विकास ही संभव था।

गायन की शैलियाँ स्वयं परम्पराओं का प्रतीक है, परम्परा में ही लय, स्वर और रागों का विकास हुआ है। किसी भी कला की विधिवत् शिक्षा ली जाए तभी वह सफल होगी। कोई भी कला क्यो न हो उसमें मेहनत की जरूरत रहती है, तथा कोई भी व्यक्ति किसी भी कला में तभी पारंगत हो सकता है, जब उसे किसी भी कला की शिक्षा विधिवत् रूप में दी जाए। संगीत कला में प्राचीन काल से ही शिक्षा 'घरानों' के ही द्वारा दी जा रही है। घराने का शाब्दिक अर्थ घर हैं जिसमें गुरू व उसके शिष्य परिवार के रूप में एक वर्ग तीन चार पीढीयों का सिलसिला बनाए रखने पर घराना के नाम से अभिहित किया जाता है। घराना हिंदुस्तानी संगीत की अपनी विशेषता है। परम्पराओं का पालन करने व नवीन सौन्दर्य दृष्टि अपनाने से ही कला की नीव सृदृढ़ होती है। घरानों के रूप में परम्परागत रूप से प्राचीन संगीत का स्वरूप तथा विशिष्ट लक्षण जीवित रखने एवं शास्त्रीय संगीत की धारा को अनवरत रूप से प्रवाहित करने में तथा संगीत शिक्षा को सृदृढ़ बनाने में घरानों का महत्वपूर्ण योगदान है।

संगीत में सभी शास्त्रीय गायन शैलियों को सिखाने के लिए घराने मौजुद है जैसे– ध्रुपद, ख्याल, ठुमरी आदि में घराने की परम्परा अतिप्राचीन है। संगीत का एक प्रकार और है। सुगम संगीत जिसके अंतर्गत ग़ज़ल, गीत, भजन इत्यादि आते है। सुगम संगीत में शब्द पद की प्रधानता रहती है तथा इनमें रागों का प्रयोग तो होता है परंतु पूर्णतः रागाश्रित तथा शास्त्रीय नियमबद्ध रचना और गायन–शैली नहीं होती। इस गीत भेद को सुगम संगीत की संज्ञा दी गयी है।

ग़ज़ल को अपने सांगितिक रूप की वजह से शास्त्रीय संगीत एवं सुगम संगीत के बीच का संगीत स्वीकारा जा सकता है। ग़ज़ल के सांगितिक कण जहाँ सुगम संगीत के स्वरूप में

संघटित होते है, वहीं उसमें रागविशिष्ठ ताल–लय, आलाप–तानें और उनमें शास्त्रीय संगीत के सूक्ष्म तत्वों यथा– मींड गमक, मुर्की, खटका, कण–स्वर इत्यादी का समावेश होता है।

इस स्थिति में ग़ज़ल गायिकी अपने प्रस्तुतिकरण, सुगम सांगितिक रूप में सहज रूप से श्रोताओं को शास्त्रीय संगीत के उन तत्वों का परिचय सहज रूप के कराती है। जो संगीत ध्रुपद, ख्याल इत्यादि शैलियाँ गायकी के संदर्भ में आम श्रोताओं की समझ से परे होती है।

ग़ज़ल निश्चित तौर पर एक आयतित विधा है। ग़ज़ल फारसी संगीत की देन है। यह फारस से ईरान होती हुयी भारत आयी भारत की संस्कृति व संगीत ने इसे अपना कर अपने संगीत श्रेणी में स्थान दिया। ग़ज़ल का अर्थ आशिक व माशूक से बात करना बताया है।

ग़ज़ल किसी शायर द्वारा रचित शेरों की रचना होती हैं जव वह संगीत से मिल जाती है। तो ग़ज़ल गायिकी कहलाती है। भारत में ग़ज़ल गायिकी का प्रचार सूफी संतों ने किया तथा अमीर खुसरों भी रहे। ग़ज़ल का अस्तित्व भारतीय संगीत में प्राचीन काल से ही रहा, यह भारत की एक प्रमुख गायिकी रही है। हर काल में इसकी गायिकी अदायगी का रूप परिवर्तित रहा, लेकिन ग़ज़ल का रूप, ढाँचा वही रहा। ग़ज़ल को पहले राजदरबारों में राजा की प्रंशसा के लिये ही गाया जाता था। धीरे–धीरे यह तवायफों के द्वारा कोठों पर गायी जाने लगी फिर वहाँ से फिल्मों मे आयी तथा बाद में इसके कुछ स्वतंत्र गायक हुये जिन्होंने ग़ज़ल गायिकी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जैसे – बेगम अख्तर, गुलाम अली, जगजीतसिंह, मेहदी हसन। इन सभी की गायिकी की भिन्नता के आधार ग़ज़ल गायिकी में भी घरानें बनाये जा सकते है। इस शोर्ध कार्य के माध्यम मैंने यह प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि ग़ज़ल के घराने बनाये जा सकते हैं।

अध्ययन क्षेत्र –

प्रस्तुत शोध के अध्ययन का विषय "ग़ज़ल गायिकी के प्रमुख घराने" से संबंधित है। ग़ज़ल की उत्पत्ति, विकास व प्रमुख ग़ज़ल गायकों जैसे– बेगम अख्तर, गुलाम अली, जगजीत सिंह इन सभी के बारे में जानकारी भिन्न पुस्तकों व विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों व पत्र–पत्रिकाओं व साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया है।

उद्देश्य –

कला के हर क्षेत्र में प्रायः उद्देश्य एक ही होता है, लेकिन नया सृजन और नई अभिव्यक्तियाँ सदैव अस्तित्व में आती रहती है। भारतीय संगीत के विभिन्न घरानों में भी यहीं

हुआ है। प्रत्येक गुरू से उपलब्ध शिक्षा को शिष्य ने अपनी निजी विशेषताओं में कुछ नया समावेश करके उसे और अधिक लोकप्रिय बनाया है। जिसके ज्वलंत उदाहरण में हम वर्तमान काल में देख सकते हैं। मेरे शोध का भी यही उद्देश्य हे।

1. ग़ज़ल क्या है, ग़ज़ल का उद्‌भव कैसे हुआ, ग़ज़ल का विकास कहाँ हुआ, ग़ज़ल गायिकी किसे कहते है। इन सभी प्रश्नों के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाना है।

2. ग़ज़ल से संबंधित अज्ञात तथ्यों को ज्ञात करना है।

3. ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र से संबंधित प्रमुख कलाकारों के जीवन से जुडे अज्ञात व ज्ञात तथ्यों को शोध माध्यम से बताना उद्देश्य है।

4. ग़ज़ल गायिकी को संगीत की अन्यविधाओं की तरह 'ग़ज़ल घराने' के रूप में स्थापित कर सकने की कोशिश ही उद्देश्य है।

5. ग़ज़ल गायिकी के घराने व शिष्य परम्परा प्रदर्शित करना।

शोध पद्धति –

प्रस्तुत शोध पद्धति विश्लेषणात्मक एवं विवेचनात्मक होने के साथ प्रमुख संगीत व्यक्तित्वों के साक्षात्कार पर आधारित तथ्यों के द्वारा प्रस्तुत किया अध्ययन है। शोध विषय का केन्द्र बिन्दु 'ग़ज़ल गायिकी' है। जिसमें ग़ज़ल से संबंधित कई सहायक पुस्तकों, साक्षात्कार, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से सामग्री एकत्रित की है।

द्वितीय संमकों को एकत्रित करने के लिये ग़ज़ल के प्रमुख कलाकारों के जीवन से जुड़े कई तथ्यों का अध्ययन कर, साक्षात्कार के माध्यम, जानकारी उपलब्ध की गई है। संपूर्ण शोध को प्रमुखतः 6 भागों में विभक्त किया गया है।

1. अध्याय प्रथम में – ग़ज़ल की संकल्पना प्रस्तुत कर, भारत में ग़ज़ल का विकास स्वतंत्रता पूर्व व स्वतंत्रता पश्चात् क्या था यह जानने का प्रयास किया, साथ ही ग़ज़ल के संरचनात्मक तत्वों की जानकारी समाहित की है।

2. द्वितीय अध्याय में – बेगम अख्तर जी की प्रमुख जानकारियों को समाहित करते हुए, उनकी गायिकी का ढंग व शिष्यों की जानकारी दी है।

3. तृतीय अध्याय में – मेहदी हसन साहब के जीवन से जुड़े ज्ञात व अज्ञात तथ्यों को खोज कर लिखा है। साथ ही मेहदी हसन साहब की गायिकी की विशेषताएँ तथा कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय जो उनकी गायिकी का प्रचार कर रहे है। उनका भी परिचय लिखा है।

4. चर्तुथ अध्याय – गुलाम अली साहब के व्यक्तित्व व कृतित्व से जुडी सभी बातों को समाहित किया, उनकी गायिकी का ढ़ंग जो उन्हें अलग बनाता है साथ ही प्रमुख शिष्यों का परिचय देकर घराने को श्रृखंलाबद्ध रूप दिया।

5. पंचम अध्याय – जगजीत 'ग़ज़ल सम्राट' आम आदमी से ग़ज़ल सम्राट बनने में कई संघर्षों से गुजरे तथा साथ ही उनकी गायिकी पर ध्यान आकर्षित करके कुछ प्रमुख शिष्यों का परिचय दिया।

6. षष्टम अध्याय मे – निष्कर्ष स्वरूप इस शोध को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जो आगे भी ऐसे विषयों से जुड़े कार्य में योगदान के रूप में फलीभूत सिद्ध होगा।

समस्याएँ –

ऐसे विषयों के अध्ययन कार्य में अनेक समस्याएँ भी आती है। जिनमें प्रमुखतः –

1. संबंधित विषय में पुस्तकों का अभाव होने पर कई शहरों के पुस्तकालय जाकर आँकड़े एकत्रित करना।

2. संबंधित विषय में उपलब्ध पुस्तके अधिकतर अग्रेंजी भाषा में मिली, जिसका अनुवाद कर लिखना अत्याधिक समय लगना।

3. संबंधित विषय के संबंध में भिन्न–भिन्न जानकारी उपलब्ध होना, जिससे निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन है। एकमतता का अभाव।

4. संबंधित विषय में वर्णित प्रमुख गायक उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से संबंधित पुस्तकों का अभाव, जिससे जानकारी मिलना कठिन।

5. अधिकतर सहायक पुस्तके संबंधित व्यक्तित्व के किस्से कहानी से भरपूर, जिससे व्यक्तित्व के बारे में मूल जानकारी व प्रमुख कृतित्व मिल पाना कठिन है।

6. अधिकतर ग़ज़ल गायक पाकिस्तान से संबंधित है, उनके बारे में अधिक जानकारी मिलना मुश्किल था तथा संबंधित साहित्य का अभाव था।

सुझाव –

1. ग़ज़ल गायिकी जो संगीत की सुगम संगीत व शास्त्रीय संगीत के बीच की विधा है। उसे शोध विषय के रूप में चुना जाना चाहिए।

2. ग़ज़ल गायिकी व प्रमुख कलाकारों से संबंधित पुस्तके प्रकाशित होना आवश्यक है।

3. सभी संगीत विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में ग़ज़ल विषय से संबंधित पुस्तकों का होना अति आवश्यक है।

प्रस्तुत शोधकार्य का संगीत क्षेत्र के साथ सामाजिक योगदान है। इससे ग़ज़ल के बारे में संगीत विद्यार्थियों को विस्तृत जानकारी मिल सकेगी। यह संगीत की आगामी पीढ़ी के लिए एक विश्वसनीय शोध प्रबंध साबित होगा। प्रस्तुत शोध प्रबंध को पढ़ने के बाद वे अन्य गायन विधाओं की तरह समझ सकेगे की ग़ज़ल गायकी में भी घराने बनाये जा सकते है। जिससे प्रस्तुत शोध प्रबंध ग़ज़ल को समझने व सुनने में सहायक सिद्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी पुस्तके –

1.	प्रेम भंडारी	हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी	राजस्थान ग्रंथागार प्रकाशन, जोधपुर 1993
2.	नूरनबी अब्बासी	ग़ज़ल एक सफर	किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली 2015
3.	फिराक गोरखपुरी	कामरूप	आत्माराम एंड संस, दिल्ली 1960
4.	खुर्शीद नबी अब्बासी	गुलहा–ए–परीशाँ	किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली
5.	वजीर आगाह	उर्दु शायरी का मिजाज़	माजलिस–ए–तराकी अदाब, 1 जनवरी 2014
6.	इबादत बरेलवी	ग़ज़ल और मुतालाए ग़ज़ल	कराची अंजूमान तरकवी उर्दु, पाकिस्तान 1955
7.	शिव शंकर मिश्र	हिंदी ग़ज़ल की भूमिका	प्रभात प्रकाशन, 1 अप्रैल 2015
8.	गरीमा सिंह	समकालीन उर्दु हिंदी ग़ज़ल परम्परा और विकास	गेनरीक प्रकाशन, 1 जनवरी 2018
9.	रामावतार वीर	भारतीय संगीत का इतिहास	राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2010
10.	इब्राहित दवेश	ग़ज़ल और मल्काए ग़ज़ल बेगम अख्तर	नूरे नगमा प्रकाशन, मुबई
11.	डॉ. सुधा सहगल एवं डॉ. मुक्ता	बैगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत	राधा पब्लिकेशन 4231/1 अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली (2007)
12.	अखिलेश झा	मेरे मेहदी हसन	रे माधव आर्ट प्रकाशन, नई दिल्ली 1 जनवरी 2009
13.	नारायण सिंह शेखावत	मेहदी हसन यशबावनी	म्यूजिक कमिटी, नई दिल्ली
14.	सत्या सरन	बात निकलेगी तो फिर एक ग़ज़लनामा	हारपर हिंदी प्रकाशन, 1 जुलाई 2015

English –

1.	Rupa Charitavli Series	Begum Akhtar The queen of Gazal	Rupa & Co. Published, 2003
2.	Rita Ganguli	Ae mohabbat Reminiscing Begum Akhtar	Stellar Publishers 10 oct 2008
3.	S. Kalidas	Begum Akhtar Love's own music	Roli Books, January 1, 2009
4.	Shanti Hiranand	Begum Akhtar The Story of my Ammi	Viva Books, 1 Jan. 2005
5.	Sadhana J. & Bhavesh Sheth	Gazal Wizard Gulam Ali	Times Group, 1 Jun 2013
6.	Asha Rani Mathur	Beyond time the ageless music of Jugjit Singh	Rupa& Co. 1 Jan 2002

संगीत पत्रिकाऐं

1.	**संगीत पत्रिका**	संगीत कार्यालय हाथरस
(अ)	डॉ. श. श्री. परांजये	भारतीय साहित्य तथा ग़ज़ल, संगीत में ग़ज़ल/ग़ज़ल अंक
(ब)	रौशन भारती	ग़ज़ल और अमीर खुसरो, अक्टूबर 1993
(स)	प्यारे लाल श्रीमाल	ग़ज़ल व उसका संगीत पक्ष, जून 2011
(द)	डॉ. सुधा सहगल	उपशास्त्रीय गायन विधाएँ व ठुमरी दादरा बेगम अख्तर के संदर्भ में, दिसंबर 2004
(य)	रवि प्रताप उपाध्याय	बेगम अख्तर की विसारते कोलकत्ता व पूणे में भी, जनवरी 2006
(क)	कृष्णस्वरूप	ग़ज़ल, ग़ज़ल की भाषा और ग़ज़ल गायिकी, नवम्बर 1992
(ख)	संगीत पत्रिका	ग़ज़ल के सिंह जगजीत सिंह, नवम्बर 2001
2.	छायानट संगीत पत्रिका	उत्तर प्रदेश, संगीत नाटक अकादमी, पोस्ट बाक्स न. 30 गोमती नगर, लखनऊ
(अ)	कृष्णस्वरूप	ग़ज़ल और ग़ज़ल गायिकी, अप्रैल–जून

(ब)	रवि प्रताप उपाध्याय (कार्तिक)	खुशबु–ए–ग़ज़ल और तालवाद्य कचहरी ने सुर ताल का हिसाब माँगा, 2008 अप्रैल–जून
3.	**संगीत कला विहार**	अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, मिरज
(अ)	पुरूषोतम कुमार	ग़ज़ल के पर्याय उस्ताद मेंहदी हसन, नवम्बर 2013
4.	संगना –Journal	
(अ)	रीता गांगुली से रवीन्द्र मिश्र की बातचीत	बेगम अख्तर जो कभी थकती नहीं थी, 2015 मार्च–अक्टुबर
(ब)	संगीत नाटक अकादमी	Memories of Begum Akhtar, 2006 Volume – 4
5.	**संगीत नाटक Journal**	संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली
(अ)	बेगम अख्तर के साथ आचार्य कृष्ण देव बृहस्पति की बातचीत	गाने की रूह, तासीर, Vol. XIII, 4 Nov. 2009
(ब)	स्वरापर्ण	जश्न–ए–बेगम अख्तर, अक्टूबर 2015
6.	Samakalika Sangeethan Dr. (Major) Nalini Janardhanan	Kozhikode Kerala Begum Akhtar : Malika –E – Ghazal/ Jan. 2014
7.	**शोधपत्रिका शब्द ब्रह्म**	सुदामा नगर, इंदौर
(अ)	दीपेश	ग़ज़ल गायिकी के मसीहा उस्ताद मेहदी हसन जनवरी 2017
8.	Bai Shakshi Roy	Candian Immigrant, 10 Aug. 2016
9.	Partha Chatterjee	Master of Ghazal, Front Line, Vol. 29, 13 June-30 July 2012
10.	**शोध ग्रंथ**	
1.	संतोष कुमार	ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न कलाकारों का योगदान, दिल्ली विश्व विद्यालय, 2011
2.	दीपाली रमेश महिपति	20वीं सदी में ग़ज़ल का विकास, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2004
3.	पूजा शर्मा	बेगम अख्तर की गायिकी की परंपरा का निर्वाह करने वाले प्रमुख आधुनिक शिष्य, दिल्ली विश्वविद्यालय 2002
4.	सुजीत कु. गुप्ता	उपशास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं का सौदंर्य बोध, दिल्ली विश्वविद्यालय 2011

5.	राजेश कु. शर्मा	उपशास्त्रीय संगीत की गेय विधाओं पर शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन, दिल्ली विश्वविद्यालय 2013
6.	विपिन पटवा	ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप, दिल्ली विश्व विद्यालय
7.	रौशन भारती	बेगम अख्तर एक व्यक्तित्व व कृत्तित्व, जयपुर विश्वविद्यालय
8.	पूर्वा भाटिया	ग़ज़ल गायन के शास्त्रीय पक्ष का विकास एवं ह्रास एक विश्लेषात्मक अध्ययन, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2012

समाचार पत्र / News Paper / E-PaPer

1.	हिंदुस्तान दैनिक समाचार पत्र	30 Oct. 1993
2.	Time of India, Lucknow	23 Aug. 2015
3.	Indian Express New Delhi	30 Jan 1986
4.	Indian Express New Delhi	19 Jan 1986
5.	पत्रिका न्यूज पेपर	18 July 2016
6.	दैनिक भास्कर न्यूज पेपर	13 जून 2015
7.	The friday times – Pakistan First indipenedant weekly paper	26 Oct–Nov 2012
8.	Express Tribute	30 Aug 2014
9.	भास्कर.कॉम	13 जून 2013
10.	Tribute	16 दिसम्बर 2017
11.	E.ajtak.in, नई दिल्ली	13 जून 2018
12.	Decan Herald, New Delhi	10 Dec. 2009
13.	जनसत्ता दिल्ली	10 April 1999
14.	The Tribute New Delhi	24 March 2003
15.	The Pioneer	23 May 2006
16.	अमर उजाला, नई दिल्ली	पृ. 15

17.	Patriot, New Delhi	11 March 1990
18.	जनसत्ता, दिल्ली	26 सितम्बर 1990
19.	Times of India	10 Feb. 217
20.	Hindustan Times	30 July 1994
21.	The Hindu	15 September 2004
22.	हिन्दुस्तान न्यूज, पेपर	13 July 1996
23.	हिदुस्तान न्यूज, पेपर	27 April 2002
24.	पत्रिका न्यूज पेपर	10 Oct. 2016
25.	आज तक E पेपर	10 Oct. 2016
26.	पत्रिका न्यूज पेपर	8 Feb
27.	अहमदाबाद Zee News. India.com	Dec. 01
28.	प्रभा साक्षी न्यूज नेटवर्क	June 15 2018
29.	Live Hindustan. com	8 feb 2019
30.	Web dunia	10 oct 2011
31.	Web dunia	15 April
32.	साहित्य शिल्पी	15 Dec 2008
33.	The Stateman	29 March 2018
34.	She the people T.V. Aaj Tak in	21. April 2018
35.	अमर उजाला	24 मार्च 2018
36.	Times New	16 Aug. 2018
37.	Pakisthan Today	25 Jun. 2012
38.	News 18	June 17/2012

You Tube Interviews–

1.	आप की अदालत साक्षात्कार –गुलाम अली रजत शर्मा के द्वारा, India TV, 6 may 2011
2.	Gulam Ali interview, Canada one TV, 29 Aug. 2018
3.	Ustad Gulam ali Khan Shahib with Taru Sugandha in London, Oct. 6. 2011
4.	Gulam ali Speaks of his Career and sings Ghazals for us, सुबह–सवेरे, 19 Sep. 2017
5.	आप की अदालत Interview जगजीत सिंह रजत शर्मा के द्वारा, India T.V., 30 may 2016
6.	Ek mulakat Jugjit Singh, 18 Aug 2017
7.	Jugjit Singh Biopic documentry, विरासत, राज्य TV, 18 oct. 2016
8.	Mohan Jutley interview, Bobby Song Ftv, 19 Set 2010
9.	The Weekend Show with Aamir Gulam Ali, Royal New 24/7, 14 May 2017
10.	Shamoon fida Lmta Live Live episocle, 6 22 Sep 2017
11.	Ashok Khosla शख्सियत Interview, 21 Sep 2014 (राज्य सभा T.V.)
12.	Tauseef Alchtar शख्सियत Interview, 4 May 2015 (राज्य सभा T.V.)
13.	Inspiration Makes Interview LLA Jaswinder Singh, 19 Oct 2018
14.	गुलाम अली – शख्सियत Interview- राज्य सभा TV / 27 जन. 2015

Google Wikipedia

1.	ग़ज़ल	विकिपिडिया
2.	बेगम अख़्तर	विकिपिडिया
3.	मेहदी हसन	विकिपिडिया
4.	तलत अजीज	विकिपिडिया
5.	परवेज मेहदी	विकिपिडिया
6.	आसिफ मेहदी	विकिपिडिया
7.	जगजीत सिंह	विकिपिडिया

8.	Ghanshyam Vaswani	The Sindhu World Biography
9.	गुलाम अली	विकिपिडिया
10.	जावेद अली	विकिपिडिया

Face Book–

1.	Face Book Pro file	Ali Parwez Mehdi
2.	Face Sook pro file	Kamran Mehdi

अन्य –

	CD / Album / Records	
1.	CD– Ghazal legends – Gulam Ali ASIN	Boo 9B76IRW
2.	Sunil Anand Website	3 Sep 2015
3.	A Memorable Concert	1994
4.	Gulam Ali Live in India (Urdu Gazals)	1980
5.	Gulam Ali Live Concert Vol. 2	
6.	Best of Gulam Ali and Asha Bhosle	
7.	Unforgatbles : Jugjit Singh and Chitra	

शोध पत्र

ISSN : 2320-0871

शब्द–ब्रह्म

भारतीय भाषाओं की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

पीयर रिव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

प्रो. डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे
प्रधान संपादक

2. **कृष्ण बलदेव वैद के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन**
डॉ. मुकेश कुमार, **5(3),**hindi - **(2017)**

3. **अम्बिकापुर नगर में भूमि उपयोग और कार्यात्मक कटिबंधों का भौगोलिक विश्लेषण**
डॉ.अनिल कुमार सिन्हा, **5(3),**hindi - **(2017)**

4. **उत्तराखंड के वस्त्राभूषण**
अमृता कौशिक (शोधार्थी),डॉ.मीनाक्षी गुप्ता (निर्देशक), **5(3),**hindi - **(2017)**

5. **ग़ज़ल : उत्पत्ति एवं विकास**
उपासना दीक्षित (शोधार्थी), **5(3),**hindi - **(2017)**

6. **ग़ज़ल गायकी के मसीहा : उस्ताद मेहंदी हसन**
दीपेश कुमार विश्नावत (शोधार्थी), **5(3),**hindi - **(2017)**

7. **अल्बर्ट संग्रहालय में प्रदर्शित ईरानी कालीन का सौन्दर्यात्मक स्वरूप**
डॉ. अन्नपूर्णा शुक्ला (निर्देशक),रूचि जोशी (शोधार्थी), **5(3),**hindi - **(2017)**

8. **Rural Life In Urdu Fiction**
Masrat Hamzah Lone (Research Scholar), **5(3),**urdu - **(2017)**

Volume 5, Issue (3), Pages 1-36, January **(2017)**

1. **Sampadkiya:nyi Talim Ka Chan Sanskarn Sabit Hui Samaster Pranali**
Dr. Pushpendra Duby, **5(3),**1 - 2 **(2017)**

2. **Krishna Baldev Ved Ke Uppniyas Me Chitirit Nari Jivan**
Dr. Mukesh Kumar, **5(3),**hindi - **(2017)**

3. **Ambikapur Nagar Me Bhumi Or Karyatmak Katibandho Ka Bhogolik Vishleshan**
Dr. Anil Kumar Sinha, **5(3),**hindi - **(2017)**

4. **Uttrakhand Ke Vastrabhushan**
Amrita Koshik (shodharthi),dr. Minkhashi Gupata(nirdeshak), **5(3),**hindi - **(2017)**

5. **Gajal: Utpatti Evm Vikas**
Upasana Dikshit (shodharti), **5(3),**hindi - **(2017)**

6. **Gajal Gayki Ke Masiha : Utpad Mehnadi Hasan**
Dipesh Kumar Vinavat(shodharti), **5(3),**hindi - **(2017)**

7. **Albert Sanghralya Me Pradrshit Irani Kalin Ka Sondratamak Svarup**
Dr. Arnpurna Shukla(nirdeshak),ruchi Joshi(shodharti), **5(3),**hindi - **(2017)**

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग़ज़ल : उत्पत्ति एवं विकास

उपासना दीक्षित (शोधार्थी)
कोटा विश्वविद्यालय
कोटा, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

हिन्दी, उर्दू में कहो या किसी भाषा में कहो
बात का दिल पे असर हो तो ग़ज़ल होती हैं

उर्दू और फारसी कविता का एक विशेष प्रकार ग़ज़ल कहलाता है। ग़ज़ल को स्वरावलियों का जामा पहनाकर व्यक्त किया हुआ ढंग ग़ज़ल गायिकी है। इसकी पैदाइश फारस के लोक संगीत से हुई और वहीं इसका प्रसार अरब, मिश्र और भारत में हुआ। ग़ज़ल भारत की मिट्टी में उगाया हुआ ईरानी पौधा है, जिसका बीजारोपण मुस्लिम काल में हुआ और जिसकी जड़े यहाँ की आबो-हवा में फलती-फूलती रही, ग़ज़ल को प्रतिष्ठा दिलाने में खिलजी तथा तुगलक साम्राज्य के राजकवि अमीर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में ग़ज़ल की उत्पत्ति एवं विकास पर विचार किया गया है।

ग़ज़ल का सामान्य अर्थ एवं परिभाषाएँ

भारतीय संस्कृति देशी तथा विदेशी ताने-बाने से निर्मित बहुरंगी वस्त्र है। भारतीय संगीत का इतिहास ऐसी ही समन्वयकारी प्रवृत्तियों की विराट चेष्टा है। भारतीय संस्कृति के समान ही ललित कलाओं की भी यह प्रकृति है कि वे बाह्य कलाओं को शीघ्र ही आत्मसात कर लेती हैं। फिर चाहे गीत हो, वाद्य हो, नृत्य हो भारतीय इतिहास के मध्य काल से संगीत की प्रत्येक विधा हिन्दू - मुस्लिम सांमजस्य की प्रतीक है। इसी सांजस्य का एक रूप है ग़ज़ल गायिकी।"1

भारतीय काव्य जगत एवं संगीत जगत को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रचना ग़ज़ल है। सामान्यतः ग़ज़ल को हुस्न, इश्क और जवानी का हाल बयान करने की अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता रहा है।

ग़ज़ल का अर्थ 'कातने-बुनने' से भी लिया गया है। कहा जाता है कि ग़ज़ल शब्द की उत्पत्ति ग़ज़ाल शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'हरिण' ग़ज़ल मूलतः एक आत्मनिष्ठ या व्यक्तिपरक काव्य विधा है।"2

"ग़ज़ल मूलतः फारसी भाषा की काव्यगत शैली है तथा महोब्बत के जज़्बातो की अभिव्यक्ति है। महोब्बत का अर्थ केवल इंसानी प्रेम से ही नहीं है बल्कि सर्वशक्तिमान ईश्वर जो इस सृष्टि के पालनकर्ता है उनके प्रति असीम प्रेम भी है। यहाँ फारसी साहित्य की यह बात पुष्टि करती है, कि फारसी साहित्य में 'इश्के हकीकी।' आलौकिक प्रेम के नाम से जाना जाता है, वही 'इश्क़े मज़ाजी" को लौकिक प्रेम के नाम से जाना जाता है।

ग़ज़ल एक फारसी भाषा की काव्यगत शैली है जिसका प्रयोग लौकिक व पारलौकिक दोनों ही प्रेम को दर्शाने के लिए किया गया है।"3

"अरबी-फारसी की परम्पराओं को मान्यता देने वाले ग़ज़ल को 'सुरवन-बज़न' अर्थात् स्त्रियों के बारे में बात करना या आशिक माशूक की बातचीत मानते है। "ग़ज़ल प्रतिकूल व अनुकूल

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हर तरह के मानवीय अनुभवो की बारिकीयों को बहुत ही उम्दा तरीके से बयान करती है। ग़ज़ल एक ज़रिया है, जो जिन्दगी के हर रंग को बयां करती है। चाहे सुखःदुख हो या संयोग-वियोग।"4

अलग-अलग विद्धानों ने ग़ज़ल की परिभाषा निम्न प्रकार से दी है :

मिर्जा ग़ालिब ने ग़ज़ल के बारे में कहा था -

"मतलब है नाज ओ गंध वाले
गुफ्तगु मे काम चलता नहीं है
दश्न ओ खंजर कहे बगैर
हर चन्द हो मुशाहिद-ए-हक की
गुफ्तगु बनती नहीं है बाद सागर कहे बगैर"

अर्थात् ग़ज़ल को जवानी का हाल बयान करने वाली और माशूक की संगति व इश्क का जिक्र करने वाली अभिव्यक्ति कहा गया है।"5

महाकवि शंकर ने ग़ज़ल को "राजगीत" कहकर सम्बोधित किया है -

मशहूर शायर फिराक गोरखपुरी जी लिखते है -

"ग़ज़ल महबूब से बातचीत करने को कहते है"

बेहद ही सुंदर अंदाज में बशीर बद्र ने ग़ज़ल को परिभाषित किया है -

"ये शबनमी लहजा हे आहिस्ता ग़ज़ल पढ़ना
तितली की कहानी है फूलो की जुबानी है।"

यह शेर ग़ज़ल के नूर को बया कर रहा है।6

शरतचन्द्र पंराजपे जी के शब्दों में -

"ग़ज़ल मूलतः फारसी की काव्यगत शैली है इसमें प्रणय प्रधान गीतों का समावेश होता है।"

"गुलहा-ए-परीशाँ" में खुरर्शीद नवी "अब्बासी ने कहा है कि ग़ज़ल उर्दू शायरी का ही एक रूप है"

Willard साहब ने ग़ज़ल के लिये कहा है -

"The Gazal has its theme a description of beauties of the beloved object, minutely, enumerated, such as the green beared moles, ringlets, sçe, shape and C.k~ as will as his cruelties and indffierences and the pain endured the lover."

ग़ज़ल की उत्पत्ति

"ग़ज़ल का सुमारम्भ ईरान की भूमि पर हुआ, ईरान में फारस नामक एक प्रांत है।

अतः फारस के नाम पर इस देश को फारस और यहाँ की भाषा को फारसी कहा जाने लगा।"7

"ग़ज़ल मूलतः फारसी शब्द है जिसका सामान्य सा अर्थ है "मुहब्बत के जज़्बातो" को व्यक्त करने वाली काव्य विधा।

ऐसा माना जाता है कि ग़ज़ल की उत्पत्ति फारस के लोक-संगीत से हुई है। फारस से ही इसका प्रसार फिर अरब, मिश्र तथा भारत आदि देशों में हुआ।"8

"कालान्तर में ईरान पर अरब शासको का अधिकार हो जाने से फारसी पर अरबी शब्दों का सम्मिश्रण हो गया।

अरबी भाषा में ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ कातना-बुनना होता है।

अरबी साहित्य में प्रेम अवश्य मिलता है, किन्तु ग़ज़ल के नाम से नहीं बल्कि तशबीब अथवा नसीब के नाम से जो वास्तव में कसीदे का ही अंश है। अरबी भाषा में 'कसीदा' काव्य की एक विधा थी जो किसी की प्रशंसा से संबंधित होती थी। तथा तशबीब व नसीब का अर्थ ग़ज़ल के समान ही यौवन और प्रेम की बाते करना होता था।

ग़ज़ल अरबी काव्य का अंश ना बन सकी किन्तु अरबी साहित्यकारों और कवियों ने उसकी एक कल्पना अवश्य की थी। 10वीं शताब्दी में ईरान में 'रौदकी' नामक कवि हुआ जिसने सर्वप्रथम फारसी में ग़ज़ल विधा को जन्म दिया। जिसने ईरान में ग़ज़ल को सम्मान दिलाया। रौदकी की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग़ज़लें प्रिय-प्रदत्त, विरह जन्य, भावनाओं से ओत-प्रोत है। फारसी में रौदकी से लेकर सादी शीराजी तक ग़ज़ल की विशाल परम्परा मिलती है। रौदकी की ग़ज़लों में अरबी भाषा का सम्मिश्रण था। उस समय लिखी गयी ग़ज़लों की भाषा अरबी-फारसी भाषा की जटिलता का सम्मिश्रण था। किन्तु फिर भी ग़ज़ल शुद्ध भावात्मक व संप्रेषणात्मक अभिव्यक्ति है। प्रेम की अभिव्यक्ति का माध्यम जितना अच्छा ग़ज़ल हो सकती है, उतनी कोई अन्य विधा नहीं हो सकती।"9

निःसदेह ग़ज़ल एक आयतित विधा है। इसने अरब से चलकर ईरान होते हुए भारत की यात्रा की है। मध्यकाल में जब ईरानी भारत आए तो अपने साथ ग़ज़ल को भी लाए तथा यहाँ उर्दू-कवियों के हाथों इसका पालन पोषण हुआ। उर्दू व फारसी ग़ज़लों को एक समान माना जाता है किन्तु दोनो में अंतर है। फारसी साहित्य में इश्के हकीकी (पार लौकिक प्रेम) को अत्यधिक महत्व दिया गया है। इसके विपरीत उर्दू ग़ज़ल साहित्य में इश्के मज़ाजी (लौकिक प्रेम) को महत्व दिया गया है।

भारत में ग़ज़ल गायिकी का विकास

"भारत में ग़ज़ल शैली का प्रसार करने में सूफी संतों का बड़ा योगदान रहा है, इन सूफी संतों ने विभिन्न धर्मो तथा पंथों के बीच ऐक्य स्थापित करने का प्रयास किया।

भारत में ग़ज़ल तथा कव्वाली के प्रर्वतन का श्रेय 13वीं शताब्दी के प्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती को है, उन्होंने स्वयं फारसी तथा हिन्दी में ग़ज़लें लिखी तथा ग़ज़ल को प्रतिष्ठित करने में खिलजी और तुगलक साम्राज्य के राज कवि अमीर खुसरो का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

वे राज कवि होने के साथ-साथ अच्छे ग़ज़ल गायक भी थे"।10

अमीर खुसरो को उर्दू , हिन्दी ग़ज़ल के बाबा आदम या आद्य ग़ज़ल कार सम्मान प्राप्त हुआ है।खुसरो ने (ई॰ सं॰ 1253 से 1324) उर्दू छंदो का एवम् शब्दों का तथा हिन्दी छंदो एवम् शब्दों का प्रयोग किया है। सइद नफीज - संपादित "दीवाने-ए-कामिल" अमीर खुसरो में अमीर खुसरो देहलवी की फारसी ग़ज़लों की संख्या 1726 बतलाई गयी है।

खुसरो की भाषा देहलवी थी कवि ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि वह तुर्की हिन्दुस्तानी है। हिंदवी उसकी भाषा है। खुसरो अरबी-फारसी, तुर्की, और हिन्दी के बहुज्ञाता कवि थे। उनकी पहेलियां, मुर्कीयां दोहे, ओर ग़ज़ले प्रसिद्ध है।"11

प्रोफेसर सिराजुद्दीन आजर के संग्रह में सुरक्षित 13वीं हिजरी के प्रारम्भ में लिखी गयी ग़ज़ल को "हिन्दी की प्रथम" ग़ज़ल होने का गौरव प्राप्त हुआ है। इस ग़ज़ल के शोधकर्ता महमूद शीरानी है। समय के साथ-साथ ग़ज़ल गायिकी भारत की एक लोकप्रिय उपशास्त्रीय विधा हो गयी। लोग ग़ज़ल को सुनने लगे, समझने लगे और गुनगुनाने लगे।

चूंकि भारत एक ऐसा देश रहा है जिसमे अति-प्राचीन काल से विभिन्न जातियाँ आती जाती रही है। इन जातियों में से कुछ जातियाँ यही घुल मिल गई और यहीं की होकर रह गई। जब किसी देश में बाहर की जातियों का विलय होता है तो यह निश्चित है कि इस विलय की प्रक्रिया में एक दूसरे की संस्कृति का आदान-प्रदान होता है, जिसके फलस्वरूप एक नई संस्कृति जन्म लेती है। इस प्रकार ग़ज़ल गायकी अरब से यात्रा करते हुए भारत पहुँची। भारत में ग़ज़ल गायिकी का

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 जनवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्वरूप हर दौर में अलग-प्रकार से रहा जिनमें से कुछ प्रमुख गायको ने इस गायिकी को लोकप्रिय बना दिया जैसे- बेगम अख़्तर, मेहदी हसन, जगजीत सिंह, गुलाम अली इन सभी गायकों की गायिकी के अंदाज ने ग़ज़ल को एक अलग पहचान दिलवायी है, ग़ज़ल एक उपशास्त्रीय विधा होते हुए भी सभी लोग वर्तमान में ग़ज़ल को सुनने, सीखने व गुनगुनाने लगे है।

निष्कर्ष

निःसंदेह ग़ज़ल एक आयतित विधा है। किन्तु भारत में ग़ज़ल की बढती लोकप्रियता इस बात का प्रमाण है कि संगीत की कोई सरहद नहीं होती चाहे वे किसी भी देश, काल, परिस्थिति में जन्मा हो वह सभी प्रकार के बंधन से मुक्त होकर स्वछंद विचरण कर सकता है। ग़ज़ल गायिकी इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। जिस प्रकार यह फारस से यात्रा करते हुए भारत पहुँची यहाँ की एक लोकप्रिय शैली बन गयी, यह संगीत का अद्भुत करिश्मा हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. डॉ. श.सी. पंराजपे, ग़ज़ल अंक, पृष्ठ 9
2. डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, पृष्ठ 1
3. रूद्र कशिकेश, ग़ज़लिका, पृष्ठ 3
4. अब्बासी नूरनवी, ग़ज़ल एक सफर, पृष्ठ 68
5. फिराक गोरखपूरी, कामरूप, पृष्ठ 1
6. उमेश जोशी, उद्धत भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ 269
7. रोहिताश्व अस्थाना, हिन्दी ग़ज़ल उद्भव व विकास, पृष्ठ 9
8. डॉ. श.सी. पंराजपे , ग़ज़ल अंक, पृष्ठ 9
9. रूद्र काशिकेश, ग़ज़लिका, पृष्ठ 3
10. डॉ. श.सी. पंराजपे, ग़ज़ल अंक, वही पृष्ठ 9
11. डॉ. प्रेम भण्डारी, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी, पृष्ठ-11

ISSN No. (E) 2455 - 0817
ISSN No. (P) 2394 - 0344
RNI : UPBIL/2016/67980
Vol. 04 Issue 02 (Part-1) May 2019
Monthly / Bi-lingual

Multi-disciplinary International Journal

Remarking An Analisation

Peer Reviewed / Refereed Journal

Impact Factor (2015)
GIF = 0.543

Impact Factor (2018)
IIJIF = 6.134

Indexed-with Google scholar

Impact Factor (2018)
SJIF = 6.11

1	***भारत में सरोगेसी : चुनौतियाँ*** *अरविन्द चौहान, पाली, राजस्थान, भारत*	H-01 to H-03
2	***वर्तमान युग में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में गीता दर्शन की प्रासंगिकता*** *कृष्ण चन्द गौड़, अनूपशहर, बुलन्दशहर (उ.प्र), भारत*	H-04 to H-09
3	***महाविद्यालयों के प्रथम वर्ष में प्रवेशित एवं पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षकीय शिक्षकीय प्रभावशीलता पर अध्ययन*** *सुषमा दुबे एवं गायत्री जय मिश्रा, जुनवानी, भारत*	H-10 to H-14
4	***लोक नाट्य सॉंग (स्वांग) में अभिनय का महत्त्व*** *आदीश कुमार वर्मा, महेन्द्रगढ़, हरियाणा*	H-15 to H-17
5	***हायर सेकेंडरी स्तर के विद्यार्थियों की बौद्धिक उपलब्धि एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के सम्बन्ध का अध्ययन*** *ममता सिंह, आगरा, भारत*	H-18 to H-20
6	***माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सम्प्रेषण कौशल संवर्धन में 5वें निर्मितिवादी अनुदेषन मॉडल की प्रभावोत्पादकता का अध्ययन*** *सूरज पाल सिंह भाटी, उदयपुर, राजस्थान, भारत*	H-21 to H-26
7	***गढ़वाल मण्डल के विकास हेतु परिवहन एवं संचार के प्रस्तावित प्रतिरूप*** *कृष्ण गोपाल शहर, राज्य, भारत*	H-27 to H-33
8	***समाज में महिलाओं की स्थिति का अध्ययन (लखीमपुर –खीरी) शहर में हिन्दू और मुस्लिम महिलाओं के सन्दर्भ में*** *रेनू शुक्ला, मिश्रित–सीतापुर (उ. प्र.), भारत*	H-34 to H-35
9	***गुलाम अली–गज़ल गायिकी का नया दौर*** *उपासना दीक्षित, कोटा, राजस्थान, भारत*	H-36 to H-38
10	***सामान्य एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन*** *अतुल कुमार मिश्र एवं नन्द लाल मिश्र, चित्रकूट, सतना (म0प्र0) भारत*	H-39 to H-41
11	***पंचायती राज व्यवस्था एवं दलित महिलाओं की भूमिका*** *योगेन्द्र सिंह, करौली, राजस्थान, भारत*	H-42 to H-45
12	***भारत में सुशासन और महिला विकास*** *मंजु लाडला, सीकर, राजस्थान, भारत*	H-46 to H-51
13	***साम्प्रदायिकता की समस्या– आजादी काल से*** *विकास कुमार मिश्रा, पहर, राज्य, भारत*	H-52 to H-56
14	***महाकवि राजशेखर की कृतियों में निदर्शित ऐतिहासिक–चेतना*** *सपना जायसवाल, अलीगंज, लखनऊ, उ.प्र., भारत*	H-57 to H-59
15	***मृदुला गर्ग के साहित्य मे स्त्री विमर्श सामाजिक संदर्भ*** *प्रियंका अरोड़ा एवं राजेश कुमार शर्मा, अजमेर, भारत*	H-60 to H-63

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* (Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

गुलाम अली–ग़ज़ल गायिकी का नया दौर

उपासना दीक्षित
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय काव्य जगत एवं संगीत जगत को सबसे अधिक प्रभावित करने वाली रचना ग़ज़ल है।

सामान्तया ग़ज़ल को हुस्न, इश्क और जवानी का हाल बयान करने की अभिव्यक्ति का माध्यम कहा जाता रहा है। कहा जाता है 'ग़ज़ल' की उत्पत्ति 'ग़जाल' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है हरिण।

ग़ज़ल भारत की मिट्टी में उगाया हुआ वह ईरानी पौधा है, जिसका बीजारोपण मुस्लिम काल में हुआ और जिसकी जड़े, यहाँ जमती गई, शाखाएँ फैलती गयी और यहाँ की आबो–हवा में ग़ज़ल के रंग–बिरंगे फूल खिलते गये।

भारत में ग़ज़ल गायिकी का तरीका स्वतंत्रता पूर्व व स्वतंत्रता पश्चात् अलग–अलग रहा। स्वतंत्रता से पूर्व ग़ज़ल कोठो पर स्त्रियों द्वारा गायी जाती थी, धीरे–धीरे स्वतंत्रता के बाद इसके क्षेत्र में इज़ाफा हुआ और इसे स्वतंत्र गायक हुये, जिन्होंने ग़ज़ल गायिकी को नई पहचान दिलायी । गुलाम अली ने ग़ज़ल गायिकी के पारम्परिक स्वरूप में परिवर्तन कर इसे अपनी चंपल व चंचल आवाज से पंजाबी भाषा में भी गाया है, जो गायिकी अब तक सिर्फ गंभीर मानी जाती थी, उसके स्वरूप में इज़ाफा कर नयीं पहचान दिलायी।

मुख्य शब्द :

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति देशी तथा विदेशी ताने–बाने से निर्मित बहुरंगी वस्त्र है। भारतीय संगीत का इतिहास ऐसी ही समन्वयकारी प्रवृत्तियों की विराट चेष्टा है। भारतीय संस्कृति के समान ही ललित कलाओं की भी यह प्रकृति है कि वे बाह्य कलाओं की शीघ्र ही आत्मसात कर लेती है, फिर चाहे वह गीत हो, वाद्य हो, नृत्य हो। संगीत की प्रत्येक कला हिंदू–मुस्लिम सामंजस्य की प्रतीक है।

इसी सामंजस्य का एक रूप है "ग़ज़ल गायिकी" ग़ज़ल मूलतः फारसी शब्द है जिसका अर्थ है "मुहब्बत के ज़ज्बातों को व्यक्त करने वाली काव्य विद्या" ग़ज़ल की उत्पति फारस के लोक संगीत से हुई है, ग़ज़ल का प्रसार अरब से मिश्र तथा मिश्र से भारत में हुआ।

भारत में ग़ज़ल को प्रसारित करने का श्रेय तुगलक साम्राज्य के राज कवि अमीर खुसरों को जाता है। भारत में ग़ज़ल गायिकी का प्रचलन 13वीं शताब्दीं में ही हो चुका था। 1947 से पूर्व तथा बाद से लेकर वर्तमान काल तक जो प्रमुख ग़ज़ल गायक–गायिकाएँ हुए हैं और जो उनमें प्रमुख है–

बेगम अख्तर, अनवरी बाई, गौहर खान, मेहंदी हसन, जगजीत सिंह, गुलाम अली, हरिहरन, पीनाज मसानी आदि। सभी ग़ज़ल गायकों की गायिकी का अंदाज एक दूसरे से भिन्न है, जैसे– बेगम अख्तर की गायिकी ठुमरी अंग की गायिकी है, वहीं मेहंदी हसन साहब की ग़ज़ल गायिकी में ख्याल गायिकी का पूर्ण रूप से दर्शन हो जाता है,तो वही मेहंदी हसन साहब की ग़ज़ल गायिकी में ख्याल गायिकी का पूर्ण रूप से दर्शन हो जाता है,तो वही जगजीत सिंह ने सादा लफ़्जों की ग़ज़ल को एक आम साधारण जन भी समझ सके, गुनगुना सके इस अंदाज में पेश किया। इन्हीं ग़ज़ल गायकों में एक नाम और है जिसने अपनी गायिकी के जरिये ग़ज़ल की दुनिया में एक नई पहचान कायम की है और उस कलाकार का नाम है "गुलाम अली" बेशक वर्तमान काल में गुलाम अली अपनी गायिकी के जरिये ग़ज़ल का वह नायाब सितारा है, जो जगमगाता तो पाकिस्तान के आसमान में है पर उसकी रोशनी सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है, "डॉ. प्रेम भंडारी" ने अपनी पुस्तक "हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायकी" में कहा है कि गुलाम अली ग़ज़ल गायन की दुनिया में वो नाम है जिसने अपनी तेज तर्रार गायिकी, अपने गले की तैयारी तथा मिठास के जरिये अलग पहचान बनायी है। गुलाम अली की गायिकी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने सुरों को

गले में इतनी सफाई तथा फुर्ती से निकाल लेते है, कि श्रोता या किसी संगीतकार का दिमाग सोच भी नहीं सकता है।

दूसरी ओर यदि बात की जाये तो "साधना व भावेश सेठ" ने अपनी पुस्तक "Gazal Wizard Gulam Ali" में भी इसी बात का जिक्र किया है कि गुलाम अली साहब ग़ज़ल के शब्दों को भाव के अनुरूप सुरों का इस्तेमाल कर पेशकरते है, उनकी गायिकी को सुनने पर अलग ही प्रकार के सुकुन की अनुभूति होती है, गुलाम अली की गायिकी वास्तव में एक जादुई लहर है जो मंद्र सप्तक से तार सप्तक में इस प्रकार चली जाती है कि जब तक श्रोता उसे समझता है उससे पहले ही वह यह करिशमा अपनी गायिकी से कर जाते हैं।

हंगामा है क्यो बरपा थोड़ी सी जो पी ली है
डाका तो नहीं डाला चोरी तो नहीं की है।

अकबर इलाहाबादी की इस ग़ज़ल को गुलाम अली साहब की अवाज में सुनकर लोग आज भी झूम उठते है। फिल्म निकाह में हसन कमल की लिखी ग़ज़ल–

चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हम को अब तक आशिकी का वो जमाना याद है।

को कौन भूल सकता है, उन्होंने इस ग़ज़ल को इतनी खुबसूरती से साथ गाया है कि यह आज भी लोगों की रूह तक पहुँचती है। गुलाम अली साहब का अपने गले पर कमाल का अधिकार है। ग़ज़ल गाते समय वह शब्दों के भावों को बड़ी ही सहजता से अभिव्यक्त करते हैं। इनकी ग़ज़ल गायकी एक आग सी है , जो स्वर, लय और शब्दों को रोशन कर देती है।

गुलाम अली, गज़ल गायिकी का एक नायाब सितारा हैं जिनकी आवाज में एक अजब जादू है। उन्होंने ग़ज़ल गायिकी को एक नया आयाम दिया, जब वह गाते हैं ,जो उनकी आवाज दिल की रूह तक पहुँचती है। उन्होंने ग़ज़ल की सादगी को आज भी बरकरार रखा है। गूलाम अली को अपने समय के सबसे अच्छे ग़ज़ल गायकों में शुमार किया जाता है। ग़ज़ल गाने का उनका अंदाज और गायकी में विविधता के कारण उनकी एक अलग पहचान है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत को उन्होंने ग़ज़ल में बखूबी इस्तेमाल किया। गुलाम अली पाकिस्तान और भारत दोनों जगह समान रूप से प्रसिद्ध है।

गुलाम अली साहब का जन्म पाकिस्तान के पंजाब के सियालकोट के कालेके गाँव में 5 सितम्बर, 1941 को हुआ था। उनका परिवार संगीत प्रधान था। गुलाम अली के पिता गायक और सारंगी वादक थे। उन्होंने ही गुलाम अली को संगीत की आरम्भिक शिक्षा दी। 15 साल की आयु में पटियाला घराने के बड़े गुलाम अली के शिष्य बन गए। बड़े गुलाम अली के व्यस्त कार्यक्रमों की वजह से गुलाम अली को गायिकी की शिक्षा बड़े गुलाम अली के तीन भाईयों बरकत अली, मुबारक अली और अमानत अली खान ने लाहौर में दी। गुलाम अली साहब सुरों के सरताज होने के साथ ही अच्छे हारमोनियम वादक, तबला वादक और शायर भी हैं। कभी–कभी वह खुद भी ग़ज़लों को लिखते है। गुलाम अली साहब कहते हैं कि–मैं, ग़ज़ल को कई रागों से निबद्ध करता हूँ तथा जो राग ग़ज़ल की तासीर से एकाकार करती है उसी राग में निबद्ध करता हूँ उनके इसी अंदाज को श्रोता बेहद पसंद करते हैं।

गुलाम अली साहब की गायिकी का अंदाज, उनकी फुर्ती और लपक सुननें वालें को अपनी और आकर्षित करती है। उन्होंने सभी सुरों को इस कदर अपनी आवाज़ और रूह में उतारा है कि सुनने वाले मदमस्त हो जाते है। वह छोटी–छोटी बहरों की ग़ज़लें ग़ज़ल की रूह को कायम रखती है। ग़ज़ल गायिकी में शास्त्रीय संगीत के प्रति पूर्ण समर्पण और रियाज़ साफ झलकता है। गुलाम अली साहब पंजाबी में उतनी ही मस्ती में गा जाते हैं जितनी नज़ाकत से उर्दू ग़ज़लें गाते हैं। अली साहब अपनी गायिकी में मींड़, गमक, मुर्की, खटका, कण आदि अलंकरणों का प्रयोग बड़ी ही कलात्मकता से करते हैं। जब वे ग़ज़लें गाते हैं, तब तबले की संगत रंगत ले आती है। छोटे–छोटे मुखड़ें और लग्गी–लंडियों को वह बड़ी ही सहजता से प्रयोग करते हैं।

गुलाम अली ने गायिकी की शुरूआत रेडियों लाहौर से की थी। उन्होंने बीबीसी हिन्दी सेवा के एक विशेष कार्यक्रम "एक मुलाकात" में कहा था– असल में वही दिन थे, जिन्होंने मुझे यहाँ तक पहुँचाया अब से तकरीबन 50 साल पहले की बात थी, तब मैं 14 साल का था, मैं रेडियों में ऑडीशन देने गया था। वहाँ निदेशक आगा बशीर साहब थे और उनके बगल में अय्यूब रमानी साहब थे। ऑडीशन के दौरान जब लाल बत्ती जली तो मैं घबरा सा गया था, हालांकि रियाज़ करते रहने के कारण गाने में मुझे झिझक नहीं थी। मैंने आ...आ... ही कहा था उन्होंने कहा कि बस, बस... मुझे बहुत दुख हुआ कि मैं तो इन्हें सुनाने आया था और इन्होंने सुना ही नहीं। बाद में अय्यूब साहब ने मुझसे पूछा कि तुम उदास क्यों हो। मैंने कहा कि आपने तो मुझे सुना ही नहीं, उन्होंने कागज दिखाते हुए कहा कि घबराते क्यों हो बशीर साहब ने "गुड़" नहीं "एक्सीलेंट" लिखा है। पाँच महीनें में ही मेरा नाम लोगों की जुबान पर चढ़ गया। पाकिस्तान में ही नहीं हिन्दुस्तान में भी मुझे लोग सुनने लगे थे– संदर्भ–बीबीसी हिन्दी रेडियों।

गुलाम अली साहब के अनुसार उनके जीवन और गाने में कोई फर्क नहीं है। वे अपने जीवन को अपनी गायिकी से अलग करके नहीं देख सकते। उन्होंने ग़ज़ल की गंभीर व शांत शैली से बाहर निकल कर ग़ज़ल गायिकी को एक अलग मुकाम दिया। हफीज़ होशियापुरी की लिखी ग़ज़ल–

तमाम उम्र तेरा इंतजार हमने किया,
इस इंतजार में किस किससे प्यार हमने किया,
कोई मिलता है तो अब अपना पता पूछता हूँ,
मैं तेरी खोज में तुझसे भी परे जा निकला।

को जिसखूबसूरत अंदाज में इन्होंने गाया है वह काबिले तारीफ है। गुलाम अली साहब ज्यादातर लाइव शो के लिए जाने जाते हैं उनके नाम लगभग 50 से ज्यादा एलबम हैं, उन्होंने ना केवल उर्दू में ग़ज़लें गायी हैं बल्कि पंजाबी और नेपाली में भी ग़ज़लों को बड़ी ही सादगी और रूहानी अंदाज में गाया है। नेपाली संगीतकार

नारायण गोपाल के साथ उन्होंने एक एलबम में आवाज़ दी है जो नेपाल में आज भी सुनी जाती है, जो है–

हम तेरे शहर में आए है, मुसाफिर की तरह,
सिर्फ इक बार मुलाकात का मौका दे दे।

शास्त्रीय संगीत में मजबूत पकड़ के साथ–साथ ग़ज़ल में भावपूर्ण भावनाओं में उनका मजबूत आधार उन्हें एक अद्वितीय गायक बनाता है। संगीत बिरादरी से कई विशेषज्ञों का मानना है कि गुलाम अली साहब की रचनाएँ बहुत मुश्किल हैं और दूसरों के लिए उन्हें गाना लगभग असंभव हो जाता है।

वर्तमान में देश–विदेश में गुलाम अली साहब की गायिकी का अनुसरण उनके कई शिष्य कर रहे हैं। चाहे वह अमेरिका के मोहन जुटले हो या फिर कनाड़ा के अमीन मुख्तार सभी गुलाम अली साहब की ग़ज़ल गायिकी के मुरीद है। भारत में भी फिल्म जगत से जुड़े नईम अली, जावेद अली भी गुलाम अली साहब की गायिकी के अंदाज को अपने गीतों में इस्तेमाल करते हैं। गुलाम अली साहब के बेटे नज़र अबारू और आमिर अली पिता की परम्परा का निर्वहन कर रहे हैं और कई कार्यक्रमों में उनके साथ शिरक्त करते हैं। गुलाम अली साहब ने नासिर काज़मी, अहमद नदीम, अहमद फराज़, फैज़ आदि शायरों की नज़्में अधिक गायी है।

रागों में गुलाम अली साहब के पसंदीदा राग, राग दरबारी, भेरवी, पहाड़ी, बागे श्री आदि है। गुलाम अली साहब ने कई फिल्मों के लिए भी ग़ज़लें गायी है। 1992 में आई हिन्दी फिल्म "हीर–रांझा" के गाने हीर को सुनकर आज भी दिल तड़प उठता है।

गुलाम अली की गायी गज़लों में शब्दों की अभिव्यक्ति बहुत ही सशक्त ढंग से हुई है–

दिल में इक लहर–सी उठी है
अभी कोई ताजा हवा चली है अभी।

नासिर काज़मी की इस ग़ज़ल में उन्होंने "लहर" शब्द को अपनी गायिकी के द्वारा सजीव साबित करने की बड़ी कामयाब कोशिश की है।

उनकी गायी हुई ग़ज़लें–

"कल चौदहवीं की रात थी,
शब भर रहा चर्चा तेरा"

या

"इतने मुद्दत बाद मिले हो"

आज भी सबका मन मोहती हैं। यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि गुलाम अली साहब ने ग़ज़ल गायिकी का एक नया दौर शुरू किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से ग़ज़ल गायिकी का परिचय समाज व इस क्षेत्र में आने वाली पीढ़ी से करवाना है। ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में इस शख्सियत से व इनके द्वारा किये कार्यो को उजागर करना ही मेरा उद्देश्य है। ग़ज़ल गायिकी क्या है ?, किस विकास यात्रा को तय करके मिली , किस गायक ने इसे नया रूप दिया यहीं शोधार्थी का ध्येय है।

निष्कर्ष

अतः प्रस्तुत शोध पत्र के निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि गुलाम अली ग़ज़ल गायिकी वह नायाब सितारा है जो जगमगाता तो पाकिस्तान के आसमान में है पर इसकी रोशनी सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। बेशक उन्होंने ग़ज़ल गायिकी को एक नयीं पहचान अपनी जादुई आवाज व गायिकी के नित नये प्रयोगों से दिलवायी।

अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि गुलाम अली ने ग़ज़ल गायिकी के क्षेत्र में एक नया दौर शुरू किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तक

डॉ. प्रेम भण्डारी/ हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी/ राजस्थान ग्रंथागार (जोधपुर) 1993ए /पृ.सं. 156,157

डॉ. श. श्री. परांजपे/गजल अंक/संगीत कार्यालय हाथरस/ 1967 पृ. 9

साधना व भावेश सेठ/Gazal Wizard Gulam Ali Bennett Colemn's Co. Ltd. New Delhi, 2013/पृ. 9, 15, 37

शोध ग्रंथ

पूर्वी भाटिया,/ ग़ज़ल गायन में शास्त्रीय पक्ष का विकास एवं ह्रास – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन,/ दिल्ली विश्वविद्यालय

संतोष कुमार,/ ग़ज़ल गायन के क्षेत्र में विभिन्न गायकों का योगदान/, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्रीमति महिला देवाहुति कसेवा /ग़ज़ल पारम्परिक व आधुनिक का तुलनात्मक अध्ययन, /दिल्ली विश्वविद्यालय

विपिन पटवा,/ ग़ज़ल गायिकी का परिवर्तनात्मक स्वरूप (आधुनिक काल के विशेष संदर्भ में) 2008/, दिल्ली विश्वविद्यालय

पत्र–पत्रिकाएँ

प्रारत्य/, ग़ज़ल गान, /संगीत पत्रिका हाथरस, /जनवरी 2013,/ पृ. 61–62

डॉ. किरण मिश्रा, /ग़ज़ल संगीत कला विहार, मिरज2, अप्रैल 2013,/ पृ. 8–9

डॉ. प्यारेलाल श्रीमाल,/ ग़ज़ल और उसका संगीत पक्ष, /संगीत पत्रिका हाथरस, /जून 2011,/ पृ. 8–9

डॉ. शरच्चन्द श्रीधर परांजपे/ "भारतीय साहित्य तथा संगीत में ग़ज़ल,/ संगीत पत्रिका हाथरस,/ जनवरी 2013,/ पृ. 65

रिकार्डस

Gulam Ali: Polydor LP. 292891 Complete]
Gulam Ali: LP EMI ECSD 2029 All cuts
Gulam Ali:Live India: Polydor, LP 2675203, Side-B cut-3

केसेट्स

Gulam Ali: No. 5, side B, 002, PR. S.K.
Gulam Ali : No. 4 Side B, 050 Banerjee's collections

परिशिष्ट

(अ) साक्षात्कार

(ब) ग़ज़लों का लिपिबद्ध रूप

साक्षात्कार

1. पदम् श्री शांति हीरानंद (बेगम अख़्तर शिष्या)

समय : दोपहर 12:15 बजे दिनांक : 10 मार्च 2019
माध्यम : फोन

प्र.1 आपको संगीत का शौक कैसे लगा, किसी संगीत शख्सियत से प्रभावित होकर रहा या परिवार से सांगितिक माहौल मिला।

उत्तर बचपन में इतनी समझ तो नहीं थी, कभी भी कोई कहता था गाना सुनाओं, तो हम सुना दिया करते थे। धीरे–धीरे हमारे माता–पिता को पता लगा तो उन्हे लगा हमें संगीत सीखाना चाहिए तो उन्होंने हमें लखनऊ के संगीत स्कूल में भेज दिया वहाँ हमने सरगम सीखी और धीरे–धीरे फिर शौक बढ़ने लगा।

प्र.2 आपकी बेगम अख़्तर जी से मुलाकात कैसे हुई?

उत्तर हम पाकिस्तान रेडियो में गाते थे, वहाँ से आने के बाद लखनऊ रेडियों में गाने लगे, फिर किसी ने हम से कहा अच्छा सीखो तो हम बोले किस से सीखे तो वे बोले बेगम अख़्तर जी से सीखों हम अगले दिन उनके घर गये वो बोली बिटिया क्या गाती हो। हम बोले भजन गीत तो वे बोली कुछ सुनाओं तो हमने उन्हें पीलू में भजन सुनाया और वे बोली तुम तो अच्छा गाती हो। क्या सीखोगी, तो हम बोले मैं तो आपसे ही सीखूँगी, तो वे हँसते हुए बोली, अच्छा कल आना, तुम्हारी तालीम शुरू करेंगे।

प्र.3 संगीत की शिक्षा किन–किन गुरूओं के सानिध्य में हुई?

उत्तर सबसे पहले पाकिस्तान की नाबिना बेगम से सीखा, फिर लखनऊ के उस्ताद रजा खाँ से सीखा। फिर बेगम अख्तर जी की शागिर्दा हुई।

प्र.4 आप ही एक ऐसी गायिका रही जिसके पहली बार पाकिस्तान रेडियों पर गाया आपकों पाकिस्तान व हिन्दुस्तान के संगीत सांगतिक माहौल में कुछ अंतर लगा।

उत्तर ऐसा कोई खासा अंतर नहीं था, वहाँ भी वही संगीत था वही रागें, ग़ज़ले, बंदिशे सब एक सा ही था।

प्र.5 बेगम अख़्तर जी एक गुरू के रूप में क्या बेहद सख्त थी?

उत्तर उनका व्यक्तित्व अलग ही प्रकार का था, वे कभी माँ बनके समझाती, तो कभी बच्चों जैसे जिद्द करती तो कभी सहेली बन जाती। गुस्से में वे हमे कभी 'बोंका' बेवकूफ कहा करती थी, वे आवाज से बेहद सख्त दिखती थी लेकिन अंदर से अच्छे दिल की थी उन्हें कई बार रोते देखा है।

प्र.6 बेगम अख़्तर जी को गायिकी की कौनसी बात हैं जो उन्हे अन्य ग़ज़ल गायकों से अलग बनाती है।

उत्तर बेगम अख़्तर जी ग़ज़लों को मूड के हिसाब से उन्हे उपर्युक्त रागों में बाँध कर गाती थी, उन्होंने ग़ज़लों को तीन ताल, रूपक में भी गाया है, वे अपने साथ सिर्फ सांरगी और हारमोनियम को ही साथ लेकर गाती थी।

प्र.7 क्या आप मानती है कि बेगम अख़्तर जी ने ग़ज़ल के दौर में एक बडा परिवर्तन किया।

उत्तर बिल्कुल अपने समय की तो वे ही बादशाह थी, उनसे पहले ग़ज़ल गायिकी ख्यालनुमा तरीके से गायी जाती थी जब बेगम अख़्तर जी आयी तब उन्होंने Traditional ग़ज़ल आयी। उन्होंने ग़ज़लों के मूड के अनुसार रागों में बांधा। जैसे गालिब की ग़ज़ल "येन थी हमारी किस्मत के मिसाले राग होता" यदि आप इसे हल्के–फुल्के राग में बांधेंगे तो अच्छी नहीं लगेंगे। हम तो यह जानते हैं कि हमने भी यही गायिकी सुनी और गायी।

प्र.8 बेगम अख़्तर जी गज़ल की एक प्रतिनिधि कलाकार रही, क्या आप मानती हैं उनकी गायिकी के आधार पर उनके नाम से घराना बनाया जा सकता है?

उत्तर इस बात में सम्भावना व्यक्त कर सकती हूँ, सम्पूर्ण रूप से मैं समर्थन नहीं दे सकती हूँ। गाने वाला जरूर अपने घराने के अंदाज से गाएगा। समय के अनुसार ग़ज़ल गायिकी में परिवर्तन आ रहा है। पहले समय में आवाज आगे होती थी और साज़ पीछे होते थे, आज साजों की अधिकता आवाज़ को दबा देती है।

प्र.9 आपकी किताब ''The story of my Ammi'' में आपने गुरू शिष्य के रिश्तों को बेहद ही सुंदर तरीके से बताया है। इतना समय आप रही, सीखा, तो आप क्या मानती हैं, सच्चा संगीत गुरू के सानिध्य में रहकर और अपना पूरा समय लगाकर ही मिलता है?

उत्तर इस किताब में मैंने अपने और अम्मी के रिश्ते की खूबसूरत यादों को समेटा है, जिसे आप सही मायने में गुरू समझते हैं, मेरा ऐसा ख्याल है, जो उस्ताद होता है, जिससे

आपको लगाव होता है उसकी पूरी शख्सियत आपको पूरा समझना होता है। तभी आप कुछ सीख सकते हैं। हम मानते हैं कि कोई भी शागिर्द अपने गुरू से चीनी की तरह घुल न जाये तब तक नहीं सीख सकता।

प्र.10 आपने कई शिष्यों को सीखाया, उनमें से ऐसा कौनसा शिष्य है जिसने आपकों पूरा follow किया है। और वर्तमान में अच्छा कार्य कर रहा हैं संगीत क्षेत्र में।

उत्तर हमारे हमने कई शिक्षकों को सीखाया उनमें सभी अच्छा कर रहे है जैसे राधिका चौपड़ा, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत होने के साथ प्रस्तुति भी देती हैं, चरणजीत सोनी श्री रामकला केन्द्र दिल्ली में कार्यरत है।

प्र.11 इस क्षेत्र में आने वाली पीढ़ी को क्या संदेश देना चाहेगी?

उत्तर यहीं कहना चाहूँगी ग़ज़ल सीखना हैं तो सबसे पहले उर्दु सीखिये, जब तक आप उर्दु नहीं सिखोगे तो उसके भाव कैसे आयेगे। जब तक समझोगे नहीं उसकी अदायगी कैसे करेंगे।

जैसे – दूर हैं मंजिल, दूर हैं मंजिल राहें मुश्किले आलम है तन्हाई का यहाँ बेबसी है यदि आप इस शे'र को समझेगे नही तो कैसे अदा करेगी। तो बेहद रियाज व समझ चाहिये।

2. रेखा सूर्या – बेगम अख़्तर शिष्या

समय : दोपहर 2:00 बजे दिनांक : 22 अप्रेल

माध्यम : व्यक्तिगत साक्षात्कार Villa : C, Appasway Apartments, 7 Block, Kottur Gardens, Cheerai.

प्र.1 संगीत का शौक कैसे हुआ? आपके परिवार में कोई और भी संगीत से संबंध रखता है?

उ. मेरे परिवार में कोई भी संगीत क्षेत्र से संबंधित नहीं है। यह एक इत्तफ़ाक़ की बात थी, जब मैं मात्र 11 वर्ष की थी तभी लखनऊ में पाकिस्तान से सलामत नजागत अली साहब एक कार्यक्रम के लिये आए थे। मैं भी वहाँ सुनने गयी, जब मैं घर वापस आयी तो अपनी माँ से बोला मुझे शास्त्रीय संगीत सीखना है। उस समय से ही मुझे रेडियो पर शास्त्रीय संगीत सुनना भी बेहद पसंद था। मेरे परिवार में कोई भी संगीत से नहीं जुड़ा होने के बावजूद मेरा शुरू से स्वतः ही लगाव रहा, यह सब पूर्व जन्म का संबंध होता है।

प्र.2 आपने बनारस की गिरिजा देवी जी से भी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा ली और बाद में बेग़म अख़्तर जी की शिष्या बनी? क्या कारण रहे कि आपने ग़ज़ल गायिकी को ही चुना शास्त्रीय संगीत को नहीं?

उ. हालांकि मुझे ख्याल बेहद पसंद हैं, लेकिन मुझे शायरी से बेहद लगाव है। जितना मुझे मौसिकी से लगाव है उतना ही अच्छी शायरी से लगाव है, आध्यात्मिक शायरी मुझे बेहद पसंद है। बचपन से ही मुझे कबीर दास जी के दोहे बेहद पसंद थे।

प्र.3 कौन–कौन से शायर आपके पसंदीदा शायर हैं?

उ. मुझे फ़ैज साहब बेहद पसंद हैं, ग़ालिब को तो सभी पसंद करते हैं।

प्र.4 आपकी बेग़म अख़्तर जी से मुलाकात कैसे हुयी?

उ. मैं जब 17 वर्ष की थी, तब मैं उनके पारिवारिक मित्र के साथ उनके घर गयी थी, उनसे विनती करने कि मुझे आपसे सीखना है, लेकिन उन्होंने मुझे बोला कि मैंने अब सिखाना बन्द कर दिया है। ज़ाहिर–सी बात है मेरा मुँह उतर गया, जाते–जाते वो बोली कि चलो कुछ सुना जाओ, तो मैंने उनकी ही गायी ग़ज़ल "दिवाना बनाना है" गायी तो उनके चेहरे के भाव बदले नहीं, वैसे ही रहे, बस वे बोली कल 10 बजे आ जाना, तुम्हारी तालीम शुरू होगी।

प्र.5 क्या आप वर्तमान में किन्हीं शिष्यों को सीखाकर अपने गुरूओं द्वारा मिली तालीम को आगे बढ़ा रही हैं?

उ. हाँ, मैं संगीत प्रस्तुति देने के साथ कुछ चुनिन्दा शिष्यों को सिखाती हूँ, जिन्हें थोड़ी समझ है, एक मेरी शिष्या अमेरिका में है वो बहुत अच्छा गाती हैं, उसकी समझ बेहद अच्छी है, लेकिन दूरी की वजह से वह इतना नियमित नहीं रह पाती है।

प्र.6 बेगम अख़्तर जी की गायिकी की कौनसी खास अन्य ग़ज़ल गायकों से भिन्न है?

उ. वो गीतनुमां ग़ज़ल के वनस्पत ठुमरी अंग की ग़ज़ल को गाती थी, जो बेहद ही रिवायती ढंग था। उसी ठुमरी अंग की गायिकी के रिवायती रूप को हमने सीखा और अभी तक उसे प्रस्तुत कर रहे हैं और इसलिए मुझे अवार्ड मिला की मैं रिवायती ढंग की ग़ज़ल गा रही हूँ तथा उसे जीवित रखे हुये हूँ। सूफीयाना को ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल के रूप में प्रस्तुत करने के लिये भी।

प्र.7 बेगम अख़्तर जी की गायिकी के आधार पर ग़ज़ब का घराना बनाया जा सकता है।

उ. निःसंदेह में इस बात से सहमत हूँ, मैं उसी घराने की शिष्या हूँ और उसी अंदाज को हम अपनी प्रस्तुति में प्रदर्शित करते हैं तथा शिष्यों को सिखाकरजीवित रखने का प्रयास कर रहे हैं, बेगम अख्तर जी की गायिकी का रिवायती अंदाज व ठुमरी, दादरा अंग की ग़ज़ल गायिकी बेहद ही अनूठी व प्राचीन गायिकी का रूप है, जो वर्तमान में कहीं नहीं मिलता, बिल्कुल लुप्त सा होता जा रहा है, मेरी कोशिश है कि मैं अपनी गुरू की गायिकी को जीवित रख सकूं और आगे बढ़ा सकूं।

प्र.8 भारत में ग़ज़ल के प्रचार प्रसार के लिये क्या कदम उठाए जाने चाहिए?

उ. ग़ज़ल गायिकी के कार्यक्रम व प्रतियोगिताएँ लघु व वृहद दोनों स्तरों पर आयोजित करवाये जाने चाहिए। पाकिस्तान में एक कार्यक्रम की प्रस्तुति के लिये गयी थी, वहाँ अभी भी बैठक अंदाज है, ऐसा यहाँ भी होना चाहिए, जैसा पहले हुआ करता था।

प्र.9 क्या आप मानती हैं, मेरा रिसर्च वर्क आने वाली पीढ़ी के लिये उपयोगी रहेगा?

उ. बिल्कुल, तुम एक नया प्रयास कर रही हो, जरूर फायदेमंद रहेगा, गोड ब्लैस यू, ईश्वर से यही प्रार्थना है कि तुम अपनी पी.एच.डी. जल्द से जल्द करके पी.एच.डी. डिग्री अवार्ड हो जाओ।

बेगम अख़्तर जी की सबसे छोटी शिष्या रेखा सूर्या जी के साथ शोधार्थी उपासना दीक्षित

3. प्रेम भंडारी

(पूर्व संगीत विभागाध्यक्ष, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर)

समय : प्रातः 9:00 बजे दिनांक : 6 जुलाई 2019

माध्यम : फोन

प्र.1 आपको संगीत का शौक किसी संगीत शख्सियत से प्रभावित होकर रहा या पारिवारिक माहौल से मिला?

उ. नहीं, पारिवारिक माहौल से नहीं मिला, लेकिन बचपन से ही मुझे संगीत से लगाव था। इससे पहले मेरा ध्यान खेलों के प्रति भी रहा, फिर मेरा शौक शायरी रचना में भी रहा। मेरी कई किताबें भी प्रकाशित हुई हैं, जैसे – खुशबू रंग सदा के संग, झील किनारे तन्हा चाँद, हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी।

प्र.2 आपकी शुरूआती संगीत तालीम किन–किन गुरूओं के सानिध्य में हुयी तथा ग़ज़ल गायिकी की बारीकियाँ कौन–से गुरू से सीखी?

उ. सर्वप्रथम पंडित देवदत्त नागमूर्ति जी से सीखा फिर देवगंधर्व जी से शास्त्रीय संगीत की तालीम ली लेकिन ग़ज़ल गायिकी सुन–सुन के सीखी क्योंकि उदयपुर में कोई गुरू मौजूद नहीं थे, फिर कैसेट्स खरीद के, ग़ज़लों की किताबों से, रेडियो आदि से सुनकर – पढ़कर बारीकियाँ सीखी, फिर जगजीत सिंह जी को काफी सुना, उर्दू भी लिखना–पढ़ना सीखा, क्योंकि बिना उर्दू के ग़ज़ल सुनना–सीखना संभव नहीं है।

प्र.3 'ग़ज़ल गायिकी' की तरफ रूझान होने के क्या–क्या कारण रहे?

उ. ग़ज़ल गायिकी जीवन की सच्चाई के हर पहलू से जुड़ी होती है, उसमें हम समाज को एक संदेश दे सकते हैं, ग़ज़ल गायिकी व्यक्ति के जीवन के हर पहलू से जुड़ी है चाहे पारिवारिक हो, सामाजिक हो या आध्यात्मिक हो, इन सभी कारणों की वजह से ग़ज़ल गायिकी ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

प्र.4 जगजीत सिंह जी के आप बेहद नजदीक रहे, उनकी गायिकी की कौन–सी ऐसी बात है जो आपको बेहद पसंद है?

उ. मेरी यह खुशनसीबी है, जिन्हें मैं अपना गुरू मानता हूँ, जिन्हें सुन–सुनकर मैनें बहुत कुछ सीखा है, उन्होंने मेरे द्वारा रचित एक नज़्म को अपनी आवाज़ दी, जो मेरे लिए बहुत ही खुशी की बात थी। जगजीत सिंह की गायिकी की सबसे बड़ी बात यह थी कि लफ्जों की अदायगी बेहद स्पष्ट, सादगीपूर्ण थी। वे बहुत सरल शब्दों में अपनी बात

कह जाते थे। कर्ण, मुर्की, खटकों जैसे अलंकरणों से ग़ज़ल को कोई भी सुंदर बनाकर गा सकता है, लेकिन जगजीत ने ग़ज़ल की आत्मा को सादगी के साथ पेश किया। आडम्बर रहित गायिकी थी।

प्र.5 आपकी पुस्तक "हिन्दुस्तानी संगीत में ग़ज़ल गायिकी" में आपने जिक्र किया है, ग़ज़ल गायिकी के विभिन्नता के आधार पर घराने बनाये जा सकते हैं? कैसे? आपकी राय।

उ. जिस तरह से शास्त्रीय गायक हैं, उनकी गायिकी के आधार पर, उसी तरह नृत्य की प्रस्तुति के आधार पर, इसी तरह वाद्य संगीत के वादन के आधार पर घराने बनाये गए हैं। घराना कैसे बनते हैं – बात कहने के ढंग से या प्रस्तुत करने के ढंग से बनते हैं। जैसे – पंडित जसराज जी की गायिकी कुमार गंधर्व की गायिकी से अलग है, जबकि दोनों शास्त्रीय गायक हैं। उसी तरह बेग़म अख़्तर जी की गायिकी ठुमरी, दादरा, टप्पा का मिला–जुला रूप ग़ज़ल में नज़र आता था, उसी को उनकी शिष्याएँ शांतिहीरानंद, रेखासूर्या जी उन्हीं के तरीके से गाती हैं।

उनके बाद मेंहदी हसन साहब आए, उन्होंने ग़ज़ल का और राग का रूप कायम करते हुए उन्होंने गायिकी को उतना ही महत्व दिया जितना शब्दों को टप्पा, ठुमरी, दादरा में एक ही शब्द को लेकर उन्हें अलग–अलग तरह प्रस्तुत किया जाता है। मेंहदी हसन साहब भी अलग–अलग तरह से बोलते थे, लेकिन वो पूरे मिसरे को बोलते थे, उसे तोड़ते नहीं थे, राग का रूप कायम रखते हुए कहीं आपको टप्पा, ठुमरी, दादरा का रूप नज़र नहीं आएगा। तो यह ग़ज़ल गायिकी का अलग रूप बना।

उसी तरह मेंहदी हसन व गुलाम अली की गायिकी में भी अंतर है, जैसे – गुलाम अली जी की गायिकी में कण, मुर्की, ताने, खटका अलग राग में चले जाना व कम्पोजिशन को ऐसी जगह ले जाना जहाँ आपका दिमाग सोच ही नहीं सके, उनका एक अलग तरीका है। उसी तरह जगजीत सिंह जी की गायिकी बिल्कुल ही अलग थी, सादा शब्दों का प्रयोग आमजन तक पहुँचाया। लफ्जों को बात करने के अंदाज में प्रस्तुत किया। आधुनिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग, ये सभी बातें ग़ज़ल के घराने बना सकती हैं। जब शास्त्रीय संगीत में घराने बन सकते हैं तो ये चार Style बिल्कुल ही अलग हैं। ग़ज़ल गायिकी में तो इन चार Style को लेकर ग़ज़ल के घराने बनाये जा सते हैं। इस विषय पर आपको मेरी किताब में और अधिक जानकारी मिलेगी।

प्र.6 आप स्वयं एक ग़ज़ल गायक हैं, आप नयी पीढ़ी को जो इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहती है, उन्हें क्या सुझाव देंगे?

उ. यही कहना है कि ग़ज़ल को ग़ज़ल के अंदाज में ही गाना चाहिये, उसमें दादरा, टप्पा, ठुमरी, गाना आदि गायन शैलियों का मिश्रण करके नहीं गाना चाहिए। शब्दों की अदायगी बेहद सही तरीके से हो और ग़ज़ल गायिकी सामाजिक रूप से उपयोगी हो।

प्र.7 भारत सरकार को ग़ज़ल के प्रचार–प्रसार के लिये क्या–क्या कदम उठाने चाहिए?

उ. मेरा मानना है कि यह एक कलाकार की ही जिम्मेदारी है कि उसे आगे कैसे बढ़ाए। सरकार सिर्फ आपके अच्छे कार्य के लिए सम्मानित कर सकती है, तो सरकार को दोष देने की जगह कलाकार को खुद प्रयास करने चाहिए।

प्र.8 वर्तमान में आप अपने श्रोताओं के लिये क्या नया ला रहे हैं?

उ. अभी मेरी एक किताब "ग़ज़ल और गायिकी" प्रकाशित होने वाली है और मैंने एक नज़्म को लिखा व संगीत भी दिया है, जो विश्व शांति के प्रचार–प्रसार के ऊपर आधारित है।

प्र.9 क्या आप मानते हैं मेरा शोधकार्य "ग़ज़ल गायिकी के प्रमुख घराने" आगामी शोधार्थियों व समाज के लिये उपयोगी सिद्ध होगा? आपकी राय।

उ. हाँ! क्यों नहीं? ज़रूर उपयोगी रहेगा। आगामी शोधार्थी ग़ज़ल गायकों की गायन शैली की विभिन्नताओं को समझ सकेंगे। जिस तरह का काम मैंने किया, अब आप लोग करते रहेंगे, खुशी है इस बात की – "God Bless You"।

4. शमून फिदा – गुलाम अली शिष्य

समय : सायं 4:00 बजे | दिनांक : 7 जुलाई 2019

माध्यम : फोन | ग़ज़ल गायक, लाहौर, पाकिस्तान

प्र.1 आपको मौसिकी का शौक किसी संगीत शख्सियत से प्रभावित होकर रहा या पारिवारिक माहौल से मिला?

उ. जी, सांगितिक माहौल मुझे परिवार से ही मिला, मेरे दादाजी, मेरे वालिद और मेरे चाचा परवेज़ फ़िदा हुसैन जी से मैंने बहुत कुछ सीखा तथा सभी सदस्य संगीत से संबंधित थे। बचपन से ही संगीत का शौक रहा और मेरे चाचा ने ही मुझे शमून फ़िदा नाम दिया।

प्र.2 संगीत की तालीम किस से ली?

उ. सर्वप्रथम मेरे संगीत गुरू मेरे चाचा परवेज़ फ़िदा हुसैन रहे, उनसे मैंने बहुत कुछ सीखा, फिर मैं उन्हीं के गुरू के. फ़िदा हुसैन साहब का कंडाबद्ध शागिर्द हुआ, उसके बाद फ़िदा हुसैन साहब ने गुलाम अली जी से निवेदन किया कि मुझे उनकी शागिर्दी में ले और सिखाये। मेरे चाचा जी का सपना था कि मैं गुलाम अली साहब का शागिर्द होऊँ और उनसे भी सीखूं। और मैं मानते हूँ कि जो आपका प्रथम संगीत गुरू होता है उसका आशीर्वाद आगे बढ़ने के लिए बेहद जरूरी है। इसलिए फ़िदा हुसैन जी से ही अनुमति लेकर मैं गुलाम अली जी की शागिर्दी में आया।

प्र.3 गुलाम अली जी से आपकी मुलाकात कैसे हुयी?

उ. मैं किसी पारिवारिक महफिल में गा रहा था, वहाँ गुलाम अली जी के छोटे भाई आशिक अली भी आए हुए थे, उन्होंने मुझे सुना और ईनाम दिया और बोले तुम बहुत अच्छा गाते हो। घर जाकर गुलाम अली जी से जिक्र किया कि एक लड़का शमून फ़िदा बहुत अच्छा गाता है, उसकी गायिकी में तुम्हारी गायिकी की झलक सुनने को मिलती है, फिर वो ही मुझे उनके घर लेकर गए। गुलाम अली जी बहुत खुश हुए। मैंने उनसे बोला कि मैं बचपन से ही आपको सुनता आया हूँ और मेरा सपना है कि मैं आपसे सीखूं। तब गुलाम अली बोले – "बिल्कुल मैं तुम्हें सिखाऊँगा"। फिर फ़िदा हुसैन जी से अनुमति लेकर गुलाम अली जी का कंडाबद्ध शागिर्द हुआ।

प्र.4 क्या आप मानते हैं, गुलाम अली साहब की गायिकी के आधार पर उनके नाम से घराना बनाया जा सकता है?

उ. हाँ, क्यूँ नहीं, आज मैं जो भी गाता हूँ उसमें गुरू की गायिकी की ही झलक आती है। मैं पूरी–पूरी कोशिश करता हूँ कि अपने गुरू को कॉपी करूँ, यह घरानेदार गायिकी है।

जो मेरे भाई हैं सनी आसिफ मेंहदी, वे भी ग़ज़ल गायक हैं, वे मेंहदी हसन साहब के बेटे आसिफ मेंहदी के शागिर्द हैं। उनकी गायकी में मेंहदी हसन साहब के जैसी गायिकी की झलक दिखती है, तो जैसा आपका गुरू गाता है, वैसा ही आप सीखते हो और गाते हो, यह घरानेदार गायिकी है।

प्र.5 आप स्वयं एक अच्छे ग़ज़ल गायक हैं, आप आगामी पीढ़ी जो इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने की कोशिश कर रही है, को क्या संदेश देंगे?

उ. जी मैं यही कहना चाहूँगा कि सबसे पहले अपने माता–पिता की इज्ज़त करे और गुरू की तहेदिल से इज्ज़त करे। ईमानदारी रखे। मेरे गुरू कहते कि बेटा तुम किसी का बुरा मत सोचो, ना बोलो, सिर्फ तुम अपना काम ईमानदारी और मेहनत से करो। गायिकी अल्लाह का काम है, एक दिन सफल होगे।

प्र.6 वर्तमान में आप अपने श्रोताओं के लिए क्या नया ला रहे हैं?

उ. जी मैंने लाहौर में एक सबरंग म्यूजिक अकादमी खोली है, जिसमें संगीत का शौक रखने वाले बच्चों को ग़ज़ल की, शास्त्रीय संगीत की तालीम दे रहा हूँ, साथ ही पिछले 9 वर्षों में लाहौर School of Economics LSC University में as a Music Teacher बतौर सिखा रहा हूँ और जल्द ही मैं अपनी ग़ज़लों की कैसेट् ला रहा हूँ।

प्र.7 वर्तमान में किन शिष्यों को सिखाकर अपने गुरू द्वारा दी तालीम को आगे बढ़ा रहे हैं?

उ. जी मैं वर्तमान में कई शिष्यों को मेरी म्यूजिक अकादमी के जरिये सिखा रहा हूँ, जिनमें से कुछ के नाम हैं – ओबेल तारीक़, आमिर अज़ीम, रज़ा परवेज़

प्र.8 क्या आप मानते हैं मेरा शोधकार्य "ग़ज़ल गायिकी के प्रमुख घराने" आगामी शोधार्थियों व समाज के लिये उपयोगी सिद्ध रहेगा?

उ. जी जरूर रहेगा, इंशा अल्लाह आप बेहद ही अच्छा काम कर रही हैं। बहुत मेहनत कर रही सभी जानकारियाँ जुटाने में। इंशा अल्लाह आप जरूर सफल रहेंगी। आमीन!

5. साक्षात्कार – डॉ. देवेन्द्र सिंह हिरल

(Ph.D. Awardee – संगीत)

समय : दोपहर 1:30 बजे दिनांक : 9 मार्च 2019
माध्यम : फोन

प्र.1 आप का संगीत के प्रति रूझाान कैसे हुआ? आपके परिवार में कोई ओर भी हैं जो संगीत से जुड़ा हुआ है?

उत्तर देवेन्द्र सिंह – मैं 3 वर्ष की उम्र से ही तबला वाद्य बजाता था, मेरे परिवार में ऐसा कोई नहीं जो संगीत से जुड़ा हो केवल मेरे पिता को शौक है, वे विश्वविद्यालय स्तर पर केवल मोहम्मद रफी साहब के गाने गाते थे। वैसे मूलतः मेरा परिवार पूर्ण रूप से वकालत पैशे से जुड़ा हुआ है।

प्र.2 आपकी संगीत शिक्षा किन गुरूओं के सानिध्य में हुई?

उत्तर देवेन्द्र सिंह – शास्त्रीय संगीत मैंने ध्यानानंद देव गार्धव जी से सीखा और उपशास्त्रीय संगीत में ग़ज़ल गायिकी की बारिकियाँ डॉ. प्रेम भंडारी जी से सीखी।

प्र.3 आपने संगीत विषय में M.A. किया फिर L.L.B. भी किया और वकालत का पेशा चुना क्या कारण रहा कि आप संगीत विषय को कैरियर बतौर नहीं चुना?

उत्तर देवेन्द्र सिंह – मैंने संगीत में Ph.D, डॉ. प्रेम भंडारी के अन्तर्गत 2008 शीर्षक "उरूजे ग़ज़ल गायकी एवं श्री जगजीत सिंह" में की है वर्तमान में भी मैं संगीत संस्थाओं तथा कुछ शिष्यों को सीखाता हूँ वकालात पेशे के साथ–साथ।

प्र.4 आपने जगजीत सिंह जी पर शोध करने का क्या कारण रहा क्या आप शुरूआत से ही उनसे प्रभावित थे।

उत्तर जी में बचपन से ही उनकी ग़ज़ले सुनता था, फिल्मी संगीत से ज्यादा में उन्हें सुना करता था।

प्र.5 जगजीत सिंह जी की गायिकी की ऐसी कौनसी विशेषताएँ आपने अपने शोध के अंतर्गत पायी, जो उन्हें अन्य ग़ज़ल गायकों से अलग बनाती है।

उत्तर जगजीत सिंह जी ने ग़ज़ल को प्रस्तुत करने का तरीका बदला। उनकी ग़ज़ले सिर्फ श्रृंगार रस से ही प्रभावित नहीं होती थी। उनकी ग़ज़ले सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक आदि विषयों से भी प्रभावित रहती थी। उन्होंने ग़ज़ल की संरचना से कभी छेड़छाड नहीं की। उन्होंने शास्त्रीय संगीत की विधिवत् शिक्षा ली। उसके बाद ही ग़ज़ल गायिकी में कदम रखा। उनकी गायिकी में सुर व संगीत का दोनों का तालमेल रहता था। वे ग़ज़ले चुनते समय ध्यान देते थे कि यह साधारण आदमी को समझ आएगी या नहीं। उन्होंने नये–नये वाद्यों का प्रयोग करके ग़ज़ल गायिकी में एक परिवर्तन लाए है। उनके बोल स्पष्ट होते थे ज्यादा अंलकारिक तत्वों का प्रयोग नहीं करते थे। जगजीत सिंह जी ही ऐसे गायक रहे हैं जिन्होंने ग़ज़ल के साथ नज़्मों का भी प्रयोग अपने गायन में किया, वे ऐसे गायक थे जिन्हें शास्त्रीय संगीत वाले भी सुनना चाहते थे। उनकी कैसेट का इंतजार श्रोताओं को रहता था।

प्र.6 जगजीत सिंह जी आधुनिक समय के प्रतिनिधि कलाकार रहे है? क्या आप मानते है उनकी गायिकी के अंदाज को जगजीत सिंह घराना नाम दिया जा सकता है।

उत्तर जी हाँ, बिल्कुल उनकी ग़ज़ल गायन शैली के तौर पर उनके नाम से घराना बनाया जा सकता है। उनकी गायिकी उनके पहले रहे के. एल. सहगल, बेगम अख़्तर, मेंहदी हसन या उनके समकालीन रहे गुलाम अली से अलग हैं। ये ग़ज़ल गायन क्षेत्र के ऐसे चार स्तम्भ है, जिन्होंने आपकी अलग पहचान बनायी, और आज जो इनके अनुगामी है उनकी गायिकी को अपनाकर आगे बढ़ रहे है। इस बतौर ग़ज़ल गायकी के घराने सम्भव है।

प्र.7 भारत सरकार को ग़ज़ल के प्रचार–प्रसार के लिये क्या कदम उठाने चाहिये।

उत्तर सरकार की संस्था Culture Ministry और प्रसार भारती ऐसी संस्थाऐं हैं जो शास्त्रीय संगीत के गायकों को विदेश भेजती हैं या लोक गायकों को तो उन्हें उपशास्त्रीय संगीत के गायकों को भी भेजना चाहिए।

प्र.8 क्या आप मानते हैं मेरा शोर्ध कार्य आगामी शोद्यार्थियों और समाज के लिए सहायक रहेगा?

उत्तर जी हाँ, बिल्कुल आपका कार्य दो तरह से उपयोगी रहेगा, एक तो संगीत विद्यार्थियों के लिए जो आप के शोध को पढ़कर ये समझ पाने में सक्षम होंगे कि ग़ज़ल गायकों की गायिकी में क्या अंतर होता है, जैसे बेगम अख़्तर की गायकी में ठुमरी, दादरा अंग है

तो मेहदी हसन साहब की गायिकी रागदारी में बंधी है, जगजीत सिंह जी की गायिकी सरल व शब्दों का उच्चारण स्पष्ट है। ये सब वे आप के शोधकार्य को पढ़कर जान पायेंगे।

दूसरी तरफ जो संगीत के विद्यार्थी नहीं हैं जो सिर्फ ग़ज़ले सुनते है वे आप के शोध को पढ़कर सबकी गायिकी में अंतर कर पायेंगे वरना अभी वे इतना ही जानते हैं कि बेगम अख़्तर गायिकी और गुलाम अली जी की गायिकी जगजीत सिंह जी से क्लिष्ट है। शोधकार्य समाज व आगामी शोधार्थियों के लिए निश्चित तौर पर उपयोगी रहेगा।

ग़ज़लों का लिपिबद्ध रूप

➢ **शोध वर्णित ग़ज़ल गायकों द्वारा एक ही शायर द्वारा रचित ग़ज़लों का लिपिबद्ध रूप**

– क्या कारण रहे कि एक ही शायर द्वारा रचित ग़ज़ल को दो या तीन गायकों ने अपनी–अपनी गायिकी के अंदाज से गाया। मुख्य कारण यही रहा कि गायक अपनी गायिकी व भावाभिव्यक्ति के द्वारा ग़ज़ल को नया रूप देना चाहते थे या यूँ कहें कि श्रोता भी गायकों की गायिकी के अंदाज के आधार पर उसे सुनना पसंद करेंगे। इसका उदाहरण हम शास्त्रीय संगीत की पारम्परिक चली आ रही बंदिशों से ले सकते हैं। जैसे – राग यमन की बंदिश –

"ऐरी आली पिया बिन"

यह राग यमन की बेहद ही प्रचलित व लोकप्रिय बंदिश है, इसे भिन्न घरानेदार गायकों ने अपने–अपने गायिकी अंदाज से गाकर श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया है। सभी की गायिकी में अपने घराने की खास विशेषताओं का प्रभाव नज़र आएगा। सभी गायक कलाकारों ने अपनी घराने की तालीम व कल्पना के आधार पर एक ही बंदिश को राग यमन के स्वर समूह में ही अपनी कल्पना के आधार पर भिन्न रूप दिया है। श्रोता अपनी पसंद के अनुसार इस बंदिश को सुनते हैं उन्हें जिस गायक की गायकी में यह बंदिश उनके हृदय को स्पर्श करती है।

इसी प्रकार ग़ज़ल में भी एक ही शायर की रचित ग़ज़ल को भिन्न–भिन्न ग़ज़ल गायकों ने अपनी गायिकी के अंदाज व अदायगी के जरिये श्रोता के समक्ष प्रस्तुत किया है। सभी ग़ज़ल गायकों की गायिकी में भिन्नता है, जिसके आधार पर हम सुनकर बता सकते हैं कि यह मेंहदी हसन साहब गा रहे हैं या गुलाम अली साहब।

जैसे – मेंहदी हसन साहब की ग़ज़लें पूर्णतः रागदारी में बंधी होती हैं, तो वहीं बेगम अख़्तर जी की गायिकी की बात की जाए तो उनकी ग़ज़ल गायिकी के ठुमरी अंदाज नजर आता है व शब्दों की स्पष्टता पर ध्यान न के बराबर नजर आता है। वहीं गुलाम अली किसी भी शब्द को अपनी गायिकी से सजीव करने की कोशिश करते हैं, यह उनकी अदायगी का निराला अंदाज है व पंजाबी भाषा का लहजा भी उनकी ग़ज़ल गायिकी में नज़र आता है। वहीं ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह जी की गायिकी आम आदमी के लिए बनायी हुई है, क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग न के बराबर व शब्दों की स्पष्टता का पूर्ण ध्यान, उनकी गायिकी ने ग़ज़ल जगत में एक पहचान बनायी।

तो यह जिस प्रकार घरानों के रूप में शास्त्रीय संगीत की गायिकी संरक्षित व भारतीय सभ्यता को बचाये हुये है उसी प्रकार ग़ज़ल गायकों की गायिकी के आधार पर घराने का रूप

दिया जा सकता है व संरक्षण प्रदान कर आगामी पीढ़ी को दिखाया जा सकता है यह एक अनूठा प्रयास होगा।

प्रस्तुत अध्याय में कुछ ऐसे शायरों की ग़ज़ल को लिपिबद्ध किया है, जिन्हें भिन्न–भिन्न गायकों ने अपनी अपनी गायिकी, अदायगी व राग चुनाव के आधार पर गाया है। लिपिबद्ध रूप निम्न प्रकार है –

1 कल चौदहवीं की रात थी
शब भर रहा चर्चा तेरा
कुछ ने कहा ये चाँद है
कुछ ने कहा चेहरा तेरा

हम भी वहीं मौजूद थे,
हमसे भी सब पूछा किए
हम हंस दिए, हम चुप रहे,
मंजूर था पर्दा तेरा"

– "इब्न–ए–इन्शा" शायर द्वारा रचित

(अ) जगजीत सिंह द्वारा गायी उपरोक्त ग़ज़ल का लिपिबद्ध रूप

[Album – A memorable concert, Released -1994]

जगजीत सिंह – कल चौधवीं की रात थी
कहरवा – ताल

स्थायी :

1	2	3	4	5	6	7	8
						ग	ग
						क	ऽ
–ग़	–	ग	म	रे	सानि़	ध	नि
ऽल	ऽ	ऽ	चौ	द	वीऽ	ऽ	की
×				0			
सा	–	सा	सा	सा	–	सा	–
रा	ऽ	ऽ	त	थी	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
नि़	–	नि–	रे	रे	रे	रे	रे
श	ऽ	बभ	र	हा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
ग	–	म	प	म–	ग	रे	सा–
च	र्र	चा	ते	राऽ	ऽ	ऽ	कऽ
×				0			
–ग़	–	ग	म	रे	सानि़	ध	नि
ऽल	ऽ	ऽ	चो	द	वीऽ	ऽ	की
×				0			
सा	–	सा	सा	सा	–	सा	–
रा	ऽ	ऽ	त	थी	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
सा	–	सा	–	सा	सा	सा	–
कु	छ	ने	क	हा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
म़	–	म़	ध़	प़	–	–	–
ये	चाँ	ऽ	द	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
नि	–	नि	नि	रे	–	रे	रे
कु	छ	ने	क	हा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
ग	–	म	प	म	ग	रे	सा
चे	ह	रा	ते	रा	ऽ	क	ल
×				0			
ग	–	–	म	रे	सानि़	ध़	नि़
ऽ	ऽ	ऽ	चो	द	वीऽ	ऽ	की
×				0			
सा	–	सा	सा	सा	–	सा	–
रा	ऽ	ऽ	त	थी	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			

अंतरा :

1	2	3	4	5	6	7	8
प	–	प	–	प	–	प	–
ह	म	भी	व	ही	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ध	प	म	–	ग	–
मो	जू	ऽ	द	थे	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	म	रे	सा	–	नि़	ध़
ह	म	से	भी	स	ब	ऽ	ऽ
नि़	–	सा	सा	सा	सा	सा	–
पू	ऽ	छा	कि	ये	ऽ	ऽ	ऽ
पप	ध	–	ध	ध	–	ध	–
हम	हं	स	दि	ये	ऽ	ऽ	ऽ
प	–सा	–	नि	धनि	–ध	–	–
ह	मचु	प	र	हेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ
नि	निरे	–	रे	रे	–	रे	–
मं	जूऽ	ऽ	र	था	ऽ	ऽ	ऽ
गग	गम	म	प	म	ग	रे	सा
पर	ऽदा	ऽ	ते	रा	ऽ	क	ल
×				0			

(ब) गुलाम अली द्वारा गायी उपरोक्त ग़ज़ल का लिपिबद्ध रूप

[Album – Gulam Ali Live in India (Urdu Gazals), Released -1980]

गुलाम अली – कल चौधवीं की रात थी
कहरवा – ताल

स्थायी :

1	2	3	4	5	6	7	8
गग	–ग	म	–	ग	–	प–	म
कल	ऽचौ	ऽ	द	वी	ऽ	कीऽ	ऽ
×				0			
ग	–	–	रे	सा	–	नि़	–
रा	ऽ	ऽ	त	थी	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
नि़–	–नि़	नि़	सा	ध	म	प	–
शब	ऽभ	र	र	हा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
निनि	रे	मग	प	म	ग	रे	सा
चर	चा	ऽऽ	ते	रा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
पप	–प	–	प	प	–	प	–
कुछ	ऽने	ऽ	क	हा	ऽ	ये	ऽ
×				0			
प	प	–	ध	म	–	ग	–
ऽ	चाँ	ऽ	द	है	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
गप	–प	ध	–	ध	–	प	ग
कुछ	ऽन	ऽ	क	हा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
गप	–नि	–	ध	प	ग	रे	सा
चेऽ	ऽरा	ऽ	ते	रा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			

अन्तरा :

1	2	3	4	5	6	7	8
पप	–प	प	–	प	–	प	–
इस	ऽश	ह	र	में	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
प–	प	–	ध	म	–	ग	–
किस	ऽ	से	मि	ले	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
धध	–ध	ध	ध	ध	ध	ध	पग
हम	ऽसे	ऽ	तो	छू	ऽ	टी	ऽऽ
×				0			
ग	–	प	सांनि	धप	प	–	–
म	ह	फि	लेऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
गग	–ग	ग	ग	ग	–	ग	–
हर	ऽश	ख	स	ते	ऽ	रा	ऽ
×				0			
–	ग	ग	प	म	ग	रे	सा
ऽ	ना	ऽ	म	ले	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			
नि–	–नि	नि	सा	ध	म	प	–
हर	ऽश	ख	स	दि	ऽ	वा	ऽ
×				0			
निनि	रे	मे	प	म	ग	रे	सा
नाऽ	ऽ	ऽ	ते	रा	ऽ	ऽ	ऽ
×				0			

2 वो जो हम में तुम में करार था, तुम्हें याद हो के न याद हो

वही यानी वादा निभाने का तुम्हें याद हो के न याद हो

वो नये गले वो शिकायतें, वो मजे मजे की हिकायतें,

वो हर एक बात पे रूठना, तुम्हें याद हो के न याद हो

– "मोमिन खाँ" शायर द्वारा रचित

(अ) मेंहदी हसन साहब द्वारा गायी उपरोक्त ग़ज़ल का लिपिबद्ध रूप

You tube – June 3, 2011

मेहदी हसन : वो जो हम में तुम में करार था।

स्थायी :

						पप
						वोजो
1	2	3	4	5	6	7
ग ग	–	रे	ग ग	–	रे	सा
हम	ऽ	में	तुम	ऽ	मे	क
रे	–	सा	रे	–	रे	सासा
रा	ऽ	र	था	ऽ	ऽ	तुम्हें
सा	रेग	ग	ग	–	सागम	धप
या	ऽऽ	द	हो	ऽ	केऽऽ	ऽन
0			2		3	
रे	रेम	पग	ग–	रे–	सा	पप
या	ऽऽ	द	होऽ	ऽऽ	ऽ	वाजो
0			2		3	

अन्तरा :

1	2	3	4	5	6	7
						सारे
						वोन
ग	ऽ	रे	ग	–	रे	सा
ये	ऽ	गि	ले	ऽ	वो	शि
रे	ऽ	ग पग	प	–	–	पऽ
का	ऽ	ऽ ऽय	ते	ऽ	ऽ	वोम
पध	निध	निध	प	–	धप	ग
जेऽ	ऽऽ	ऽम	जे	ऽ	कीऽ	ऽ
गग	–	प	ध–पग	ध–पग	रेसा	पप
हिका	ऽ	य	तेऽऽऽ	ऽऽऽऽ	ऽऽ	वोह
ग	–	रे	ग	–	रे	सा
रे	ऽ	क	बा	ऽ	त	पे
रे	–	रे	रे	–	–	सांसां
रू	ऽ	ठ	ना	ऽ	ऽ	तुम्हें
सा	रेग	ग	ग	–	सागम	धप
या	ऽऽ	द	हो	ऽ	केऽऽ	ऽन
रे	रेम	धप	ग	रे	सा	पप
या	ऽऽ	ऽद	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोजो
0			2		3	

(ब) गुलाम अली साहब द्वारा गायी उपरोक्त ग़ज़ल का लिपिबद्ध रूप

Album - Gulam Ali Live Concert Vol. 2

गुलाम अली : वो जो हम में तुम में करार था।

स्थायी :

1	2	3	4	5	6	7
						सारे
						वोजो
मम	–	ग	मम	–	म	मप
हम	ऽ	में	तुम	ऽ	में	कऽ
ध	–	धनि	सां–	नि–	ध	ध ध
रा	ऽ	ऽर	थाऽ	ऽऽ	ऽ	तुम्हें
प	म	–ग	म	–	म	पनि
या	ऽ	ऽद	हो	ऽ	ऽ	केन
धप	मध	पम	ग रे	मग	रेसा	सारे
याऽ	ऽऽ	ऽदऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	वाजो
0			2		3	

अन्तरा :

1	2	3	4	5	6	7
						रेंसां
						वोन
सां	–	सां	सां	–	सां	सां
ये	ऽ	गि	ले	ऽ	वो	शि
निसां	रेंसां	रेंसां	नि	–	नि	नि नि
काऽ	ऽऽ	ऽय	ते	ऽ	ऽ	वोम
ध नि	सांनि	सांनि	ध	–	–	धप
जेऽ	ऽऽ	ऽम	जे	ऽ	ऽ	कीहि
पध	नि ध	नि ध	पम	गम	–	सारे
काऽ	ऽऽ	ऽय	तेऽ	ऽऽ	–	वोह
म	–	ग	म	–	प	–
रे	ऽ	क	बा	ऽ	त	पे
ध	–	ध नि	सां–	नि–	ध–	धप
रू	ऽ	ठऽ	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	तुम्हें
म	ग	म	म	–	–	पनि
या	ऽ	द	हो	–	–	केन
धप	मध	–पम	गरे	मग	रेसा	सारे
याऽ	ऽऽ	ऽदऽ	होऽ	ऽऽ	ऽऽ	वोजो
0			2		3	